सुकवि-माधुरी-माला—षष्ठ पुष्प

मिश्रबंधु-विनोद

अथवा

हिंदी-साहित्य का इतिहास तथा कवि-कीर्तन

लेखक
'मिश्रबंधु'

कुछ चुनी हुई साहित्यिक पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
दुलारे-दोहावली	=), १), ॥)
दुलारे दोहावली (सटीक) और समालोचना युक्त भूमिका सहित	२)
बिहारी रत्नाकर	४)
हिंदी-नवरत्न	४॥), ५)
देव और बिहारी	१॥), २)
पूर्ण संग्रह	१॥), २)
पराग	॥), १)
कथा	॥=), १=)
भारत-गीत	॥।=) १।=)
आत्मार्पण	॥), १)
विषय विषय	१), १॥)
विश्व-साहित्य	१॥), २)
वेणीसंहार	॥=), ॥)
मधुर आलाप	१), १॥)
साहित्य-सुमन	॥=), १=)
सौ अजान और एक सुजान	१), १॥)
प्राचीन पंडित और कवि	॥।=), १।=)
मतिराम-ग्रंथावली	२॥), ३)
साहित्य-सन्दर्भ (द्विवेदीजी)	१॥), २)
सुकवि संकीर्तन	१।), १॥)
सौंदरानंद महाकाव्य	॥), १)
भवभूति	॥=), १=)
हास्य-रस	।=), ॥)
हिंदी साहित्य विमर्श	१), १॥)
पद्य पुष्पांजलि	१॥), २)
परिमल	१॥), २)
कलिका	१), १॥)
रसिकाणी	१॥), २)
काव्य-कल्पद्रुम	२॥), ३)
नैषध-चरित चर्चा	॥) १)
किंजल्क	॥), १)
समालोचन	।), ॥)
प्रसादजी के दो नाटक	१), १॥)
नल नरेश	२॥), ३)
सूरसागर	४)
सचित्र सूरसागर	२)
हिंदी-काव्य में नवरस	२)
जरासंध महाकाव्य	१)
प्रबंध पद्म	१), १॥)

सब प्रकार की हिंदी-पुस्तकें मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३६ लाटूश रोड, लखनऊ

मिश्रबंधु-विनोद

अथवा

हिंदी-साहित्य का इतिहास तथा कवि कीर्तन

(चतुर्थ भाग)

लेखक

गणेशविहारी मिश्र

रावराजा रा० ब० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०

रा० ब० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०

"ते सुकृती रससिद्ध कवि बंदनीय जग माहि ,
जिनके सुजस सरीर कहँ जरा मरन भय नाहि ।"

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार

३६, लाटूश रोड

लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सजिल्द ४॥)]   सं० १९९१   [सादी ४)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय
लखनऊ

शाखाएँ और सोल एजेंसियाँ—

गंगा-ग्रंथागार — सिविल लाइन्स अजमेर
गंगा-ग्रंथागार — १६।१३, हरीसन रोड, कलकत्ता
गंगा-ग्रंथागार — सराफा बाज़ार, सागर
गंगा-ग्रंथागार — कोटगेट, बीकानेर
गंगा-ग्रंथागार — नीलकंठ स्ट्रीट, दरियागंज, दिल्ली
गंगा-ग्रंथागार — ४२८, ठैंकिंगस्त रोड, बंबई
गंगा-ग्रंथागार — चलस्क बिल्डिंग्ज, जोधपुर
तथा प्रचारक—सैकड़ों जगह

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-फाइनआर्ट प्रेस
लखनऊ

मिश्रबंधु-विनोद



ओरछा-नरेश

श्रीमान् सवाई महेंद्र महाराजा श्रीवीरसिंह देव बहादुर

G e F A r P e L u know

समर्पण

हिंदी भाषा एवं कविता के अनन्य प्रेमी और सहायक, काव्य-मर्मज्ञ, सौजन्य-मूर्ति, सरल-स्वभाव, निरहंकार, रसिक-शिरोमणि, हिंदी के सुलेखक, स्वदेश एवं स्वजाति के अद्वितीय भक्त, प्रजापालक, नरपाल चूड़ामणि हिज़ हाइनेस सवाई महेंद्र महाराजा श्रीवीरसिंहदेव बहादुर ओरछा-नरेश 'सरामद राजाहाय बुंदेलखंड' के कर-कमलों में यह तुच्छ भेंट (मिश्रबंधु-विनोद, चतुर्थ खंड) उनकी उदार स्वीकृति से, अत्यंत श्रद्धा और प्रेम-पूर्वक, मिश्रबंधुओं द्वारा, सादर समर्पित है।

गोलागंज, लखनऊ	गणेशविहारी मिश्र
वैशाख शु० ७, संवत् १९९१	श्यामविहारी मिश्र (रावराजा, रायबहादुर)
२० मई, १९३४ ईस्वी	शुकदेवविहारी मिश्र (रायबहादुर)

भूमिका

चतुर्थ भाग (मिश्रबंधु विनोद) में पहले प्राय २६४ कवि थे, किंतु अब प्राय १५०० हो गए हैं। इनमें से बहुतेरों ने स्वयं हमारे पास पत्र द्वारा अपना हाल लिख भेजा है, तथा बहुतों के हाल उनके मित्रों आदि के द्वारा ज्ञात हुए हैं। कहीं कहीं हाल भेजनेवालों के नाम भी लिख दिए गए हैं, किंतु ऐसा बहुत ही कम हो सका है। ऐसा लिखने का विचार जब से उठा, उससे पूर्व सैकड़ों लोगों के हाल लिखे जा चुके थे। अतएव जहाँ कहीं हाल का आधार ग्रंथ में न हो, वहाँ स्वयं कवि के अथवा उसके मित्रों के पत्रों का आधार समझना चाहिए। बहुत-से कवि हमको स्वयं ज्ञात हैं। ऐसे स्थानों पर बहुधा ऐसा लिख भी दिया गया है, किंतु कई कारणों से सब कहीं ऐसा नहीं हो सका है। इस भाग के कथनों के आधार दृढ़ हैं। नंबर इसमें सिलसिलेवार हैं, किंतु कहीं कहीं 'अ' आदि के भी नंबर आ गए हैं। यह एक प्रकार की भूल समझनी चाहिए, सिद्धांत नहीं। आगे के संस्करणों में यह भी निकल जायगी। समय के देखते हुए चौथा भाग कुछ बड़ा अवश्य है, किंतु विनोद मुख्यतया कवि-कृतियों का कथन है, सो ज्ञात हाल छोड़ देना अनुचित समझा गया। वास्तव में बहुतेरी साधारण ज्ञात घटनाएँ छोड़ भी दी गई हैं, नहीं तो ग्रंथ दूना हो जाता। आशा है, स्थानाभाव के भय से जो हमें ऐसा करना पड़ा है, उसके लिये कविगण क्षमा करेंगे।

लखनऊ
सं० १९९१

विनीत
मिश्रबंधु

विषय-सूची

अध्याय ३८—आदि से सं० १९४४ पर्यंत के शेष कविगण

मिश्रबंधु-विनोद

अड़तीसवाँ अध्याय

आदि से संवत् १९४४ पर्यंत के शेष कविगण

मिश्रबंधु-विनोद के द्वितीय संस्करण के संबंध में केवल थोड़ा बहुत परिवर्तन ग्रंथ में नहीं हुआ है, परंतु फिर से पूरी जाँच और खोज करने से कवियों तथा ग्रंथों की संख्या पहले से प्रायः ड्योढ़ी हो गई है। दूसरे भाग तक प्रथम संस्करण में १२२१ कवि थे, तथा अब १६५० हो गए हैं। तीसरे भाग में भी ऐसी ही वृद्धि हुई है, और चौथे में संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है। दूसरे संस्करण में आदि से संवत् १९४५ पर्यंत कवियों के कथन प्रथम तीन भागों में हैं, तथा इस चौथे भाग में १९४६ से अब तक के रचयिताओं के विवरण हैं। प्रथम तीन खंडों के बहुत-से ऐसे कवि हैं, जो उन भागों के द्वितीय संस्करण के समय हमें मालूम न थे, किंतु अब ज्ञात हो गए हैं। उनका वर्णन यहाँ करके आगे बढ़ना उचित समझ पड़ता है। उपयुक्त खंडों में पहले का तीसरा संस्करण भी हो गया है, तथा दूसरे और तीसरे के अभी दूसरे ही संस्करण हुए हैं। अब न-जाने कितने दिनों में इनके और संस्करण निकलें। इसलिये जो बृहत् मसाला हम लोगों को ज्ञात हो चुका है, उसको अपने ही पास पड़ा न रखकर हम उसे यहीं प्रकाशित कर देना उचित समझते हैं। इस अध्याय के रचयिता-गण बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं, किंतु वर्णन-पूर्णता के लिये उनका लिखा जाना आवश्यक था ही, तथा इनमें से कितनों ही ने बड़े-बड़े ग्रंथ

बनाए हैं। इनमें से मदनमोहन, अनुनाथ आदि, कनककुशल जानकीराम, गंगाधर व्यास, जीवा भट्ट तथा बहुत से अन्य महाशय सुकवि भी हैं। जीवा भट्ट ने बहुत ग्रंथ भाषा कहा है। इस अध्याय में बहुत-से महाराष्ट्र दरबारी हिंदी-कवि भी हैं। कुल मिलाकर यह भाग बुरा नहीं है। इनमें कवियों के नंबर बदले नहीं गए हैं, जो अपने उचित स्थान पर उन्हें मिलने। ७४ नए कवियों के विवरण त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन नामक बौद्ध महाशय ने १९८६ की गंगा पत्रिका में निकाला है जिसके आधार पर उनके कथन यहाँ लिए गए हैं। इनमें से बहुतेरे आठवीं, नवीं, दसवीं आदि परम प्राचीन शताब्दियों के हिंदी-कवि कहे गए हैं। उनके ग्रंथ बहुधा तिब्बत में कहे जाते हैं। कवियों की प्राचीनता बहुत महत्त्व-पूर्ण है, और इन आधारों पर अवलंबित जान पड़ती है किंतु उनके पूरे विवरण सांकृत्यायन महाशय ने नहीं दिए हैं। अब इस विषय में अधिक ज्ञान होगा तब फिर कुछ कहा जायगा।

सांकृत्यायन महाशय की खोजें कितनी महत्त्व-पूर्ण हैं, सो प्रकट ही है। आशा है, आप अपने कथनों के पूरे हवाले देकर शीघ्र समाज को बाधित करेंगे। राहुल महाशय को हमने पत्र लिखा था। उसके उत्तर में जो पत्र उन्होंने हमें लिखा है, उसकी नक़ल नीचे दी जाती है, जिससे समय जानने में बहुत सहायता मिलेगी।

कवियों के नंबर डालने में भी एक नवीन प्रश्न उपस्थित है। प्रथम संस्करण में नंबर सीधे साधे पड़ते गए, किंतु द्वितीय संस्करण के समय यह सोचा गया कि लोगों ने जो हवाले दिए हैं वे नवीन नंबर डालने से भ्रमात्मक हो जायँगे। अतएव प्रथम तीन खंडों में नंबर पुराने ही रक्खे गए, और जिन नंबरों के बीच जाँच से नए कवि मिले, उनके नंबर कैसे से कर दिए गए। जैसे नंबर १९६६ तथा

१२६७ के बीच में दो कवि नए मिले हैं, सो उनके नम्बर १२६६/१ तथा १२६६/२ कर दिए गए हैं। अब इन नवीन नम्बरों के बीच में भी नए कवि मिलते जाते हैं, सो १२६६/१अ १२६६/१ब आदि के समान नम्बर डालने पड़ते हैं। इसमें गुथलपन आ जाता है, और समझ पड़ता है कि जितनी सुविधा पुराने नम्बरों के रखने से होगी, उससे अधिक असुविधा इन नए बनेवाले नम्बरों के लिखने में हो रही है। चौथे खंड में प्राचीन कवि बहुत थोड़े हैं तथा नवीन अधिक, सो और भी भद्दापन आवेगा। फिर ग्रंथ में पूरे कवि कितने हैं, सो बिना बहुत कुछ जोड़े-बाड़े पता नहीं लगता। एक यह भी बात है कि किसी महाकवि को पूरा नम्बर न देकर किसी अन्य कवि के नम्बर पर बटे में लिखना उसका अनावश्यक अपमान-सा समझ पड़ती है, जो अनुचित है। प्रथम खंड की नम्बर २७७ है, किंतु उसमें कवि ३३६ सन्निविष्ट हैं। इसी प्रकार दूसरे खंड में नम्बर २७८ से १३२१ तक हैं, किंतु कवि १३०४ हैं। तृतीय खंड में नम्बर १३२२ से २५७६ तक होकर भी रचयिता १२६२ हैं। फल यह है कि प्रथम तीन खंडों में नम्बर २५७६ तथा रचयिता ३१०६ हैं। चतुर्थ खंड के ३८वें अध्याय में रचयितागण प्रथम तीन खंडों के ही होने से उनके नम्बर भी उचित स्थानानुसार बटा में दे दिए गए हैं, किंतु यह बट मिलाने को नए नम्बर भी दर्शा दिए गए हैं। ३६वें अध्याय में केवल नए नम्बर दिए गए हैं।

राहुल सांकृत्यायन का पत्र

लूइपा महाराज धर्मपाल (७६६-८०६) के कायस्थ थे, यह सम्वत् क यु की पोथी ज (अर्थात् सराम) के पृष्ठ २४२ ख में साफ लिखा है। वहीं यह भी लिखा है कि सिद्धरत्न घूमते हुए बारेंद्र में महाराज धर्मपाल के महल में भिक्षा के लिये गए थे, उन्

हुए। यह मरुस्य के बु निब्बत में मस्य मठ के पाँच अधिपतियों (1091 1270 A D) की ग्रंथावली है। यही थी मगोल जातीय चीन-सम्राज के गुरु हुए। च, छ ज ग्वर की पोथियाँ तीसरे महत राज दर्तिध्वज (जन्म ११७१, मृत्यु १२१६) की कृतियाँ हैं। इन्हीं लोगों ने अधिकांश सिद्धों की साखियों का अनुवाद कराया था।

उक्त ग्रंथ और रिनू—रा—दद्—यहा—ग्रुब्स—ग्य—च गतम् पृष्ठ ६६, तथा चतुराशीतिसिद्धप्रवृत्ति, स्तन—ग्युर ८६१ (स्नर—थक छापे) के पृष्ठ १६ में भी दारिका और डेंगिपा का (जो पहले ओडीसा के राजा और मंत्री थे) लूहिपा का शिष्य होना अंकित है।

महाराज देवपाल (८०१ ४१ ई०) के समय में इन सिद्ध कवियों के होने का उल्लेख है—

विरूप (३)	चतुराशीतिसिद्धप्रवृत्ति—स्तन-ग्युर ८६।१	P ४०	
गोरख (१६)	,, ,,	१० ख	४६
कण्हपा (१७) गुरु जालंधरपा	,,	२० ख	तक
भूसुक (४१)	,, ,	३ ख	
घंटापा (५२)	,	४३ ख	

लूहिपा और शबरपा का समकालीन होना तथा उनका धर्मपाल के समय होना असंदिग्ध है। इसके लिये आठ भाषा के कितने ही ग्रंथों में प्रमाण दिया जा सकता है। पर मैंने सास्क्य बंग बुम में प्रमाण उद्धृत किया है, जो बहुत ही प्रामाणिक ग्रंथ-संग्रह है।

यदि उपयोगी समझें तो उक्त-सूत्र को छाप लेंगे, किंतु प्रूफ में बहुत ही सावधानी रखनी होगी।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर दिनेशचंद्र सेन ने 'बंग साहित्य परिचय' ग्रंथ लिखा है, जो सन् १९१४ ई० को छपा

है। उसमें गोपीचंद भरथरी पर लिखी पुरानी गीता का समर्थ भी है। प्रोफेसर महाशय ने पृष्ठ ३८ पर लिखा है—"लक्ष्मणदास कृत हिंदी गाने बंगीय राजार गुरु जलधर योगी, ताहार (राजा की) माता मैनावती, तदीय (राजमाता के) गुरु गोरखनाथ प्रभृति बंगीय योगोल्लिखित परिव्राजक प्राय समस्तेर उल्लेख आछे।"

गीत में से—पृष्ठ ४१—

"हरि-गुण-गान मयना गाइयार लागिल।
उत्तर दक्षिण चिता चारोरिज।
साक्षात् गोरखनाथ आसिया रहा रहल।"

पृष्ठ ८६ में—

"सूर्य चन्द्र छाड़ि कहि बंगदेश राय।
ताराचन्द्र नामे हैला ताहार तनय।
इहार नैना गुन महा धर्मराय।
गोपीचन्द्र नामे हलाईहारो कुमारो।
विष्णुचन्द्र नामे पुत्र हइला ताहारो।
विष्णुचन्द्र नन्दन हइला रूपचन्द।
ततदु उत्पत्ति होण गोविंद ए चंद्र।"

पृष्ठ १०२ में—

"योगमिथ्या हाड़िपा कालूपा गोर्ष मीन
सत सिद्ध अवतार गुरवास हीन।
पाण्डिका नगर राजा गोविंदचन्द्र भूप।
जलदरी हाड़िपा हइल हाडि रूप।"

हाड़ीपा जलधरपा ही है। कालूपा ४ कण्हपा (१७) है।

आपका
मातृत्य-सगोत्र राहुल

इन नाथ कवियों के समय प्रमाणित होने से हिंदी-साहित्य का प्रारंभ काल सं० ८०० तक सिद्ध हो जाता है। हाल ही में प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता बाबू काशीप्रसाद जायसवाल ने सं० ६६२ में राज होनेवाले महाराजा हर्ष के समकालीन बाण कवि के ग्रंथ में प्राकृत के साथ भाषा का भी वर्णन पाया है। इस भाषा शब्द से हिंदी भाषा का प्रयोजन निकलता है जो हिंदी भाषा की प्राचीनता उस काल तक पहुँचती है। अब कवियों का कथन चलता है।

(३१०७) नाम—(१/६) सरहपा (सिद्ध सं० ६)।

समय—८०० के लगभग।

ग्रंथ—(१) क-ख दोहा (२) क-ख दोहा टिप्पण (३) कायकोष अमृतवज्रगीति (४) चित्तकोष अजवज्रगीति, (५) डाकिनीवज्र गुह्य गीति, (६) दोहा-कोष उपदेश-गीति, (७) दोहा-कोष गीति (८) दोहा-कोष-गीति तत्वोपदेश शिखर, (९) दोहा-कोष गीतिका भावना दृष्टि चर्याफल (१०) दोहा कोष वसंत तिलक, (११) दोहा कोष चर्यागीति, (१२) दोहा कोष महामुद्रोपदेश (१३) द्वादशोपदेश-गाथा (१४) महामुद्रोपदेश वज्रगुह्य गीति (१५) वाक्-कोष रुचिरस्वरवज्र गीति, (१६) सरह गीतिका।

राहुल के लेखों से पता चलता है कि इनके उपर्युक्त काव्य-ग्रंथ मगही से भोटिया में अनुवादित हुए हैं।

विवरण—इनके अपर नाम राहुलभद्र और सरोजभद्र भी थे। राज्ञी नगर के रहनेवाले ब्राह्मण थे। भिक्षु होकर नालंद विद्यालय में रहने लगे। शबरपा इनके प्रधान शिष्य थे। प्रौढ़ तांत्रिक नागार्जुन भी इन्हीं के शिष्य थे। बंगाल नरेश धर्मपाल का समय ८२६ से ८६६ तक था। उनके लेखक लुइपा शबरपा के शिष्य थे जिनके शबरपा के गुरु हमारे कवि सरहपा थे।

उदाहरण—

जहँ मन, पवन न संचरइ, रवि ससि नाह पवेस,
तहि वट चित्त विसाम करु, सरह कहिअ उवेस।

"पंडिअ सअल सत्थ वक्खाणइ,
देहहि बुद्ध वसंत न जाणइ।'
'अमणागमणु ण तेन विखंडिअ,
तोवि णिलज्ज भणइ हउँ पंडिअ।'

"जो भव सो निव्वा (ण ?) ण खलु, भउ न मण्णहु अण्ण ;"
'एकस्वभावे विरहिअ, निम्मलमइ पडिवण्ण।'
"घोर अँधारे चंदमणि जिमि उज्जोअ करेइ,
परममहासुह एक्कु खणे, दुरिआ सेस हरेइ।'
"जीवन्तह जो नउ जरइ, सो अजरामर होइ,
गुरु उवएसें विमलमइ, सो पर धण्णा कोइ।

इनके कुछ गीति पद—

राग देशाख

"नाद न बिन्दु न रवि न शशि-मंडल,
चिअराअ सहावे मूकल। ध्रु०
उजु रे उजु छाड़ि मा लेहु रे बंक,
निअहि बोहिमा जाहु रे लांक। ध्रु०
हाथेर कांकाण मा लोउ दापण,
अपणे अपा बुझतु निअ मण। ध्रु०
पार उआरे सोइ गजिइ,
दुज्जण साँगे अवसरि जाइ। ध्रु०
वाम दाहिण जो खाल बिखला,
सरह भणइ बपा उजुवाट भाइला।' ध्रु०

राग भैरवी

काग्र णावहि मग्मिय के ुआछ,
सद्गुरु वअथ घर पतराल । ध्रु०
चीअ थिर करि घहुरे नाहा,
धन उपाग पारम जाइ । ध्रु०
नौवाही (नौवाया) नौंका टागुम गुणे,
मलि मेल महँ पाडय आयें । ध्रु०
वाट समय ल्वाइदजि पलथा,
भव उलाल पयथि चालिया । ध्रु०
कुल लइ दर सात उजाय,
मरह भणइ ग (च) यँ पमाऍ । ध्रु०

नाम—(३) शवरपा (सिद्ध ५) ।

समय—सं० ८२५ के लगभग।

ग्रंथ—(१) चित्तगुह्यगंभीरार्थगीति, (२) महामुद्रावज्र गीति, (३) शून्यता दृष्टि, (४) षडंग योग (५) सहजशंवर स्वधिष्ठान, (६) महनापन्शि स्वधिष्ठान ।

विवरण—ये उपयुक्त सरहपाद के शिष्य तथा गौडेश्वर महाराज धर्मपाल के लेखक लूहिपा के गुरु थे । संभव है, उपयुक्त ग्रंथों में कुछ संस्कृत या पाली के भी हों । महाराज धर्मपाल का समय सं० ८२६ से ८६६ तक है । एक शवरपा ह० दसवीं शताब्दी में भी हुए हैं । वह मैत्रीपा या अवधूतीपा के गुरु थे । उनकी भी पुस्तकें संभव है शवरपा की पुस्तकों में शामिल हों । ये ग्रंथ तजूर के तन्त्रखंड में ८ ।

उदाहरण—

ऊँचा-ऊँचा पावत तहिं वसइ सबरीबाली,
मोरगि पीच्छ परहिंण सबरी गिवत गुंजरी ।

उमत सबरो पागल शबरो मा कर गुली गुहाड,
तोहोरि णिअ घरिणी णामे सहज सुंदरी।
णाणा तरुवर मौलिल रे गअणत लागेली डाली,
एकेली सबरी ए वण हिण्डइ कर्ण कुंडल वज्रधारी।
तिअ धाउ खाट पडिला सबरो महासुखे सेजि छाइली,
सबरो भुजंग णइरामणि दारी पेहा राति पोहाइली। ध्रु०
हिअ ताँबोला महासुहे कापूर खाइ,
सून निरामणि कंठे लइआ महासुहे राति पोहाइ। ध्रु०
गुरुवाक् पुंछआ बिंध णिअ मणे बाणे,
एके शर-सन्धाने बिंधह बिंधह परम णिवाणें। ध्रु०
उमत सबरो गरुआ रोषे,
गिरिवर सिहर संधि पइसन्ते सबरो लोड़िब कइसे।

राग रामक्री

"गअणत गअणत तइला बाड़ही हिचे कुराड़ी,
कंठे नैरामणि बालि जागन्ते उपाड़ी। ध्रु०
छाडु छाडु माआ मोहा बिषमे दुन्दोली,
महासुहे विलसन्ति शबरो लइआ सुणमेहेली। ध्रु०
हेरि ए मेरि तइला बाड़ी खसमे समतुला,
षुकड़ए सेरे कपासु फुटिला। ध्रु०
तइला बाड़िर पासेर जोहणा बाड़ी ताएला,
फिटेलि अंधारी रे आकाश फुलिआ। ध्रु०
कंगुरि ना पाकेला रे शबराशबरि मातेला,
अणुदिण शबरो किम्पि न चेवइ महासुहें भेला। ध्रु०
चारिवासे गड़िलारे दिआँ चञ्चाली,
तँहि तोलि शबरो डाहकएला कान्दश सगुण शिआली। ध्रु०

राग भैरवी

ध्यान रावदि सम्मिथ बँ
सद्गुरु वचय धर पतवाल । ध्रु०
चाय थिर करि धहुरे नाही,
अन उपाण पारया नाहें । ध्रु०
नौवाहा (नौवाद्या) नौश टागुव
मेलि मल सहजें जाउया थायें । ध्रु०
वाट अभय न्वाटयि यलआ
भव डलोल पत्रवि थोलिया । ध्रु०
कुल नइ घर माते उजाम,
मरह भणइ ग (अ) यें पमाणें । ध्रु०

नाम—(१) शवरपा (सिद्ध २) ।

समय—सं० ८२५ के लगभग ।

ग्रंथ—(१) चित्तगुह्यगभीरार्थगीति, (२) गीति, (३) शून्यता दृष्टि (४) षडंग योग, (५) स्वधिष्ठान, (६) महामुद्रोपदेश स्वधिष्ठान ।

विवरण—य उपयुक्त सरहपाद के शिष्य तथा गौरे धर्मपाल के लेखक लूहिपा के गुरु थे । सम्भव है, उ कुछ संस्कृत या पाली के भी हों । महाराज धर्मपाल ८२६ से ८६६ तक है । ए० ग्यात्ता हु० द्सवाँ शता है । वह मैत्रीपा या अवधूतीपा के गुरु थे । उनकी भी पु अवरपा की पुस्तकों में शामिल हों । ये ग्रंथ स में है ।

उदाहरण—

"ऊँचा-ऊँचा पावत तहिं वसइ स
मोरंगि पीच्छ परहिय सबरी गिवत

उमत सबरो पागरा शबरो माकर गुली गुहाउ,
तोहोरि णिअ घरिणी णामे सहज सुंदरी।
णाणा तरुवर मोलिल रे गअणत लागेली डाली,
एकेली सबरी ए वण हिंडइकर्ण कुंडल वज्रधारी।
तिअ धाउ खाट पडिला सबरो महासुने सेजि छाइली,
सबरो भुजंग णइरामणि दारी पेह्मरातिपोहाइली। ध्रु०
हिअ ताँबोला महासुहे कापूर खाइ,
सून निरामणि कंठेना आ महासुहे राति पोहाइ। ध्रु०
गुरुवाक् पुंज आ विंध णिअ मणेँ वाणे,
एके शर-सन्धाने विंधह विंधह परम णिवाणे। ध्रु०
उमत सबरो गरुआ रोषे,
गिरिवर सिहर सन्धि पइसते सबरो लोडिब कइसे।

राग रामक्री

"गअणत गअणत तइला बाड़ही हेंचे कुराड़ी,
कंठे नैरामणि बालि जागंते उपाडी। ध्रु०
छाडु छाड माआ मोहा विषम दुन्दोली,
महासुहे विलसति सबरो लइआ सुणमे हेली। ध्रु०
हेरिए मेरि तइला बाडी खसमे समतुला,
षुकड़ए सेरे कपास फुटिला। ध्रु०
तइला बाडिर पासेँर जोहणा बाडी ताएला,
फिटेलि अधारी रे आकाश फुलिआ। ध्रु०
कंगुरि ना पाकेला रे शबरा शबरि मातेला,
अणुदिन शबरो किंपिन चेवइ महासुहेँ भेला। ध्रु०
चारिवासे गाइलारेँ दिआँ चञ्चाली,
तँहि तोलि शबरो डाकणा कादश सगुण शिआली। ध्रु०

मारिह भव मत्तार दह दिह दिअ निवली,
इ रसे सरो तिरनव महुआ पिडिलि वघराली। ध्रु०

नाम—(३) णाय ाा णा कर्णरीपा (सिद्ध १८)।

समय—सं० ८४० के लगभग।

ग्रंथ—निर्विकल्प प्रकरण। इनके कुल २६ ग्रंथ हैं जो तंजूर में हैं जिनमें हिंदी का केवल यही ग्रंथ है।

विवरण—यह महाराज नरहराज के शिष्य तथा वाना सिद्धमानानुज के चेले थे। भिक्षु होकर य नालद विहार में रहे।

उदाहरण—

राग पटमंजरी

'जहि मण इन्द्रिअ (प) वण हो णठा,
ण जाणमि अपा कहिं गइ पइठा। ध्रु०
अकट करुणा डमरुलि वाजअ
आज देव णिरासे रानू। ध्रु०
चांद सूज दुह चाका सीठि सहार धाउ। ध्रु०

चान्द चांदकांति जिम पतिभासअ
चिअ विकरणे तहि टलि पइसइ। ध्रु०
छाडि अ भय घिण लोकाचार
चाहन्ते चाहन्ते सुण विआर।
आज देवें सअल विहरिउ
भय घिण दुर णिवारिउ। ध्रु०

(३११०) नाम—(४) लुइपाद (सिद्ध १०)।

समय—सं० ८४२ के लगभग।

ग्रंथ—(१) अभिसमय विभंग, (२) तत्त्वस्वभाव दोहा-कोष, (३) बुद्धोदय, (४) भगवदभिसमय, (५) लुइपादगीतिका। ये ग्रंथ तंजूर तंत्र्यूर में०।

विवरण—यह महाराज धर्मपाल के समय (८२६-८६६ सं०)

में लेखक थे। शबरपा के शिष्य हुए। ८४ सिद्धों में इनका नाम प्रथम गिना जाता है। इनके शिष्यों में सिद्ध दारिकपा और डेंगीपा कहे जाते हैं।

उदाहरण—

राग पटमंजरी १

"काआ तरुवर पंच विडाल,
चंचल चीए पइठो काल।
दिढ करिअ महासुह परिमाण,
लुइ भणइ गुरु पुच्छिअ जाण। ध्रु०
सअल स (मा) हिअ काहि करिअइ,
सुख दुखेतें निचित मरिआइ। ध्रु०
एड़िएउ छादक बाध करणक पाटेर आस,
सुनु पाख भिति लाहुर पास। ध्रु०
भणइ लुइ आम्हे सागे दिठा,
धमण चमण बेणि पाण्डि वइठा। ध्रु०

राग पटमंजरी २९

भाव न होइ अभाव ण जाइ,
आइस संबोहें को पतिआइ। ध्रु०
लुइ भणइ वट दुलक्ख विणाणा,
तिअ धाए विलसइ उह लागे णा। ध्रु०
जाहेर वान चिह्न रव ण जाणी,
सो कइसे आगम वेएँ वखाणी। ध्रु०
काहेरे किष भणि मइ दिवि पिरिच्छा,
उदक चाँद जिमि साचन मिच्छा। ध्रु०
लुइ भणइ भाइव कीस,
जा लइ अच्छम ताहेर उह ण दिस। ध्रु०

नाम—(५) वीणापा (सिद्ध

समय—८१० के लगभग।

ग्रंथ—वज्रडाकिनी निष्पन्नक्रम।

विवरण—गौड़ देश के क्षत्रिय वंश में इनका जन्म हुआ था। इनके गुरु का नाम भद्रपा (सिद्ध २४) था। पीछे से आप कण्हपा के शिष्य हुए। कण्हपा के सहारे इनका समय ज्ञात हुआ है।

उदाहरण—

राग पटमंजरी १७

'सुज लाउ ससि लागलि तांती
अणहा दाण्डी वाकि किअत अवधूती। ध्रु०
बाजइ अलो सहि हेरुअ वीणा
सुन तांति धनि विलसइ रुणा। ध्रु०
आलिकालि वेणि सारि सुणेआ,
गअवर समरस सान्धि गुणिआ। ध्रु०
जबे करहा करहकले चिपिउ
बतिस तांति धनि सएल वियापिउ। ध्रु०
नाचन्ति बाजिल गान्ति देवी
बुद्ध नाटक विसमा होइ। ध्रु०

नाम—(६) कुक्कुरिपा (सिद्ध ३४)।

समय—सं० ८६० के लगभग।

ग्रंथ—(१) तत्त्व-सुख भावनानुसारियोगभावनोपदेश, (२) स्रवपरिच्छेदन।

विवरण—कपिलवस्तु के ब्राह्मण थे। चर्पटीपा के शिष्य और मणिपा इनके गुरुभाई थे। इनके उपलब्ध ग्रंथ हिंदी में हैं। वे तंजूर के पुस्तकालय में हैं।

उदाहरण—

राग गवडा ९

"दुलिदुहि पिटा घरण न जाइ,
रखरे तेंतलि कुम्भीरे खाअ ।
आँगन घरपण सुन गो विआती
कानेट चौरि निल अधराती । ध्रु०
सुसुरा निद गेल बहुडी जागअ,
कानेट चोरे निलका गइ मागअ । ध्रु०
दिवसइ बहुडी काउइ डरे भाअ,
राति भइले कामरु जाअ । ध्रु०
अइसन चया कुक्कुरी पाएँ गाइड,
कोडि मझें एकुडि अहिं समाइड ।' ध्रु०

राग पटमंजरी २०

निम्न लिखित पद गायकवाड़ ओरियंटल माराज, बड़ौदा, का पुस्तक साधनमाला से लिया गया है।

"हाँउ निवासी खमण भतारे,
मोहोर विगोआ कहण न जाइ । ध्रु०
फेटलिउ गो माए अंत उडि चाहि,
जा एथु चाहाम सो एथु नाहि । ध्रु०
पहिल बिआण मोर वासन पूड़,
नाडि बिआरन्ते सेव बापूड़ा । ध्रु०
जाण जौवण मोर भइलेसि पूरा,
मूल नखलि बाप संघारा । ध्रु०
भणथि कुकुरीपाए भव थिरा,
जो एथु बूझए सो एथु बीरा ।' ध्रु०

अलख-लख चिता महासुद्दे,
विलसइ दारिक० । ध्रु०
किता मते किलो तत किलो रे काय वखान,
अपइ ठान महासुद लील्य टुलख परम निवाणे । ध्रु०
दु खें सुखें एकु करिआ भुजइ इदीजानी,
स्वपरापर न चेवइ दारिक सअलानुत्तर मानी । ध्रु०
राआ राआ राआर अवर राअ मोहरा बाधा
लुइ पाअ पए दारिक द्वादशभुअणें लधा । ' ध्रु०

नाम—(३-) डाभिपा (सिद्ध ७) ।

समय—८३० के लगभग ।

ग्रंथ—(१) अक्षरद्विकोपदेश, (२) डाकिनीगीतिका (३) नाडीबिन्दुद्वारेयोगचर्या ।

विवरण—यह महाशय मगध देश निवासी क्षत्री थे । इनके गुरु पाणपा और विरूपा दोनो थे । डाभिपाद के नाम से तजूर में २१ ग्रंथ मिलते हैं पर इसी नाम के एक और सिद्ध हो गए हैं, अतः ठीक नहीं कहा जा सकता कि कौन ग्रंथ किसका है ।

उदाहरण—

राग भैरवी १०

नगर बाहिरिर डोंबि तोहोरि कुड़िया,
छइ छोइ जाइ सो बाह्म नाड़िया । ध्रु०
आलो डोंबि तोए सम करिबे म सांग,
निघिण कान्ह कापालि जोइ लाग । ध्रु०
एक सो पदमा चोषठी पाखुड़ी,
तहिं चढ़ि नाचअ डोंबी बापुड़ी । ध्रु०
हालो डोंबी तो पुछमि सदभावे
अइससि जासि डोंबि काहरि नावें । ध्रु०

ताति विकणअ डोंबी अवर ना चगता,
तोहोर अतरे छाड़िनड एड़ा । ध्रु०
तुलो डोंबी हाउँ कपाली,
तोहोर अतरे मोए घलिलि होडरि माली । ध्रु०
सरवर भाजीय डोंबी खाअ मोलाण,
मारमि डोंबि लेमि पराण । ' ध्रु०

धनसी राग १४

"गगा जउना माँझेरे वहइ नाई,
तहिं बुडिली मातगि पोइआ लीले पार करेइ । ध्रु०
वाहतु डोंबी वाहलो डोंबी वाटत भइल उछारा,
सद्गुरु पाअ पए जाइब पुणु जिणउरा । ध्रु०
पाँच केडु अल पडते माग पिटत काच्छी बाधी,
गअण दुखोलें सिंचहु पाणीन पइसइ साधि । ध्रु०
चद सूज दुइ चका सिठी सहार पुलिंदा,
वाम दहिण दुइ माग न रेइ वाहतु छदा । ध्रु०
कवडी न लेइ बोडी न लेइ सुच्छडे पार करेइ,
जो रथे चडिला वाहवाण आइ कुलें कुल बुडइ ।" ध्रु०

भिक्षावृत्ति नामक पुस्तक में, जो तजूर में है, इनका यह दोहा मिलता है ।

निम्न लिखित पाठ र्ल्हासा के मुञ्ज्विहार की हस्त लिखित प्रति के अनुसार है—

"भुजइ मअण सहाव र कमइ सो सहअल,
मोअ ओ धम करडिया मारउ काम सहाउ ,
अच्छुउ अकर व पुनइ, सो ससार विमुक्क,
ब्रह्म महेसर णारायणा, सवल असुद्ध सहाव ।"

नाम—(५) भूसुकु या शांतिदेव (सिद्ध ४१) ।

समय—सं० ८०० के लगभग।

ग्रंथ—सहजगीति।

विवरण—नालंद के पास क्षत्रिय वंश में पैदा हुए थे, और भिक्षु होकर उसी विहार में रहने लगे। उस समय गौड़ेश्वर देवपाल वहाँ के राजा थे, जिनका समय सं० ८६६ से ९०६ तक कहा जाता है। उपर्युक्त ग्रंथ मागधी हिंदी में लिखा हुआ भोटिया भाषा में मिलता है।

उदाहरण—

राग आमोद २७

"अधराति भर कमल विकसउ,
बतिस जोइणी तसु अंग उह्लसिउ। ध्रु०
चालिउअ षषहर मागे अवधूइ,
रअणहु सहजे कहइ। ध्रु०
चालिअ षषहर गउ णिवाणा
कमलिनी कमल वहइ पणालें। ध्रु०
विरमानंद विलक्षण सुध,
जो एथु बूझइ सो एथु बुध। ध्रु०
भुसुक भणइ मइ बूझिअ मेलें,
सहआनंद महासुह लीलें।' ध्रु०

राग मल्लारी ४९

"वाज णाव पाड़ी पँउआ खालें वाहिउ,
अदअ बंगाले क्लेश लुड़िउ। ध्रु०
आजि भुसुक बंगाली भइली,
णिअ घरणी चंडाली लेली। ध्रु०
डहि जो पंचघाट णइ दिवि संज्ञा णठा,
ण जानमि चिअ मोर कहिं गइ पइठा। ध्रु०

मोए तम्अ मोर किंपि ण थाकिउ,
निअ परिवारें महासुहे थाकिउ। धु०
चउकोड़ि भंडार मोर लइआ सेस,
जीवंते मइलें नाहि विशेष।' धु०

नाम—(भोट) कण्हपा (सिद्ध १७) या कर्णपा और कृष्णपा भी था।

समय—सं० ८८० के लगभग।

ग्रंथ—का्हपादगीतिका, महाढुण्ढनमूल, वसंततिलक, असंबंध दृष्टि वज्रगीति और दोहा-कोष मगही भाषा में हैं। इनके अतिरिक्त इनके और भी बहुत-से ग्रंथ संस्कृत या पाली में हैं। ये सब ग्रंथ तन्जूर में हैं।

विवरण—इनका जन्म कर्णाटक में हुआ था। जाति के ब्राह्मण थे। महाराज देवपाल के समय में थे। सं० ८६६ ६०६ तक जिनके राज्य का समय था। इनके गुरु का नाम सिद्ध जालंधरपाद है। इनसे ८४ सिद्धों में बहुत थ..। पंडित कहते हैं। इनके सात आठ शिष्य चौरासी सिद्धों में गिने जाते हैं। धमपा, कतलिपा, महीपा, उधलिपा और भलेपा थे, तथा कनखला और मेखला दो योगिनियाँ थीं। जयलिपा इनके प्रशिष्य थे।

उदाहरण—

आगम वेश पुराणे, पंडित मान वहंति;
पक्क सिरीफल अलिअ जिम बाहेरित भ्रमयति।
लहण गमइ उहण जाइ, वेणि रहिअ तसु निचल पाइ।
भणइ कह्णु मन कहवि ण फुट्टइ निचल पवन घरिणि घर वत्तइ।
एवण किज्जइ मंत्र ण तंत, णिअ घरणि लइ केलि करंत।
णिअ धर घरिणी जावण मज्जइ ताव कि पंच वर्ण विहरिज्जइ।
जिमि लोण विलिज्जइ पाणिएहि, तिम घरणी लइ चित्त,
समरस जइ तक्खणे, जइ पुणु ते सम नित्त।

मजुगीतिका

कोइलअअ र मिअ थोरल, मुम्मुखि रे वक्कोल,
घने किपीम्ह चमइ कम्णे किअन वारोला।
तहि पल रचइ गाद, मग्ग स्रा पिअइ,
हते वर्लिजर पखिअइ, टुटुर घञ्जिअइ।
चउसम कत्थुरि मिस्सा कपुर लाग्गइ,
मालइ घाम्-मालि ग्गन माँहि भलु खाइग्गइ।
पँखण खेट करत, गुद्धागुद्ध म मणिअइ,
निरशु ग्गग चणावि अइ तहि जग राव पड़िअइ,
मल घक्के फुटुन घापइ, डिन्डिम नद्दिन बनि अइ।

राग पटमनरी

माहि याहि ति धरि नम्बदे, अनहा म्मर आपण वीर नादे।
कोह कनाल। याती पदु मचारे, देह नगरी विहरण मचारें। ध्रु०
आलि कालि घग नेउर चरणे, रवि शशि-कुण्डल किउ आभरणे। ध्रु०
राग द्वेष मोह लाइअ छार, परम मोख लनण मुतिहार। ध्रु०
मारिअ नासु नणद घरे शाली माअ मारिआ कान्ह भइअ कवाली। ध्रु०

राग पटमनरी २५

सुण वाह तथता पहारी, मोह भण्डार लुइ स अला अहारी। ध्रु०
घुमइ न चेवइ सपरविभागा, सहज निदालु कान्हिला लागा। ध्रु०
चेअण ण वेअन भर निद गेला, सअल सुफल करि सुहे सुतेला। ध्रु०
स्वपणे मइ देखिल तिभुवण सुण घोरिअ अवणा गमण विहून। ध्रु०
शाखि करिब जालंधरि पादे पाखिअ राहअ मोरि पाण्डिआ चादे। ध्रु०

नाम—(पद) कान्हपा (सिद्ध १३)।

समय—सं० ८९० के लगभग।

ग्रंथ—'चतुर्योगभावना' ग्रंथ तंजूर में है।

विवरण—यह महाशय उज्जैन के तंतुराय (कोरी) थे। जालंधर—

पाद के शिष्य होकर सिद्ध-सम्प्रदाय में हो गए। कण्हपा भी इनके गुरु थे। उन्हीं से इनके समय का पता लगता है। उपयुक्त ग्रंथ पुरानी मालवी या मगही में लिखा है। इनका जो उदाहरण नीचे दिया जाता है, वह चर्यागीति का है।

राग पटमंजरी

टालत मोर घर नाहि पड़वेषी, हाडी ते भात नाँहि निति आवेशी। ध्रु०
वेंग संसार बढ़हिल जाय, दुहिल दुधु कि बेंटे षमाय,
बलद विआएल गाविआ बाँझे, पिटा दुहिए एतिना साँझे।
जो सो बुधी सो धनि बुधी, जो सो चोर सोइ साधी,
निते निते षिआला षिहेषम जुझअ, ढेण्ढणपाएर गीत विरले बूझअ।

यह पद चर्यागीति में ढेंढनपाद के नाम से है, पर इस नाम का कोई सिद्ध नहीं हुआ। इसीलिये कुछ लोग इसे ललितपाद का मानते हैं।

नाम—(६४) मीनपा (सिद्ध ८)।

समय—सं० ८८० के लगभग।

ग्रंथ—'बाह्य तर बोधिचित्तबंधोपदेश' तंजूर में है।

विवरण—यह महाशय मछुए थे। इनका जन्म आसाम में हुआ था। इनके पुत्र 'मत्स्येंद्रनाथ' थे, जिनके शिष्य प्रसिद्ध महात्मा गोरखनाथ कहे जाते हैं। गोरखनाथजी के समय में मतभेद है। इनका पंथ आज भी भारतवर्ष में प्रस्तुत है, जिसके माननेवाले लाखों मनुष्य हैं। इनकी रचना का उदाहरण चर्यागीति से दिया जाता है।

उदाहरण—

कहंति गुरु परमार्थेर बाट, कम कुरंग समाधिक पाट।
कमल विकसिल कहिह ण जमरा, कमल मधु पिविवि धोके न भमरा।

नाम—(६६) आदेपा (सिद्ध ३२)

समय—सं० ९०० के लगभग।

ग्रंथ—तंजूर में इनका कोई ग्रंथ नहीं मिला।

विवरण—श्रावस्ती के चित्रकार-कुल में उत्पन्न हुए थे। सिद्ध कण्हपा के शिष्य थे। उन्हीं से इनके समय का पता लगता है। यहाँ भाँति से इनकी एक गीति लिखी जाती है—

राग मल्लारी ३५

एत काल हाँउ अच्छिलेँ स्वमोहें, एवें मइ बुझिल सद्गुरु बोहें। ध्रु०
एवें चिअराअ मकु णठा, गअण समुदे टलिआ पइठा। ध्रु०
पेखमि दह दिह सर्वइ शून, चिअ विहुन्ने पाप न पुण्ण। ध्रु०
बाजुले दिल मोहक्खु भणिआ, मइ अहारिल गअणत पणिआँ। ध्रु०
भादे भणइ अभागे लइआ, चिअराअ मइ अहार कएला। ध्रु०

नाम—(३) महीपा (महिल) (सिद्ध ३७)।
समय—सं० ९०० के लगभग।
ग्रंथ—वायुतत्त्व दोहा-गीतिका।

विवरण—यह महाशय मगध देश के शूद्र थे। इनके गुरु सिद्ध कण्हपा थे। तंजूर में इनका ऊपर लिखा ग्रंथ मिलता है, जो पुरानी मगही का है। यह महीपा और महीधरपाद एक ही जान पड़ते हैं। चर्यागीति से, जो भिन्न भिन्न कवियों की रचनाओं का एक संग्रह है, इनकी गीति लिखी जाती है। इनका समय कण्हपा के आधार पर लिखा गया है।

राग भैरवी

तिनिएँ पाटे लागेलि रे अणह कसण घण गाजइ,
तासुनि मार भयंकर रे सअ मण्डल सएल भाजइ।
मातेल चीअ-गअन्दा धावइ निरन्तर गअणन्त तुसें घोलइ। ध्रु०
पाप पुण्य बेणि तिड़िअ सिकल मोड़िअ खम्भाठाण
गअण टाकलि लागि रे चित्त पइठ णिवाणा। ध्रु०
महारस पाने मातेल रे तिहुअन सएल उएखी
पंच विषय रे नायक रे विपख को बीन देखी। ध्रु०

भर रवि किरण गतापे रे गमणागणं गइ पइठा,
भणति मंहित्ता मंहिप्पा महं एथु बुड़ ते किंपि न दिठा। ध्रु०

नाम—(३) कमलपाद (सिद्ध ३०)।

समय—सं० ८१२ के लगभग।

ग्रंथ—(१) असंबंध दृष्टि, (२) असंबंध-सर्ग दृष्टि, (३) चर्यागीतिका।

विवरण—उड़ीसा के राजवंश में इनका जन्म हुआ था। भिक्षु होकर त्रिपिटक के पंडित हुए। इनके गुरु का नाम घंटापाद था। सिद्ध राजा इंद्रभूति इनके शिष्य थे। उपर्युक्त ग्रंथ प्राचीन उड़िया या मगही में लिखे हुए हैं।

उदाहरण—

राग देशकी ८

"सोने भरिती करुणा नावी,
रूपा थोइ महिके ठावी। ध्रु०
वाहतु कामलि गअण उवेसें,
गेली जाम बहु उइ काइसें। ध्रु०
खुंटि उपाडी मेलिलि काच्छि,
वाहतु कामलि सद्गुरु पुच्छि। ध्रु०
मांगत चहिले चउदिश चाहअ,
केडु आल नहि कें कि वाहय के पारअ। ध्रु०
वाम दाहिण चापी मिलि मिलि मागा,
वाटत मिलिलि महासुह संगा।" ध्रु०

नाम—(४) जालंधरपाद अथवा आदिनाथ (सिद्ध ४६)।

समय—सं० ८२७ के लगभग।

ग्रंथ—(१) ... ...री गीत, (२) ...

विवरण—नगर भाग देश (?) के ब्राह्मण-वंश में उत्पन्न हुए थे। पीछे धर्मपाद के शिष्य होकर भिक्षु हो गए। इनके शिष्य प्रसिद्ध मत्स्येंद्रनाथ, कण्हपा और तंतिपा थे। कण्हपा महाराज देवपाल (सं० ८६६-६०९) के समय में हुए थे। उन्हीं से इनके समय का पता लगता है।

उदाहरण—

राग निरद, ताल मांठ ७८

"श्रलय निरंजन चंद्र प सद्गु
पद्म गगन कमल ने साधना
शून्यता विराजित रागश्री चिय
वज्रपात विन्दु मगम जो दिना। ध्रु०
नमामि निराश्रय निरंतर
स्वभाव हतु स्फुरन सज्जापिता,
मरद चंद्र-समय तेज प्रकाशिता
जरज-चंद्र समय ध्याविता। ध्रु०
खड्ग पार्गाविर सादिर चक्रवर्ति
मेरु-मंडल भ्रमशिता
निमल हृदयार चक्रवर्ति ध्याविते
श्रद्वितिमितजय मय साधना। ध्रु०
आनंद परमानंद विरमा
चतुरानंद जे समया
परमा विरसा मॉंसे र न ग्रादिर
महासुख सुगत सनद भाविता। ध्रु०
हे वज्रधर चक्र श्रीचक्रसंवर
अनंत कोटि सिद्ध पारगता,

श्रीहतवर्दियाने पूर्ण गिरि,
जालधरि प्रभु महासुख-जातहुँ।' ध्रु०

नाम—(३/१) कंकणपाद (सिद्ध ८६)।

समय – स० ९१० के लगभग।

ग्रं ५—चर्यादोहाकोषगीतिका। ग्रंथ तजूर में मिला है।

विवरण—विष्णुनगर के राजवंश में उत्पन्न हुए थे, और कंबलपा-वाले परिवार के सिद्ध थे। चर्यागीति से उदाहरण दिया जाता है। कंबलपाद ९१२ के थे। इससे इनका समय ९१० के लगभग समझ पड़ता है।

सुने सुन मिलिश्रा जबें, सकल धाम उइश्रा तबें। ध्रु०
श्राच्छु हुँ चउक्खण सबोही, माझ निरोह श्रणु श्रर बोही। ध्रु०
बिंदु-णाद णहिं ण पइठा, श्रण चाहते श्राण विणठा। ध्रु०
जथा श्राइलेसि तथा जान, माझें थाकी सकल निहाण। ध्रु०
भणाई कंकण कल एल सादें, सब विच्छुरिल तथता नादें। ध्रु०

नाम—(६) तिलोपा (सिद्ध २२)।

समय—स० ९५५ के लगभग।

ग्रंथ—अंतरबाह्यविषयनिवृत्ति भावनाक्रम, करुणाभावनाधिष्ठान, दोहा-कोष और महामुद्रोपदेश।

विवरण—इनका जन्मस्थान भगुनगर (? बिहार) था। यह महाशय गुह्यपा के शिष्य तथा कण्हपा इनके दादा-गुरु थे। विक्रम शिला के सिद्ध नारोपा इनके पट्ट शिष्य थे। इनके ऊपर लिखे मगही भाषा के ग्रंथ तजूर में सुरक्षित हैं।

उदाहरण—

■ सवेअन ततफल, तिलोपाए भणति ;
जो मण गोअर गोइया, सो परमथे न होंति।

नाम—(३/७) नाड(नारो)पा (सिद्ध २०)।

समय—सं० १०३० के लगभग।

ग्रंथ—(१) नाडपंडितगीतिका, (२) वज्रगीति।

विवरण—इनके पिता काश्मीर निवासी ब्राह्मण थे। वह मगध में आए थे, वहीं इनका जन्म हुआ। बहुत बड़े विद्वान् होकर सिद्ध तिलोपा के शिष्य हो गए। नालंद विद्यालय में शिक्षा पाई थी। विक्रमशिला में पूर्व द्वार के महापंडित हुए। इनका देहावसान सं० १०४६ में होना कहा जाता है। उदाहरण स्वरूप इनकी कोई रचना नहीं मिलती। चर्यागीति में ताडकपाद के नाम से एक पद मिलता है, पर इस नाम के कोई सिद्ध नहीं हुए। संभवतः यही ताडकपाद नाडकपाद हैं। वह गीति नीचे दी जाती है—

अपणे नाहिं सो काहेरि शंका
ता महामुदेरी टूटि गेलि कंखा। ध्रु०
अनुभव सहज मा भोलरे जोइ,
चाऊकोटि विमुका जइसो तइसो होइ। ध्रु०
जइसने अछिले स तइसन अच्छ
सहज पिथक जोइ भाँति माहो वास। ध्रु०
बाड कुरंड सतारे जाणी,
वाक थातीस काँहि बखाणी। ध्रु०
भणइ ताडक एथु नाहि अवकाश
जा बुझइ ता गलें गलपाश। ध्रु०

नाम—($\frac{३}{०श्री}$) जयानंत (जयनंदी) पाद (सिद्ध २८)।

समय—सं० १०२० के लगभग।

ग्रंथ—तर्कमुद्गरकारिका और मध्यमकावतार टीका तंजुर में है। चर्यागीति से इनकी गीति नीचे लिखी जाती है।

विवरण—यह जाति के ब्राह्मण भागलपुर नरेश के मंत्री थे। इनके गुरु-शिष्य का पता नहीं लगता; अतः समय का भी ठीक

ज्ञात नहीं हो सका है। भाषा आदि से सं० १०२० के लगभग जान पड़ते हैं।

राग शबरी

पेखु सुअणे अदश जइसा,
अतराले मोह तइसा। ध्रु०
मोह विमुक्का जइ माणा,
तबे तूटइ अवणा गमणा। ध्रु०
नो दाढइ नौ तिमइ न छिज्जइ,
पेख मोअ मोहे बलि-बलि बाझइ। ध्रु०
छाअ माआ काअ समाणा,
वेणि पाखें सोइ विणा। ध्रु०
चिअ तथता स्वभावे षोहिअ,
भणइ जअनन्दि फुडअ अणण होइ। ध्रु०

नाम—(३) शांतिपा (रत्नाकर शांति) (सिद्ध १२)।

समय—सं० १०७० के लगभग।

ग्रंथ—सुखदु:खद्वयपरित्यागदृष्टि।

विवरण—यह महाशय मगध के ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। बहुत बड़े विद्वान् थे। सिद्धनाड़ोपाद का इनका संग रहा। कहा जाता है, सिद्धों में इनके बराबर कोई दूसरा पंडित नहीं था। महाराज महीपाल (१०३१ १०८६) के समय में विक्रम शिला, बिहार में पूर्व द्वार के पंडित बने। इनकी आयु १०० वर्ष से अधिक की कही जाती है। भोटका मत्स्यालोचवा इन्हा का शिष्य था, और तिब्बत के सर्वोत्तम कवि और सिद्ध ने सुन् भि ला रे पा (दीक्षा सं० ११३६, मृत्यु ११०६) इनके चेले थे। चर्यागीति से इनकी गीति लिखी जाती है—

राग रामक्री ८१

सय संवेयण सहअ निआरें ते अलक्ख लक्खयान जाइ ।
जेजे उजुवाटे गेला अनावाटा भइला सोइ । ध्रु०
धुने तुल मा होइ रे मूढा उजुवाट समारा
वाहभिअ एरुथाकु ण भूलह रामराय कथारा । ध्रु०
माआ मोहा समुदारें अत न बुझसि थाहा,
आगे नाव न भेला दीसय आति न पुच्छसि नाहा । ध्रु०
सुनापतर उह न दिसइ भाति न वासस्रि जाते,
एथा अद महासिद्धि सिज्झए उजुवाट जा अते । ध्रु०
वाम-दाहिण दो वाटाच्छाडा शांति बुलथेउ सकलिउ,
घाटन गुमा खड़तडि नो होइ आरिव बुझिअ वाट जाइउ । ध्रु०

राग शीवरी ३९

तुला धुणि धुणि आँसुर आँसु, आँसु धुणि धुणि णिरवर सेसु । ध्रु०
तउषे हरुअ ण पाविअइ, शांति भणइ किण सभावि अइ । ध्रु०
तुला धुणि धुणि सुने अहारिउ, पुन लइआ अपना चटारिउ । ध्रु०
बहल बढ दुइ मार न दिशअ शांति भणइ बालाग न पइसअ । ध्रु०
काज न कारण जएहु जयति, सँए संवेअण बोलथि सांति । ध्रु०

नाम—(१५) जज्जल ।

समय—सं० १३५७ ।

विवरण—महाराणा हम्मीरसिंह मेवाड़ के सेनापति थे ।

उदाहरण—

पय भरु दर मरु धरणि तरणि रह धुल्लिय झंपिय,
कमठ पिट्ठ टरपरिय मेरु मंदर सिर-कंपिय ।
कोह चलिय हम्मीर वीर गय-जूह सँजुत्ते,
किअउ कट्ठ आकंद मुच्छि म्लेच्छह के पुत्ते ।

पिंधउ दिढ़ सन्नाह बाह उप्पर पक्खर दइ ;
बंधु समदि रण धसउ सामि हम्मीर बअण लइ ।
उड्डुल णाह पह भमउ खग्ग रिउ सीसहि डारउ ;
पक्खर पक्खर ठेल्लि पेल्लि पव्वअ उप्फालउ ।
हम्मीर कज्जु जज्जल भणइ, कोहाणल मुह मह जलउ ;
सुलतान सीस करवाल दइ, तेज्जि कलेवर दिअ चलेउ ।'

यह उदाहरण प्राकृत पिंगल (रॉयल एशियाटिक सोसाइटी) में उद्धृत है ।

नाम—(५३) शेख सुल्तान, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १४२० ।

विवरण—यह सेनानाई के समकालीन कवि थे । मुसलमान होते हुए भी इन्होंने श्रीकृष्ण भक्ति पर भाव-पूर्ण रचनाएँ कीं । इनके अतिरिक्त क़ाज़ी मुहम्मद, ज़िंदा फ़क़ीर, सैयदहुसेन, बहादुर बाबा, लतीफ़शाह मुनीर, फ़ाज़िलख़ाँ, शाहबाग, सुलतानशाहिद, ग़ादिर, शेख मुहम्मद आदि मुसलमान हिंदी-कवि इस प्रांत में हो गए हैं ।

नाम—(५३) फरीद, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १४२० ।

विवरण—यह कवि शेख सुल्तान के साथी और सेननाइ के समकालीन थे । श्रीकृष्ण भक्ति पर इन्होंने अधिकांश रचनाएँ कीं ।

नाम—(५३१) चंपा दे रानी ।

रचना-काल—सं० १६२० के लगभग ।

कविता—शृंगार रस के स्फुट छंद ।

विवरण—यह बीकानेर नरेश राजा पृथ्वीराज की रानी तथा

जाता है यही सरनी थी। इनकी कविता राजस्थानी मिश्रित हिंदी में हुआ करती थी।

नाम—(१६४) मोहनदास।

रचना-काल—सं० १६५० के लगभग।

ग्रंथ—(१) मोरगवली, (२) दोहावली, (३) रागावली, (४) चित्रवरदान, (५) मरदनामा, (६) कवितावली, (७) सवैयावली।

विवरण—श्रीयुत भालेरावजी का कथन है कि यह कवि ग्वालियर राज्यांतर्गत तवरधार प्रांत के निवासी गोस्वामी तुलसीदासजी के समकालीन थे। आप मोहन पंथ नामक निर्गुणी मत के प्रतिपादक कहे जाते हैं। भालेरावजी महाशय को बहुत से ग्रंथ इन के प्राप्त हुए हैं।

(१८६) नाम—चतुर्भुज कवि, ओरछा।

जन्म-काल—अनुमानतः १६२० वि०।

कविता-काल— ,, १६५० वि०।

तत्कालीन महाराजा श्रीवीरसिंहदेव प्रथम के आश्रित।

उदाहरण—

सेत चमर चिलकत दंत झगमगत दगत दग,
सीर हलत तन झुलत खित चिल मिलत धरत पग।
श्रग करत मुख अमल वास नासा भ्रम भुल्लिय;
काल विकट हुल्लियह यान यह औसर कुल्लिय।
जपहि न राम 'चतुर्भुज' अचल, रहय सकज दिन दुरद पर;
सुमभद्द असुमभद्द समद्द फजर, हैं जनु सपर कि वे नरर।

सोरठा

अरे असिहा वीर, नेक न चितवत दोकरा,
पातक नमत शरीर, नय धारा मुख निकिसयाँ।

आतक्यो असपत्त उठिर त्रिरसिय सिय विय ,
दुवन देश दलमलन देश दच्छिन दिय कपिय ।
फिर कपिय गुजरात बहुर उत्तर [illegible] कप कर ,
थाल पीठ दे गयज देग अति ज्वाल विषम ऋर ।
अगवय देव दानव न कोइ, 'चत्रभुज' जग जहँ निजिपव ;
प्रमि टेक अवनि पग टेककर, धरम टेक ठढ्डिय भयव ।

नाम—(९६६) केशव मिश्र ।

रचना-काल—सं० १६७४ ।

ग्रंथ—जहाँगीरजसचंद्रिका ।

नाम—(९७१) महाराजा विक्रमाजीतसिंह, ओरछा-नरेश, ओरछा ।

कविता काल—सं० १६८० वि० ।

उपनाम 'लघु'

ग्रंथ—(१) लघु सतसई, (२) माधव लीला ।

उदाहरण—

तू मोहन उर बस रही, मोहन उर बस कौन ,
सब लीनें तो में रहै, तू उन ही चित लीन ।
ह जमुना जम ना जहाँ, जमुना नाम प्रकास ,
बाहुल शका न्हाइ तहँ, मिटे जमपुरी त्रास ।
जो जमुना जमु ना जहाँ, ना जम उर तेहि ठाँइ ,
विमल मना हरि रँग सना, हो जु अधन दुरदाइ ।

नाम—(९७१) शिवलाल मिश्र, ओरछा ।

कविता-काल—सं० १६८० वि०, जन्म सं० अनुमानतः १६६० ।
महाकवि बलभद्रजी के पौत्र ।

उदाहरण—

जाट१, जुलाहे२, जुरे, दरजी३, मरजी में मिल्यो चक चूकि चमारो४,
दीनन की कहु कौन सुनै, निमि यौम रहे इनहीं की धमारो।
को 'शिवलाल' को नाम सुनै रघुनाथ के द्वार पै कोऊ पुकारो
ऐसे बड़े करुणाकर को इन पातिन ने दरबार बिगारो।

नाम—(३०/१) सामल भट्ट, गुजरात प्रांत।

काल—सं० १६८१ १७४४।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—डॉ० ग्रियर्सन के कथनानुसार यह महाशय कवि नरसी मेहता के अनुयायी थे। आप रनिदास पटेल के आश्रित थे। इनकी दोहा, चौपाई छप्पय आदि गुजराती में की हुई ब्रज भाषा छंदों की रचना श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी की रामायण के ढंग पर है।

'चौपाई तुलसीदास की छप्पय सामलदास' इतनी ख्याति इनके रचित छप्पयों की है।

नाम—(३/१) साहजहाँ।

साहिजहाँ बिनवै प्रभु सों बलि रातिदैन रजाय तिहारी

इत्यादि अष्टक है।

समय—सं० १६८१ १७१५ तक। चाहे यह शाहजहाँ बादशाह हों चाहे किसी अन्य कवि ने उनके नाम पर अष्टक लिखा हो। दूसरा ही विचार पुष्ट समझ पड़ता है।

नाम—(३०/२) गुरुनारायण भट्ट, महाराष्ट्र देश।

काल—सं० १६८१।

विवरण—आप राजा शाहजी के यहाँ दरबारी कवि थे।

नाम—(३१/२) राजमल, आगरा।

---

१ जाट = धन्ना जाट। २ जुलाहे = कबीरदासजी। ३ दरजी = नामा दरजी। ४ चमारो = रैदास चमार।

ग्रंथ—समयसार।

रचना काल—सं० १६९३।

विवरण—मूल-ग्रंथ संस्कृत में है। लेखक ने इस ग्रंथ की हिंदी में पुर्दोयद्‌ टीका की है। शाहजहाँ के राज्य-काल में ग्रंथ का समाप्त होना पाया जाता है।

नाम—(१२०) भागीरथ, कोलारस (नरवर-राज्यांतर्गत)।

ग्रंथ—गौरव-मंत्र।

रचना-काल—१७ वीं शताब्दी का अंत।

विवरण—कवि ने क़ानूनगो होने के कारण अपने ग्रंथ में लगान संबंधी हिसाब का वर्णन दिया है।

नाम—(१२४) कृष्णदास, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७००।

विवरण—महाराष्ट्र प्रांत के प्रसिद्ध कवि जयराम शास्त्री के यह गुरु थे। कहा जाता है, मूल से इनका विवाह एक नाई की कन्या से हो गया था, जिसका उल्लेख 'भक्त-लीलामृत' नामक मराठी-ग्रंथ में पाया जाता है।

उदाहरण—

जसुमति-सुत नंदलाल, ब्रज की गैल डोलैं।
पीतांबर कछनि काछि, गोधन के संग जात,
फेंट मुरलि, मुकुट सीस, बन-बन पिय डोलै।
वृंदावन कुंज जात, गावत हरि कृष्णदास,
या छवि कछु कहि न जात, रसनामृत घोलैं।

नाम—(१३४) नेमदास।

समय—१७०० के लगभग।

ग्रंथ—शुक-रंभा-संवाद।

उदाहरण—

जाट१, जुलाहे२, जुरे, दरजी३, मरजी में मिल्यो चक चूकि चमारौ४

दीनन की बहु कौन सुनै, निसि द्यौस रहै इन्हीं को पत्यारौ।

जे 'शिवलाल' की बात सुनै रघुनाथ के द्वार पै कोउ पुकारौ;

ऐसे बड़े करुनाकर को इन पापिन ने दरबार बिगारौ।

नाम—(२/८) सामल भट्ट, गुजरात प्रांत।

काल—सं० १६८४ १७७७।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—डॉ० ग्रियर्सन के कथनानुसार यह महाशय कवि नरसी मेहता के अनुयायी थे। आप रविदास पटेल के आश्रित थे। इनकी दोहा, चौपाई, छप्पय आदि गुजराती में की हुई ब्रज भाषा छंदों की रचना श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी की रामायण के ढंग पर है।

'चौपई तुलसीदास की छप्पय सामलदास' इतनी ख्याति इनके रचित छप्पयों की है।

नाम—(२/१०) साहजहाँ।

साहिजहाँ बिनवै प्रभु सों बलि रावरी नीन रजाय तिहारी

इत्यादि अष्टक है।

समय—सं० १६८४ १७१५ तक। चाहे यह शाहजहाँ बादशाह हों चाहे किसी अन्य कवि ने उनके नाम पर अष्टक लिखा हो। दूसरा ही विचार पुष्ट समझ पड़ता है।

नाम—(२/१०) गुरु नारायण भट्ट, महाराष्ट्र देश।

काल—सं० १६८५।

विवरण—आप राजा शाहजी के यहाँ दरबारी कवि थे।

नाम—(२/११) राजमल, आगरा।

---

१ जाट = धन्ना जाट। २ जुलाहे = कबीरदासजी। ३ दरजी = नामा दरजी। ४ चमारौ = रैदास चमार।

ग्रंथ—समयसार।

रचना-काल—सं० १६६३।

विवरण—मूल ग्रंथ संस्कृत में है। लेखक ने इस ग्रंथ की हिंदी में पद्यबद्ध टीका की है। शाहजहाँ के राज्य-काल में ग्रंथ का समाप्त होना पाया जाता है।

नाम—(३२०) भागीरथ, कोलारस (नरवर राज्यांतर्गत)।

ग्रंथ—खेत-सार।

रचना-काल—१७ वीं शताब्दी का अंत।

विवरण—कवि ने कानूनगो होने के कारण अपने ग्रंथ में ज़मीन-संबंधी हिसाब का वर्णन दिया है।

नाम—(३२४) कृष्णदास, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७००।

विवरण—महाराष्ट्र प्रांत के प्रसिद्ध कवि जयराम शास्त्री के यह गुरु थे। कहा जाता है, भूल से इनका विवाह एक नाई की कन्या से हो गया था, जिसका उल्लेख 'भक्त-लीलामृत'-नामक मराठी ग्रंथ में पाया जाता है।

उदाहरण—

> जसुमति-सुत नदलाल ब्रज की गैल डोलै।
> पीतांबर कछनि काछि, ग्वालन के संग जात,
> फेर मुरलि, मुकुट सीस, बन-बन बिच डोलै।
> गुंजादल भूषन जात, गावत हरि कृष्णदास,
> या छबि कछु कहि न जात, रसना-मृत घोलै।

नाम—(३२५) नेमदास।

समय—१७०० के लगभग।

ग्रंथ—शुक रंभा-संवाद।

विवरण—यह रामसुतों में दादूदयाल के शिष्य रज्जबदास के शिष्य थे।

नाम—(३१६) सुंदर।

ग्रंथ—द्वादश मासा वर्णन।

विवरण—श्रीयुत भालेरावजी का कथन है कि आप ग्वालियर-निवासी तथा बादशाह शाहजहाँ के समकालीन थे, और उक्त ग्रंथ (२४ छंद) उन्हें प्राप्त हुआ है। काव्य उच्च कोटि का कहा जाता है।

नाम—(३१७) अखा, ग्राम जेतलपुर (अहमदाबाद) प्रांत गुजरात।

रचना काल—सं० १७०५।

ग्रंथ—(१) अखेगीता सं० १७०५, (२) पंचीकरण, (३) ब्रह्मलीला, (४) अनुभवबिंदु, (५) चित्त विचार-संवाद तथा कुछ हिंदी-कविताएँ।

विवरण—आप जाति के सुनार थे। कहा जाता है इनके एक कुटुंबी अल्प काल के मुख में पड़ गए, तब इन्होंने वैराग्य धारण करके जयपुर की ओर गुरु-दीक्षा ली। इसके पश्चात् आप काशी को गए, और वहाँ रहकर आपने महात्मा ब्रह्मानंदजी से उपनिषद् और वेद-शास्त्रों का अध्ययन किया। इन्हीं की श्रेणी के एक और कवि प्रीतम नाम के गुजरात में हो गए हैं। महाशय भालेराव लिखित आपका संक्षिप्त चरित्र अब 'संत चरित्र-माला' के नाम से, पुस्तक के रूप में, छप चुका है। इनकी कविता 'अखानी वाणी' शीर्षक से साहित्य-वर्धक मंडल से प्रकाशित हो चुकी है। आपकी कविता सात्त्विक हुआ करती थी। यह महात्मा कवि प्रेमानंद के समकालीन थे। कविता छंदोभंग-युक्त साधारण है।

उदाहरण—

जावत है सब लोक यहाँ से, आवत नहिं जन कोउ फिरी,
राव राजा से बडे भट पंडित, कोऊ न दे पट को पतरी।
धन, दारा, सुतादिक रहत परे, मानीनता देह सग धरी,
इतनी तो अपने नयन ते देखि, और 'अपया' मन ने पकरी।

नाम—(३४७) हरिसिंह महाराजा।

ग्रंथ—उपा हरण।

रचना-काल—सं० १७०५।

विवरण—यह महाशय गहलोतवंशीय महाराणा पूरनमल के पुत्र थे।

नाम—(३४८) रूपसिंह (महाराजा)।

जन्म-काल—सं० १६८९ बयेरा ग्राम में।

रचना-काल—१७१०।

विवरण— संवत् १७०१ में महाराणा हरीसिंहजी के भतीजे होने के कारण किशनगढ़ राज्य के अधिकारी हुए। वल्लभाचार्यजी के शिष्य गोपीनाथजी के शिष्य थे। शाहजहाँ के दरबार में आपका बड़ा मान था। दारा के सहायक होने के कारण धौलपुर के युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए। आप होने के अतिरिक्त कविता प्रेमी तथा स्वयं कवि थे।

उदाहरण—

बन तें आवत धेनु चरावत।
वेनु बजाय रिझाय जुवति जन गौरी रागहिं गावत।
वारिज बदन लाल गिरिधर को निरखि सखी सचुपावत।
रूप कगच परत प्यारी पर रूपहि मन अति भावत।

नाम—(३४९) केहरि, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—१७१०।

विवरण—ये राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। उनके गुण-गान में इन्होंने सुन्दर छंद लिखे।

नाम—(३५६) गयद कवि और सुधार कवि, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—१७१०।

विवरण—ये दोनों राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। गयद कवि के नाम का उल्लेख सूदन कवि ने 'सुजान-चरित्र' में किया है।

नाम—(३५६) चतुरद ठाकुर, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे।

नाम—(३६३) बलभद्र कवि महाराष्ट्र प्रांत।

कविता-काल—१७१०।

विवरण—आप राजा शाहजी के यहाँ एक दरबारी कवि थे। आपको राजा शाहजी ने पारितोषिक में एक हाथी दिया था। इस कवि का वर्णन यों पाया जाता है—

> एक बड़ो बलभद्र कवि रह्यौ शाह के साथ,
> उदु गन नृप के प्रीति का लेन लगायो हाथ।

आपकी समस्या-पूर्ति में कवि जयरामजी ने राजा शाहजी का मीर जुमला से युद्ध होने का इस प्रकार वर्णन किया है—

> बीस सहस असवार वर मिर जुमला के संग,
> जग करत रण रंग मों उड़ यों पायो भंग।

नाम—(३६४) विश्वंभर भट्ट, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—इन्होंने अपने आश्रयदाता राजा शाहजी का तिलगाना,

कलिंग, कर्नाटक आदि की चढ़ाइयों का 'मधुमाधवी' और 'कलश' छंदों में वर्णन किया है।

उदाहरण—

अद्भुत नरपति शाह, देखि भुव प्रबल बाहुबल ;
मसात जित तित ताल और ममेत शत्रु-दल।

नाम—(३६४) रघुनंदन, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी और व्रजभाषा के कवि थे।

नाम—(३६२) रघुनाथ व्यास, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। जयराम कवि ने इनकी समस्या पूर्ति इस प्रकार की थी—

मालस की बाट लखै बार-बार बावरी-सी,
वैरिन की वधू फिरै बेरन के बन मैं।

नाम—(३६१) शिवदास ठाकुर, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवियों में थे।

नाम—(३६१) श्याम गुसाईं, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। इनके इस दोहे को

"श्याम गुसाईं यों कही, सब रंगि मद्दाय,
अर्थ चित्र कछु कवि कहौ, जापर रीझै शाह।"

विवरण—ये राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। उनके गुण-गान में इन्होंने फुटकर छन्द लिखे।

नाम—($\frac{३}{१}$) गयन्द कवि और मुरार कवि, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—१७१०।

विवरण—ये दोनों राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। गयद कवि के नाम का उल्लेख सूदन कवि ने 'सुजान-रासा' में किया है।

नाम—($\frac{३}{१}$) चतुरद ठाकुर, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे।

नाम—(३६३) बलभद्र कवि महाराष्ट्र प्रांत।

कविता-काल—१७१०।

विवरण—आप राजा शाहजी के यहाँ एक दरबारी कवि थे। आपको राजा शाहजी ने पारितोषिक में एक हाथी दिया था। इस कवि का वर्णन यों पाया जाता है—

एक बड़ो बलभद्र कवि रह्यो शाह के साथ,
उड़ु गज नृप के प्रीति का लेन लगायो हाथ।

आपकी समस्या पूर्ति में कवि जयरामजी ने राजा शाहजी का मीर जुमला से युद्ध होने का इस प्रकार वर्णन किया है—

बीस सहस असवार वर मिर जुमला के संग
जग ज्वत रण रग मों उड़ यों पायो भंग।

नाम—($\frac{३}{१}$) विश्वंभर भट्ट, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—इन्होंने अपने आश्रयदाता राजा शाहजी का तिलगान,

कवि जयराम ने समस्या समझकर इस प्रकार पूरा किया था—

"नै तरवारि गही कर वारिज चारि दिशा वरि राजन भागे,
शाहबली सब भानु को जगु, राहु शशी बस राहन लागे।"

नाम—(३६८) सुखलाल, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। इन्होंने शाहजी का मीर जुमला के साथ युद्ध और रायलू की चढ़ाई का वर्णन किया है।

उदाहरण—

हरिचंद नैन मोह बैन बोलियत चहै,
सुनो लाह मकरंद अस कलरा की।
केन्द्र कहावते सो सब ही करन लागे,
डारत तरंग पीत पात मानो घन की।

नाम—(४६१) अज्ञात।

रचना-काल—१७१२।

ग्रंथ—(१) राठौड़वचनिका, (२) राठौड़ कुल-कवित्त।

विवरण—यह डिंगल भाषा काव्य है। सं० १७१२ में जालौन के राठौर रतनसिंह का जो युद्ध औरंगज़ेब से हुआ था, उसका वर्णन ग्रंथ में किया गया है। इसमें हिंदी छंदों के अतिरिक्त कुछ गुजराती पद्य भी हैं। दूसरे ग्रंथ में राठौर-वंश की उत्पत्ति, उसके गुरु प्रवर, कुलदेवी इत्यादि का उल्लेख है।

नाम—(४६४) ग्वाल कवि।

रचना-काल—सं० १७१९।

ग्रंथ—केशव-बावनी।

विवरण—इन्होंने उक्त ग्रंथ अपने गुरु जैन-जती श्रीकेशवाचार्य के नाम से बनाया है। ग्रंथ छप्पय छंदों में है।

नाम—(४११०) मानसिंह, महाराष्ट्रदेश।

समय—सं० १७१७।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—आप श्रीशिवाजी महाराज के समकालीन थे। महाराष्ट्र भालेरावजी का कथन है कि आपकी बहुत-सी हिंदी-कविता उनके पूना निवासी मित्र मुजूमदार के संग्रह में है। यह कवि संभवतः नाथ पंथी थे।

उदाहरण—

बिगरी कोन सुधारे रे, नाथ बिन बिगरी कौन सुधारे रे।
धनी धनी का सब कोइ साथी, बिगरे काम न आवै रे।
भरी सभा में लज्जा राखी, दीनानाथ गुसाईं रे।
भली बुरी यह दोनो बहिनें परंपरा से आईं रे,
नाथ जालंदर मुद्रावाले 'मानसिंह' जस गाइ रे।

नाम—(४११३) जगन्नाथ जोशी, जैसलमेर (मारवाड़)।

रचना-काल—सं० १७१८।

ग्रंथ—कोक-भूषण (कामशास्त्र)।

विवरण—आपने उक्त ग्रंथ जैसलमेर के महाराजा श्रीअमरसिंहजी की आज्ञा से बनाया।

नाम—(४११४) बख्तावरसिंह, सकेसर, (खुरासान देश के अंतर्गत)।

ग्रंथ—राम विनोद।

रचना-काल—१७२०।

इस विषय में कवि ने इस प्रकार उल्लेख किया है—

"गगन पाणि फुनि दीप शशि, सर तिथि मृगसर मास,
शुक्लो पक्ष त्रयोदशी, बुद्धवार दिनु जास।"

विवरण—ग्रंथ में वैद्यक का कविता बद्ध वर्णन है।

नाम—(४६७) लाला दे, (बीकानेर की रानी)।

रचना-काल—सं० १७२७ के लगभग।

कविता—स्फुट छंद।

विवरण—यह बीकानेर के राजा पृथ्वीराज की रानी थी। इन्होंने अपने पति से ही वीर-रस की कविता करनी सीखी थी। कहा जाता है, एक समय जब चित्तौड़ाधीश राणा प्रताप इनके पति राजा पृथ्वीराज के अनुरोध से बादशाह अकबर के साथ युद्ध करने को उद्यत हुए थे, तब इन्होंने अपने पति के पास निम्न लिखित दोहा लिख भेजा था—

"पति जिद की पतसाह सूँ यहै सुनी मैं आज ;
कहँ पातल अकबर कहाँ, करियो बड़ो अकाज।'

राजा पृथ्वीराज को इनसे उत्कट प्रेम था। और कहा जाता है, इनकी अकाल मृत्यु हो जाने पर उक्त राजा को अत्यंत दुःख हुआ, और उन्होंने आग पर पकाई रसोई खाना छोड़ दिया।

नाम—(४६८) रामसुतात्मज, महाराष्ट्र।

काल—सं० १७२६।

ग्रंथ—गोपीचंदाख्यान।

विवरण—आप नाथ पंथी साधु थे। ग्रंथ अनेक छंदात्मक है। इसमें [illegible] सर्ग हैं, और प्रत्येक छंद में मराठी हिंदी की युग्म रचनाएँ हैं।

नाम—(४६९) गणेश महाराष्ट्र देश।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा कविता।

विवरण—कहा जाता है, आप भूषणजी का महाराज शिवाजी के दरबार में सम्मानित होना सुनकर उक्त महाराज के दरबार में पहुँचे थे। आपकी बहुत थोड़ी कविता उपलब्ध हुई है।

उदाहरण—

राज मो राज सिवराज महराज सब
साज मे भूप में आज देखे,
सुरत से सार दीदार भरि जान के,
मदन से सर्व सौंदर्य रेखे।
बरन्त के तरत सारूव खुशवक्त
दिनबख्त के धर्म सत्कर्म साठे,
धीर गंभीर चेयूर मणि मौर वे
हृदय से बदते सब मराठे।

नाम—(४६३) तुलसीदास, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७३०।

विवरण—यह शिवाजी के समकालीन थे। इन्होंने सिंहगढ़ विजय का वर्णन पँवाड़ा में किया है।

नाम—(४६७) शिवराम कल्याणकर, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७३०।

विवरण—यह पूर्णानंद के शिष्य और समर्थदासजी के समकालीन थे।

उदाहरण—

हुकुम साहिबा का, हम तो चोपदार बाँका,
ब्रह्मा, विष्णु, महेशा, प्रभु का अवतार खासा,
दश चारो पर सत्ता, ब्रह्मा सत्यलोक का दाता,
पूर्ण गुरु शिवराम बंदा, बंदगी कर ले ये खादा।

नाम—(४६०) जगन्नाथ।

कविता-काल—सं० १७२५।

विवरण—यह औरंगज़ेब बादशाह के समकालीन, साधु पुरुष और फ़ारसी के ज्ञाता थे। कहा जाता है, उक्त शाह इनकी भेंट से प्रसन्न हुआ था।

उदाहरण—

चलो भाई, दत्तनगर कोई आवेगा, आवेगा, सुख पावेगा।
आवेगा, पछतावेगा, जम के हाथ बिकावेगा।
सत्यलोक से आगे चलना, वैकुंठ में नाहीं रहना,
कैलास को पीछे डालना, गुरु के पीछे पीछे चलना।
निराकार के तख्त सँवारे, दत्त निरंजन राजा,
आत्माराम कहे घर अपना, बाजे अनहद बाजा।

नाम—(४६३) नाथस्वामी, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—पुष्करगहज़ारा (हिंदी-ग्रंथ)।

कविता-काल—सं० १७२५।

विवरण—संभवत यह नाथ पंथी साधु थे।

नाम—(४६४) बयानाई महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७२५।

विवरण—यह समर्थदासजी की शिष्या थी। इनकी कविताएँ भक्ति भाव से पूर्ण हैं।

उदाहरण—

बाग रँगीला महल बना है,
महल बीच झूलना झुला है।
इस झुलने पर झूलो भाई,
जनम-मरन की भूल न आई।

ग्रंथ—नासकेतु उपाख्यान।

रचना काल—सं० १७३४।

नाम—(४६०) प्रेमानंद, उपनाम प्रेमसखी, गुजरात प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—इनकी कविताएँ प्रेम-रस-पूर्ण हुआ करती थीं। आप कवि सामल भट्ट (सं० १६८४-१७४४) के समकालीन तथा सहजानंद स्वामी के शिष्य थे। मुख्यतः इनकी रचनाएँ गुजराती भाषा में होने के कारण उस प्रांत के यह एक महान् कवि कहे जाते हैं। अभिमन्यु आख्यान नामक ग्रंथ में इनका एक हिंदी पद पाया जाता है।

नाम—(४६१) अज्ञानदास महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—मराठी हिंदी मिश्रित पँवाड़े।

कविता काल—सं० १७१६।

विवरण—यह गाधली जाति के थे। राजपूताने के भाट चारणों की तरह महाराष्ट्र प्रांत में इस जाति के लोग वीर तथा शृंगार-रस-पूर्ण पँवाड़े और लावनियाँ गाया करते थे। इन्होंने अफ़ज़लख़ाँ के वध का पँवाड़ा महाराज शिवाजी और उनकी माता को सुनाया था।

उदाहरण—

अफ़ज़ल—"तू तो कुनबी का छोकरा।

शिवाजी— तू भी भगरनी का छोरा

शिवाजी सरजा पर लाया तोरा

× × ×

अव्वल जाति का भगरी,

तू तो करता दुकानदारी।"

नाम—(४६२) आत्माराम, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७३२।

विवरण—यह औरंगज़ेब बादशाह के समकालीन, साधु पुरुष और फ़ारसी के ज्ञाता थे। कहा जाता है, उक्त शाह इनकी भेंट से प्रसन्न हुआ था।

उदाहरण—

चलो भाई, दत्तनगर कोइ आवेगा, आवेगा, सुख पावेगा।
जावेगा, पछतावेगा, जम के हाथ बिकावेगा।
सत्यलोक से आगे चलना, बैकुंठ में नाहीं रहना,
कैलास को पीछे डालना, गुरु के पीछे पीछे चलना।
निराकार के तख्त सँवारे, दत्त निरंजन राजा,
आत्माराम कहे घर अपना, बाजे अनहद बाजा।

नाम—(४६३) नाथस्वामी, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—शृंगारगहवारा (हिंदी ग्रंथ)।

कविता-काल—सं० १७३२।

विवरण—संभवतः यह नाथ पंथी साधु थे।

नाम—(४६३) वयाबाई महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७३२।

विवरण—यह समर्थदासजी की शिष्या थीं। इनकी कविताएँ भक्ति भाव से पूर्ण हैं।

उदाहरण—

बाग रँगीला महल बना है;
महल बीच झूलना झुला है।
इस झुलने पर झूलो भाई;
जनम-मरन की भूल न आई।

दासी भया कहे गुरु-भय्या ने ,
गुरुकहँ सुझाया मोह सुलाने ।

नाम—(४६३) मन्यलिंग, महाराष्ट्र देश ।

काल—सं० १७२६ ।

विवरण—आपकी रचना मिश्रित है ।

नाम—(४६८) मानसिंहजी, (महाराजा) कृष्णगढ़ ।

जन्म—सं० १७१२, भादों सुदी ६ को मांडलगढ़ में ।

रचना-काल—सं० १७२७ ।

विवरण—महाराज रूपसिंहजी के पुत्र तथा कवि थे । आपने शाहज़ादे मुअज़्ज़म के साथ कलकत्ते की यात्रा की । महाकवि वृंद का आप विशेष सम्मान करते थे । तैलंग ब्राह्मण भट्ट विट्ठलनाथजी से आपने 'सम्प्रदाय-कल्पद्रुम' की रचना कराई ।

नाम—(४६४) रायमल ।

ग्रंथ—आदिपुराण ।

रचना काल—सं० १७६७ ।

विवरण—ग्रंथ में जैनतीर्थंकर आदिनाथजी का चरित्र वर्णित है । यह एक विशाल जैन-साहित्य-संग्रह है ।

नाम—(४६६) केशवस्वामी भागानगरकर, हैदराबाद (निज़ाम) ।

ग्रंथ—एकादशी चरित्र एवं स्फुट ।

कविता-काल—सं० १७२६ ।

विवरण—यह रामदासजी (शिवाजी के गुरु) के समय के साधु-पंचायतन में से एक थे । इनके पिता आत्माराम पंत, तानाशाह नामक कुतुबशाह के कारबारी थे (देखो विनोद द्वि० भाग, पृष्ठ ४३६) ।

उदाहरण—

पद

बच्चा धरले विवेक, सबमें सब माँहि एक
अपने रूप में अपनी माया, प्रपंच मृग जाल देख।
यही देह, जीव शील में, नाना देव अनेक।
निगुण सो यह कछु नहिं भावै, केशव कहत अलेख।

नाम—(५९०/१) रूप, मेड़ताग्राम, मारवाड़।

रचना-काल—सं० १७२६।

ग्रंथ—रस-रूप (नायिका भेद)।

विवरण—आप पुष्करणे ब्राह्मण, रामदास के पुत्र थे।

नाम—(५९८/१) भैरव अवधूत, उपनाम ज्ञानसागर, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—ज्ञानसागर।

कविता-काल—सं० १७५०।

मृत्यु-काल—सं० १८००।

विवरण—यह नागाजी के समकालीन कवि थे। सन्यास लेने के बाद इन्होंने अपना नाम ज्ञानसागरेंद्र रक्खा। यह वेदान्ती और ब्रह्मनिष्ठ थे।

उदाहरण—

मंगल मूरति नाचत आवे, कोटि सूर्य-सम तेज।
विकसति, ज्योति से ज्योति मिलावे,
अनहद बाजत सबही बाजे, सोहं तार सुनावे।
ज्ञान शिव गुरु सागर अवधूत आतमभाव बतावे,
मंगल मूरति नाचत आवे।

नाम—(५११/५) विद्याधर।

ग्रंथ—विद्याविलास।

नाम—(५२६/क) आनंदराव, तंजोर।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७५०।

मृत्यु-काल—सं० १७८०।

विवरण—कहा जाता है, शिवाजी के पिता को क़ैद करने के उपलक्ष में इनको बीजापुर-राज्य से धरधा नामक ग्राम जागीर में दिया गया था। मराठी के अच्छे कवि होते हुए भी इन्हें हिंदी-कविता से प्रेम था।

नाम—(५२७/क) गिरिधर, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—सीता-स्वयंवर एवं स्फुट।

कविता-काल—सं० १७५०।

विवरण—यह रामदासजी की शिष्या वेणूबाई के शिष्य थे। भालेरावजी के कथनानुसार इनके रचे हुए ग्रंथों की संख्या ४० और स्फुट २४,००० छंद हैं।

नाम—(५६०) गोविंददास, मेरठ।

ग्रंथ—छंद शास्त्र।

रचना-काल—सं० १७५० के लगभग।

विवरण—इनके ग्रंथ में दस्मेर पताका आदि पिंगल-शास्त्र के उदाहरण हैं।

नाम—(५५३) वल्लभ (सुकवि), कृष्णगढ़।

कविता-काल—सं० १७५० के लगभग।

ग्रंथ—वल्लभ मुक्तावली, वल्लभ विलास।

परिचय—आप वृंदजी के पुत्र तथा नागरीदासजी के शिष्य थे।

उदाहरण—

बन-बन बागन सौं बागनी कहत ऐसे,
कोऊ आत प्यारो जतु कतु दुरा पाँवगे ,

सुनि है जो माननद महाबली राजसिंह,
ताही छिन तुरत तुरग चढ़ि धावैंगे ।
नख जे हरारे ताकों पहिरेंगे यारे पच,
प्रान जे तिहारे यमपुर पहुँचावगे ,
उधरै गो चरम कहावैंगे बाघम्बर,
ताहि कोई जोगिया डिगयर बिछावैंगे ।

नाम—(५३०/१६) मदनमोहन ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

रचना-काल—१८वी शताब्दी के मध्य-काल के लगभग ।

विवरण—इनकी रचना में अन्योक्तियों की मुख्यता है ।

उदाहरण—

रे तमचुर चितचोर भोर किन बोलई,
वृंदावन की कुंजनि केलि कलोलई ।
कुजन-कुजन फिरत मुशब्द सुनाइयो,
प्रीतम नैननि लागे जग्र जगाइयो ।
उरन सो उर, भुजन सो भुज लग, सोवति चैन सो,
अधर अमृत पियत लटके नैन लटरे मैन सो ।
अलक अलकनि मौंक उरझी भाल लाल गुलाल सो,
चद सों मजचद उरझे अ ग अंग गुपाल सो ।

नाम—(५३०/१३) मध्व मुनीश्वर, महाराष्ट्र प्रात ।

ग्रंथ— स्फुट ।

कविता-काल—सं० १७५० ।

मृत्यु-काल—सं० १७६१ ।

विवरण—कहा जाता है, यह शिवाजी के सेनापति कन्होजी

थाने के गुरु थे। अमृतराय कवि इनके शिष्य थे। इनका असली नाम महादेव या त्र्यंबक बतलाया जाता है।

उदाहरण—

भज मन शंकर भोलानाथ।
एकहि लोटा भर जल चाहे, चावल बेल के पात;
वाएँ गौरि, जटा में गंगा, महिमा बरनि न जात।
धरे बघंबर साहं बिशम्बर, लिए त्रिशूलहि हाथ,
अंग विभूति, मसान में खेलत, सच्च मुनीश्वर साथ।

नाम—(५३०/१८) रामचंद्र।

ग्रंथ—भाव दीपक।

रचना-काल—सं० १७५०। इस विषय में कवि ने स्वयं लिखा है—

"एक सहस्र सत्रसत ऊपर और पचास,"

विवरण—ग्रंथ का विषय तत्त्व ज्ञान है।

नाम—(५६१/५) दिनकर, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्वानुभव दिनकर एवं स्फुट।

कविता-काल—सं० १७५३।

विवरण—इन्होंने अपने पिता नरहरि से शिक्षा पाई थी। कहा जाता है, १२ वर्ष तक तप करने के बाद यह रामदासजी के शिष्य हुए।

उदाहरण—

पद

दूरि करो गुमराइ, बाबा,
टेढ़ी बात से कछु नहिं काम, अच्छी है गरिबाई।
बुरे फैल से कोउ न जीते, जम की बुरी खसलाइ।
कह दिनकर यक राम भजन बिन झूठी सब चतुराई।

> करम करामति काल कुभाग,
> तजि भजि राम अनंत अभाग।
> निसि बासर यह बानि बखान,
> रामहि राम सुधा-रस पान।

नाम—(४११/१) राजेंद्र मुनि।

रचना-काल—सं० १७५३।

ग्रंथ—(१) राजवल्लभी गीता (छंदोबद्ध, सं० १७५३), (२) श्रीकृष्ण-बाल गीता, (३) सुध-बावनी और (४) ज्ञान बावनी।

विवरण—श्रीयुत भाखेरावजी का कथन है कि इनका 'राजवल्लभी गीता' ग्रंथ अमृतसर के श्रीकृष्ण मंदिर में प्रस्तुत है, और उस प्रति में रचना-काल सं० १७५३ दिया हुआ है।

उदाहरण—

> टीका सुनत सुजान अस चित मन नित दृढ़ लाय;
> आविद्या भ्रम मिटि गयो, पुरुषोत्तम सुख पाय।
> राजवल्लभी टीप कहाने, श्रोता-वक्ता बहु सुख पाए;
> भगवद्गीता श्रेष्ठ कहाई, श्रीमन तिरपित अर्जुन ठाढ़े।

नाम—(४६१/१) उद्धव चिद्घन, उद्धवार्य, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—संत चरित्र एवं स्फुट।

कविता-काल—सं० १७२५।

विवरण—यह महाराष्ट्र प्रांत के आद्य संत-चरित्रकार कहे जाते हैं। इन्होंने ब्रजभाषा में कतिपय संतों के चरित्र लिखे हैं।

नाम—(१६०/१) भगवतीदास, आरा।

ग्रंथ—वृहत् विलास।

रचना-काल—सं० १७५५। साल के विषय में कवि ने इस प्रकार लिखा है—

> "संवत सत्रहसे पचावना,
> ऋतु वसंत वैसाख सुहावना,
> शुक्ल पक्ष तृतिया रविवार"

विवरण—आप जैन धर्म के अनुयायी थे। ग्रंथ में तत्त्व ज्ञान का स्पष्टीकरण है।

नाम—(५५०) (महाराजा) राजसिंहजी, कृष्णगढ़।

जन्म-संवत् १७५१, कार्तिक सुदी १२।

काव्य काल—१७८६।

ग्रंथ—रुक्मिणी हरण, रासरसलीला, बाहुविलास, राज प्रकाश, सुख समीर आदि।

परिचय—सुकवि वृंद से आपने कविता करनी सीखी थी। यह काल मुग़लों के पतन का था। दरबार में आपका विशेष मान था। शुभकरन और आलम के युद्ध में राजसिंह की वीरता का आपने वर्णन किया है।

उदाहरण—

> यदु उतै इत गोकुलचंदहि प्रगटत होय परी
> उतहिं चकोरी इत की गोरी मन-मन लखि बिसरी।
> उत की भोगी इत रिस चोगी महामोद मन मानै;
> उत है मधुसूदन इत पद्मासूम सत्तो प्रगट माँहि मानै।
> उत युवराज इतै ब्रजराजा दोउ सुराज सुहाई,
> पाप कर्म वे धर्म-कर्म ये निगम पुरातन गाई।
> गोपी ग्वाल तहाँ सब बालक दूध-दही बिसतारे;
> राजसिंह प्रभु ब्रज के जीवन भक्ति जगत निस्तारे।

नाम—(५५८) दरिया साहब, जैतरान ग्राम (मारवाड़)।

जन्म-काल—सं० १७३३।

मृत्यु-काल—सं० १८१९।

विवरण—आप मुसलमान-कुलोत्पन्न थे। आपकी कविता एवं जीवन चरित्र बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित हो चुका है। इसी नाम के एक और कवि नं०६४८ पर आ चुके हैं, किंतु वह इनसे भिन्न हैं।

नाम—(३६१) केशवराय मिश्र।

ग्रंथ—छंदमाल।

उदाहरण—

> सपत सत्रह सै बरस उनसठ जहाँ प्रकास ,
> माघ श्वेत चौदस निसा, मंगल कीसु सुमास।

नाम—(३६१) रसाल।

रचना-काल—सं० १७६०।

ग्रंथ—(१) राम चरित्र (ऐतिहासिक काव्य), (२) माधव-यशोंदुचंद्रिका।

विवरण—महाशय भालेरावजी का कथन है कि उक्त ग्रंथ रतलाम के नरेश महाराजा रत्नसिंह के पुत्र कमधुज रामसिंह के यशोगान पर है। कहा जाता है, बादशाह औरंगज़ेब की आज्ञा से रामसिंह दौलताबाद के युद्ध में सम्मिलित हुए थे, और उसी युद्ध की घटनाओं का वर्णन इस ग्रंथ में दिया हुआ है।

नाम—(३६२) गोपालसिंह।

ग्रंथ—क्रियाकोष।

रचना-काल—सं० १७६१।

विवरण—ग्रंथ में दैनिक दिनचर्या, व्रतादि का वर्णन है।

नाम—(३६३) बुधसिंह महाराजा (बुधराव), बूँदी।

रचनाकाल—सं० १७६१ से सं० १८०० तक।

ग्रंथ—नेह-तरंग (नायिका भेद)।

विवरण—बादशाह बहादुरशाह के समय आप दिल्ली के शाही दरबार से आपको 'रावराजा' हुई थी।

नाम—(३२०/१) तिलोकराम, ग्राम मेढला (

रचना-काल—सं० १७६० ।

ग्रंथ—रस प्रकाश भावदीपक ।

उदाहरण—(ग्रंथ के अंतिम दोह)

औरौ ग्रंथनि मैं कर्यौ, सुमति दृष्टि
चहे रीति रस रीति की आनीदासतिहुं
सतरह से अरु सतसठै, शुक्ल भाद्रपद
तिथि द्वितिया मगल भए, भयो रहस्य विदे

नाम—(३२४/१) हेमराज ।

ग्रंथ—प्रवचन-सार सिद्धांत ।

रचना-काल—सं० १७६६ ।

विवरण—ग्रंथ में तत्त्व ज्ञान विषयक विचारों का

नाम—(३६३/१) गोवर्द्धन ।

ग्रंथ—(१) मधुमालती, (२) मैनासत, (३) की प्रमग ।

रचना-काल—सं० १७७२ ।

विवरण—ग्रंथ की भाषा मालवीय है ।

नाम—(३६३/१) पूरण ।

ग्रंथ—ढोला मारू की कथा ।

रचना काल—सं० १७७२ ।

नाम—(३६३/१) उमापतिजी (कवीश्वर) ।

रचना—सं० १७७२ ।

परिचय—महाराजा रामसिंह के समकालीन थे । राजा ने सुजावलपुर आपको दान किया । दान पत्र से पता चलता है कि आप काशीराम शर्मा के पुत्र, पुरा के रहनेवाले थे ।

कविता का नमूना प्राप्त नहीं है ।

नाम—(१६५) निरजन माधव, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १७७४ ।

विवरण—यह बाजीराव पेशवा (प्रथम) और बालाजी बाजीराव के आश्रित तथा कई भाषाओं के ज्ञाता थे ।

नाम—(१६८) इंद्रजीत महाराज कुमार ।

ग्रंथ—कोकशास्त्र ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी के लगभग ।

नाम—(१७१) नैनसुख, करौली ।

ग्रंथ—माणिकपाल बारहखड़ी ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी ।

विवरण—यह महाशय करौली-नरेश महाराजा माणिकपाल के आश्रित थे ।

ग्रंथ—खंड-काव्य और छंदोभंग पूर्ण साधारण है ।

नाम—(६६४) ज्ञानचंद्र ।

ग्रंथ—उपदेश सिद्धांत-रत्नमाला ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी ।

विवरण—ग्रंथ गद्य पद्य मिश्रित है ।

नाम—(१७६) केशवानंद रामचंद्र ।

ग्रंथ—पुण्याश्रव ।

रचना-काल—सं० १७७७ ।

नाम—(११७३/आ) सपतराव वैद्य ।

रचना-काल—सं० १८९३ ।

ग्रंथ—नारायण-कवच (काव्य ग्रंथ) ।

विवरण—आप मालवांतर्गत पीपलरावाँ ग्राम के निवासी थे । श्रीयुत भालेरावजी द्वारा आप हमें ज्ञात हुए हैं ।

नाम—(११७४/१) रामदयाल लेगारो, ग्राम मौंड, जिला दरभंगा ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—इनका देहांत हुए १०० वर्ष के लगभग हुए हैं ।

उदाहरण—

भजु राम नाम राम नाम रामा ।
राम नाम वेद मूल, इनके नहिं और तूल, भजत
नसत त्रिविध सूल छूटत भव ग्रामा ॥ १ ॥
राम नाम विमल नीर, सगम सत्संग तीर,
मज्जत निर्मल शरीर, पावन निज धामा ॥ २ ॥
राम नाम कमल फूल, संतन-मन भ्रमर भूल,
पीवत रस झूमि झूमि अमृत मधुरामा ॥ ३ ॥
राम-नाम निराकार, रामदयाल नमस्कार,
दीनै हरि भक्ति सार, पय पल भर रामा ॥ ४ ॥

नाम—(११७४/२) साहबराम महंत, पचाढ़ी स्थान, जिला दरभंगा ।

ग्रंथ—भजनावली ।

विवरण—आप वैष्णव-सम्प्रदाय के संत थे । इनकी मृत्यु हुए सौ वर्ष से अधिक हुए हैं ।

नाम—(११७५/आ) खड्गसेन ।

ग्रंथ—उषा हरण।
रचना काल—सं० १८६९।
विवरण—भाषा अच्छी है।
नाम—($\frac{११६२}{७ख}$) केशवराय कायस्थ, बुंदेलखंड।

ग्रंथ—श्रीगणेश-कथा।
रचना-काल—सं० १८९८।
विवरण—भाषा साधारण है।
नाम—($\frac{११६३}{७ग}$) गव्न्र कवि, गुजरात प्रांत।

काल—सं० १८९८।
विवरण—आपने बड़ौदा नरेश महाराजा फतेहसिंह गायकवाड़ की प्रशंसा में लावनी रची।
नाम—(११६४/ई) कालूराम।
ग्रंथ—ज्ञानार्णव।
रचना काल—सं० १८९६।
विवरण—ग्रंथ में तत्त्व ज्ञान विषय है। भाषा साधारण है।
नाम—($\frac{११६५}{७ख}$) धर्मचंद।

ग्रंथ—जैन-सूत्र।
रचना काल—सं० १८९६।
विवरण—जैन दर्शन के सूत्रों पर टीका है।
नाम—($\frac{११६४}{७ग}$) नयनानंद।

ग्रंथ—शालभद्र राजा की कथा।
रचना-काल—सं० १८९६।
विवरण—ग्रंथ जैन-साहित्यांतर्गत है।
नाम—(११६७/ई) मनोहरदास सोनी, साँगानेर।

ग्रंथ—धर्म परीक्षा।

रचना-काल—सं० १८६६।

विवरण—ग्रंथ का विषय धार्मिक है।

नाम—(११६६) ऐनानंद कवि, ग्वालियर।

ग्रंथ—कुंडलियात्मक गीता।

रचना-काल—सं० १८७०।

विवरण—आप मुसलमान फ़क़ीर थे। महाराजा दौलतराव सिंधिया के समय में आपका होना पाया जाता है। अभी तक आपकी समाधि ग्वालियर ज़िले पर विद्यमान है। भाषा पर आपका अच्छा अधिकार था।

उदाहरण—

> ऐनानंद फकीर हैं, परमहंस निर्वान,
> दाढ़ी-मूँछ मुँड़ावतें, भसम करें असनान।
> भसम करें असनान, रहें पीतांबर सारा;
> आर्महि एकहि कहा तुरक हिंदू नहि न्यारा।
> मिटुक दोऊ दीन के, ऐन एक ही आन;
> ऐनानंद फकीर हैं, परमहंस निर्वान।

नाम—(११६७) नेमिदत्त, ग्वालियर।

ग्रंथ—नेमिपुराण। जैन रचना है।

रचना-काल—सं० १८७०।

नाम—(११६८) प्रभाकर, महाराष्ट्र प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १८७०।

विवरण—यह अंतिम पेशवा बाजीराव के समकालीन थे। इन्होंने शृंगार रस पूर्ण लावनियाँ और वीर-रस पूर्ण पवाड़े लिखे हैं।

नाम—(१२/६०४) लालजीत।

ग्रंथ—अकीर्ति जिन-मदिर पूजा।

रचना-काल—स० १८७०।

नाम—(१२/३०४) सरूपचद।

ग्रंथ—अकीर्ति जिन मदिर पूजा।

रचना-काल—स० १८७०। जैन कवि।

नाम—(१२/७०४) भूपतिराम।

ग्रंथ—त्रिलोकसार।

रचना-काल—स० १८७१।

विवरण—ग्रथ में जैन दर्शनानुसार तीन लोकों का छंदोबद्ध वर्णन दिया हुआ है।

नाम—(१२/३०७) रामचद्र।

ग्रंथ—भाव-समह।

रचना-काल—स० १८७१।

विवरण—ग्रथ में जैन पूजा का वर्णन है।

नाम—(१२/७०६) फाजिलखाँ, गुजरात प्रात।

रचना-काल—स० १८७२।

ग्रंथ—सुखसागर की लीला।

विवरण—पेशवाओं का राज्य जब गुजरात में था, उसी समय में आपका होना पाया जाता है।

नाम—(१२/७१०) रसिकराय।

ग्रंथ—द्वारकाधीश चौरासी।

रचना-काल—१८७२। कवि इस विषय में लिखता है—

"सवत अठारह बहत्तर
कृष्णाष्टमी शुभ साजि,

शुक्रवार आषाढ़ सुदि,
बहु दुंदुभी बर गाजि।"

विवरण—सम्भवत यह महाशय महाराजा दौलतराव सिंधिया के दीवान 'पारखजी थे। इनका मथुराजी में द्वारकानाथ का मंदिर बनवाना पाया जाता है। इनके कई पदों के अंत में 'पारख' का उल्लेख पाया जाता है।

नाम—(१९१२) माणिकचंद।

ग्रंथ—परमागमसार।

रचना-काल—सं० १८७३।

विवरण—ग्रंथ का विषय जैन तत्त्वज्ञान है।

नाम—(१९१४) सरूपसिंह।

ग्रंथ—उत्तरपुराण।

रचना-काल—सं० १८७३।

विवरण—जैन साहित्य में यह एक प्रसिद्ध ग्रंथ है। भाषा उत्कृष्ट है।

नाम—(१९१५) अचलसिंह।

ग्रंथ—समरसार

रचना काल—सं० १८७४।

विवरण—ग्रंथ ज्योतिष के विषय पर है।

नाम—(१९२०) चन्द्रभान।

ग्रंथ—कार्त्तिक-माहात्म्य।

रचना-काल—सं० १८७५।

विवरण—ग्रंथ में साधारणपन की झलक है।

नाम—(१९२२) प्रवीन।

काल—१९वीं शताब्दी का उत्तरार्ध।

ग्रंथ—स्वप्नाध्याय (सुबोधद)।

विवरण—श्रीयुत मानेरावजी के कथनानुसार आपका समय लिखा गया है।

नाम—(१०४१/५) दीनदयाल, ढूंढार (जयपुर राज्य)।

ग्रंथ—बुधजन सतसैया।

रचना-काल—१८७९। कवि ने इस विषय में स्वयं लिखा है—

"संवत् अठारह सै असी, एक बरस ते घाट;
जेठ कृष्ण रवि अष्टमी, हुयो सतसई पाठ।"

विवरण—ग्रंथ में व्यावहारिक बातों का वर्णन है।

नाम—(१०६०/५) जीवनदास, बहादुरगढ़।

ग्रंथ—पंचकल्याण।

रचना-काल—सं० १८८०।

विवरण—आप जैन धर्मानुयायी थे।

नाम—(१०७४/५) वली हाजी, ग्राम कोलारस (नरवर)।

ग्रंथ—हाजीवलीनामा।

रचना काल—सं० १८८०।

विवरण—आप मुसलमान थे। सूफ़ी होने के कारण आपने हिंदू-तत्त्वज्ञान का अच्छा अध्ययन किया था। आपने ग्रंथ में तत्त्वज्ञान पर अच्छे भाव कहे हैं।

नाम—(१२६०/५) गणधर सूरि।

ग्रंथ—आत्मानुशासन।

रचना काल—सं० १८८१।

विवरण—ग्रंथ जैन तत्त्वज्ञान पर है।

नाम—(१२८१/पश) पन्नालाल।

ग्रंथ—पाहुड़ ग्रंथ।

रचना-काल—सं० १८८१।

विवरण—कुंद कुंदाचार्य-कृत मूल ग्रंथ का यह अनुवाद है। ग्रंथ का विषय जैन दर्शन शास्त्र है।

नाम—(१९८४) लुत्फअली हकीम।

ग्रंथ—(१) नबीहतनामा (अनुवादित), (२) मुगल-पुराण, (३) सुखदेव-लीला, (४) वैद्यक।

रचना-काल—सं० १८८२।

नाम—(१९८६) गुणभद्र सूरि।

ग्रंथ—धर्मामृत सत।

रचना-काल—सं० १८८३।

विवरण—मूल ग्रंथ का गद्य में अनुवाद है। ग्रंथ में जैन दर्शन के अनुसार तत्वज्ञान का वर्णन है।

नाम—(१९८०) हरि, शाहाबाद (कोटा राज्य)।

ग्रंथ—रसमंजरी।

कविता-काल—सं० १८ ३।

ग्रंथ लेखन-काल के उपलक्ष में कवि ने निम्न लिखित छंद दिया है—

विधिवसु रस मुमवत नभ सित पाँचे पुष्यादित्य,
तादिन किए आरंभ श्रुतिति बोध सुमत रसमंजरी।

विवरण—कवि ने अपने आश्रयदाता की गुणग्राहकता का अच्छा वर्णन किया है। संभवतः यह कोटा-राज्य के आश्रित थे। इसी नाम के दूसरे कवि विनोद के द्वितीय भाग में हैं (देखो नं० ८६२)।

नाम—(१९६१) निश्चलदास, बूँदी।

ग्रंथ—(१) विचार-सागर, (२) वृत्तप्रभाकर।

विवरण—जाति के आप चारण थे, किंतु साधु हो गए, ऐसा कहा जाता है। उक्त दोनो ग्रंथ इन्होंने बूँदी नरेश महाराजा राम सिंहजी के आश्रय में रहकर बनाए।

नाम—(११०८/१) परमसुख सिंघई ।

ग्रंथ—नसीहतनामा ।

रचना-काल—सं० १८८७ ।

विवरण—ग्रंथ में व्यावहारिक बातों का वर्णन है ।

नाम—(१३८६) माणिकदास ।

[ग्रं]थ—राम-रसायन ।

[रचन]ा-काल—सं० १८८७ ।

विवरण—ग्रंथ में राम नाम स्मरण का महत्त्व वर्णित है ।

नाम—(१३१०/६) दीनदर्वेश, काठियावाड़ ।

कविता काल—सं० १८८८ ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप जाति के लुहार तथा बाल साधु के शिष्य थे । विनोद में नं० १२२९ पर इसी नाम के एक मुसलमान बुंदेलखंडी कवि और आ चुके हैं, किंतु यह इन महाशय से पृथक् हैं । यह हिंदू और मुसलमान में भेद नहीं मानते थे । इनकी भाषा गुजराती-मिश्रित हुआ करती थी, और रचनाओं में आध्यात्मिक भाव की झलक रहती थी ।

नाम—(१८०५/४) दुलीचद ।

ग्रंथ—मोक्ष-मार्ग प्रकाश ।

रचना-काल—सं० १८९० ।

विवरण—ग्रंथ वैराग्य और नीति पर है ।

उदाहरण—

मिलि मिलि झुंडनि निकुंजन पधारा करैं,
नंदन सुधारा करैं चंदन दलान की ।
वर अरविंदन की माला गुहि डारा करैं
तुलसी गुलाब मध्य कुंचित कलान की ।

वल्लरी दरीचिन म खरैं झनकारा करैं,
गुंफित छतान-मध्य प्रथित पखान की,
राधा महारानी महाराज कृष्णचंद्रजू की,
आरती उतारा करैं दारा देवतान की।

नाम—(१८३१/५) भगतीराम उपनाम खुशराम, कृष्णगढ़।

कविता-काल—१८६० के आस पास।

परिचय—आप श्री वृंदजी के घराधरा में थे।

उदाहरण—रानी अतनकुँवरि के सती होने का वर्णन।

कृष्णगढ़ चढ़ती रमी मा भई रामावत,
सती सत्य सुव्रत को कर्म करिबो करी;
कह 'खुशराम' भाग भक धरि धीरज सों,
वर वल्लभराज् को ध्यान धरिबो करी।
राम रट रूप पट झटक झरटकर,
लाय की लपट सों लपट लरिबो करी।
प्रेम-अनुराग भरी गोरी क्या सुहाग भरी,
भाग भरी भूरि आग भर जरिबो करी।

नाम—(१८१६/७) मनोहरदास स्वामी, गुजरात प्रांत।

काल—१६वीं शताब्दी का अंतिम समय।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप रामानंदी सम्प्रदाय के साधु थे।

नाम—(१८६०) शिवराजन बाजपेयी (शिवराज), असनी।

कविता-काल—प्राय १६वीं शताब्दी का अंत।

ग्रंथ—कविप्रिया की टीका।

विवरण—आप धनी के बाजपेयी, असनी के रहनेवाले थे। आपका महाराज बाँदी से अगाध प्रेम था, और कहा जाता है कि वहीं

के आप राजर्षि थे । इनके वंशधर मैंकौली राज्याश्रय में अभी मौजूद हैं । इनकी कविताएँ प्रसाद-गुणालंकृत हुआ करती थीं। आपकी रचनाओं का समावेश ग्रंथ के आकार में अभी तक नहीं हुआ है । सुना जाता है, आपके पौत्र पं० उमेशचंद्र वाजपेयीजी शीघ्र ही इस प्रशंसनीय कवि की कृतियों को इकट्ठा कर एक पुस्तका-कार संस्करण में निकालनेवाले हैं । यह कवि महाशय तथा ऊपर दिए हुए इनके ग्रंथ का नाम हमको पं० बालमुकुंद पांडेय, गोरखपुर द्वारा ज्ञात हुए हैं ।

उदाहरण—

एक तो असील होय दूजे नैन सील होय,
तीजे बने डील होय चौथे चोप ठानेगो ,
पाँचवे अधीन होय, छठयें दलील न होय,
सातयें शरम, आठैं ओज उर आनेगो ।
कहै 'शिवराज' नेति नवमें निगाह राखै,
दसवें दिमाग, गुन ग्यारैं पहिचानेगो ,
बारहें बिमल बुद्धि, तेरह सरहदार,
चौदहें चतुर ताहि गुनी जन मानेगो ।

नाम—(१८$\frac{३}{५}$०) ब्रजेंद्र, भरतपुर ।

ग्रंथ—रसानंद (ब्रजेंद्रप्रकाश) ।

रचना-काल—सं० १८६१ ।

विवरण—संभवत यह कवि भरतपुर के राज्य शासकों में से थे । ग्रंथ नायिका भेद पर है ।

नाम—($\frac{१८३१}{१५}$) गंगाधर प्रधान ।

ग्रंथ—आदिपुराण ।

रचना-काल—सं० १८६२ ।

विवरण— ग्रंथ का विषय जैन पुराण है।

नाम—(१८३१/३) फत्तेसिंह कायस्थ, शिवपुरी, रियासत ग्वालियर।

ग्रंथ—दफ़्तरनामा, अर्थात् हिंदी में हिसाब किताब के विषय का छंदोबद्ध वर्णन।

रचना काल—सं० १८६२।

नाम—(१८३२/२) रणधीरसिंह।

ग्रंथ—(१) काव्य रत्नाकर, (२) भूषण-कौमुदी, (३) पिंगल वा नामार्णव, (४) रस रत्नाकर।

जन्म-काल—सं० १८७७।

विवरण—ज़िमींदार सिंहरामऊ, जौनपुर। खोज ग्र० त्रै० रि० से सं० १८६४ निकलता है।

नाम—(१८३३) मोहनदत्त।

रचना काल—अनुमानतः १९वीं शताब्दि का अंतिम काल।

ग्रंथ—आत्म बोध।

विवरण—श्रीयुत भानरावजी का कथन है कि उक्त ग्रंथ प्राप्त हुआ है, और उसमें विविध छंदों में वेदांत वर्णित है।

नाम—(१८३४/२) बख़्तावरसिंह (कविराव)।

जन्म-काल—सं० १८७३ (सं० १९५२ में शरीरांत हुआ)।

रचना-काल—सं० १८९८।

ग्रंथ—(१) सरूप-यश प्रकाश, (२) शंभु यश प्रकाश, (३) सज्जन यश प्रकाश, (४) फतह-यश प्रकाश, (५) सामंत-यश प्रकाश, (६) रसोत्पत्ति, (७) अन्योक्त यश प्रकाश, (८) सभार्णव, (९) रागिनियों की पुस्तकें, (१०) केहरि प्रकाश, (११) सचित्र रसिकप्रिया तथा सज्जन चित्त-चंद्रिका।

विवरण—दसादी रायों के वंशज। इनके पूर्वज जयपुर राजकवि

थे। मेवाड़ में कई गाँव पाए थे। आप भी उदयपुर आदि कई राज्यों के कवि थे।

उदाहरण—

लष गुनो नील ते करोर गुनो कज्जल ते
　　अरब खरब गुनो करदम कारा ते,
'बखत' भनत लाग्यो आनि अवनीपन के,
　　सिंदा मो कलंक बड़ अकबर भारा ते।
मेदपाट मंडल महीप निज पानिपसों
　　धरिकै विबुध हरि हर के सहारा ते,
धोय जो न लतो 'श्रीप्रताप' वीरवर सो तो
　　धोतो न कलंक को हजार गंग धारा ते।

नाम—($\frac{२०}{१}$) बैजनाथ भाडेले (ब्राह्मण जुझौतिया), दतिया।

जन्म-संवत्—अनुमानत १८७० वि०।

कविता काल—अनुमानत सं० १९०४।

उदाहरण—

जरब जरी पै नग जटित जवाहर के,
　　पद्दर किनारा गजमुक्ता भा गौट जात,
माज तन भूपण प्रभूत कदरप अर्प,
　　जरप दवानल की उपमान रौंध जात।
कहै 'वैजनाथ' आफताब को दबावै आब,
　　ताब महताब की न चपलान कौंध जात,
तेरे मुख-चंद्र को प्रकाश छिति मांहि देख,
　　चकत भयो सो चित चंद्र चकचौंध जात।

हय हाथी हथयार रथ और रतन की खान,
　　'वैजनाथ' करवो कठिन साजन की पहिचान।

नाम—(१०११/६) गणपतराव, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १९०६ ।

विवरण—यह नासिक के निवासी थे । कीर्तन किया करते थे ।

नाम—(१०११/६४) दत्तनाथ, महाराष्ट्र प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता काल—सं० १८६० ।

मृत्यु-काल—१९०६ ।

विवरण—यह महीपतिनाथ कवि के समकालीन थे (देखो नं० ८९/१)। इनकी मृत्यु ११६ वर्ष के उपरांत हुई । भालेजीराव का कथन है कि इनका मठ अब तक उज्जैन में बना हुआ है, जहाँ से महाराजी शिंदे कृत 'कवितासार संग्रह', 'माधव विलास' नामक ग्रंथ उन्हें पहलेपहल प्राप्त हुआ था ।

नाम—(१०११/६५) नागजी औदीच्य गाथड, गुजरात प्रांत ।

काल—सं० १९०६ ('सौराष्ट्र इतिहास' से)।

ग्रंथ—कुंडलिया ग्रंथ ।

नाम—(१०११/६) प्रागनि कवि ।

रचना काल—सं० १९०६ ।

ग्रंथ—भ्रमर-गीत ।

विवरण—उक्त रचना व्रजभाषा में है । महात्मा सूरदास ने सबसे प्रथम भ्रमर-गीत रचा था, और उनके पश्चात् नंददास, वृंदावनदास, रसिकराय आदि कवियों ने भी इसी विषय पर रचनाएँ की हैं । नंददास कृत भ्रमर-गीत बहुत प्रसिद्ध रचना समझी जाती है । तुलनात्मक दृष्टि से आपका भी भ्रमर-गीत हिंदी साहित्य

में विशेष स्थान रखता है। नंद यशोदा और गोपियों को समझाने तथा उन्हें उचित मार्ग पर लाने के हेतु ऊधो का श्रीकृष्ण द्वारा ब्रज में भिजवाया जाना ग्रंथ में वर्णित है। वर्णन उत्कृष्ट तथा सरस है। इन कवि महाशय का परिचय माधुरी पत्रिका (वर्ष ७, खंड १, संख्या १) में दिए हुए पं० भगीरथप्रसाद दीक्षित के लेख के आधार पर दिया गया है। दीक्षितजी का कथन है कि उक्त कवि-कृत भ्रमर-गीत का उल्लेख खोज की रिपोर्ट में है, और इस ग्रंथ की संवत् १६०२ की लिखी हुई प्रति भी प्राप्त हुई है।

उदाहरण—

आयसु दीन्हों सखा सुजानहिं ।
स्यंदन चढ़ौ, सिधारौ ब्रज कौं मिलि आवौ सब आनहिं ।
कैसी हैं जसुदा जननी जिनि पालि कियो परधीन ,
मोहि यद्यपि अब होति होहिगी पर पूतन्ह आधीन ।
गहियो पायँ नंद बाबा के कहियो यहै सँदेसौ ,
जो तुम कियो महाकृत हमसों गुनि न सकत गुन रेसौ ।
समाधान कीजेहु गोपिन कौ, दीजेहु निर्मल ज्ञान ,
कहियो जोग-जुगति सो 'भ्रागनि त्रिपुटी संयम ध्यान ।

नाम—(३०४/५) रसिकलाल उपनाम रामदास माथुर, तहसील रामगढ़, राज्य अलवर ।

जन्म-काल—सं० १५७१ ।

रचना-काल—सं० १६१० ।

मृत्यु काल—सं० १६२० ।

ग्रंथ—गीतामृत धारा ।

विवरण—आप रूदमलजी के पुत्र थे । वेदांतसार नामक आपका एक दूसरा ग्रंथ अमुद्रित रूप में आपके वंशज लाला भैरोंलाल तथा गोपालसहाय माथुर, अलवर के पास मौजूद है, ऐसा कहा जाता है ।

नाम—(१ ई) रामाजी दादा शिंदे।

ग्रंथ—(१) कमलावती की कहानी, (२) वंशावली इतिहास।

रचना काल—सं० १९१०।

विवरण—आप महाराणा सिंधिया के वंशधर थे। ग्रंथ की भाषा उर्दू मिश्रित है।

नाम—(१०६५) किशोरसिंह बारहठ, ग्राम पीथरासर, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १८८६ के लगभग।

मृत्यु-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप रियासत बीकानेर के एक सम्मानित सरदार थे। कुछ काल तक उक्त रियासत में इंस्पेक्टर-पुलिस तथा वकील खास के नाते काम कर चुकने पर यह महाशय वहाँ के हाईकोर्ट-जज हो गए। यह कवि ठाकुर चतुरसिंह, राजपुर (बीकानेर) द्वारा हमें ज्ञात हुए हैं।

नाम—(१ ६१) लक्ष्मीनाथ गोसाईं, मिथिला।

रचना-काल—सं० १९१४ के लगभग।

ग्रंथ—भजनावली।

विवरण—आप मैथिल ब्राह्मण थे। काशी के विख्यात पंडित राजाराम शास्त्री आपके शिष्य थे। आपका देहांत हुए लगभग पचास वर्ष व्यतीत हुए हैं।

नाम—(१०८३) मीरादास, मालवा।

ग्रंथ—नरसी मेहता का मामेरा।

रचना काल—सं० १९१९।

नाम—(१ ८) गंगाधर व्यास, राज्य छतरपूर।

जन्म-काल—सं० १८९९।

रचना-काल—सं० १९१६।

मृत्यु-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) नीति-मंजरी, (२) गो-माहात्म्य, (३) भर्तृहरि-चरित्र, (४) श्रीविश्वनाथ पताका, (५) कलियुग पचीसी, (६) सुदामा चरित्र, (७) नारायणास्त्र (दंडोपनिषद्‌ भाषानुवाद) और स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप सनाढ्य ब्राह्मण थे। आपके पिता का नाम प० रामलाल व्यास तथा पितामह का प० लाहारीलालजी व्यास था। इनके पूर्वजों का आदिम निवास स्थान ब्रजमंडल था, किंतु कालांतर में यह महोबा ज़िला हमीरपूर में आकर बस गए थे। तदनंतर छतरपूर-राज्य में आए। पांडित्य तथा कुलीनता की दृष्टि से व्यासजी का घराना प्रतिष्ठित है। आप उन्मत्त एक आशुकवि थे, और बुंदेलखंडी भाषा पर आपका अच्छा अधिकार था। आपकी बनाई हुई बहुत-सी काव्य पंक्तियाँ सर्व-साधारण में, लोकोक्ति की भाँति, प्रचलित हैं। बीसवीं शताब्दी के बुंदेलखंडी कवियों में व्यासजी का आसन श्रेष्ठ है। यह महाशय छतरपुराधीश श्रीमान्‌ महाराजा विश्वनाथसिंहजू देव के आश्रित कवि थे। हर्ष का विषय है, इनकी कविता तथा ग्रंथों का संग्रह प० रामनारायण शर्मा के संपादकत्व में गंगाधर-ग्रंथावली के नाम से श्रीसनाढ्य ग्रंथमाला, कालपी से शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है।

उदाहरण—

मत्त मतंगन की गति सों गजगामिनि नाम मिल्यो सुखदानी,
त्यों 'द्विज गग' तजै नहिं ताहि, मराल हँसी मरिहैं मन मानी।
यों लचिहै कच भारन लंक, न मानत संक निसंक दिवानी;
मंद धरै किन चंद्रमुखी, पग लालन की अँखियाँ उरझानी।

नाम—(१५००) सुखानंद स्वामी ।

ग्रंथ—(१) समनोद्दिनी विनोद, (२) धर्म-सजीवनी, (३) [illegible], (४) विचित्र धर्म निर्णय, (५) स्वर्णकार माहात्म्य, (६) [illegible] वंशावली, (७) आत्म तीथावलोकन, (८) [illegible], (९) मद्यनिर्णय, (१०) प्रश्नोत्तरी, (११) [illegible] गीता, (१२) निर्णय नियम, (१३) [illegible], (१४) सूक्ष्म निर्णय, (१५) सनाढ्य-वंशावली, (१६) [illegible] प्रकाश, (१७) स्वराज्य विनोद, (१८) [illegible], (१९) ज्ञान पद्धति, (२०) राजधर्म (२१) ज्ञान [illegible], (२२) [illegible], (२३) वेदोक्त गायन, (२४) [illegible] ।

रचना-काल—सं० १८६१ ।

मृत्यु-काल—सं० १९१६ ।

नाम—(१५०१) इंशाअल्ला खाँ ।

रचना-काल—सं० १८१७ के लगभग ।

विवरण—कवि [illegible] के समकालीन थे ।

विवरण—आपने हिंदी की खड़ी बोली में 'रानी केतकी की कथा' बनाई । इसकी भाषा शुद्ध उर्दू मिश्रित गद्य-काव्य है, इसे चाहे हिंदी कहें, चाहे उर्दू ।

नाम—(१५१५) लक्ष्मीप्रसाद थापक (सनाढ्य ब्राह्मण), [illegible] ।

[illegible]—सं० १८६० वि० ।

कविता-काल—सं० [illegible]

[illegible] १८५७ से १९०२

[illegible] से [illegible]

[illegible]

उदाहरण—

> प्रचंड चंड मुंड खंड रुंड मुंड कै धरा,
> हुँकार घोर शोर ते टरे मरे निशाचरा ;
> अनंत धीर धीय कीर्ति लोक लोक को धरी,
> दुरंत द्वंद खंडिए विलंब अंब क्यों करी ।
> अपार दुःख दाह दाह शुद्ध बुद्धि कीजिए,
> सदैव सुक्ख देय स्वेद शत्रु शीश मीजिए,
> अधीन मातु ज्ञान हीन दीन की व्यथा हरौ,
> दुरंत द्वंद खंडिए विलंब अंब क्यों करी ।

नाम—(२११७) (राजा) पृथ्वीसिंह (जी), कृष्णगढ़ ।

परिचय—इनका पहला नाम स्योपालसिंह था । मोहकमसिंहजी के मरने पर यह उनके उत्तराधिकारी हुए, तथा पृथ्वीसिंह नाम पड़ा । यह वैष्णव तथा व्यवहार कुशल राजा थे । कभी कभी कविता भी करते थे ।

रचना काल—सं० १९२० के लगभग ।

नाम—(२११८) हंसराज (जी), कृष्णगढ़ ।

परिचय—वृंदजी के वंशज तथा किशनगढ़ के दरबारी कवि थे ।

रचना-काल—सं० १९२० के लगभग ।

उदाहरण—

> नूर बढ़ आनन पै आज चढ्यो सूरन को,
> परम प्रजानि को उछगल हू मिटि गौ ;
> काँपे उर चोरन के धाढवी धधक रहे,
> नीति घन प्रीति सो अनीति बीज छुटि गौ ।
> पाटऊ विराजत श्रीपृथ्वीसिंह भूपति के,
> तपन प्रताप लोक तामस उछुटि गौ ,

नाम—(२१००) सुरानंद स्वामी।

ग्रंथ—(१) मनमोहिनी विनोद, (२) धर्म-संजीवनी, (३) विवेकसार, (४) विविध धर्म निर्णय, (५) स्वर्णकार माहात्म्य, (६) कान्यकुब्ज-वंशावली, (७) आत्म तीर्थावलोकन, (८) राष्ट्रीय आल्हा सर्पया, (९) मक्षानिर्णय, (१०) प्रश्नोत्तरी, (११) सुरानंद-गीता, (१२) निर्णय नियम, (१३) यजन रामायण, (१४) मूल निर्णय, (१५) समाढ्य-वंशावली, (१६) सुरानंद प्रकाश, (१७) स्वराज्य विनोद, (१८) कर्म-उपासना, (१९) ज्ञान पद्धति, (२०) राजधर्म, (२१) नाम-सपय, (२२) हृदयरामसार, (२३) वेदोक्त गायन, (२४) माहात्म्य।

जन्म-काल—सं० १८९१।

रचना काल—सं० १९१९।

नाम—(२१०३) इंशाअल्लाख़ाँ।

रचना-काल—सं० १९१७ के लगभग।

काल—कवि लल्लूलाल के समकालीन थे।

विवरण—आपने हिंदी की खड़ी बोली में 'रानी केतकी की कथा' रची। इसमें अनुप्रास युक्त उर्दू मिश्रित गद्य काव्य है, इसे चाहे हिंदी कहें, चाहे उर्दू।

नाम—(२११५) देवीप्रसाद पाठक (सनाढ्य ब्राह्मण), कालपी।

जन्म-काल—सं० १८९० वि०।

कविता-काल—सं० १९२०।

सं० १९२० से १९३५ तक प्रधानाध्यापक, कालपी मिडिल-स्कूल। १९४५ वि० में डिपुटी इंस्पेक्टर ऑफ़ स्कूल्स।

ग्रंथ—(१) ध्यान माला, (२) मन विनोद, (३) दुर्गाष्टक।

अधिकांश छंद, कवित्त, सवैया आदि हैं। कहीं-कहीं दोहे-सोरठे भी मिलते हैं। 'धर्म प्रदर्शिनी' सं० १९६२ में समाप्त हुआ। यह श्रीवेंकटेश्वर प्रेस में मुद्रित हुआ है। धर्म प्रदर्शिनी धर्म विषयक गद्य पद्यात्मक ग्रंथ है।

उदाहरण—

फटि जाते सेस के सहस्र फन भारन तें,
दिग्गज उतारन के कुंभ को छुड़ावतो;
पुहुमि सहमि डगमग डगमग होति,
हद तजि जलधि को जल बढ़ि आवतो।
रहि जातो वेद पथ सुपथ करैं को कहाँ,
देवन की सेवन में कौन मन लावतो,
'ईश्वरीप्रसाद' जौ न अधम उधारन को
बामों गहि कालिका को नाम जग छावतो।

नाम—($\frac{२१४६}{६म}$) शिवदयाल पांडे (भेष) कश्मीरी मोहल्ला, लखनऊ।

जन्म-संवत्—लगभग १९००।

रचना-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—दशम स्कंध भागवत के भाग का छंदोबद्ध अनुवाद।

विवरण—आप हमारे पूज्य पिताजी तथा लेखराज कवि के मित्रों में थे। बड़े ज़िंदादिल व्यक्ति थे। एक बार वर्तन गिरों करके हम लोगों का सविधि आतिथ्य किया, और यह बात हमें पीछे से विदित हुई।

उदाहरण—

चित की हम ऊधो जो बातें करें अवकास अकाम्पन पाइहैं जू,
इन तुंग के तुंग तरंगन ते उमड़े जल कैसे समाइहैं जू।

धाक परे देशन यों हाक परे शत्रुन पै,
धौंकल धरा को मब एकै साथ मिटि गौ।

नाम—(११३४) ज्ञानअली।

समय—सं० १९२२।

ग्रंथ—मिथवरकेलिपदावली। (प० त्रै० रि०)

नाम—(११३५) (महाराजकुमार) नर्मदेश्वरप्रसाद सिंहजी।

आपका जन्म सं० १८८६ में नारदीगपुर शाहाबाद में, हुआ था। आपके पिता का नाम तुलसीप्रसादसिंह था। आप फ़ारसी संस्कृतादि भाषाओं के विद्वान् तथा हिंदी भाषा के कवि थे। आपके पूर्वज उज्जैन से आकर यहाँ बसे थे। ये लोग प्रमार-क्षत्रिय-वंश के थे, परंतु उज्जैन से आए हुए होने के कारण इनके वंशधर उज्जैन नाम से विख्यात हुए। गदर के बाद आपने नारदीगपुर का रहना छोड़कर वहाँ से दक्षिण तीन मील दूर दिलीपपुर-नामक ग्राम में अपना निवास-स्थान बनवाया। आप प्रायः डुमराँव आया करते थे। यहाँ से सं० १९६२ में आपको पक्षाघात रोग हो गया, और इसके बाद इस रोग के कारण आप साहित्य-सेवा से वंचित रहे।

आपने 'शिवाशिव शतक', 'शृंगार दर्पण', 'पंच-रत्न' और 'धर्म प्रदर्शिनी' नामक चार ग्रंथों की रचना की। 'शिवाशिव शतक' सं० १९३२ की माघ-शुक्ला पंचमी को बना। यह भारत जीवन प्रेस में छपा है। इसमें नामानुसार १०० कवित्त सवैयों में शिव की स्तुति है। शृंगार दर्पण नख शिख का ग्रंथ है। इसकी रचना शिवाशिव शतक के एक वर्ष उपरांत हुई, और यह ग्रंथ सेंट्रल प्रेस, दीनापुर में प्रकाशित हुआ। पंचरत्न अभी तक अप्रकाशित है। यह सं० १९४२ के पूर्व का होगा। इसका होना इनके वंशधर दुर्गाप्रसादसिंहजी द्वारा विदित हुआ है। जीवनी भी इन्हीं के द्वारा प्राप्त [illegible] है। इसमें

दुरिहै इस कोर चो भेस कहूँ सिगरा मन फेरि महाइहै जू।
सिगरी यह रावरी ज्ञान-कथा कहि कौन को को समुझाइहै जू।

नाम—(२१५४०) गिरिधर।

कविता-काल—सं० १९२५ के लगभग।

ग्रंथ—(१) प्रताप-यशोंद्र-चंद्रिका, (२) शिवसागर, (३) गोपाल सागर, (४) मणिरत्न माला (संस्कृत-ग्रंथ का हिंदी में छंदोबद्ध भाषांतर)।

विवरण—आप गुजरात के अंतर्गत बीजापुर ग्राम के निवासी थे। आप कवि ज्येष्ठालाल के सहाध्यायी तथा सहकवि थे। दोनों में ज्येष्ठालालजी कविता करने में विशेष प्रख्यात हुए। उपर्युक्त ग्रंथ दोनों कवियों की मिलकर बनाई हुई रचनाएँ हैं। आप दोनों महाशयों का गुजरात के रजवाड़ों में अच्छा सम्मान था।

नाम—(२११३०) राजेंद्रसिंह व्यवहार।

ग्रंथ—(१) तुलसी का भक्ति-मार्ग, (२) तुलसी काव्य-कलाधर, (३) तुलसीदास और कालिदास, (४) वशीकरण, (५) ग्राम सुधार, (६) आदर्श ग्राम, (७) पुनर्विवाह, (८) सभ्य विनय, (९) गीता की गाथा, (१०) शांति निकेतन अथवा शिव भारती का संग्राम-स्थल, (११) ईसा का उपदेश, (१२) महाकवि कालिदास।

जन्म-काल—सं० १९०० ।

विवरण—आप जबलपुर के प्रसिद्ध रईस व्यवहार रघुवीरसिंह के पुत्र हैं।

नाम—(२२५६) रघुनाथप्रसाद उपाध्याय, जौनपुर।

ग्रंथ—निर्णय-मंजरी।

जन्म-काल—सं० १९०१ ।

विवरण—साधारण श्रेणी।

मृत्यु-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) ज्ञान विनोद (ज्ञान-वाटिका), (२) नाटक, प्रहसन आदि।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज के मिश्र थे। कहा जाता है, आप चमत्कारी साहसी पुरुष थे। आपने १८ वर्ष की अवस्था में लाठी से एक शेर मारा था। आप खड़ी बोली में भी कविता करते थे, किंतु कविता के योग्य आप ब्रजभाषा को ही मानते थे। प० शिवरत्न मिश्रजी, भागलपुर का कथन है कि इन कवि महाशय ने अपनी सारी कविता तिवारी ग्रामवासी भगलू तिवारी के नाम पर की है, और आपने इसी कविता-संग्रह का नाम 'भगलू कृत ज्ञान विनोद' रक्खा है। उक्त ग्रंथ हमें मिश्रजी से प्राप्त हुआ है, और उसकी भूमिका में यह लिखा हुआ है—

"एक विप्र भगलू तिवारी, टिकारी ग्राम के जो थोड़ी कविता जानते थे, हमारे सगी हुए। वो यही कवित्व बनाने की श्रद्धा हमारे चित्त में उपजा दिए। उन्हीं के नाम से काव्य रची गई।"

उदाहरण—

काया बीच में आकर बैठा देखत मजुल तमासा है।
देखो वह है अजब खिलाड़ी समझे में नहिं आता है।
पच बयारि लगे मन दोनो तिहूँ लोक भरमाता है;
जहँ जहँ मनुआ खेल करत है, तहँ तहँ खेल खिलाता है।
चित माया दोउ नाच नचावत कुल परिवार बनाता है,
इससे रहत चहूँ ओर से मन को ता विच आप न आता है।
है वह सदा सबन तें न्यारा छाया कर दरसाता है;
मन थिर करके देखहु 'भगलू आपै आप लखाता है।

नाम—(२३७४) मोहनलाल चतुर्वेदी, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९०८।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२५३५) अड्डूलाल वैद्य (ब्राह्मण सनाढ्य), ललितपुर (झाँसी)।

जन्म-काल—सं० १९०८।

कविता-काल—सं० १९३०।

विवरण—दीवान विजयबहादुरसिंह ननौरा के सं० १९६१ वि० से १९८२ वि० तक मुख्तार रहे। अब अवकाश ग्रहण कर ललितपुर में रहते हैं।

ग्रंथ—पारजात रामायण।

उदाहरण—

तोटक

निगमागम शारद शेष सदा,
निर अंतर आप स्वयंभु मुदा।
गनराज उधारनहार प्रभो,
दुर मोह विदारन राम नमो।
स्वर श्री स्वर भू स्वर पाल हरी,
जन जान सुदामहि श्राम करी।
भृगुराम अनंत अनंत गती,
जय दासदयाल अपार मती।
मद रूप निरूप अनूप तनं,
अति अद्भुत कांति सुश्याम घनं।
कह रामसुकुंद गुविंद नयं,
इम बंदि सुरेश गए भवनं।

नाम—(२२६४) बनवारीलाल मिश्र, लालूचक, भागलपूर।

जन्म-काल—सं० १९०२।

रचना-काल—अनुमानतः सं० १९३०।

मृत्यु-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) ज्ञान विनोद (ज्ञान-वाटिका), (२) नाटक, प्रहसन आदि।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज के मिश्र थे। कहा जाता है, आप असाधारण साहसी पुरुष थे। आपने १८ वर्ष की अवस्था में लाठी से एक शेर मारा था। आप खड़ी बोली में भी कविता करते थे, किंतु कविता के योग्य आप ब्रजभाषा को ही मानते थे। पं० शिवरत्न मिश्रजी, भागलपुर का कथन है कि इन कवि महाशय ने अपनी सारी कविता टिकारी ग्रामवासी भगलू तिवारी के नाम पर की है, और आपने इसी कविता-संग्रह का नाम 'भगलू कृत ज्ञान विनोद' रक्खा है। उक्त ग्रंथ हमें मिश्रजी से प्राप्त हुआ है, और उसकी भूमिका में यह लिखा हुआ है—

"एक विप्र भगलू तिवारी, टिकारी ग्राम के जो थोड़ी कविता जानते थे, हमारे संगी हुए। वो वहीं कवित्व बनाने की श्रद्धा हमारे चित्त में उत्पन्न किए। उन्हीं के नाम से काव्य रची गई।"

उदाहरण—

काया बीच में जाकर बैठा देखत सकल तमासा है,
देखो यह है अजब खिलाड़ी समझे में नहिं आता है।
पंच बयारि लगे मन डोले तिहूँ लोक भरमाता है,
जहँ-जहँ मनुआ खेल करत है, तहँ तहँ खेल खिलाता है।
चित माया दोउ नाच नचावत कुल परिवार बनाता है,
ऐसे रहत चहूँ ओर से मन को ता बिच आप न आता है।
है वह सब सबन तें न्यारा छाया कर दरसाता है;
मन स्थिर करके देखहु 'भगलू' आपै आप लखाता है।

नाम—(२२७४) मोहनलाल चतुर्वेदी, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९०८।

कविता-काल—सं० १८३० के लगभग।

मृत्यु-काल सं० १८६४।

ग्रंथ—मनुस्मृति का हिंदी पद्यानुवाद।

विवरण—यह माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण पंडित यमुनादासजी के पुत्र थे। आपका ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित है। पंडित उमरावसिंह-पांडेय, मंत्री चतुर्वेदी पुस्तकालय, मैनपुरी का कथन है कि इनके वंशज श्रीयुत लक्ष्मीनिधिजी द्वारा उनको यह ग्रंथ देखने को मिला है।

नाम—(११७५/१) रामप्रतापसिंहजी, मैनपुरी नरेश।

जन्म-काल—सं० १८०६।

कविता-काल—सं० १८३०।

मृत्यु-काल—सं० १८८३।

ग्रंथ—राग-लय दपण।

विवरण—आप वर्तमान मैनपुरी नरेश के पिता थे। यह बड़े गुणग्राही तथा हिंदी प्रेमी थे। प्रसिद्ध गायनाचार्य गुलालजी और पंडित काशीनाथजी आपके दरबारियों में से थे। ग्रंथ में भिन्न भिन्न राग-रागिनियाँ संगृहीत हैं।

नाम—(११६६/१) माधवसिंह (कविराव), कृष्णगढ़।

जन्म काल—सं० १८०६।

रचना-काल—सं० १८३१।

ग्रंथ—लक्षणप्रकाश तथा स्फुट छंद।

विवरण—कविराव बख्तावरसिंह के पुत्र तथा उन्हीं के शिष्य थे। इनका राजदरबारों में मान था।

उदाहरण—

> आनन मयकवारी गुन हरि थकवारी,
> भौंहैं धनु बकवारी, मोतैं उर-आलिका,

आनँद करनवारी, चित को हरनवारी,
शोभा को करनवारी, धारी मनि-मालिका।
'माधव' बखानै, वर अमृत बयनवारी,
नीरज नयनवारी गज-मद चालिका ;
भृकुटी बिशालवारी, प्रीति मन पालवारी,
प्यारी है गुपाललाल प्यारी ब्रजबालिका।

नाम—(२१६८) रामरूपदास, ग्राम चनौथ (मगध देश)।

मृत्यु-काल—सं० १९३१।

ग्रंथ—गोपाल-सागर (भजनावली)।

विवरण—आप राधावल्लभीय वैष्णव-सम्प्रदाय के थे। इनका देहांत ८२ वर्ष की अवस्था में हुआ।

नाम—(२१६९) मन्नू कवि ब्रह्मभट्ट, झाँसी।

अनुमानित जन्म-काल—सं० १९१०।

कविता-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—आप कई ग्रंथ के रचयिता कहे जाते हैं। किंतु वे अब तक अप्राप्त ही हैं।

उदाहरण—

एकपाद् अरध त्रिपाद की विभूति सब,
शीशमुख सहस पाद, अग्रज अरत जात,
श्रीपति स्वयंभू शंभू अंशु तप तेज सबै,
'मन्नू कवि' नजर निछावरें करत जात।
यत्र यत्र धरत पदारविंद रामचंद्र,
तत्र तत्र भूरि भूमि भाव सों भरत जात,
देवी देव वृंदन के, इंद्रन उपेंद्रन के,
मुकुट महेंद्रन के पाँवरे परत जात।

नाम—(२२६०) रघुनाथदास पाँडेय, इटावा।

जन्म-काल—सं० १९०० ।

मृत्यु-काल—सं० १९८० ।

विवरण—नारीहित (Advice to Young Woman-नाम्नी अँगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद)

विवरण—आप इटावा के सुप्रसिद्ध पंडित जगन्नाथदासजी के सुपुत्र थे। आप संस्कृत, हिंदी तथा अँगरेज़ी के अच्छे विद्वान् थे। कोटा राज्य की दीवानी के पद पर इन्होंने लगभग २० वर्ष तक बड़ी योग्यता-पूर्वक काम किया और गवर्नमेंट ने इन्हें रायबहादुर दीवान बहादुर, सी० एस्० आई० आदि उपाधियाँ प्रदान कर सम्मानित किया। इस समय आपके पुत्र पंडित विश्वंभरनाथ एम्० ए० आपके दीवानी के पद को सुशोभित कर रहे हैं।

नाम—(२२६१) रामअधीन सोनार, टिकैतगंज, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९०७।

कविता-काल—सं० १९३२।

मृत्यु-काल—सं० १९७०।

विवरण—राजा लाल माधवसिंह अमेठीवाले के यहाँ इनका मान था। प्राचीन प्रथा की रचना की है, जो साधारण श्रेणी की है।

ग्रंथ—राधाकृष्ण-नख शिख, अलंकार-चंद्रिका।

नाम—(२२६२) शिवप्रसाद शर्मा द्विवेदी, सरयूपारीण ब्राह्मण, शाहगंज, रियासत बिजावर।

ग्रंथ—प्रेम-सोपान, स्फुट कविता व लेख।

जन्म-काल—सं० १९०८।

नाम—(२२६३) वेणीराम (द्विज वेनी)।

जन्म-काल—सं० १८९२।

रचना-काल—सं० १९२५ (निधन-काल सं० १९७१)।

ग्रंथ—समस्या-पूर्तियों के बहुसंख्यक छंद।

विवरण—लखनऊ निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण, वाजिदअली शाह के पुश्तैनी कवि थे। सं० १९१४ के ग़दर में इनके ६ भाई मारे गए। पश्चात् यह देशाटन करते करते काशी आ, श्रीजयशंकरप्रसाद के बाबा के मुनीम हो, वहीं स्थायी हो गए। फ़ारसी के भी ज्ञाता थे। काशी-कवि मंडल की बहुसंख्यक समस्या-पूर्तियाँ किया करते थे। हिंदी-शब्द सागर के संपादन विभाग में कुछ दिन तक रहे। इनके शिष्य प० छघूलाल पाठक को कुछ इनके छंद मिले थे, वे ही रह गए हैं। आप तोषनिधि के शिष्य एवं उन्हीं की कोटि के सुकवि थे।

उदाहरण—

सीताराम लखन विलोकि ग्राम नारी नर
मोहित ह्वै ठाढ़े सबै एकटक लाय कै,
तिन मैं सयानी नारी अरज गुजारी आनि
जनक दुलारी आगे सीसन नवाय कै,
कौन ही पियारी दोऊ राजहंस बसन मैं
'बेनी द्विज' दीजिए दया सो समुझाय कै,
लाजन लजाय अकुलाय तबै सैनन सों
दीन्हों है लखाय राम मुरि मुसुकाय कै।

लोल लोल ललित कपोलन पै वारौं चंद
मोतिन की माला वारौं दंत झलकन पै,
'बेनी द्विज' खंजन चकोर वारौं नैनन पै
नेजन की नोकैं वारि डारौं पलकन पै;
अधर ललाई पै ललाई वारौं मानिक की
वारौं मन धन हूँ तुलाकू हलकन पै,
गोलन के गोल वारि डारौं नाग छौनन के
बिहारी की अमोल अलकन पै।

चपक वरन मन हरन मुनीसन के
जुरी आनि आनन पै दुति है निगत की,
'बेनी द्विज' कुसुम कली-सी खिली राजै घर
धग अरुनाइ छाइ हिय हुलसत की,
श्रीफल अनार-से अमोल कुच सोहैं गोल
नैनन लही है कंज छबि बिलसत की,
चाहिए बिहारी लाजै नैनन निहारी
वृषभान की दुलारी फुलवारी है बसंत की।
मान भरे सुंदर सुजान आन सान भरे
सोभा के निधान मान सुघर अग्याली के,
तेज भरे तरल तरंगी अंगी तामस के
दुष्टन सँघारिबे को मानिंद दुनाली के,
रोब भरे राजत महान ओज मौज भरे
'बेनी द्विज' अमल कुलीन कंज डाली के,
अमित उचाली भरे आली प्योसि आली भरे
लाली भरे ललित ललाम नैन काली के।
जैसी प्रीति स्वाती सों पपीहा के बनी है जीय,
वैसी ही हमारी प्रीति पीउ सों बनी रहै।
जैसी चाह चंद की चकोर के चुभी है चित्त,
ताहू सों दुचंद मेरी आरजू घनी रहै।
बार-बार गौरी सों बिनै कै यह माँगति हौं,
'बेनी द्विज' दीठि न घरीहू मों घनी रहै,
चाहे जौन हाल के परै यो प्रेम जाल तऊ,
लाल उर लागिबे की लालसा बनी रहै।

नाम—(८३६३) बहादुरसिंह बीकानेर, रियासत बीकानेर
जन्म-काल—सं० १९११।

ग्रंथ—क्षत्रिय-जाति की सूची।

मृत्यु काल—सं० १६७२।

विवरण—आप ठाकुर शिवनाथसिंहजी, जागीरदार थीदासर एवं प्रथम श्रेणी के ताज़ीमी सरदार के पुत्र थे। इन्होंने रियासती कौंसिल के मेंबर रहकर अच्छे अच्छे सरस्थानिक काम किए थे। हिंदी-भाषा के यह महाशय अच्छे विद्वान् थे। अपने ग्रंथ में आपने राजपूताने के ३६ वंशों का विस्तार-पूर्वक वर्णन दिया है। यह ग्रंथ आपके पौत्र ठाकुर हीरासिंहजी ने छपवाया है, और अब उसके तीन सम्करण निकल चुके हैं। (ठाकुर चतुरसिंह, राष्ट्रवर, बीकानेर, द्वारा ज्ञात)।

नाम—(२२६४) हरिहरप्रसादसिंह, (महाराजकुमार) दलीपपुर, (शाहाबाद)।

जन्म-काल—सं० १६११।

रचना-काल—सं० १६३६ के लगभग।

मृत्यु-काल—सं० १६४६।

ग्रंथ—(१) हरिहर शतक, (२) अस्तुत्यावली, (३) पद्-पदावली, (४) अमरी, (५) सिख-नख वर्णन (अप्राप्य)।

विवरण—आप श्रीमहाराजकुमार बाबू भुवनेश्वरप्रसादसिंहजी के पुत्र तथा श्रीमहाराजकुमार बाबू नर्मदेश्वरप्रसादसिंहजी के भतीजे थे। आपने संस्कृत, फ़ारसी तथा हिंदी में ज्ञान प्राप्त किया था। कायालदार आदि विषयों के भी आप ज्ञाता थे। इनका 'सिख नख-वर्णन' नामक ग्रंथ प्राय अप्राप्य है। कतिपय छंद इस ग्रंथ के मिले हैं, ऐसा कहा जाता है।

उदाहरण—

अरुनारे कंज पै सुमन करिहारी तापै
इंदीवर कजन पै रानत अमरान,

नील मनि-गन तापै केहरि की कटि
तापै जमुना तरंग और रुचि मनि मोहै मन।
मरकत पत्र पै बसीकरन मंत्र तापै
सीप से निकारि कै बिराजै नाग पंचफन।
तापै अरविंद तापै शुक युग गज तापै
धनु प्रेम सर तापै अध ससि तापै घन।

नाम—(२४५४) लक्ष्मीलाल मिश्र बी० ए०, वकील, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९१२।

मृत्यु काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप मैनपुरी निवासी माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। आप अपने ज़िले के प्रसिद्ध वकील थे। वकालत करने के पहले कुछ काल पर्यंत यह सेंट जॉन्स कॉलेज आगरा में गणित के प्रोफ़ेसर (अध्यापक) थे। पं० उमरावसिंहजी पांडय मंत्री चतुर्वेद पुस्तकालय, मैनपुरी का कथन है कि उन्हें इनके कविता करने के विषय में इनके पुत्र पं० ब्रजनाथजी बी० ए० द्वारा मालूम हुआ है, और नीचे दिए हुए दोहे भी पं० ब्रजनाथजी से ही उन्हें प्राप्त हुए हैं।

उदाहरण—

छबी कृष्ण दर्पण निरखि राधा भई अधीर,
कठिन मान अरु मोह की गही मूँदि दृग पीर।
मोह गयो मिलनो गयो, यों कहि चले मुरारि,
राधे हिए उराहनो लग्यो चबुक अनुहारि।
सहमी-सी सो रहि गई, बँधी प्रेम-रस डोरि,
कहुँ ठनगन कहुँ रूसिबो, कहुँ मूलता मरोरि।

नाम—(२४११/ग) जीवारामजी चौबे।

ग्रंथ—सभा विलास (नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से मुद्रित)।

नाम—(   ) जीवराम अजरामर गौर, गुजनगर (कच्छ देश)।

जन्म-काल—सं० १९१२।

मृत्यु-काल—सं० १९७२।

विवरण—आप कच्छ महाराजा के पुरोहित होने से 'गौर' कहलाते थे। आप हिंदी तथा गुजराती दोनों भाषाओं में कविता किया करते थे। 'सरस्वती शृंगार'-नामक मासिक पत्रिका भी आपने निकाली थी।

नाम—(२४११/ख) तिलकसिंह ठाकुर, नागपुर, ज़िला सीतापुर।

ग्रंथ—(१) वैराग्यसागर, (२) कृष्णखंड।

जन्म-काल—सं० १९१२।

नाम—(२५११/१) हाजीअलाखाँ, 'अलि', ज़िला दमोह।

जन्म-काल—सं० १९१२।

कविता-काल—सं० १९३८ के लगभग।

मृत्यु-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—(१) वेदपरोपकारक, (२) नलदलगंजन, (३) ज्ञानी दृष्टांत-माला (२०० मत्तगयंद व सवैया), (४) अजामवदी (नाटक), (५) मोरध्वज-चरित्र, (६) इंद्र-सभा का ख़याल, (७) गौ अष्टक, (८) शराब की ऐसी-तैसी।

विवरण—आप हैदरखाँ जौहरी के पुत्र थे, और आपका जन्म वहमील इटा में हुआ था। व्यापार के हेतु आप ज़िला दमोह म

रहने लगे थे। यह उर्दू, हिंदी तथा संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। ऊपर दिए हुए आठ प्रकाशित ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने लावनी, ख्याल इत्यादि हज़ारों की संख्या में बना डाले हैं। इनकी रचनाओं के मुख्य विषय देशोपकार, समाज सुधार आदि रहा करते थे। नीति तथा शिक्षाप्रद बातों का ही आपके काव्य में विशेषतया उल्लेख है। ब्रजभाषा से आपको विशेष प्रेम था, और इसी भाषा में आपकी रचनाएँ हैं। यह महाशय एक अच्छे कवि होने के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैद्य भी थे। इस समय आपके पुत्र कर्रामतजी जिला दमोह में रहते हैं। [महाशय लक्ष्मीप्रसादजी मिश्री, हटा (दमोह) से ज्ञात]।

उदाहरण—

दाता नहिं रंक होत दान के दिए तें कहीं,
कूकर ना भूप होत गंग के नहाए तें,
श्वान के गहे तें कूर शूर नहिं होय जात,
बगुला ना हंस होत मोती के चुगाए तें।
पोथी पाय मूर्ख जन पंडित ह्वै जात नहीं,
तपी नहीं होत भस्म अंग के रमाए तें,
सून दिए स्यार नहिं सिंह होत हाजायली,
ताबुर के आए बाज होत न सिखाए तें।

नाम—(१५३६) कालिकाप्रसाद चौबे, कटनी।

जन्म-काल—सं० १९१२।

कविता-काल—सं० १९४०।

मृत्यु काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) राम चरित, (२) पुलिस-ऐक्ट, (३) स्फुट रचनाएँ।

विवरण—आपका जन्म उन्नाव ज़िले के बीघापुर ग्राम में हुआ था। आपके पिता पं० चैनसुखरामजी चौबे ब्रिटिश-सेना में सूबेदार

के पद पर थे और सन् १८५७वाले विद्रोह के समय अच्छा काम करने के उपलक्ष में ब्रिटिश सरकार ने इन्हें पदक आदि प्रदान करके सम्मानित किया था। आप तीन भाई थे। आपके ज्येष्ठ भ्राता राय-बहादुर पं० बालाप्रसादजी चौबे डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट पुलिस के पद पर थे, तथा मँझले भाई प० मानिकप्रसादजी चौबे इंदौर में प्रधान जेलर थे। चौबेजी स्वयं पुलिस इन्स्पेक्टर तथा आनरेरी मैजिस्ट्रेट थे। [प० मातादीन शुक्ल, अध्यापक म्युनिसिपल हाइस्कूल, कटनी के द्वारा ज्ञात]।

नाम—(१४३६) काशीनाथजी मिश्र, मैनपुरी।

ग्रंथ—(१) स्फुट कविता, (२) लघु पाराशरी की छंदोबद्ध भाषा-टीका।

रचना-काल—सं० १९४० के लगभग।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। यह स्वर्गीय मैनपुरी नरेश श्रीरामप्रतापसिंहजी के दरबारियों में से थे। महाराजा भरतपुर तथा करौली भी आपके आश्रयदाता थे। भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्रजी से इनकी घनिष्ठ मित्रता थी। यह ज्योतिष, वैद्यक तथा संगीत के अच्छे पंडित थ। भारतेंदुजी ने जो राग-रागिनियाँ रचीं, उनके स्वर-कार आप ही थे। [प० उमरावसिंहजी पांडेय, मंत्री चतुर्वेद पुस्तकालय, मैनपुरी के द्वारा ज्ञात]।

नाम—(१५४०) गरीबदास गोस्वामी (सनाढ्य ब्राह्मण), दतिया।

जन्म-काल—सं० १९१०।

कविता-काल—सं० १९४०।

विवरण—स्व० महाराज भवानीसिंह दतिया नरेश के मंत्री (दीवान) थे।

उदाहरण—

> किन्यो जो आराम पै लियो न राम-राम नाम,
> होय बस धाम के निकाम कामताई है,
> तो पै ग्राम धाम में बिताए बहु याम या
> स्याम देव धाम भवतापन नसाई है।
> प्रेम नाम धाम मन होय विश्राम धाम,
> रसिक अराम होत सत मनभाई है;
> कामना भनाई तो पै काम ना भनाई जो पै,
> कामना भनाई तो पै काम ना भनाई है।

नाम—(१५५६) जयगोविन्द, ग्राम बहोरा, जिला पूर्निया (विहार प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९१० के लगभग।

रचना-काल—सं० १९४०।

मृत्यु-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—(१) अखबार बाजार, (२) कविता-कौमुदी (अमुद्रित)।

विवरण—आप श्रीरामप्रसादजी के पुत्र थे। जाति के ब्रह्म भट्ट थे। कविता आप बचपन ही से किया करते थे। यह महाशय पूर्निया ज़िलांतर्गत श्रीनगर राज्य के अधिकारी श्रीकुँवर कालिकानंदसिंहजी के आश्रित कवि थे। [श्रीरामगोविंदसिंह वर्मा मदारीचक (विहार) के द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

> चलनो सुपथ परमारथ में रत मन,
> पान गंगा-तोय अरु तिनमें नहावनो,
> रूप-राशि राधा-कृष्णपद में धवल भक्ति,
> चंदन सुगंध शुचि अंग में लगावनो।

भोजन सुपथ, घृत, गोरस पै मग माहिं,
कविता के आनँद में समय बितावनो ;
रहनो निरोग दैवोविद सतसंगति में,
एते देहि मात पुनि और नाहिं चाहनो।

नाम—(२५३७) नौरंगीलाल चौधरी 'नंददास', कहलगाँव, ज़िला भागलपुर (बिहार)।

जन्म-काल—सं० १९२०।

रचना-काल—सं० १९४० के लगभग।

मृत्यु-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) नगजेन्द्र, (२) नंद-सागर, (३) श्रीहरिनामाष्टकम्।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० गदाधरराम चौधरी के पुत्र थे। [श्रीयुत श्रीनाथ चौधरी, सगरामपुर (भागलपुर) द्वारा ज्ञात]।

नाम—(२५१०) रामनाथ रत्नुचारण, नेतवाचारण राज्य जयपुर।

ग्रंथ—राजस्थान का इतिहास।

मृत्यु-काल—सं० १९६२ के लगभग।

विवरण—यह सांभर निवासी तेजमलजी रत्नुचारण के पुत्र थे। इन्होंने जयपुर, जोधपुर तथा किशनगढ़ राज्यों में ऊँचे-ऊँचे पदों पर रहकर प्रशंसनीय काम किए हैं। यह महाशय अँगरेज़ी तथा हिंदी के अच्छे ज्ञाता थे। आपका 'राजस्थान का इतिहास' एक महत्त्व पूर्ण ग्रंथ है। [ठाकुर चतुरसिंह राठौर, बीकानेर द्वारा ज्ञात]।

नाम—(२५१६) लालू कवि, दतिया।

जन्म-काल—अनुमानतः सं० १९१०।

कविता-काल—सं० १९४०।

विवरण—जाति के धीवर थे।

उदाहरण—

तेरे ही वियोग स्यामताई मन छाय रही,
भयो है मलीन कहूँ नेक हू सुगोरो ना,
कीनी आप प्रीत अवै सोइ तो दिखात पीत,
फूली फुलवारी पै सनेह कहूँ जोरो ना।
'लाल कवि' सुजन सपूतन की रीत यही,
करके सनेह सीस फेर कहूँ तोरो ना।
धावत पराग गुन गावत तुम्हारो देख,
आवत मलिंद अरविंद सुत मोरो ना।

नाम—(१५६८) पचऊ चौबे (रसीले), काशी।

ग्रंथ—ऊधो उपदेश।

कविता-काल—सं० १८९१ के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१५८८) कालीप्रसाद भट्ट, उरई।

ग्रंथ—रसिक-विनोद, द्वि० त्रै० रि०।

विवरण—सं० १८६६ में मृत्यु हुई। पिता का नाम छविनाथ भट्ट था।

नाम—(१५६२) जीवाभक्त भावनगर, काठियावाड़।

जन्म-काल—सं० १८१६।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप गोहिल राजपूत काका भाई के पुत्र थे। भावनगर के महाराज श्रीभगवतसिंहजी की रानी श्रीअमजीरा साहबा के यहाँ मैं कुछ काल पर्यंत यह महाशय थे। उक्त रानी साहबा के स्वर्गवास होने पर यह परमहंस बनकर नर्मदा-तट के प्रदेश में रहने लगे, और इसी स्थिति में कविता करने लगे। कविता में प्रथम यह अपना नाम 'जीवा' रखते थे, और पश्चात् 'जीवनराम' रखने लगे।

निलासपुर।

ग्रंथ—(१) प्रबोध-[illegible] का हिंदी-अनुवाद, (२) शबरीनारायण-माहात्म्य, (३) [illegible], (४) [illegible]।

विवरण—खड़ी बोली की [illegible]।

मृत्यु-काल—सं० १९९९।

नाम—(२४६३ / मा) रामसनेही मिश्र, ग्राम [illegible], जिला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९२१।

रचना काल—सं० १९४१ के लगभग।

ग्रंथ—(१) स्फुट कविता, (२) [illegible] कादंबरी का पद्यानुवाद (अपूर्ण)।

विवरण—आपके पूर्वज [illegible] जिला रायबरेली के रहनेवाले थे। [illegible] बंगाल में रोजगार करते थे, और [illegible] गए। आप पं० रामाधारजी मिश्र के [illegible] पुत्र थे। [illegible]

में, पं० अम्बिकादत्तजी व्यास की अभिभावकता में रहकर, संस्कृत-साहित्य का अध्ययन करके वहीं से काव्यतीर्थ की उपाधि प्राप्त की। आपका संबंध कलकत्ते के प्रसिद्ध 'जीवानन्द विद्यासागर' प्रेस से, संस्कृत ग्रंथों के संशोधक के नाते, बहुत काल पर्यंत रहा। यह संस्कृत के विद्वान् होने के अतिरिक्त हिंदी के भी कवि थे। यदा कदा आपकी रचनाएँ मनोहर अथवा 'मिश्र' उपनाम से अंकित रहा करती थीं। कहा जाता है 'पथिक-दूत'-नामक संस्कृत-काव्य ग्रंथ इन्होंने रचा, किंतु इनकी यह कृति अब उपलब्ध नहीं है। हमें यह कवि महाशय पं० शिवशंकर वाजपेयी, रायपुर के द्वारा प्राप्त हुए हैं। और, उन्हीं के पास इनकी स्फुट कविता का जो संग्रह है, उसी से नीचे दिया हुआ उदाहरण लिया गया है।

उदाहरण—

युगल किशोर नैन कोर की मरोरन में
　　　　सान मान वारा करै रूप अभिमान की;
दंपति इशारा बड़े प्रेम से निहारा करैं,
　　　　कुंज भूमि झारा करै उभय मिलान की।
मृगमद, केसर कपूर, केवड़े को नीर,
　　　　वीथिन ढवारा करैं रौंसें मल्लिकान की।

नाम—($\frac{३९६४}{म}$) कामताप्रसाद का नस्थ, बुंदेलखंडी, चिरगाँव, झाँसी।

ग्रंथ—(१) रामाष्टक, (२) संक्षिप्त रामाश्वमेध आदि कुछ पुस्तकें।

जन्म-काल—सं० १९१० ।

विवरण—आप अपनी धुन के इतने पक्के थे कि देवता संबंधी जो पुस्तकें आपने पहले बनाई थीं, उनको अपनी स्त्री पुत्रादि की मृत्यु पर उन्हीं देवता की दया का अभाव मानकर फूँक दिया।

नाम—($\frac{२४६४}{आ}$) गोपालजी, सोढारम, पोरबंदर।

जन्म-काल—सं० १९१७।

मृत्यु-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) काव्य प्रभाकर (रुक्मिणी विवाह), (२) मलिंद शतक, (३) रसाल मंजरी, (४) तत्वात्मबोध, (५) हमीर सर बावनी, (६) मणि-लक्ष्मण-बत्तीसी (बड़ौदा), (७) नारायण सरोवर माहात्म्य, (८) द्वादशज्योतिर्लिंग स्तोत्र, (९) पराइशिकाराष्टक, (१०) शिवाष्टक, (११) भुवनेश्वरीदेवी स्तुति, (१२) विंध्यवासिनीदेवी-स्तुति, (१३) खेंगार उद्वाहानंद पायूष (भुज के राव खेंगार के विचार का वर्णन)।

विवरण—इन्होंने कच्छभुज नगर में कविताभ्यास किया था। डूँगरपुर में आपका शरीरांत हुआ।

नाम—($\frac{२४६५}{इ}$) ग्रीब्ज (रेवरेंड एडविन)।

रचना-काल—संवत् १९७२ के लगभग।

विवरण—आपका जन्म संवत् १९१७ में, लंदन नगर में, हुआ। आप पादरियों के काम पर संवत् १९३८ में पहलेपहल भारत में आकर मिर्ज़ापुर में दस ग्यारह वर्ष रहे। वहाँ आपने हिंदी सीखी। पीछे से आप बहुत काल तक काशी में रहे। आपने ईसाई-मत की पाँच पुस्तकें हिंदी में लिखीं, और तुलसीदास के जीवन-चरित्र पर एक निबंध भी रचा। आप नागरी प्रचारिणी सभा के एक प्राचीन सहायक और बड़े ही उदारचेता सज्जन हैं। अब आप विलायत चले गए हैं। आपने हिंदी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास अँगरेज़ी में लिखा है।

नाम—($\frac{२४६५}{ई}$) मोठालालजी व्यास ब्यावर, राजपूताना।

ग्रंथ—(१) सर्वतोभद्र चक्र, (२) भारत का वायुशास्त्र, (३) टाड साहब की भूल।

जन्म काल—सं० १९१७।

नाम—(२२०१/१) सीतारामजी मिश्र, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९१८।

मृत्यु-काल—सं० १९८१।

ग्रंथ—(१) दंगल मैनपुरी, (२) गो पुकार-चालीसी।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे, और श्यामसुंदर हाई-स्कूल, चँदौसी में अंतिम समय तक हिंदी अध्यापक रहे।

उतालीसवाँ अध्याय

दूसरा अज्ञातकालीन प्रकरण

अज्ञात कालवाले कवियों के कथन इकतीसवें अध्याय में हो चुके हैं। विनोद के तीन खंड छप जाने के पीछे बहुत-से अज्ञात कालवाले जो कवि प्राप्त हुए हैं, उनका कथन, इस अध्याय में अकारादि क्रम से, किया जाता है।

नाम—(३३६१) अबादत्त, उपनाम सुजान कवि।

ग्रंथ—सुजान-सरोज।

विवरण—आप हरदी निवासी ब्राह्मण थे। उक्त ग्रंथ नवल-किशोर प्रेस, लखनऊ में छप चुका है।

नाम—(३३६२) अमृतानंद स्वामी।

ग्रंथ—कृष्णामृत (च० त्रै० रि०)।

नाम—(३३६३) अज्ञात।

ग्रंथ—सोलंकी वंशावली।

विवरण—काव्य अपूर्ण है। इसमें सूर्य वंशीय अंबरीष राजा के वंशज पट टोडरमलवंशीय सोलंकिया का वर्णन दिया हुआ है।

उदाहरण—

सरमायो आयो सरण, सब पायो आनंद ;
समझायो नृप चक्र को, प्रबल छुड़ायो फंद ।
दुर्वासा-से प्रबल को दई आप प्रभु दीन ;
भरराज अंबरीष-से को महराज प्रवीन ।

नाम—(३३३४) इन्द्रदेवनारायण शर्मा ।

नाम—(३३३५) ईश्वरीप्रतापनारायण राय ।

ग्रंथ—हास्य शृंगार ।

विवरण—आप पडरौना ग्राम के निवासी थे । आपका वर्णन 'कवि व चित्रकार' में दिया हुआ है ।

नाम—(३३३६) ऊधव ।

ग्रंथ—(१) शृंगार-सुधाकर, (२) नख शिख हजारा, (३) रसमालिका (हस्त लिखित) ।

उदाहरण—

मोहन से विपरीत रती करि कामिनी काम-कलार सुख पाए ;
अगन मजन बुंद बिराजत केस सु आइके आनन छाए ।
फेरिके हाथ सों जूरो बनावत 'ऊधव' याहि लखे मन भाए ;
मानहु राहु ग्रस्यो सब मंडल है अरविंदन आनि छुड़ाए ।

नाम—(३३३७) खूबकृष्ण ।

ग्रंथ—स्वरूपमाला ।

विवरण—यह करौली गाँव के चौधरी थे ।

नाम—(३३३८) गणपति ।

काल—अज्ञात ।

ग्रंथ—छंदात्मक रामायण ।

विवरण—उक्त ग्रंथ का केवल लंकाकांड महाशय भालेरावजी को [illegible] है ।

नाम—(३३९९) गोप भाट, गुजरात प्रांत।

ग्रंथ—राम राजा तथा वीरम राजा के युद्धों का वर्णन।

नाम—(३४००) गोपालनाथ, महाराष्ट्र देश।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप नाथपंथी साधु तथा आत्माराम के शिष्य थे।

उदाहरण—

कर विचार मन र ! तू क्या करे गुमान,
टा दि बा मिजवान आखर जायगा नादान।

नाम—(३४०१) चतुर।

ग्रंथ—काव्य कुतूहल।

विवरण—यह गैलानी गोकुलस्थ भट्ट ब्राह्मण थे।

नाम—(३४०२) चतुरदास, बाजलवास, जोधपुर राज्य।

ग्रंथ—चतुर रसाल (नवरसमय नायक-नायिका भेद पर ग्रंथ)।

नाम—(३४०३) चतुरदास महंत, रतलाम।

ग्रंथ—(१) महिमापच्चीसी, (२) ज्ञानपच्चीसी, (३) गोविंदनामपच्चीसी, (४) प्रश्नोत्तरपच्चीसी (५) आनंदपचीसी, (६) गुरुमालिका, (७) रामलीला, (८) धर्मोपदेश, (९) अमरकोष।

विवरण—आप रामानंदी संप्रदाय के जाता थे।

नाम—(३४०४) छत्रशालदेव, महाराजा सिहरौली।

ग्रंथ—पदरत्नावली (राग रागिनियों का ग्रंथ)।

विवरण—यह सिहरौली के प्राचीन राजाओं में से थे।

नाम—(३४०५) छेदीदास बाबा।

ग्रंथ—(१) संत महिमा, (२) स्नेह-सागर।

नाम—(३४०६) जनपंडित, महाराष्ट्र-देश।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आपके बहुत-से हिंदी पद महाराष्ट्र-देश में कीर्तन करनेवाले प्राय गाया करते हैं।

नाम—(३४०७) जिनदास।

ग्रंथ—नाममाला।

विवरण—श्रीनंददासजी का बनाया हुआ इसी नाम का ग्रंथ प्रसिद्ध है। आप जैन धर्मानुयायी समझ पड़ते हैं, क्योंकि आपने ग्रंथ में बीच-बीच में तीर्थंकरों के नामों का उल्लेख किया है।

नाम—(३४०८) डाल।

ग्रंथ—काव्य-संग्रह (वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई से मुद्रित)।

नाम—(३४०९) तुलसी।

ग्रंथ—(१) नयनाभक्ति, (२) अष्टांग योग (३) वेदांत ग्रंथ, (४) चौघरी ग्रंथ, (५) करनीसारजोग ग्रंथ, (६) साधु लक्षण, (७) तत्व गुन भेद।

विवरण—यह राजपूताने में एक साधु हो गए हैं।

नाम—(३४१०) दाताप्रसाद कायस्थ, मिर्जापुर।

नाम—(३४११) दुर्गादत्त, वृंदावन।

ग्रंथ—आप हिंदी एवं संस्कृत के भारी विद्वान् तथा कवि थे। आप एक घड़ी में १०० श्लोक रचते थे। आपकी 'घटिकाशत' उपाधि थी।

नाम—(३४१२) दूधाहाडानी वे आगड़ी, गुजरात प्रांत।

ग्रंथ—दूधाहाडानी बेयाग्री।

रचना-काल—लगभग १६१७।

विवरण—आप बादशाह अकबर के समकालीन थे। ग्रंथ चारणी-भाषा में, जो डिंगल भाषा कही जा सकती है, लिखा गया है। ग्रंथ में राजा हाड़ा दूदल का अकबर के साथ जो युद्ध हुआ था, उसका वर्णन है।

उदाहरण—

चासद्र मास चहुधाय ;
प्कास में धरतायण थाय।
पुरण नक्षत्र तेजम प्रमाण ;
कुँवर जनमे मुहित कैलाय।

नाम—(३४१३) नवाब अनवरखाँ।

ग्रंथ—अनवर चंद्रिका (बिहारी-सतसई की टीका)।

विवरण—आप सैयद मुस्तफ़ाखाँ के पुत्र थे।

नाम—(३४१४) नारायण स्वामी, सरकारी बड़ा मंदिर, रियासत कपूरथला।

ग्रंथ—(१) रघुनाथ नाटक, (२) श्रीकृष्ण जन्म नाटक, (३) अनुराग-रस, (४) ब्रज बिहार।

नाम—(३४१५) निष्कुलानंद स्वामी, गुजरात प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप स्वामी सहजानंदजी के शिष्य थे। इनके विषय में कवि दलपतराम ने यों कहा है—

"मानहु हैं वैराग्य कि मुरती ;
रजत सदा प्रभु पद में सुरती।"

नाम—(३४१६) नोहर(नवहरि)सिंह (अनुरूप), वृंदावन।

ग्रंथ—(१) हनुमानुत्पत्ति, (२) नोहर विनोद, (३) नोहर विलास, (४) सतियानी, (५) अनुभव ज्ञान।

नाम—(३४१७) परमेश।

ग्रंथ—भक्ति-सत्ता।

विवरण—आप डुमराव निवासी वैश्य थे।

उदाहरण—

कहाँ जाउँ कासों निज दीनता कहूँ मैं स्याम,
मूँदि लेत नैन कोऊ नेकु न निहारो है।
पातक अपार पेखि नरकहु मूँदे नाक,
मूँदे जम कान हौं मारो नहिं पारो है।
गिनती करौ तू 'परमेस' विनती है यहै,
दीननाथ, दीनबंधु बिरद तिहारो है,
सब हैं विपच्छ कोऊ पच्छ न हमारो यहै,
मोर पच्छवारो, तुहीं मोर पच्छवारो है।

नाम—(३४१८) पीतांबर पंडित।

ग्रंथ—(१) विचार चंद्रोदय, (२) बाल-बोध, (३) पंचदशी की टीका, (४) अष्ट उपनिषद् की टीका।

विवरण—आप कच्छ मांडवी निवासी सारस्वत ब्राह्मण थे। संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे, और वेदांत विषय पर भाषा में अच्छे-अच्छे ग्रंथ बनाए हैं।

नाम—(३४१९) बगीराम, ग्राम आसोर, मारवाड़।

ग्रंथ—(१) जस भूषण, (२) जस रूपक।

नाम—(३४२०) बहिरम।

ग्रंथ—सुदामा-चरित्र।

नाम—(३४२१) भवानीदास रामसनेही साधु, जोधपुर।

ग्रंथ—(१) भवानीनामप्याला, (२) भर्तृहरिशतक (तीन भाषाओं में), (३) भक्तमाल।

नाम—(३४२२) भवानीप्रसाद, उपनाम भगवत।

ग्रंथ—प्रेमावलि (प्र० त्रै० रि०)

विवरण—ओरछा निवासी।

नाम—(३४२३) भारतचंद्र राय।

विवरण—श्रीयुत गोविंदरामचंद्र चांदेजी का कथन है कि स्वर्गीय श्रीजगन्मोहन वर्माजी ने अपने 'शब्द शास्त्र'-नामक लेख में इन्हें एक बंगदेशीय हिंदी कवि बतलाया है। वर्माजी का यह लेख हमारे देखने में नहीं आया है, किंतु वह 'माधुरी' पत्रिका की किसी संख्या में निकल चुका है, ऐसा कहा जाता है।

नाम—(१४२४) मौन।

ग्रंथ—यादि चिंतामणि (पृष्ठ १४)।

नाम—(१४२५) मधुसूदन वल्लभ।

ग्रंथ—(१) सेवा प्रणालिका-सख्या निर्णय, (२) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदाय।

नाम—(१४२६) मनराखनलाल वाजपेयी 'राखन', ग्राम पाली, ज़िला हरदोई।

रचना-काल—अज्ञात।

ग्रंथ—(१) सुदामा चरित्र (२) वामन-चरित्र, (३) विद्या विलास, (४) पक्षी विलास।

विवरण—संभवतः यह महाशय कवि हरिनाथजी के समकालीन थे। [प० रामाज्ञा द्विवेदी के द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

देत किलकाइ देह दिग्गज दाप भीता,
साक को दया है करें सांई भक्ति अघ की;
सारदा सराहै सिव बंद की न था, देव,
द्रुम वो लता है सुषमा-सी साधु सत की।
'राखन' सुकवि कहै हिये सों निहारो बेगि,
मेरे मन आइ चोप काहे रज रग की;

गिरिन को ढाहैं, सातौ सिंधु [illegible] [illegible]।
[illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

नाम—(३४२७) मनिराम।

ग्रंथ—(१) गोप-पचासी, (२) [illegible] [illegible] (३) बलभद्र-कृत 'नख शिख' की टीका।

नाम—(३४२८) महावीरदास।

ग्रंथ—[illegible]-रामायण।

नाम—(३४२९) महासिंधु।

ग्रंथ—छंद-शृंगार (पिंगल-ग्रंथ)।

विवरण—आप मारवाड़ के निवासी थे।

नाम—(३४३०) महिरामजी [illegible] [illegible] [illegible] काठियावाड़।

ग्रंथ—प्रवीण-सागर।

विवरण—आपके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शरीर पात हो जाने पर इस ग्रंथ का [illegible] [illegible] [illegible] ने समाप्त [illegible] किया।

पानि के जतु कहाँ पहिचानत ग्रीषम के तप की गरदी को,
केसरि की करि है कहँ हिम्मत है न परीग्व जहाँ हरदी की।
कायर को न कछू परिहै कल सूरन को सुधि है मरदी की,
बेदरदी न प्रवीन चहे कछु जानहिगो दरदी दरदी की।

नाम—(२४२१) मच्छ (मच्छराम), जोधपुर।
ग्रंथ—रघुनाथ रूपक पिंगल (मारवाड़ी भाषा में)।

नाम—(२४२२) माधवसिंह राजा आगरा।
ग्रंथ—रस विलास।

नाम—(२४२३) मानिकदास।
ग्रंथ—(१) संतोष-सुरतरु, (२) सत्संग प्रभाव, (३) राम-रामायण, (४) कवित्त प्रबंध, (५) आत्म विचार।
विवरण—आप अहमदाबाद के पाटीदार थे। आप एक अच्छे विद्वान् थे। कहा जाता है, कारण-वशात् आपने वैराग्य धारण कर लिया था, और साधु होकर उज्जैन में जा बसे।

नाम—(२४२४) मीरा सैयद ताहर।
ग्रंथ—गुन-सार।

नाम—(२४२५) मूढ़जी।
ग्रंथ—कविप्रिया की टीका।
विवरण—राजपूताने के चारण।

नाम—(२४२६) मूलचंद ज्ञानी।
ग्रंथ—(१) पदार्थ-मंजूषा, (२) तत्त्वानुसंधान।
विवरण—आप वैश्य थे।

नाम—(२४२७) मोहनदास महंत, गोरखपुर।
ग्रंथ—बृहत् सनातन धर्म-सार (पृष्ठ ३४८-गद्य द्वि० त्रै० रि०)।

नाम—(३४३८) मौड़जी, मलिया गाँव के ठाकुर साहब।

ग्रंथ—पोस्त पचीसी।

विवरण—आप यदुवंशी थे। उक्त ग्रंथ अफीमचियों के लिये रचा गया है।

उदाहरण—

जे ही दुरचारी याहू मानते हो सारी तुम,
दिल में विचारि देखो कैसी यह मारी है,
नाक सुरा यारी जारी रेत ना उघारी आँख,
सुस्त मन भारी उठे हिम्मत विसारी है।
रजन जो नारी लाग थोड़े दिन प्यारी यह,
पाछे देत गारी बस विष-सम सारी है,
कहत पुकारी सुनु अरज हमारी भाँक,
अफिम की यारी सारे मौत की गुवारी है।

नाम—(३४३९) मंगलदास महत, सिहोर राज्य भावनगर, (काठियावाड़)।

ग्रंथ—शिव विलास।

नाम—(३४४०) रघुनाथ, जूनागढ़।

ग्रंथ—(१) बेट यात्रा, (२) बाल-लीला।

विवरण—आप वड़नगरा नागर ब्राह्मण थे।

नाम—(३४४१) रसरंगमणि।

ग्रंथ—श्रीपरयूरसरंगलहरी।

नाम—(३४४२) रसराशि उपनाम रामनारायण, जयपुर।

ग्रंथ—(१) कवित्त-रत्नमाला, (२) रसिक-पचीसी।

विवरण—आप जयपुराधीश महाराजा प्रतापसिंहजी के समकालीन थे।

उदाहरण—

श्रीमन्नारायनजू के चरन को सेवक भी,
    रामानुज सम्प्रदाय शिष्यपद पायो हौं;
रसिक-सभा में बैठि बोलिबे को चाव मेरे,
    चाऊ मोह चाहे इहि लाभ लोभ छायो हौं।
मिश्रवर वंश रामनारायण नाम मेरो,
    कविता में छाप 'रसराशि' हरि ध्यायो हौं;
सबको सुहायो भनी साम गुन गायो भयो,
    मेरो मन भायो सब ही को मन भायो हौं।

नाम—(३४४३) रंगनाथ।

ग्रंथ—(१) सरजूलहरी, (२) मणि-मंजरी।

नाम—(३४४४) रंगीदास।

ग्रंथ—समय प्रबंध।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(३४४५) रंगीलदास, जूनागढ़, काठियावाड़।

ग्रंथ—(१) द्रौपदी पट निधान, (२) नाममाला।

विवरण—आप बड़नगरा नागर ब्राह्मण थे।

नाम—(३४४६) राजकुमार श्रीशिवेंद्र साही।

ग्रंथ—स्फुट पद्य-रचनाएँ।

विवरण—आपका उपनाम लालसाहब था। यह जाति के भूमिहार ब्राह्मण और महाराज बेतिया के जामातृ थे। आप राजधानी माँझा ज़िला छपरा के निवासी तथा पंडित जगन्नाथ दीक्षित के वंशज थे।

नाम—(३४४७) राधावल्लभ।

ग्रंथ—(१) भीष्मपर्व, (२) गीता भाषा, (३) शालिहोत्र, (४) राग रत्नाकर।

विवरण—आप किशनगढ़वासी चारण थे।

नाम—(३४४८) राधिकादास, शेरखी ग्राम, गुजरात।

ग्रंथ—भारत-चरित्र ग्रंथ।

नाम—(३४४९) रामऋषि (रामरतनदास) पटावत, मिहरी ग्राम, उदयपुर।

ग्रंथ—राम-सहस्रनाम।

नाम—(३४५०) रामकिशोर, लखनऊ।

ग्रंथ—जल कृत्य।

नाम—(३४५१) रामदीन, उपनाम सुंदर।

ग्रंथ—विजय पलेरा समर [प्र० त्रै० रि०]।

विवरण—पलेरा, ज़िला हमीरपुर निवासी।

नाम—(३४५२) रायसिंह।

ग्रंथ—शिवरंजन।

विवरण—आप मझियाव गाँव के जलखोरा बघेला क्षत्रिय थे।

नाम—(३४५३) लछिमन कवि, अवध प्रांत।

उदाहरण—

लछिमन कहूँ देखा विचारि कछु भावत ना बिन श्यामै है;

इत्यादि।

नाम—(३४५४) लालबहादुर, अनेई ग्राम, काशी।

ग्रंथ—हल्दीघाट का युद्ध।

नाम—(३४५५) वृंदावन वैश्य, काशीपुर, तराई

ग्रंथ—भारतीय शिष्टाचार।

नाम—(२२२६) बिहारीलाल लाला।

ग्रंथ—कायस्थ-कुल चंद्रिका, [प्र० त्रै० रि०]।

विवरण—औंड़ा राज्य छतरपुरवासी।

नाम—(२२२७) शिवदिनकेशरी, पैठन, महाराष्ट्र देश।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप नाथ पंथ के परंपरा अनुयायी तथा सं० १२८६ वाले महात्मा ज्ञानेश्वर की शिष्य परंपरा में से थे। 'नाथ पंथ का बाना यारा सब दुनिया से न्यारा है' यह प्रसिद्ध पद आप ही का बनाया हुआ है। आपकी कविता मधुर प्रभावोत्पादक तथा उपदेशात्मक हुआ करती थी। केसरीनाथ आपके गुरु थे।

उदाहरण—

(१)

किन वैरिन ने वैर कियो री,
साजन कूँ वैराग दियो री।
पेहरा मुद्रा भस्म चढ़ाया, कान में कुंडल अलख जगायो।
खाँदे नो पावरी हाथ में झोली, गले बिच निर्गुन माला सैली।
शिवदिन मनोहर केसरि प्यारा, अलख अलख सब जोति उजारा।

(२)

हम फकीर जन्म के उदासी बंदे निरंजन वासी।
सत्त कि भिच्छा दे मेरी माई मन दाटा भरपूर,
बार-बार हम नहिं आने के हरदम हार खुसी।
सोना रूपा पेसा पैसा श्रो कुछ हम ना चाहें,
प्रेम कि भिच्छा दा मेरी माइ हम पक्षी परदेसी।

सिर फोड़ जलाली करते मगन हार यो न्यारे ॥
शिवदिन के प्रभु केसरि साहेब चरनो के रहिवासी ।
हजरत अल्ला सब दुनिया पालनवाला ।
जिसका आसमान है तबू । धरती जाजम पवना खबू ।
ऊपर गादा है या गबू । हरदम अल्ला अल्ला ॥ १ ॥
चद्र-सूरज दोनो है चिरागी । नव दरवाज दसवीं खिरकी ।
ऊपर रक्खी है एक खिरकी । सब घट अल्ला अल्ला ॥ २ ॥
सात समुदर खदक खोली । मोहबत का दरवाजा मोर्ला ।
अबोल बोलत मीठी बोली । सब रग अल्ला अल्ला ॥ ३ ॥
साईं केसरि गुरु पिरसारा । शिवदिन नाम मुरीद हिसारा ।
रूनमग आगत ज्योत हिजारा । लाल हि लाला अल्ला अल्ला ॥ ४ ॥

नाम—(३४५८) श्यामकरण ।

ग्रंथ—(१) अभयोदय भाषा, (२) अजितोदय भाषा ।

नाम—(३४५९) श्रीमजु केशानद, स्वामी गुजरात-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ ।

विवरण—यह काशी निवासी सहजानदजी के शिष्य थे ।

नाम—(३४६०) सत्यराम ।

विवरण—श्रीयुत गोविंद रामचद्र चादे इन्हें बगाशीय हिंदी-कवि बतलाते हैं ।

नाम—(३४६१) स्वामी नित्यानद ।

ग्रंथ—श्रीहरि दिग्विजय ।

विवरण—आप उत्तर भारत के निवासी तथा सहजानदजी के शिष्य थे । ग्रंथ में विशिष्टाद्वैत-सप्रदाय तथा भक्ति मत का प्रतिपादन किया गया है ।

नाम—(२७६२) हजारीलाल कायस्थ, गोंडा।

ग्रंथ—सत्री भाषा नानक साहब (पृष्ठ २२७), द्वि० त्रै० रि०।

नाम—(२७६३) हरिनाथजी, ग्राम पाली, जिला हरदोई।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। [पं० रामाज्ञा द्विवेदीजी द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

पल पुरवाइ दिए अजन घटान घाइ,
चापि चितताइ चपलाई भ्रम भाई है।
बगुला सिताइ, असिताई केकी कोकिलाई,
मघु बरसाइ इंद्रधनु द्युति छाई है।
प्रेम बरसाइ 'हरिनाथ' नेम करि लाई
गजनि सवाई त्यों कटाच्छ दरसाई है,
एरी भट्ट पाई कहाँ ऐसी चतुराई तेर—
नैननि निकाई मनु पावस सुहाइ है।

नाम—(२७६४) हरिवंशनारायण।

ग्रंथ—सुदामा चरित्र, [च० त्रै० रि०]।

नाम—(२७६५) निरूमदास।

ग्रंथ—(१) रुक्मिणी विवाह, (२) चकोर लीला, (३) पर्वत-पचीसी, (४) वैष्णव-सम्प्रदाय के स्फुट पद।

विवरण—यह काठियावाड़ देशांतर्गत जूनागढ में बस गए थे। आप नागर गृहस्थ मजमदार थे। आपके सात पुत्रों में से रजीतदास तथा देवराकर अच्छे कवि हो गए हैं। आदि में आप वल्लभ-वंशोत्पन्न गोकुल निवासी तैलंग ब्राह्मण थे।

चालीसवाँ अध्याय

पूर्व नूतन परिपाटी

संवत् १६४२ से १६६० तक

यों तो हिंदी प्रौढ़ माध्यमिक समय में ही परिपक्व हो चुकी थी, और जिस महत्ता का साहित्य गोस्वामी तुलसीदास तथा सूरदास ने उस काल बनाया, वैसा हम लोगों के सामने अब तक नहीं आया है, तो भी हमारी साहित्य-प्रणाली तथा साहित्य-सेवियों की संख्या इन दोनों में समय के साथ अच्छी वृद्धि हुई है। पूर्वालंकृत काल में जिस महत्ता के बहुतेरे साहित्य-सेवी उपस्थित हुए, उतने उनसे पहले कभी न हुए थे। उत्तरालंकृत काल तक अच्छे-अच्छे कविगण स्थायी साहित्य निरचन में प्रचुरता से समर्थ रहे, किंतु परिवर्तन काल में यद्यपि विषयों की अच्छी वृद्धि हुई और गद्यश्रेणि के साथ उपयोगी रचनाओं का आशा-जनक आरंभ हुआ, तथापि स्वामी दयानंद सरस्वती को छोड़कर कोई भी कवि या लेखक स्थायी साहित्य न उपस्थित कर सका। फिर भी यह अवश्य मानना पड़ेगा कि केवल स्वामीजी का अस्तित्व एक ऐसा अमूल्य पदार्थ था, जो परिवर्तन-काल को भी बहुत उत्कृष्ट बनाता है। आपके ग्रंथ-रत्न प्रलय पर्यंत समाज को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। यद्यपि हम लोग आर्यसमाजी नहीं हैं और स्वामीजी के बहुतेरे विचारों से हमारा मतभेद है, तथापि केवल साहित्य-समालोचक के नाते हम उनके ग्रंथों पर उपर्युक्त मत प्रकट करते हैं। यह स्वामीजी के ही उपदेशों का फल था कि हमारे देश से दुर्गा, काली आदि की वाम-मत-पूर्ण उपासना निर्बल हुई, गाज़ी मियाँ, पीर आदि के मान का बल घटा, तथा ब्राह्म, ईसाई, मुस्लिम, सिक्ख आदि धर्मों की वृद्धि, जो हिंदुओं के उन मतों में जाने से

हो रहा था, वह स्थगित हुई। हिंदू-समाज में नूतन परिमार्जित विचार फैलने लगे, और सामाजिक कुरीतियों आदि के हटाने को गल्प उपन्यास आदि बनाने की ओर हमारे लेखकों की रुचि बढ़ी। वास्तव में स्वामीजी हिंदू समाज एवं साहित्य के लिये कल्पतरु हुए हैं, और उनका इन दोनों पर भारी ऋण है। भारतेंदु-काल को स्वामीजी तथा अँगरेज़ी राज्य के प्रभावों से अच्छा लाभ हुआ, और हमारे साहित्य की प्रगति उपयोगी मार्ग की ओर शीघ्रता से बढ़ने लगी। भारतेंदु ने अनेकानेक विषयों पर परिश्रम किया, किंतु उनके समय देश भक्ति तथा नाटक-वृद्धि की प्रधानता रही।

हमारा नियम रहा आया है कि प्रत्येक कवि का पूरा विवरण उसके प्रारंभ काल में ही हम दे देते हैं। इस प्रथा से यह भी समझ पड़ सकता है कि मानो उसकी सारी कृतियाँ आरंभ-काल में ही हमारे साहित्य क्षेत्र में आ गईं, यद्यपि बात यह है कि पूरे समय के वर्णन में उनकी रचनाओं का प्रभाव समाज पर उन ग्रंथों के रचना-काल से ही वास्तव में पड़ता है। अतएव भारतेंदु के समय वाले अनेकानेक सरस्वती के लाल ऐसे थे जिनके वर्णन तो उसी समय हो गए हैं, किंतु जिनके प्रभाव नूतन परिपाटी के समयों में भी पड़ते रहे। भारतेंदु के समयवाले प्रधान साहित्य-सेवियों में जगमोहनसिंह, श्रीनिवासदास, मुंशी देवीप्रसाद, महारानी वृषभानु कुँवरि, ललित, सहजराम, बालकृष्ण भट्ट, महात्मा श्रद्धानंद (मुंशीराम) शिवसिंह सेंगर, भीमसेन शर्मा बदरीनारायण चौधरी, नाथूरामशंकर द्विजराज प्रतापनारायण मिश्र जगन्नाथप्रसाद भानु लाला सीताराम, शिवनंदनसहाय दीनदयालु शर्मा, महावीरप्रसाद द्विवेदी, गोपालराम गहमर श्रीधर पाठक गौरीशंकर-हीराचंद ओझा (म० म०), और हीरालाल ऐसे सुलेखक हुए, जिनके प्रभाव अब तक चले आते हैं।। इनमें से कुछ महाशय अब भी प्रस्तुत हैं तथा

कांग्रेस के मतव्यों पर प्रकट में कुछ ध्यान ही नहीं देती थी। इस नियम को पहलेपहल भग करके लार्ड कर्ज़न ने इस महाशय के विचारों का उत्तर दिया। भारतीय तथा भारतीय शास्त्रों की बुरा बतलाकर भी उन्होंने देश में भारी असंतोष उत्पन्न किया, तथा बंग-भंग से उसका बहुत परिरक्षण न हुआ। इस प्रकार लार्ड कर्ज़न के समय से जनता में राजनीतिक आंदोलन ने भारी बल पकड़ा। इस समय का बयान आगेवाले अध्याय में आवेगा। हमारे इस पूर्व नूतन परिपाटीवाले समय में राजनीतिक आंदोलन की महत्ता न तो देश में थी, न हमारे साहित्य में हो देख पड़ती है। संवत् १९५६ में सरस्वती पत्रिका का निकलना हिंदी के लिये उस समय एक गौरव की बात थी, क्योंकि ऐसी मन भज की कोई पत्रिका तब तक हिंदी में न थी। इसके संपादक बा० श्यामसुन्दरदासजी थे पश्चात् प० महावीर प्रसाद द्विवेदी हुए। इनके संपादकत्व में सरस्वती ने हिंदी लेखकों पर व्याकरण-संबंधी प्रभाव डाला, जिसका कथन आगे के अध्याय में आवेगा। इस काल अयोध्यासिंह उपाध्याय, जगन्नाथदास रत्नाकर, श्रीधरजी, गयाप्रसाद (सनेही) राय देवीप्रसाद (पूर्ण), देवकीनंदन खत्री, ठाकुर गदाधरसिंह (सवैयेवाले), श्यामसुंदरदास, ब्रजनंदनसहाय, कन्नोमल, रूपनारायण पांडेय तथा बालमुकुंद गुप्त हमारे मुख्य साहित्य-सेवी हुए। हम लोगों (मिश्रबंधुओं) ने भी स० १९२९ से काव्य-क्षेत्र में पैर रक्खा। इस काल सबसे बड़ी बात यह हुई कि प्राचीन प्रथावाली शृंगार कविता का बल बहुत क्षीण पड़ गया और विविध विषयों के बयान अधिकता से होने लगे। प्राचीन समय के भी कवियों में कितनों ही ने अनेकानेक ऐसे ग्रंथ बनाए किंतु समय ने उत्कृष्ट रचनाओं को छोड़ शेष को अपनी उदर-दरी में रख लिया है, तथा बहुतेरी प्रकृष्ट रचनाएँ भी काल

कवलित हो गई है। अवश्य ही कभी-कभी उनमें से कुछ ग्रंथ किसी प्रकार विकराल काल के उदर से बल-पूर्वक निकाल से लिए जाते हैं, शेष सदा के लिये जाते रहे। पर वर्तमान समय के साहित्य सेवियों की रचनाओं के विषय में काल की यह गति अभी पूर्ण वेग से कैसे चल पाती, जिससे इस कालवाले भले बुरे सभी प्रकार के सैकड़ा हज़ारों ग्रंथ हमारे सामने प्रस्तुत हैं। अपने जीवन काल में तो साधारण रचयितागण भी किसी न किसी प्रकार स्वरचित ग्रंथों को जीवित रखते हैं, किंतु उनके शरीरांत के साथ ही उनके साथ सब ग्रंथ मृत हो जाते हैं। ऐसा होना अनिवार्य ही समझना चाहिए, वरन् एक प्रकार से यह लाभकारी भी है, क्योंकि अत्यंत साधारण तथा अनुपकारी ग्रंथों की भरमार से साहित्य का लाभ क्या हो सकता है? अतएव रचयिताओं को उचित है कि बहुत-से ग्रंथ बनाने की चेष्टा छोड़कर विशेष परिश्रम द्वारा थोड़े ही से ऐसे विषयों पर अच्छी पुस्तकें बनावें, जिनमें उन्हें उपयुक्त पात्रता हो। काल सदा बली है, और उससे बचाकर अपने ग्रंथों को जीवित रखना बड़ा कठिन है। बिना पूर्ण चमत्कार लाए कोई ग्रंथ कभी जीवित न रहेगा, ऐसा सभी को समझ रहना चाहिए।

जितने परिश्रम से दस ग्रंथ बनाए जाते हैं, उतने से यदि एक बने, तो शायद अपने चमत्कार के कारण काल की करालता का वह चिरकाल तक सामना कर सके। साधारण कवियों की बात जाने दीजिए, स्वयं बिहारी ने अपने हज़ारों दोहे फाड़ फाड़कर फेंक दिए होंगे और केवल ७१२ बचा रक्खे, जिनकी बदौलत उनकी गणना हिंदी नवरत्नों में है। यदि वह दस बारह हज़ार दोहे लिखते अथवा शेष रखते, और उनमें केवल ७०० ८०० वास्तव में अच्छे होते, तो उनका सादृश महत्त्व कदापि न हो सकता। लेखकों को यह भी उचित है कि नवीन ग्रंथ बनाने के स्थान पर अपनी प्राचीन रचनाओं पर

रचनाओं में कोई भारी मुख्यता नहीं है। समाज सुधार पर बहुतों ने कथन किए हैं, किंतु इस काल किसी ऐसे लेखक का नाम नहीं आता, जो मुख्यतया समाज-सुधारक कहा जावे। इन दिनों के देश प्रेमियों में सबसे पहले स्वामी दयानंद सरस्वती तथा भारतेंदुजी के नाम आते हैं। स्वामीजी का आर्यसमाज धर्म ही देश प्रेम का भारी समर्थक है। उनके उपदेशों का ध्येय मुख्यतया समाज-संशोधन द्वारा देश प्रेम-वर्द्धन था। भारतेंदुजी इस रचयिताओं में सर्व प्रथम देश भक्त थे। इनके नाटक—प्रेमयोगिनी, चंद्रावली नीलदेवी, भारत दुर्दशा और सत्यहरिश्चंद्र उत्कृष्ट हैं। इनमें सत्यहरिश्चंद्र में पूर्ण मौलिकता नहीं है, तथा चंद्रावली उच्च साहित्यिक छटा रखते हुए भी रंग-मंच के अयोग्य है। फिर भी साहित्य की दृष्टि से यह स्तुत्य है। शेष तीनों नाटक बढ़िया हैं ही। इन पाँचो ग्रंथों की गणना स्थायी साहित्य में हो सकती है। इनमें से किसी किसी में जातीयता और धर्मों में प्रेम की पुट बहुत ही श्लाघ्य है। अभी तक सिवा जयशंकरप्रसादजी के और कोई हिंदी नाटककार भारतेंदु के बराबर नहीं हो पाया है। देश भक्ति में नूतन परिपाटी काल में माधवराव सप्रे (१६७१), रामदास गौड़ (१६२८), बालमुकुंद सेठी (१६२०), सर्वदी वाले ठाकुर गदाधरसिंह (१६२१) रामनाथ ज्योतिषी (१६२१), नंदकुमार शर्मा (१६२८) तथा देवीप्रसाद शुक्ल (१६२६) के नाम गिनाए जा सकते हैं। इनमें से कई महाशय राजनीतिक कार्यकर्ता भी हैं और उत्कृष्ट गद्य-लेखक तो सब हैं। साहित्यिक दृष्टि से हम ठाकुर गदाधरसिंहजी के गद्य को बहुत ही ऊँची श्रेणी का मानते हैं। इनके गद्य में देश प्रेम की मात्रा सर्वांतव झलक रही है, और आरोचन सभा स्थानों पर प्रस्तुत है। आपका प्रथम ग्रंथ "चीन में तेरह मास" बहुत ही स्तुत्य है। इसके पढ़ने में कभी जी नहीं

कहता। आर्यसमाजियों ने व्याख्यान की प्रणाली पर ज़ोर दिया, जिससे सनातनधर्मियों ने भी इसे उठाया। इनमें दीनदयालु शर्मा तथा ज्वालाप्रसाद मिश्र पहले आ चुके हैं, तथा भाई परमानंद (समाजी) और गणपतिदत्त शास्त्री (१९४७) इस काल के हैं। यों तो बहुतेरे महाशय धारा प्रवाह से व्याख्यान देते हैं, किंतु यहाँ उन्हीं के नाम दिए गए हैं, जो या तो धार्मिक उपदेशक हैं या राजनीतिक वक्ता। महामना मालवीयजी हमारे सबसे पुराने तथा प्रभावशाली व्याख्याता हैं। दीनदयालु शर्मा की जिह्वा में भी भारी बल है। और भी बहुत-से महाशय हैं, जिनके नाम तक गिनाना एक भारी काम होगा।

पत्रकारों में इस काल देवदत्त शर्मा (सं० १९४९), महता लज्जाराम (१९२५), बालमुकुंद गुप्त (१९४७), गोपालदास (१९२८), पन्नालाल (१९४८), गंगाप्रसाद गुप्त (१९२०), नंदकुमारदेव शर्मा (१९२८) आदि के नाम आते हैं। इन महाशयों के पत्रों में से बहुतों के पत्र १९६० के पीछे निकले, किंतु इन पत्रकारों के नाम लेखनारंभ-काल के अनुसार उपर्युक्त समयों पर आते हैं। पत्र-कला ने हमारे हिंदी-गद्य-लेखकों को कालक्षेप का मार्ग, स्वतंत्र जीवन तथा देश पर भारी प्रभावोत्पादन के बल दिए। उपर्युक्त महाशयों में से महता लज्जाराम, बालमुकुंद गुप्त तथा गंगाप्रसाद गुप्त की प्रधानता समझ पड़ती है। बालमुकुंदजी गुप्त इस नामावली में बहुत निकलते हुए पत्रकार हैं। सामाजिक और धार्मिक विषयों पर विचार तो आपके प्राचीन थे, जिससे हम लोगों का इनसे कई बार वाद विवाद भी हुआ, किंतु आपकी ज़िंदादिली लेखों तथा भारतमित्र पत्र को बहुत सुपाठ्य बनाती थी। आप कहते थे कि मिश्रबंधु हमसे लड़ तो लेते हैं, किंतु रुष्ट कभी नहीं होते। बात यह भी कि मतभेदवाले लेखों का खंडन

करते हुए भी इनके व्यक्तित्व के कारण हमें आत्ममित्र में भी समय समय पर अपने मत निकालना अच्छा लगता था। इनके लेखों में सजीवता तथा चरित्र में सौजन्य था। शिव शम्भु का चिट्ठा मज़ाक और चुहली बातों से आद्यन्त भरा था। समाचारों की वृद्धि तथा सामाजिक विचारों के समयक् विस्तार से विविध विषयों पर ग्रंथ-रचना की प्रणाली इसी काल में ज़ोर पकड़ने लगी है। बाबू राधाकृष्णदास (१९४०) ने अनेकानेक विषयों पर सुन्दर ग्रंथ-रचना की, तथा काव्य-क्षेत्र में भी ऐसा ही कौशल दिखलाया। बदरीदत्त शर्मा (१९४५) तथा अमीरअली (१९५०) ने नीति का कथन किया। सुंदरलाल (१९५१) ने बालोपयोगी पुस्तकों की रचना की। गंगाशंकरजी पचौली (१९५१), लल्लीमोहन वर्मा (१९५२) और महेंदुलाल गर्ग (१९५३) ने उपयोगी विषयों पर अच्छे ग्रंथ रचे।

इन विषयों पर कथन यहाँ सूक्ष्मता पूर्वक किए जा रहे हैं, क्योंकि ग्रंथ में प्रत्येक रचयिता का वर्णन दिया ही गया है, जहाँ वह देखा जा सकता है। ठाकुरप्रसाद खत्री (१९४७) ने व्यापारी और कारबारी नामक पत्र निकाला तथा ऐसे ही विषयों पर ग्रंथ-रचना भी की। रामनारायण मिश्र (१९४६) तथा साधुचरणप्रसाद (१९५०) ने इस काल यात्रा पर ग्रंथ लिखे। साधुचरणजी का भारत भ्रमण कई भागों में एक बड़ा ही उपयोगी ग्रंथ है। रामनारायण मिश्र ने दो अन्य महाशयों के साथ योरप-यात्रा लिखी है। हम (शुकदेवबिहारी मिश्र) ने भी प्रायः सवा सौ पृष्ठों की योरप-नीरोग यात्रा प्रकाशित की है। वाचस्पति तेवारी (१९३६) ने ज्योतिष पर कई ग्रंथ बनाए हैं। हरिनाथ (१९५४) और जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी (१९५७) ने हास्य रस का मज़ा दिखलाया है। रंगनारायणपाल (१९४६) तथा अमानसिंहजी

(१६५०) ने प्रेमात्मक विषयों पर कविता रची । पहले ने प्रेम की व्याख्या की है और दूसरे ने नखशिख लिखा । श्यामसुंदर (१६५२) और रामसिंहजी (१६५६) ने नायिका-भेद पर ग्रंथ रचे तथा अलंकारों पर भैरवदान (१६४६), जगन्नाथ चौबे (१६५०), और मुरारिदानजी (१६५०) ने श्रम काल परिश्रम किया। इनमें मुरारिदान का ग्रंथ बहुत प्रशंसनीय है। शास्त्रीय विषयों पर (कृ कृ) महाराजा विश्वनाथसिंह, रघुनंदन भट्टाचार्य, उदयचंद्र ओसवाल पनादास, शिवनीलाल, गुमानसिंह, तुलसीराम शर्मा, लेखराम, कृपाराम शर्मा और स्वयं स्वामी दयानंद सरस्वती परिश्रम कर चुके थे। इनमें से बहुतों ने उपनिषदों आदि पर टीका टिप्पणी करके आध्यात्मिक ज्ञान के तथ्यों का निरूपण किया था। नूतन परिपाटी-काल में ऐसे विषयों पर निहारीलाल जैन (१६४६), बाबू भगवानदास (१६५०), सुदर्शनाचार्य (१६५०), राजाराम शास्त्री (१६५२), दर्शन दुबे (१६५२), महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगानाथ झा (१६५६), लाला कन्नोमल (१६५७), रामावतार पांडेय (१६५६) तथा लाला रामजी शास्त्री (१६६०) ने विशेष श्रम किया। इन सबों के ग्रंथ महत्ता-पूर्ण हैं। हम (श्यामबिहारी मिश्र तथा शुकदेव बिहारी मिश्र) ने भी भारतवर्ष के इतिहास तथा सुमनों जलि में प्राय ४०० पृष्ठों में हिंदू धर्म निरूपण पर अपने विचार लिखे हैं। बाबू भगवानदास ने अँगरेज़ी भाषा में इस विषय पर कई उत्कृष्ट ग्रंथ रचे, जिनमें प्राचीन दार्शनिक प्रश्नों पर नवीन विचार अच्छे हैं, विशेषतया Sceince of peace and sceince of enotions में। झा महाशय ने प्राचीन दार्शनिक शास्त्र का अच्छा मनन करके उन पर उपयोगी ग्रंथ लिखे हैं। लाला कन्नोमल ने हिंदी में दार्शनिक विषयों पर श्रम करके अनेक सुपाठ्य ग्रंथ

बनाए। इस विशाल विषय की नूतन परिपाटी-काल के लेखकों द्वारा अच्छी प्रष्ट-पुष्टि हुई है।

पुराणों के धर्म पर बहुतों ने नहीं लिखा है। वास्तव में बौद्ध विचारों के आक्रमण द्वारा वैदिक धर्म का अंत हो गया और हिंदू-समाज ने एक दूसरा ही धर्म चलाया, जिसे पौराणिक कहते हैं। इस नवोदित धर्म में कुछ सिद्धांत वैदिक मत के थे, कुछ बौद्ध एवं जैन के और कुछ नवीन आगंतुकों के प्रभाव से सामाजिक विचारों के परिवर्तन द्वारा सिद्ध किए हुए नव धार्मिक एवं सामाजिक आचारों और विचारों के। इसने वैदिक धर्म में माने हुए कई विचारों को बिना निंद्य ठहराए ही चुपके-से छोड़ दिया, तथा प्राचीन एवं नवीन सिद्धांतों को लेकर नए धर्म के अंग-प्रत्यंग बड़े चातुर्य से सुगठित करके उसे एक सुचारु-रूप दिया। इस नव धर्म विकसन में मुख्य श्रेय उन दशाओं का था, जिनमें हमारे समाज ने अपने को पाया।

महात्मा गौतमबुद्ध का प्रादुर्भाव संवत् पूर्व छठीं शताब्दी में हुआ तथा सम्राट् अशोक का संवत् पूर्व तीसरी शताब्दी में। महात्मा बुद्धदेव द्वारा चलाया हुआ हीनयानीय बौद्ध धर्म अशोक के पहले बहुत करके गृह-त्यागियों का संप्रदाय-मात्र रहा, न कि गृहस्थों का धर्म। साधारण समाज पर तब तक उसका प्रभाव बहुत नहीं था। अशोक ने बौद्ध तथा कई जैन सिद्धांतों में से गृहस्थों द्वारा पालित होने योग्य विचार चुनकर काम-काजू धर्म उपस्थित किया, जो उनके प्रभाव तथा अपनी धार्मिक एवं उपदेशकों की उच्चता के कारण समाज के एक बड़े अंश में स्थापित हुआ। उनके बौद्ध होने के कारण वह माना बौद्ध धर्म ही गया। अपने ऊँचे-से ऊँचे फैलाव काल में भी बौद्ध धर्म के अनुयायी संख्या में हिंदुओं से कम थे, ऐसा अनुमान प्राचीन ग्रंथों के देखने से होता है। गृहस्थों में आने से प्राचीन हिंदू विचारों का प्रभाव बौद्ध

धर्म पर पड़ने लगा। दशा यह थी कि यदि एक भाई हिंदू था, तो दूसरा बौद्ध। बौद्धों और हिंदुओं में खाने-पीने, संबंध विवाहादि में कोई भेद न था, जैसी दशा आजकल भी चीन, जापान, लंका आदि के बौद्धों और ईसाइयों में पाई जाती है। बौद्ध तथा हिंदू एक दूसरे के सिद्धांतों से प्रभावित होने लगे और दोनों के सिद्धांत मिलने लगे। तीसरी शताब्दी संवत् तक भारत में शक, यवन, गुर्जर, तुर्क यूएची, सीदियन आदि कई जातियाँ बाहर से आकर समाज में मिल गईं। पाँचवीं शताब्दी में इसी प्रकार हूण आकर मिल गए। कनिष्क अशोक के समान भारी सम्राट् थे। उनके समय पहली शताब्दी तक हिंदू और बौद्ध इतने मिल चुके थे कि महात्मा बुद्ध में मानुषिक भावों का शिथिलीकरण होकर पूरा देवभाव आ चुका था, भेद केवल इतना था कि हिंदू लोग देव-समाज में बुद्ध का स्थान नीचा मानते थे, और बौद्ध लोग उसे बहुत ऊँचा कहते थे। दोनों के देवताओं को मानते दोनों थे, भेद केवल उनकी आनुषंगिक महत्ता पर था। इसी बौद्ध-मत को महायान कहते हैं।

बौद्ध तथा उपर्युक्त अन्य जातियों के विचारों द्वारा प्रभावित होकर हमारा धर्म प्राचीन वैदिक मत से बहुत दूर हट गया, यद्यपि इसने वेदों का मौखिक मान कभी नहीं छोड़ा। इसी नव विकसित मत को पौराणिक कहते हैं। पहला तो यह समाज की स्वार्थों द्वारा विकसित धार्मिक भावों से, किंतु अंत में स्वामी शंकराचार्य तथा रामानुजाचार्य ने इसके अन्यान्य मतों का सामंजस्य मिलाकर इसे दार्शनिक एवं दृढ़ आश्रय दे दिया। कहने को तो वे लोग बौद्ध-काल के पहलेवाले प्राचीन वेदों तथा शास्त्रों को ही मानते रहे, किंतु इन्होंने अपने धार्मिक विचारों का ऐसा मनमाना तार्किक सामंजस्य निकाला कि कदाचित्, वैसा सब विचारों द्वारा प्राचीन भाव, कड़ ही दिखने लगा। इस पौराणिक धर्म को

प्रथानुयायी पंडित लोग अब भी वैदिक धर्म से अभिन्न मानते हैं, तथापि सगुणोपासना, अवतारों का मान, यज्ञों का साधारणतया अभाव, मूर्तियों की विशेषता, गंगा-यमुना आदि पर महती श्रद्धा, मूर्तियों तथा नदियों पर आश्रित तीर्थ-स्थानों आदि के मान, त्रिमूर्ति की दृढ़ स्थापना एवं इंद्रादि के शिथिल प्रभाव में यह पौराणिक मत प्राचीन वैदिक मत से भिन्न है। इस विषय पर हमारे नूतन परिपाटी वालवाले तथा इनके पढ़नेवाले लेखकों ने बहुत कुछ नहीं कहा। स्वामी दयानंद सरस्वती ने इन मतों को वेद समर्थित न कहकर त्याज्य बतलाया, किंतु शिवप्रसाद सरस्वती आदि काशी के तथा अन्य भारतीय प्राचीन प्रथानुयायी विद्वान् इस मत का विरोध ही करते रहे, और उपर्युक्त बातों को वेदानुकूल बतलाते रहे। डॉक्टर सर रामकृष्ण भांडारकर ने पहले-पहल हिंदू धर्म के सिद्धांतों का ऐतिहासिक वर्णन करके पृथक् पृथक् विचारों के उदय का काल निर्णीत किया। यह निर्णय प्राचीन हिंदू प्रथा के आधार पर ही किया गया। हमने भी इस विषय पर पहले से विचार करके हिंदू धर्म के विकास पर सुमनोंजलि तथा भारतीय इतिहास में निबंध लिखे थे। पीछे से भांडारकर महाशय के ग्रंथ तथा अन्य पुस्तकें पढ़ने का नव अवसर मिला, तब अपने प्राचीन विचारों में ना नव भाव जुड़े उनका भी पृथक् कथन हमने सुमनोंजलि में ही एक निबंध में कर दिया है। इस प्रकार यह पौराणिक मत के उदय का इतिहास बड़ा ही शिक्षा प्रद एवं रोचक है। पौराणिक मत की क्रमागति का वर्णन हिंदी में हमने अब तक किसी अन्य ग्रंथ में नहीं देखा है। डॉक्टर झा महाशय तथा बाबू भगवानदास के लेख हिंदी में बहुत थोड़े हैं और अँगरेज़ी में अधिक किंतु ये महाशय हमारे ही हैं सो इनके अँगरेज़ी ग्रंथों से भी हमें हिंदी की अंग-पुष्टि समझ पड़ती है।

ईश्वरीप्रसाद तेवारी (ज० १६९८) ने पौराणिक प्रथा का अनु

वाद करके उन पर अपने भी कुछ विचार प्रकट किए हैं। अन्यान्य लेखकों ने पौराणिक कथाओं के भाग लेकर ग्रंथ लिखे हैं, विशेषतया रामायण, कृष्णायन, द्रौपदी-चीर हरण, अभिमन्यु वध, नल-दमयती, जयद्रथ वध, प्रह्लाद मोचन, सुदामा चरित्र, कंस-वध, कार्ष्ण लीलाओं आदि पर। ये विषय हज़ार बार पुनरावृत्तियों द्वारा ऐसे साधारण क्या फीके हो गए हैं कि इन्हीं पर नए ग्रंथों के पढ़ने को जी नहीं चाहता। फिर भी हमारे कविजन इनका वर्णन करते हुए कोई नवीन विचार तक नहीं लाते और सम्भव तथा असम्भव मैं मैं कुछ कथन प्राचीन व्यास लोग कर गए हैं, उन्हीं को आँख मूँद करके मान लेना बुद्धिमानी की सीमा समझते हैं। एक समय था, जब इन प्राचीन विषयों पर सम्भवनीयता के आधार पर कुछ कहने वाला धर्म विरोधी समझा जाता था। अब ऐसी संकीर्णता बहुत कुछ दूर हो चुकी है, किंतु फिर भी हमारे सन्नंवे प्रतिशत कविगण इन विषयों पर कथन करते समय प्राचीन व्यासों के दासत्व से आगे एक पैग देने तक की हिम्मत नहीं करते। ऐसे दास मानस युक्त लेखकों को इन प्राचीन विषयों पर लिखना ही न चाहिए और ऐसे नवीन विचारों तथा घटनाओं का सहारा ढूँढ़ना चाहिए, जिनमें वे अपने मन को दास-कल्प के बाहर पावें। फिर नूतन परिपाटीवाले समय की कान पड़े हम आज तक भी अपने अधिकतर कवियों को ऐसे ही दास मानस के अनुयायी तथा समाज को मिथ्या विश्वासों की ओर घसीटनेवाले पाते हैं। साहित्यकार के जहाँ अधिकार बहुत हैं, वहीं उसके भार भी अपार हैं। जो मनुष्य अपने को दास-कल्प के बाहर न पावे, उसे उचित है कि कम-से-कम समाज को मिथ्या उपदेश तो न देवे।

एक मान्यवर महाशय लिखते हैं कि सुदामा ने जो गुरुपत्नी के दिए हुए चने स्वयं भक्षण कर लिए, और भगवान्

कृष्ण का भाग उन्हें न दिया, इसी पर भगवान् ने मानसिक शाप दिया कि जितने चने उन्होंने खेला चाये, उनमें से एक-एक चने के लिये उन्हें जब एक-एक दिन का उपवास हो चुकेगा, तभी उनके इस बाल्य काल के पाप का प्रायश्चित्त होगा; नहीं तो सुदामाजी को बुढ़ापे तक भारी कष्ट क्या सहना पड़ता, क्योंकि पहले भी तो भगवान् उन्हें सुखी कर सकते थे। उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण का प्रभाव तो अवश्य दिखला दिया, किंतु इतना न सोचा कि एक-एक चने के लिये अपने मित्र तथा ब्राह्मण को एक-एक उपवास का दंड देना कितना क्रूर कर्म है ! कवियों को भावों के सब पक्षों पर विचार कर लेना चाहिए, यह नहीं कि मूर्ख मोहिनी शक्ति के सहारे गुण की एक ही टाँग कह देवें।

कहने का प्रयोजन यह है कि पौराणिक साहित्य तथा धर्म को हमारे लेखकों द्वारा उचित मान नहीं मिला है। पहले तो कतिपय प्राचीन व्यासों ने ही उसमें मूर्ख-मोहिनी कला का उचित से बहुत अधिक सहारा लेकर असंभव कथनों की खानि बना डाला, और पीछे से हमारे हिंदी लेखकों ने उन असंभव कथनों की खानि को शिथिल करने के स्थान पर और भी दृढ़ किया, जिसका फल यह हुआ कि हमारी अपढ़ जनता असत्य उपदेश पाकर केवल करामात प्रदर्शन को धार्मिक महत्ता का मूल-मंत्र मान बैठी है। जो लेखक कुंभकर्ण की मूछ को चार योजन से एक तिल कम बतलावे, वह ईसाई है। यदि राम-राज्य का समय ग्यारह हज़ार वर्षों से एक दिन कम कह दिया जावे, तो वह सनातनधर्मी नहीं हो सकता। वेद पुराणों से बहुत प्राचीन हैं। उन्हें में ही 'जीवेम शरदः शतम्' का कथन करते हैं, और अथर्ववेद तथा परम प्राचीन उपनिषत् ११६ वर्ष की आयु को बहुत भारी मानते हैं, तब पुराणों के ऐसे असामान्य भाषणों पर ज़ोर देना बुद्धिमानी नहीं है। फिर भी अब तक आर्यसमाजी लेखकों के अतिरिक्त

शेष कवियों में से नब्बे प्रतिशत ने ऐसे विषयों पर सामाजिक मान-मर्द्दन का अवज्ञा पवित्र कर्त्तव्य पालित नहीं रक्खा। पुराणों के ऐसे कथन धार्मिक प्रश्न न होकर ऐतिहासिक-मात्र हैं। प्रश्न यही है कि इतिहास सिद्ध क्या बात है कि राम-राज्य ग्यारह सहस्र वर्ष रहा या तीस-चालीस वर्ष-मात्र ? राम को अवतारी पुरुष मानते हुए भी कोई मनुष्य इस ऐतिहासिक प्रश्न पर स्वच्छन्दता पूर्वक विचार कर सकता है, किंतु हमारी जनता के अंध विश्वास अशुद्ध उपदेशों के कारण इतने दृढ़ हो गए हैं कि वह इन सरल प्रश्नों पर सरल विचार करने को तैयार नहीं है। हमारे अधिकांश कविगण भी ऐसे विषयों में जनता के उपदेशक न होकर उपदेश देते हुए भी वास्तव में उसी के अनुयायी और दास हैं। ऐतिहासिक कवियों का कर्तव्य है कि सम्भवनीयता को हाथ से कभी न जाने देवें, किंतु होता ऐसा नहीं है। यों तो साहित्यिक वर्णनों से सम्भवनीयता प्राय असंबद्ध है, किंतु जब कवि इतिहास कहने बैठे या किसी प्राचीन या नवीन घटना का ऐतिहासिक रूप में कथन करता हुआ भी असम्भव कथनों का सहारा लेवे, तो उसकी रचना शतमुख से तिरस्करणीय होगी।

नूतन परिपाटी-काल की यह मुख्यता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त लोग लेखकों के रूप में हिंदी में आने लगे, जिससे हमारे यहाँ नव विचारोत्पादन बल पूर्वक चलने लगा। कुछ दिनों तक संस्कृत, बँगला, गुजराती, अँगरेज़ी आदि के अनुवाद बहुतायत से बने, जिससे न केवल भाव परिवर्द्धन हुआ, वरन् भाषा में भी नवीनता एवं संस्कृत शब्दों की वृद्धि हुई। इस विषय पर कुछ अधिक प्रकाश उत्तर नूतन परिपाटी के कथन में डाला जायगा। यहाँ केवल इतना कह देना अलम् है कि नव विचारागमन के साथ भाषा का भी रूप बदलने लगा, और उस पर दृढ़ हिंदी-शब्दों की अपेक्षा अन्य भाषाओं के शब्द-समूह का साम्राज्य फैलने लगा। सबसे

सहित संस्कृतपन की वृद्धि हुई। यह उन्नति है या अवनति, सो अभी हम नहीं कहते, किंतु बात ऐसी अवश्य हुई।

पौराणिक मत का आर्यसमाज घोर विरोध करता है। समाज में भी बहुतेरे उच्च कोटि के लेखक तथा व्याख्याता हैं। भारतेंदु-काल में महात्मा श्रद्धानंद तथा लाला लाजपतिराय भारी समाजी लेखक एवं व्याख्याता हुए। पूर्व नूतन परिपाटी-काल में समाजी लेखकों में निम्न-सज्जनों के नाम आते हैं—गोपालदास स्वरूप शर्मा (१६४६), देवीदयालु (१६४८), विष्णुलाल शर्मा (१६४८), बद्रीदत्त शर्मा (१६४६) नरदेव शास्त्री (१६४६) और ठाकुर गदाधरसिंह (१६६१)। इनमें से कई महाशय उत्कृष्ट लेखक तथा व्याख्याता थे। विशेष विवरण आगे मिलेगा। प्राचीन अँगरेज़ लेखकों में डॉक्टर रुडाल्फ़ हार्न ली, फ्रेडरिक पिन्काट, डॉक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन, जॉन क्रिश्चियन आदि ऐसे महाशय थे, जिन्होंने लिखा तो अँगरेज़ी में, किंतु हिंदी पर प्रचुर परिश्रम किया। कई महाशय हिंदी में लेख तथा कविता भी रचते थे।

पैंतीसवें अध्याय (मिश्रबंधु विनोद तृतीय भाग) में हमने कई विषयों का कथन करते हुए नाटकों का भी वर्णन (पृष्ठ ११७४-७६) किया है। उस स्थान पर वर्तमान नाटककारों के कथन कर दिए गए हैं। वह वर्णन पूर्व वर्तमान प्रकरण से संबद्ध था, सो उसमें १६२६ तक का सूक्ष्म कथन किया गया है। अब उसी विषय पर पूर्व नूतन परिपाटी-कालवाले नाटककारों का पृथक् वर्णन किया जाता है। भारतेंदु के पूर्व प्रथम नाटक उनके पिता गिरिधरदासजी ने रचा, जिसे नहुष-नाटक कहते हैं। उसका भी गद्य खड़ी बोली में न होकर ब्रजभाषा में है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सर्वांग सुंदर खेलने योग्य उत्कृष्ट नाटक रचे। अँगरेज़ी, बँगला आदि के प्रभाव से भारतेंदु के पीछे चंपू, भाण, प्रहसनादि कुछ

समाज पर कैसे ग्रंथों का कैसा प्रभाव पड़ता है, इस काम-काज करने से वे खींची हुई होती हैं। कंपनियों द्वारा नाटकों खेले जाने से उनके रचयिताओं की कीर्ति भी बहुत जल्द फैलती है, जिससे उनको अधिकाधिक प्रोत्साहन एवं लाभ भी होता है। इन कारणों से बंगाल का नाटक-विभाग अच्छी उन्नति कर चुका है, किंतु हमारा अनुभव की जाँच से पृथक् रहकर ख़याली संसार का ही निवासी है।

फिर यहाँ की जनता उपर्युक्त अनुचित उपदेशों के कारण केवल मूर्ख-मोहिनी विद्या को पसंद कर पाती है, जिससे बेताब आदि हमारे नाटक-रचयिता उसी प्रकार के ग्रंथ बनाते हैं। उन बेचारों का इसमें कम दोष है और समाज का अधिक। फिर भी मूर्ख-मोहिनी विद्या के प्रचारक होने के कारण ये लोग कुछ समालोचकों के कोप-भाजन बने हुए हैं। ज्यों-ज्यों जनता की रुचि ऊँची होती जायगी, और हमारे उपदेशक तथा लेखकगण अपने भार का अनुभव करेंगे, त्यों-त्यों हमारा नाटकीय विभाग भी उच्चता ग्रहण करेगा। भाषाओं की यह दशा है कि बंगाल में संस्कृत शब्दों का बाहुल्य है तथा पंजाब में फ़ारसी शब्दों का। बंगाल से पंजाब तक ज्यों-ज्यों पश्चिम जाते जाइए, त्यों-त्यों संस्कृत शब्दों की कमी तथा फ़ारसी का आधिक्य होता जाता है। जैसे शब्द लखनऊ के समीप साधारणतया बोले तथा समझे जाते हैं वैसों का निराकरण हम लोग संस्कृत पर प्रेम रखने के कारण से ही करते हैं, और कभी-कभी साधारण फ़ारसी-शब्द लिख भी जाते हैं किंतु पटने के निकट वह शब्द निराकरण कृत्रिम न होकर एक परम साधारण बोल-चाल का फल है। वहाँ फ़ारसी-गर्भित शब्द लोग समझ ही नहीं पाते। इसी प्रकार इधर तथा और पश्चिम की ओर लोग साधारण समझे जानेवाले संस्कृत-गर्भित शब्द नहीं समझ पाते। अतएव भाषा में संस्कृत अथवा फ़ारसी, दोनों के गूढ़ शब्द न आने चाहिए, जिसमें

कि वह मातृभाषा के निकट रहे और अधिक-से अधिक देश में समझी जा सके।

हमारे यहाँ नाटक-विभाग बहुत करके भारतेंदु के समय से चला। हमारे प्राचीन नाटककारों मे केवल भारतेंदु और श्री निवासदास सुकवि थे। शेष के नाटक ऊँची कक्षा तक न पहुँच सके। यहाँ पर केवल मौलिक ग्रंथों पर कथन किया जाता है। अनुवादकों म लाला सीताराम, सत्यनारायण (आरा निवासी), ज्वालाप्रसाद मिश्र, गोपालराम (गहमर निवासी), रूपनारायण पांडेय आदि ने अच्छे अनुवाद किए, किंतु इनकी रचना में भाषा ज्ञान के अतिरिक्त कोई विशेष महत्ता नहीं है। रत्नचंद्र (न्याय-सभा, हिंदी उर्दू), रामकृष्ण वर्मा, किशोरीलाल गोस्वामी आदि ने भी नाटक रचे, किंतु उस उच्चता के नहीं, जो समाज में उन्हें वाहवाही का भाजन बनाव। नूतन परिपाटीवाले नाटककारों म राधाकृष्णदास (१९७०), हरीरामजी त्रिवेदी (१९८०), अक्षयवटप्रसाद साही (१९८०), बलदेवप्रसाद मिश्र (१९२१), कृष्णबलदेव वर्मा (१९२१), हरिपालसिंह (१९२४), व्रजनंदनसहाय (१९११), रूपनारायण पांडेय (१९६०) तथा रामनारायण (१९६०) के नाम आते हैं। हम (श्यामबिहारी मिश्र तथा शुकदेवबिहारी मिश्र) ने भी चार नाटक बनाए हैं, अर्थात् नेत्रोन्मीलन, पूर्व भारत, उत्तर भारत और शिवाजी। ये सब खेलने के योग्य हैं। अन्तिम नाटक अभी अमुद्रित है। पूर्व भारत तीन बार खेला जा चुका है। राधाकृष्णदास का महाराणाप्रताप अच्छा नाटक होकर भी उच्च कोटि का नहीं है। कृष्णबलदेव वर्मा का भर्तृहरि अच्छे भाव दिखलाता हुआ भी बहुत उत्कृष्ट नहीं है। इतरों के नाटक बहुत नामी नहीं हैं, न समालोचना द्वारा उनके गुण-दोषों पर अभी तक सम्यक् प्रकाश पड़ा है। फलतः अभी तक नूतन परिपाटी-वालवाले कवियों

द्वारा नाटकीय विभाग की अधिक उन्नति नहीं कही जा सकती।

उपन्यास विभाग पहला तो पहले से था और प्रौढ़ माध्यमिक तथा अलंकृत कालवाले कुछ ग्रंथ इसी विभाग में आ सकते हैं, तथा दृगशतक आदि के भी ग्रंथ ऐसे ही हैं, तथापि इसका प्रचार भारतेंदु के समय से ही माना जा सकता है। उस काल के औपन्यासिक अनुवादकारों में बाबू गदाधरसिंह, रामकृष्ण वर्मा, कार्तिकप्रसाद, गोपालराम गहमर निवासी तथा रामचंद्र वर्मा के नाम आते हैं। गोपालराम ने बहुतेरे मौलिक उपन्यास भी भारतेंदु काल के पीछे लिखे। अनुवादकों के विषय में भाषा के अतिरिक्त कुछ अधिक विवरण अनावश्यक है। नूतन परिपाटीवाले लेखकों में मेहता लज्जाराम (१९२२), अयोध्यासिंह उपाध्याय (१९२७), किशोरीलाल गोस्वामी (१९२२) देवकीनंदन खत्री (१९१८), गोपाललाल खत्री (१९२२), उदितनारायणलाल (१९२०), सकल नारायण पांडेय (१९२३), श्यामविहारी मिश्र तथा शुकदेवविहारी मिश्र (१९२५), ब्रजनंदनसहाय (१९२६), चतुर्भुज सहाय (१९२६) रूपनारायण पांडेय (१९६०) आदि औपन्यासिक माने जा सकते हैं। मेहता लज्जाराम ने लिखे तो दो-तीन अच्छे उपन्यास हैं, किंतु इनके उपदेश जनता के बिगड़े हुए पुराने विचारों की दृढ़ता के पक्ष में होने से हानिकारी हैं। उपाध्याय जी के दो-एक ग्रंथ उपन्यास कहे जा सकते हैं और अच्छे भी हैं, तथापि वास्तव में उनमें भाषा के तो परमोत्कृष्ट उदाहरण हैं, किंतु औपन्यासिकपन की बहुत कमी है। गोस्वामीजी के कुछ उपन्यास अच्छे भी हैं, किंतु बहुतों में रसियापन तथा जनता को पसंद साधारण भावों द्वारा धनोपार्जन के प्रयत्न अधिकता से आकर उनकी साहित्यिक उच्चता के बाधक हो गए हैं। देवकीनंदनजी के चंद्रकांता तथा चंद्रकांता-संतति कुछ दिन बहुत ही अधिकता से जन समुदाय

को पसंद आए। इनमें लोक-रंजन की मात्रा बहुत आधुर्य से है और उपदेश भी अच्छे मिलते हैं, किंतु असभ्यतापूर्णता के कारण इनका साहित्यिक मूल्य अधिक नहीं है। भाषा इनकी चलती हुई कुछ-कुछ उर्दूपन लिए हुए सुपाठ्य तथा सुबोध है। इमने वीरमणि नामक एक ही उपन्यास ग्रंथ लिखा है, जिसमें औपन्यासिक घुमाव का माधुर्य न होते हुए उपदेशकपन अधिकता में है। सामाजिक उपन्यास होकर वह ऐतिहासिकपन एवं धर्मोप देश के पुट लिए हुए है। व्रजनंदनप्रसाद साधारणतया अच्छे औप न्यासिक हैं। रूपनारायणजी पांडेय के मौलिक उपन्यास बुरे नहीं हैं। फलतः पूर्व नूतन परिपाटी के लेखकों द्वारा इस विभाग की कुछ अच्छी पूर्ति हुई है। आख्यायिका के विषय का आरंभ गिरिजा कुमार घोष (१९६०) ने कर दिया है, किंतु यह विषय प्रौढ़ता पर आगे आनेवाला है।

सत्कवियों में भारतेंदु-काल में प्रतापनारायण मिश्र, ललित, श्रीधर पाठक, बलदेव आदि ऐसे महाशय थे, जो पूर्व नूतन परि पाटी-काल में भी रचना करते रहे। नूतन काल के सुकवियों में निम्न-महाशयों के नाम गिनाए जा सकते हैं—विशाल, द्विजराज, मजराज, अयोध्यासिंह उपाध्याय (१९२७), कन्हैयालाल पोद्दार (१९२७), जगन्नाथदास रत्नाकर (१९२८), शिवबिहारीलाल मिश्र (१९२८), जगलीलाल (१९२८), सुखराम चौबे (१९२९), सीताराम उपाध्याय (१९२९), रघुनाथप्रसाद शर्मा (१९३०), भागवतप्रसाद (१९३०), दामोदरसहायसिंह (१९३१), जगदेवजी भाट (१९३३), मथुराप्रसाद पांडेय (१९३३), प्रबोधचंद (१९३४), भगवानदीन मिश्र (१९३४), बनवारीलाल (१९३५), राय देवीप्रसाद पूर्ण (१९३५), अक्षय वट मिश्र (१९३६), बखसराम पांडे (१९३८), उमापति

(१६२८), रघुनाथसिंह (१६६१), अजमेरीजी (१६६०), गयाप्रसादजी सनेही (१६६०), देवनारायण (१६६०) आदि। हम (श्यामबिहारी मिश्र तथा शुकदेवबिहारी मिश्र) ने भी मिलकर प्राय ४०० पृष्ठों का पद्य-काव्य नाटकों से इतर बनाया है, जिसमें से प्राय १६० पृष्ठों की खड़ी बोली में कविता है और शेष अवधी तथा व्रजभाषा की। परिवर्तन काल में कविता गिरी दशा में रही और हरिश्चंद्र-काल में कुछ उन्नति करके उसने पूर्व नूतन परिपाटी काल में बल धारण किया। लाला भगवानदीन आदि कई कवियों ने वीर काव्य पर भी ध्यान दिया है। हमने भी लवकुश चरित्र और बूँदीवारीश में वीर काव्य करने का प्रयत्न किया है। पहले ग्रंथ में पौराणिक रीति पर वीर काव्य है और दूसरे में आधुनिक रीति का युद्ध कथित है। उपर्युक्त कवियों में से कई व्रजभाषा में रचना करते हैं और कई खड़ी बोली में।

उत्कृष्टता इन दोनों भाषाओं में अच्छी आ सकती है, किंतु खड़ी बोली की रचना नवीनता के कारण साधारण होने पर भी कुछ-कुछ कमनीयता मंडित देख पड़ती है। साहित्य-गौरव के लिये नवीनता एक प्रकार से आवश्यक गुण है। व्रजभाषा में प्राय पाँच सौ वर्षों से नायिका-भेद का कथन होता चला आया है, सो सब-के-सब भाव जड़-से हो गए हैं। अब इसी प्राचीन विषय पर घेपने चले आने से भावों में नवीनता तथा वर्णन में चमत्कार लाना कठिन है। इसलिये जिन महाशयों को व्रजभाषा पर ममता हो, उन्हें प्राचीन प्रमाणानुरूप नायिका-भेद, नख-शिख, अलंकार षट्ऋतु आदि के वर्णन छोड़कर प्रणाली बदलनी होगी, नहीं तो गोस्वामीजी की कहावत उनकी रचना पर चरितार्थ हो जायगी कि "जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं, सो श्रम बादि बाल कवि करहीं।" अब भी व्रजभाषा में उत्कृष्ट वर्णन हो सकते हैं, किंतु

की अत्यधिक आवश्यकता है। कुछ महाशयों का विचार है कि यह ब्रजभाषा का युग नहीं है। हम इस मत के विरोधी हैं। हाँ, बिना योग्यता के रचना स्तुत्य कभी न होगी। खड़ी बोली दिनोंदिन उन्नति करती जाती है, और भावों, प्रणालियों एवं भाषा, तीनो में नवीनता से मंडित होने से रुचिकर होती है। उपर्युक्त कवियों के पृथक् पृथक् कथन यहाँ नहीं किए जाते हैं, क्योंकि आगे चलकर ऐसा किया ही जायगा, और इनमें से बहुतों की कृतियों के उदाहरण दे दिए गए हैं, जिससे पाठकगण स्वयं समझ सकते हैं कि उन लोगों में कैसा कवित्व-चमत्कार है। आजकल की कविता में देश-प्रेम अधिकता से देख पड़ता है, जो योग्य भी है। प्राचीन विषय धीरे धीरे छूटते जा रहे हैं। कोरे मनोरंजक विषय कम होकर समाज का ध्यान उपयोगी विषयों पर जा रहा है। संवत् १९६० तक की कविता में खड़ी बोली के सामने ब्रजभाषा का पद्य में बहुत अधिक प्रयोग है।

प्राचीन टीकाकारों में सूरति मिश्र, कृष्ण कवि, सरदार, गुलाब चारण, सीतारामशरण, ज्वालाप्रसाद मिश्र, विनायकराव, रामेश्वर भट्ट आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। पूर्व नूतन काल में जगन्नाथदास रत्नाकर (१९४८), ब्रजरत्न भट्टाचार्य (१९१०), लाला भगवानदीन (१९२७), श्यामसुंदरदास खत्री (१९२७) आदि के नाम आते हैं। रत्नाकरजी ने बिहारी-रत्नाकर में बिहारी-सतसई की सर्वमान्य प्रथम पांडित्य पूर्ण टीका की, तथा पाठ शोधन में भी श्लाघ्य श्रम किया। लाला भगवानदीन ने भी बिहारी और केशवदास पर श्रम किया। भट्टाचार्य ने अनेक टीका-ग्रंथ रचे। श्यामसुंदरदास ने चंद-कृत रासो की पाद टिप्पणी आदि पंड्याजी के साथ लिखीं। हम (श्याम-बिहारी मिश्र तथा शुकदेवबिहारी मिश्र) ने भूषण ग्रंथावली की ... [illegible] ...पूर्वक टीका प्रचुर परिश्रम से लिखी,

शोधन [illegible] ...ना, और गणेशबिहारी मिश्र ने

(१६५८), रघुनाथसिंह (१६६१), अजमेरीजी (१२
गयाप्रसादजी सनेही (१६६०) देवनारायण (१६६०) ?
हम (श्यामबिहारी मिश्र तथा शुकदेवबिहारी मिश्र) ने
मिलकर प्राय ४०० पृष्ठों का पद्य-काव्य नाटकों से इतर ब
है, जिसमें से प्राय: १६० पृष्ठों की खड़ी बोली में कविता है और
अवधी तथा ब्रजभाषा की। परिवर्तन काल म कविता गिरी दशा
रही और हरिश्चन्द्र-काल में कुछ उन्नति करके उसने पूर्व म
परिपाटी काल में बल धारण किया। लाला भगवानदीन आदि ने
कवियों ने वीर काव्य पर भी ध्यान दिया है। हमने भी जयद्र
चरित्र और पूँदीवारा ■ वीर काव्य करने का प्रयत्न किया है।
पहले ग्रंथ में पौराणिक रीति पर वीर काव्य है और दूसरे में आधुनिक
रीति का युद्ध कथित है। उपर्युक्त कविता में से कई ब्रजभाषा
में रचना करते है और कई खड़ी बोली म।

उत्कृष्टता इन दोनों भाषाओं म अच्छी आ सकती है, किंतु खड़ी
बोली की रचना नवीनता के कारण साधारण होने पर भी कुछ कुछ
कमनीयता सहित दृष्ट पड़ती है। साहित्य-गौरव के लिये नवीनता
एक प्रकार से आवश्यक गुण है। ब्रजभाषा म प्राय पाँच सौ वर्षों
से नायिका भेद का कथन होता चला आया है, सो सब-के-सब भाव
जूठे-से हो गए हैं। अब उसी प्राचीन विषय पर पेरते चले जाने
से भावों में नवीनता तथा वर्णन म चमत्कार लाना कठिन है।
इसलिये जिन महाशयों को ब्रजभाषा पर ममता हो, उन्हें प्राचीन
प्रथानुरूप नायिका भेद, नख शिख, अलंकार षट्ऋतु आदि
के वर्णन छोड़कर प्रथाली बदलनी होगी, नहीं तो गोस्वामीजी
की कहावत उनकी रचना पर चरितार्थ हो जायगी कि "जो
प्रबंध बुध नहिं आदरहीं, सो श्रम बादि बाल कवि करहीं।" अब
भी ब्रजभाषा में उत्कृष्ट वर्णन हो सकते हैं, किंतु

की अत्यधिक आवश्यकता है। कुछ महाशयों का विचार है कि यह ब्रजभाषा का युग नहीं है। हम इस मत के विरोधी हैं। हाँ, बिना योग्यता के रचना स्तुत्य कभी न बनेगी। खड़ी बोली दिनोंदिन उन्नति करती जाती है, और भावों, प्रणालियों एवं भाषा, तीनों में नवीनता से मंडित होने से रुचिकर होती है। उपर्युक्त कवियों के पृथक्-पृथक् कथन यहाँ नहीं दिए जाते हैं, क्योंकि आगे चलकर ऐसा किया ही जायगा, और इनमें से बहुतों की कृतियों के उदाहरण दे दिए गए हैं, जिससे पाठकगण स्वयं समझ सकते हैं कि उन लोगों में कैसा कवित्व-चमत्कार है। आजकल की कविता में देश-प्रेम अधिकता से देख पड़ता है, जो योग्य भी है। प्राचीन विषय धीरे-धीरे छूटते जा रहे हैं। कोरे मनोरंजक विषय कम होकर समाज का ध्यान उपयोगी विषयों पर आ रहा है। संवत् १९६० तक की कविता में खड़ी बोली के सामने ब्रजभाषा का पद्य में बहुत अधिक प्रयोग है।

प्राचीन टीकाकारों में सूरति मिश्र, कृष्ण कवि, सरदार, गुलाब चारण, सीतारामशरण, ज्वालाप्रसाद मिश्र, विनायकराव, रामेश्वर भट्ट आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। पूर्व नूतन काल में जगन्नाथदास रत्नाकर (१९३८), व्रजरत्न भट्टाचार्य (१९९७), लाला भगवानदीन (१९९७), श्यामसुंदरदास खत्री (१९९७) आदि के नाम आते हैं। रत्नाकरजी ने बिहारी-रत्नाकर में बिहारी-सतसई की सर्वमान्य अथच पांडित्य-पूर्ण टीका की, तथा पाठ शोधन में भी श्लाघ्य श्रम किया। लाला भगवानदीन ने भी बिहारी और केशवदास पर श्रम किया। भट्टाचार्य ने अनेक टीका-ग्रंथ रचे। श्यामसुंदरदास ने चंद-कृत रासो की पाद टिप्पणी आदि पंड्याजी के साथ लिखीं। हम (श्यामबिहारी मिश्र तथा शुकदेवबिहारी मिश्र) ने ऐतिहासिक एवं साहित्यिक टीका प्रचुर परिश्रम से शोधन में भी श्रम किया, और गणेशबिहारी मिश्र

पाद टिप्पण के साथ प्रकाशित कराई। नूतन काल में टीका का काम अच्छा हुआ।

अनुवादकों में इस काल गदाधर सिंह (१९४०) तथा मथुराप्रसाद मिश्र के नाम आते हैं। सोम ने बारह सज्जनों द्वारा महाभारत का गद्यानुवाद कराया, तथा मिश्रजी ने कई संस्कृत और बँगला के ग्रंथों का अनुवाद किया। कई इतर अनुवादकर्ता भी हैं, जिनके नाम अन्य समयों में कहे गए हैं। निबंधों में, भारतेंदु-काल में, बालकृष्ण भट्ट तथा प्रतापनारायण मिश्र के परिश्रम सामने आते हैं, किंतु इनमें विशेष उत्कर्ष नहीं है। पीछे गहमर निवासी गोपालराम जी ने निबंध रचे, और भीमसेन शर्मा भी अच्छे निबंधकार हैं। इनकी रचनाएँ पांडित्य-पूर्ण हैं। बालमुकुंदगुप्त-कृत शिवशंभु का चिट्ठा मनोरंजक निबंध है। महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित बेकन विचार रत्नावली तथा निबंध मालादर्श उपयोगी ग्रंथ हैं, किंतु अनुवाद मात्र होने से इनकी हिंदी में महत्ता नहीं है। सरदार पूर्णसिंह ने कुछ भावात्मक निबंध हिंदी में लिखे जो श्रेष्ठ थे। इनके निबंध पत्रिकाओं में लघु-मात्र थे, किंतु थे उत्कृष्ट। बाबू श्यामसुंदरदास ने कई अच्छे निबंध रचे। लाला कन्नोमल के दार्शनिक निबंध उच्च कक्षा के हैं, किंतु उनमें कुछ-कुछ मौलिकता की कमी समझी जाती है। हम (श्याम-विहारी मिश्र तथा शुकदेवविहारी मिश्र) ने आत्म शिक्षण-नामक ...री ढाई सौ पृष्ठों का निबंध लिखा, जो द्वितीयावृत्ति तक पहुँच चुका

हिंदू धर्म पर हमारे निबंध सुमनोंजलि तथा भारतवर्ष के
ग्रंथा.. के साथ चार सौ पृष्ठों पर विस्तृत हैं। हम (शुकदेव
के ग्रंथ ..थ) ने हिंदी-साहित्य का भारतीय इतिहास पर प्रभाव-
की कहा और निबंध पटना विश्वविद्यालय के लिये लिखकर
प्रबंध पुस्त... के रूप में पढ़ा। यह २२४ पृष्ठों
की मजमाणा

हमारे यहाँ निबंध ग्रंथ हैं तो अच्छे, किंतु उस उच्च श्रेणी के नहीं हैं, जैसे अँगरेज़ी आदि में पाए जाते हैं। राजनीतिक विषयों का ओर उचित कारणों से भारत का ध्यान बहुत अधिकता से लगा हुआ है, किंतु इस बात से अन्य उपकारी विषयों की उन्नति कुछ-कुछ रुकी हुई अवश्य है। यही दशा निबंध की है। भारतीय हिंदी लेखक संख्या में हैं तो बहुत अधिक, किंतु उनमें से बहुतेरों में स्वावलंबन एवं विस्तृत ज्ञान की मात्रा घटी हुई है। ऐसे लोगों की दशा बहुत करके कूप-मंडूकवत् है, जो अपने परम मर्यादित संसार से आगे बढ़कर मानो कुछ जानते ही नहीं। हमारे यहाँ बीसवीं शताब्दी में भी ऐसे विषयों पर वाद-विवाद हुआ करते हैं, जो उन्नत देशों में १८वीं १६वीं शताब्दी में ही निर्णीत हो गए थे। ऐसी दशा में उच्च कोटि के निबंध आवें कहाँ से? अभी ज्ञान ही विस्तृत नहीं। आशा है, ऐसा समय भी शीघ्र ही आवेगा, जब हम लोग अपनी भाषा में सभी प्रकार के ग्रंथ देखेंगे। समालोचना आदि भी निबंध में ही आती है, किंतु हमने इनके कथन अलग किए हैं। गवेषणा शब्द से पुरातत्त्व-संबंधी प्रयत्न भी संबंध रखता है किंतु हम यहाँ केवल साहित्यिक गवेषणा का कथन करते हैं। इस संबंध में भारतेंदु-काल में ठाकुर शिवसिंह सेंगर तथा डॉक्टर सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने अच्छा श्रम किया। इधर पूर्व नूतन परिपाटी-काल में कुछ काम हम (मिश्रबंधु) ने हिंदी ग्रंथों की खोज, मिश्रबंधु विनोद तथा हिंदी-नवरत्न द्वारा किया, तथा बाबू हीरालाल एवं बाबू श्यामसुंदरदास जी ने भी श्लाघ्य परिश्रम किया है।

समालोचना का कुछ-कुछ काम प्राचीन आचार्य लोग गुण-दोष कथन के अध्यायों में करते आए थे, किंतु उसे विशिष्ट गुण दोष-कथन से बढ़कर समालोचना कहना शोभा नहीं देता। दासजी ने

इस निरीक्षिका शक्ति को कुछ बढ़ाया। इधर आकर भारतेंदु-काल में बदरीनारायण चौधरी ने इसका कुछ काम उठाया, किंतु वह गौरव न पा सका। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने लाला सीताराम की एक पुस्तिका की कहने को तो समालोचना लिखी, किंतु वास्तव में वह समालोचना न होकर व्याकरण-संबंधी दोष प्रदर्शन-मात्र था, सो भी अशिष्ट भाषा में। द्विवेदीजी उक्त कालिदास की निरंकुशता बहुत करके व्याकरण संबंधी और कहा-कहीं शाब्दिक प्रयोगों पर विचार का निर्णय मात्र है। उनकी नैषध-चरित चर्चा में समालोचना का कुछ रंग आया है, किंतु वह भी मराल हुआ नहीं है, क्योंकि वह भाषादि बाहरी बातों पर बहुत करके सीमित है, और भाव तक नहीं पहुँचता। हम लोगों ने हिंदी नवरत्न तथा मिश्रबंधु विनोद में बहुत-से कवियों की पृथक्-पृथक् समालोचनाएँ कुछ विस्तृत रूप में लिखीं, तथा केवल सम्मति न देकर, कवियों की रचनाओं से उदाहरण सामने रखकर अपने कथनों को पुष्ट करने का प्रयत्न किया। अनंतर श्याम सुंदरदास ने भी हिंदी भाषा और साहित्य-नामक ग्रंथ में साहित्य मर्मज्ञों की रचनाओं पर आलोचनाएँ लिखीं जिनमें कहीं-कहीं मतभेद संभव है, किंतु अधिकतर स्थानों पर निष्पक्ष भाव से तथा शुद्ध समालोचना की गई है। इनमें विचारों के आधार-स्वरूप प्रमाण नहीं दिए गए हैं जिससे सवमान्य कथन तो ठीक बैठते हैं, किंतु नवीन विचार निराधार-से हो जाते हैं। पंडित पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी की भली-बुरी कैसी भी प्रशंसा करने का बीड़ा ही उठाया था। कोई भी प्रमाण कैसा भी शिथिल हो, किंतु शर्माजी के लिये देव कवि को निंद्य तथा बिहारी को स्तुत्य ठहराने को वह अलम् होता था। बिहारी पर जो आपने बड़ा ग्रंथ प्रचुर परिश्रम से बनाया, वह श्लाघ्य होने पर भी अनुचित विचारों के भारी समारोह से बहुत कुछ दूषित है। शर्माजी प्रबल लेखक तथा अमकर्ता आलोचक थे,

किंतु हम उन्हें समालोचक नहीं कह सकते, क्योंकि इत्यादि उनके विचारों में कुछ अधिकता से हैं। हिंदी में उर्दू-कवियों का कुछ ज्ञान शर्माजी लाए थे। लाला भगवानदीन की समालोचना भी कुछ-कुछ इत्यादि लिए हुए थी, किंतु शर्माजी के समान नहीं। लालाजी समालोचक न होकर वास्तव में टीकाकार थे।

कई महाशय अनेक साहित्यकारों तथा साहित्य पर समालोचना लिखते हुए कुछ विषयों पर पचास पचास, साठ-साठ पृष्ठों के निबंध से लिख जाते हैं, और अंत में उदाहरण की भाँति आलोच्य कवियों अथवा साहित्यिक समयों के रचयिताओं से दो चार मोटी-मोटी बातें कहकर समझ लेते हैं कि उन्होंने विशिष्ट कवियों अथवा समयों के साहित्य की समालोचना कर डाली। वास्तव में यह समालोचना न होकर उन विषयों पर निबंध-मात्र होता है, जिनके कथन उन्होंने किए हैं। समालोचना में मुख्य वर्णन कवि का चाहिए, और उसी की रचना के साथ जहाँ कहीं अच्छे सिद्धांत निकलें, उनका सूक्ष्मता पूर्वक विवरण लिख देना उचित है। जहाँ कविता का वर्णन मुख्य तथा सिद्धांतों का गौण होगा, वहाँ साहित्य-समालोचना समझी जायगी, किंतु जहाँ सिद्धांतों का प्रचुर कथन होकर कविता का सूक्ष्म वर्णन उदाहरण की भाँति दे दिया जायगा, वहाँ साहित्यिक समालोचना के स्थान पर रचना-कथित सिद्धांतों पर निबंध-मात्र मानी जायगी। बहुत-से समालोचक आजकल कवियों पर गोल-मोल शब्दों में सम्मति देते चले जाते हैं, किंतु उसका किसी कारण माला द्वारा समर्थन करते ही नहीं। कारण शून्य सम्मति कथन को ही वे समालोचना कहकर सकारण कथन को समझाना-मात्र कहते हैं। ऐसे विचार प्रत्यक्ष ही थोथे हैं, क्योंकि कारण शून्य कथनों का मानना-न मानना पाठक की विरुचि पर अवलंबित है, न कि समालोचक के भाव प्रकटीकरण पर।

इतिहास के विषय पर हमारे प्राचीन कवियों ने परिश्रम नहीं किया। पुराण, भारत आदि परम प्राचीन ग्रंथ इतिहास ही हैं, किंतु हिंदी में न होने से हमसे असबद्ध हैं। हमारे प्राचीन हिंदी कवियों ने पद्य काव्य, रासो आदि रचे जो ऐतिहासिक साहित्य होने पर भी विशुद्ध इतिहास नहीं हैं। इतिहास के लिये न केवल सत्य घटनाओं का कथन आवश्यक है, वरन् समय का शुद्ध एव सालवार निरूपण उसका भाग ही है। हिंदी में इतिहास कथन भारतेंदु काल से प्रारंभ हुआ। उन्होंने स्वयं कई छोटे मोटे ग्रंथ तथा जीवन चरित्र रचे। फिर भी साधारण कथनों के अतिरिक्त वे गवेषणात्मक न थे। हमारे सबसे प्राचीन इतिहास-लेखक महामहोपाध्याय रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा (१९२०) हैं, जो अजमेरवाले अजायबघर के क्यूरेटर हैं। इतिहास आपका न केवल शौक़, वरन् जीविका का भी साधन है। आपने कई अच्छे इतिहास ग्रंथ रचे हैं, जैसा कि आपके विस्तृत विवरण में लिखा गया है। इतना फिर भी समझ पड़ता है कि अँगरेज़ों की भाँति भारतीय गण्य मान्य महाशयों अथवा ग्रंथों को कल्पित प्रमाणित करने में आपको कुछ आनंद-सा आता है। लाला सीताराम ने अयोध्या का एक गवेषणा पूर्ण उत्कृष्ट इतिहास हाल ही में लिखा है। जोधपुरवाले मुंशी देवीप्रसाद भी हमारे अच्छे गवेषणा पूर्ण इतिहासकार थे। लाला लाजपतराय ने कुछ दिन हुए, प्राचीन भारत का एक भारी इतिहास रचा। पंडित हरिमंगल मिश्र भी इतिहास लेखक थे, जिनका रचनारंभ-काल पूर्व नूतन परिपाटी में आता है। इस समय के अन्य लेखकों में निम्न लिखित सज्जनों के नाम गिनाए जा सकते हैं—हरिचरणसिंह (१९५०) हनुमतसिंह (१९४७), रामचंद्र दुबे (१९५५), गंगाप्रसाद गुप्त (१९६०), कमलाप्रसाद (१९६६), बदरीप्रसाद त्रिपाठी (१९६६) सुंदरलाल

(१६२१) तथा श्रीरामनेत (१६६०)। इन सब महाशयों ने इतिहास विभाग पर श्लाघ्य परिश्रम किया है। इनके विवरण आगे कुछ विस्तार से मिलेंगे। हम (श्यामविहारी मिश्र तथा शुकदेवविहारी मिश्र) ने दो भागों में प्राचीन भारत का इतिहास रचा। पहले खंड में प्राय २०० पृष्ठों में ६००० सं० पूर्व से ६०० सं० पूर्व तक का विवरण है, तथा दूसरे में ६०० संवत् पूर्व से मुसलमान विजय तक का। आकार में दोनो भाग प्राय बराबर हैं। इनके अतिरिक्त दो और छोटे-छोटे इतिहास ग्रंथ हमने लिखे, तथा कई का संपादन किया।

जीवन-चरित्र-रचयिताओं में सबसे पहले बड़े आदर के साथ महात्मा श्रद्धानंद का नाम आता है। आप भारतेंदु-काल में थे। आपने कई परमोत्कृष्ट जीवन-चरित्र रचे। व्याख्याता भी आप बड़े ही उत्कृष्ट थे। शिवनंदनसहाय ने गोस्वामी तुलसीदास तथा भारतेंदु के बहुत ही श्रेष्ठ जीवन-चरित्र लिखे।

पूर्व नूतन परिपाटी काल म अबिकाप्रसाद त्रिपाठी (१६४६), गोपालवल्लभ (१६२३), श्यामसुंदरदास (१६२०) तथा सूर्यकुमार वर्मा (१६६०) के नाम आते हैं। उपर्युक्त प्रथम दो लेखक साधारण हैं, तथा सूर्यकुमार वर्मा ने इनसे बढ़कर जीवन-चरित्र बनाए हैं। श्यामसुंदरदास ने हिंदी-कोविद-रत्नमाला में ८० लेखकों के जीवन चरित्र लिखे, किंतु वे छोटे-छोटे लेख हैं। बाबू मजनंदनसहाय (१६२६) ने चार बढ़िया जीवन-चरित्र रचे हैं। इस काल में इतिहास की अग पुष्टि तो अच्छी हुई, किंतु जीवन-चरित्रों में तादृश उन्नति न हो सकी। पुरातत्त्व विभाग में भारतेंदु-कालवाले ओझाजी तो प्रस्तुत हैं, किंतु कोई नवीन भारी लेखक न हुआ।

अब भाषा-संबंधी उन्नति का कुछ कथन किया जाता है। हमारे

यहाँ पद्य-रचना तो प्राचीन काल से होती आई थी, किंतु गद्य का साहित्य में पहलेपहल प्रयोग ज्योतिरीश्वर ठाकुर ने किया। गद्योन्नति का कुछ कथन हमने प्रथम भाग के संक्षिप्त इतिहास प्रकरण में किया है। उन बातों को यहाँ दोहराना अनावश्यक है। उत्तरालंकृत काल में नज़ीर अकबराबादी, सदासुखलाल, इंशाअल्ला, लल्लूजी लाल और सदल मिश्र के समय से गद्य में खड़ी बोली का प्रचार बढ़ा। नज़ीर मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे। सदासुखलाल ने बहुत करके भाव व्यंजना में कुछ गंभीरता युक्त परिष्कृत रूप में शुद्ध खड़ी बोली लिखी, किंतु उसमें पंडिताऊपन का कुछ पुट था। इंशाअल्ला ने प्रायः उसी समय उर्दू के समान विशुद्ध हिंदी लिखी, जिसमें भाषा संबंधी अलंकारों का भी समावेश था। इनमें शब्दों के अतिरिक्त उर्दू वाक्य-योजना भी थी। इनकी भावभंगी एवं शैली चमत्कृत अथच नवीनता मंडित थी, किंतु इनके लेखों में भारतीयता कम थी। इनकी चटक-मटक तथा हँसी पूर्ण प्रणाली गंभीर विषयों के अयोग्य थी। लल्लूजी लाल ब्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोली लिखते थे, और सदल मिश्र पूर्वी पुट लिए हुए पुष्टतर खड़ी बोली। लल्लूजी लाल ने अपनी मधुर, किंतु कुछ शिथिल भाषा से उर्दूपन बचाया। सदल मिश्र वाली भाव प्रकाशन की पद्धति स्तुत्य थी किंतु फिर भी इस काल की भाषा अव्यवस्थित, अनियंत्रित, प्रांतिकता युक्त अथच भाव प्रकाश में निबद्ध थी। उसमें अनेकरूपता पाई जाती है। इनके पीछे ईसाई लेखकों ने विशुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग किया। इनके शब्दों तथा वाक्यों में उर्दू का बहिष्कार तथा हिंदीपन का आदर था। इन लोगों ने ग्रामीण शब्द तक लिखकर उर्दूपन बचाया। अनंतर राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह, स्वामी दयानंद और भारतेंदु के समय आते हैं। इनमें से शिवप्रसाद ने खिचड़ी (उर्दू मिश्रित) हिंदी चलानी चाही, किंतु शेष लेखकों के उद्योग से शुद्ध हिंदी ही

लोक-प्रदर्शन हुए। भारतेंदु साधारण संस्कृत मिश्रित शुद्ध खड़ी बोली लिखते थे, जिसमें संस्कृतपन या उर्दूपन की भरमार नहीं होती थी। भारतेंदु-काल में भाषा को शक्ति और दीप्ति प्राप्त हुई, तथा गद्य ने उत्कृष्ट रूप धारण किया। इनके पीछे प्रतापनारायण मिश्र की भाषा चुटकुलेबाज़ी लिए हुए खूब उछलती कूदती चलती थी, जिसमें आरोचन की मात्रा अच्छी थी। भारतेंदु-काल के उपर्युक्त कवियों और लेखकों ने प्राय उन्हीं कीसी हिंदी का व्यवहार किया, जिसमें समय के साथ कुछ संस्कृत पन बढ़ता गया। महावीरप्रसाद द्विवेदी सबल लेखक हैं। श्रीधर पाठक बहुत करके पद्य लेखक थे। पुरोहित गोपीनाथ भी उच्च भाषा का व्यवहार करते थे। पूर्व नूतन काल में अयोध्यासिंह उपाध्याय उत्कृष्ट गद्य-लेखक हैं। अन्य अनेकानेक श्रेष्ठ गद्य-लेखकों के नाम अन्य स्थलों में ऊपर आ चुके हैं, जिनमें भुवनेश्वर मिश्र (१९४१), रामनारायण मिश्र (१९४६), जैनेंद्र किशोर (१९२०), गदाधरसिंह (१९२१), गंगाप्रसाद अग्निहोत्री (१९४२) और नरदेव शास्त्री (१९६०) के भी नाम विशेषतया गिनाए जा सकते हैं। गद्य साहित्य के विषय में अंबिकादत्त व्यास तथा श्यामसुंदरदास ने गद्य-काव्य मीमांसा अथच साहित्यालोचन में अच्छे प्रकार से प्रकाश डाला है। कामताप्रसाद गुरु (१९८०) ने व्याकरण पर अच्छा परिश्रम किया। आपने अँगरेज़ी के ढर्रे पर हिंदी-व्याकरण को चलाया है, जिसमें कई स्थानों पर संस्कृत के उन नियमों का भी वर्णन कर दिया है, जो हिंदी से संबद्ध हो गए हैं। इनके व्याकरण में भाषा के शुद्धीकरण की ओर हठ नहीं है, किंतु संस्कृतपन की ओर रुझान है, तथा अनावश्यक विस्तार भी उसमें पाया जाता है। आपने भाषा भास्कर से बहुत कुछ लाभ उठाया है, तो भी आपका श्रम श्लाघ्य है। छायावादी कविता का जोर अभी तक नहीं उठा है। वचनेश मिश्र

तथा रामनाथ ज्योतिषी (१९५१) ने नवीन विषयों पर कुछ रचना की। यही दशा उमरावसिंह कारुणिक (१९२६) की है। महावीर प्रसाद (१९५०) ने वैद्यक के विषय पर ग्रंथ-रचना की, तथा गंगाप्रसाद एम्० ए० (१९२६) ने हिंदी तथा अँगरेज़ी में धार्मिक और ज्योतिषीय विषयों पर पांडित्य पूर्ण ग्रंथ लिखे।

आगे से हमारे प्रसिद्ध तथा अप्रसिद्ध कवियों एवं लेखकों के पृथक् वर्णन चलते हैं। जिन सज्जनों के कथन मुख्य भाग में आए हैं, वे विशेषतया महत्ता युक्त हैं। जिनके वर्णन चक्र में हैं, उनमें से भी बहुतेरे अथवा कुछ ऐसे ही होंगे, किंतु उन सबके ग्रंथों का पठन हम कहीं-कहीं भली भाँति नहीं कर सके हैं। यदि ऐसा होता, तो संभवतः चक्र के भी कुछ लेखक मुख्य भाग में आ जाते। समय लिखने में प्रत्येक कवि के रचनारंभ का ही काल लिखने का प्रयत्न किया गया है। मात्र संवत् एक ही दिया गया है, जिससे आरंभ काल का ही प्रयोजन लेना चाहिए।

सं० १९५५ ई० के मुख्य रचयिताओं के विवरण

समय—संवत् १९५५

नाम—(३०६६) इसरी (ईसरी) बगौरा (छतरपुर)।

जन्म सं० अनुमानतः १९२० ।

कविता-काल—१९५५ ।

विवरण—चतुरभुज नम्बरदार के कारिंदा थे, जैसा कि एक स्थल पर आपने कहा भी है—

"नँबरदार चतुरभुजजू के हम कारदा आयँ।"

आपकी रचना छतरपुर में बहुत प्रसिद्ध है और लोग इसे ग्रामों में बहुत गाते हैं। भाषा ठेठ बुंदेलखंडी है।

उदाहरण—

बखरी[1] रइयत[2] हैं भारे की,
दई पिया प्यारे की।
कच्ची भींत उठी माँटी की,
छाई फूस चारे की। बखरी०
बेबँदेज[3] बड़ी बेबाड़ा,
जेइ में दस द्वारे की। बखरी०
नहीं किवार किवरिया एकौ,
बिना कुची तारे की[4]। बखरी०
'ईसुर' चाए निकारें निदिनाँ,
हमें कौन उबारे[5] की। बखरी०
जब से भइ प्रीत की पीरा,
खुशी नहीं जोइ[6] नीरा[7]।
छूटा माटी भयो फिरत इ, इतै उतै मन हीरा,
कमती आ गइ रकत मास की, बहो द्रगन से नीरा।
फूँकत जात बिरह की आगी, सूकत जात शरीरा।
योई नीम में मानत ईसुर, ओई नीम की कीरा।

× × ×

हम पै बैरिन बरसा आई,
हमें बचा लेव माई।
घर के घटा घटा ना देखें,
पटा देव भगनाई।

---

१ बखरी = घर। २ रइयत = रहियत, रहते हैं। ३ बेबँदेज = बिना रोक की। ४ कुची-तारे की = कुंजी-ताले की। ५ उबारे की = सुभीते की। ६ जो = यह। ७ जीरा = जियरा, जी।

यहाँ आपका घराना प्रतिष्ठा-पूर्ण है, और सेठ कन्हैयालालजी के नाम से यह घराना विशेष कीर्ति-संपन्न हुआ है।

सेठजी अच्छे विद्वान् हैं। आपकी साहित्यिक सेवा हिंदी-संसार में महत्त्व-पूर्ण है। सं० १९७० में 'भर्तृहरि-शतक' का सेठजी-कृत हिंदी-पद्यानुवाद प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त आपने 'गंगालहरी', 'हिंदी-मेघदूत विमर्श', 'पद्यगीत' आदि अनुवादित ग्रंथ बनाए। 'पद्यगीत' में अभिप्राय श्रीमद्भागवत के कई अध्यायों के समश्लोकी अनुवाद का है। आपकी विशेष महत्त्व-पूर्ण रचनाएँ 'अलंकार-प्रकाश' और 'काव्य-कल्पद्रुम' हैं। इनसे आपकी साहित्यिक मार्मिकता का परिचय मिलता है। सरस्वती मासिक पत्रिका में इनकी 'प्रेम-सरोवर', 'कोकिल', 'शरद् का समुद्र' आदि स्फुट कविताएँ निकल चुकी हैं। 'महाकवि भारवि-शायक' आपका लेख विद्वत्ता-पूर्ण समझा जाता है। यह बड़े गौरव की बात है कि अपने व्यापारी कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी सेठजी ने हिंदी साहित्य की महत्त्व-पूर्ण सेवा की है और कर रहे हैं।

उदाहरण—

अलि-पुंजन की मद गुंजन सों वन कुंजन मंजु मचाय रही;
लगि अंग अनंग तरंगन सों रति रंग उमंग बढ़ाय रही।
पिकसे सर कान कपित कै रस रंजन के छिरकाय रही;
अलि मंद सु-मंद प्रभंजन पै मकरंद इतो दिशि छाय रही।
नँदनंदन के स्मित आनन पास लगी रहै कान सदा मर जी;
अधरामृत को रस पान करे अजलौं चित सों न रहे परजी।
कर जोरि कै तोहि प्रनाम करौं मुरली! सुनु एक यही अरजी,
मुरलीधर सों मम दीन दशा कहियो फिरि है उनकी मरजी।
उन्नत पीत उरोज लसैं, युग दीरघ चंचल दीठि विलोकित;
गेह की देहरी पै स्थित ह्वै, पिय आगम के उत्साह प्रकाशित।

कंचन कुभ कुसुम सने पट कंचन अधनपार सुशोभित,
मंगल में उपचार किए बिन हो यम रंजमुखी समयोचित।

नाम—(२४७३) किशोरीलाल गोस्वामी।

वृंदावन-वासी इन गोस्वामीजी का जन्म सं० १९२० में हुआ। आप संस्कृत तथा हिंदी के बहुत अच्छे पंडित थे। आपने कई ग्रंथ संस्कृत में, प्राय १०० हिंदी ग्रंथ स्फुट विषयों पर, ६१ हिंदी-उपन्यास लिखे, और उपन्यास मासिक पुस्तक बहुत दिन तक निकाली। लेखों में आपकी हिंदी में संस्कृत के शब्दों का बाहुल्य रहता है, तथा उपन्यासों में साधारण भाषा का। आपने प्रेमरत्न-माला-नाम्नी एक पद्य-रचना भी की है। इक्कीसवें हिंदी-साहित्य सम्मेलन के आप सभापति थे। १९८९ में आपका शरीरांत हो गया। आपके उपन्यास योरपीय आदि ग्रंथों पर भी अवलंबित हैं तथा कहीं-कहीं उनमें रसियापन की मात्रा कुछ बढ़ गई है। आपने उपदेश पर अधिक ध्यान न देकर ऐसे उपन्यास लिखे हैं, जो संसार में प्रचलित खूब हों। कुछ दिन आपको उनसे चार पाँच सहस्र की वार्षिक आय रही थी। गोस्वामीजी हमारे परमोत्कृष्ट गद्य लेखकों में से थे।

नाम—(२४७४) गणेशसिंह।

जन्म-काल सं० १९२२।

कविता-काल सं० १९४७।

विवरण—इनका जन्म संवत् १९२२ में इटावा में हुआ था। इनके पिता पंडित बालदत्त मिश्र प्रसिद्ध महाजन, ज़मींदार और कवि थे। इन्होंने बाल्यावस्था में हिंदी, संस्कृत और फारसी पढ़ी, और संवत् १९३६ में इटावा में एक कपड़े की दूकान खोली, जो दस वर्ष तक चलती रही। सं० १९४६ में पिताजी ने अस्वस्थ होने के कारण घर का काम करना छोड़ दिया। उसी समय से दूकान उठाकर

यह घर का काम-काज सँभालने लगे। इनके बड़े पुत्र राजकिशोर अमरिका से इंजीनियरी की शिक्षा प्राप्त कर कपड़े की मिलों में उच्च पद पर हैं। इनके दो विवाह प्राय पीछे हुए, पर दोनों स्त्रियाँ पंचत्व को प्राप्त हो गईं। इन्होंने मित्रों के आग्रह पर भी तीसरा विवाह नहीं किया। आपने दत्तकवि कृत प्रेम चंद्रिका, राग-रत्नाकर और सुजान-विनोद को टिप्पणी समेत संपादित करके नागरी प्रचारिणी सभा-ग्रंथमाला में प्रकाशित कराया। कुछ छंद भी इन्होंने बनाए हैं, पर इस ओर विशेष रुचि नहीं है। गद्य-रचना आप बहुत करते आए हैं। हिंदी नवरत्न और मिश्रबंधु विनोद अपने दो भाइयों के साथ आपने बनाए।

उदाहरण—

मथन लगे जब सिंधु देव-दानव मिलि सारे,
　　कढ़े त्रयोदश रत्न सबै परमा अति धारे।
लियो मथन तिन भाँति कढ़यो तब बिषम हलाहल,
　　लगे जरन सब लोक भूरि भाग्यो धीरज बल।
तब धारि क्रिया नहिं बिषम विष तीनि लोक मारन सरन,
मोहि आसुतोष संकट सकल हरहु संभु असरन सरन। १।
मन भावन छैल छबीलो लसै इत राधिका प्रेम प्रभा सों सनी,
उत कान्ह बजावत बाँसुरिया दुहुँ ओरन सों सुषमा है घनी।
इत राधिका भूलत भूला भले, चमकै जुग भूषण जामें कनी;
जहीं हीरन सों गहने पहने छबि देखिए जोरी अनूप बनी।

नाम—(२७०९) ठाकुरप्रसाद खत्री, काशी।

इनका जन्म सं० १९२२ में हुआ। आपने काशी नागरी प्रचारिणी सभा में बहुत दिन काम किया, तथा व्यापारी और कारबारी-नामक पत्र भी निकाला, जो बड़ा उपयोगी था। व्यापार आदि उपयोगी विषयों पर कई पुस्तकें लिखीं, और इसी प्रकार के बढ़िया लेख लिखते

पर सभा से पदक आदि भी पाए। आपके निम्न लिखित ग्रंथ हमने देखे हैं—लखनऊ की नवाबी, हमारा प्राचीन ज्योतिष, करहा, मुधर दरजिन, मिस्ट्रीज़ कोर्ट ऑफ् लंदन के कुछ अंश का अनुवाद और व्यापारिक कोश। आप एक सज्जन पुरुष तथा मित्र वत्सल थे। चित्त की सफाई आपमें आधिक्य से थी। आपकी रचनाओं में साहित्यिक गौरव पर ध्यान न होकर उपयोगिता पर था।

नाम—(२४७६) बालमुकुंद गुप्त।

जन्म-काल—सं० १९२२।

रचना-काल—१९४७।

विवरण—इनका जन्म सं० १९२२ में रोहतक ज़िले में हुआ। इनको हिंदी लेखन से सदैव बड़ी रुचि थी, और इन्होंने पत्रों के संपादन से ही अपनी जीविका भी चलाई। आपने सात वर्ष बंगवासी का संपादन किया, और फिर भारतमित्र के आप जीवन-पर्यंत संपादक रहे। रत्नावली नाटिका, हरिदास, शिवशंभु का चिट्ठा, स्फुट कविता, खेलौना आदि पुस्तकें भी रचीं। इनकी गद्य और पद्य-रचनाओं में सजीवता तथा मज़ाक़ की मात्रा प्रचुर थी, और ये बड़ी मनोरंजक होती थीं। होली के संबंध में ये टेसू आदि प्रचुर मात्रा में बनाते थे। इनका शिवशंभु का चिट्ठा एक बड़ा ही लोक प्रिय ग्रंथ है। गुप्तजी एक बड़े ही ज़िंदादिल लेखक थे तथा समालोचना भी अच्छी करते थे। इनका शरीरपात सं० १९६४ में हुआ।

उदाहरण—

हुए मारली पद पर पक्के, बराडरिक के लग गए धक्के।
बंगाली समझे पौ छक्के, होली है भइ होली है।
बंग-भंग की बात चलाई, काटा ने तक़रीर सुनाई।
तब मुरली ने तान लगाई, होली है भइ होली है।
होना था सो हो गया भैया, अब न मचाओ ताथा थैया।

यह घर का काम-काज सँभालने लगे। इनके बड़े पुत्र राजकिशोर अमेरिका से इंजीनियरी की शिक्षा प्राप्त कर कपड़े की मिलों में उच्च पद पर हैं। इनके दो विवाह आगे पीछे हुए, पर दोनों स्त्रियाँ पंचत्व को प्राप्त हो गईं। इन्होंने मित्रों के आग्रह पर भी तीसरा विवाह नहीं किया। आपने द्विजदेव कृत प्रेम चन्द्रिका, राग-रत्नाकर और सुजानविनोद को टिप्पणी समेत संपादित करके नागरी प्रचारिणी सभा ग्रंथमाला में प्रकाशित कराया। कुछ छंद भी इन्होंने बनाए हैं, पर इस ओर विशेष रुचि नहीं है। गद्य-रचना आप बहुत करते आए हैं। हिंदी नवरत्न और मिश्रबंधु विनोद अपने दो भाइयों के साथ आपने बनाए।

उदाहरण —

मथन लगे जब सिंधु देवदानव मिलि सारे,
　　　कढ़े त्रयोदश रत्न सबै परमा अति धारे।
लियो मथन तिन बाँटि कढ्यो तब विषम हलाहल,
　　　लगे जरन सब लोक दूरि भाग्यो धीरज बल।
जब पान कियो जेहि विषम विष तीनि लोक तारन तरन,
मोद अमृतायु सकल मंगल करहु सभु असरन सरन। १।
मन मोहन छैल छबीलो लख्यौ इत राधिका प्रेम प्रभा सौं सनी,
उत बाँह बजावत बाँसुरिया दुहुँ ओरन सों सुषमा है घनी।
इत राधिका भूखन भूली भई, घनके जुत भूषण जामें कनी।
यहि हालन सों मढ़ने पहले छबि देखिए जोरी अनूप बनी।

नाम—(२७०१) ठाकुरप्रसाद खत्री, काशी।

इनका जन्म सं० १९२२ में हुआ। आपने काशी नागरी प्रचारिणी सभा में बहुत दिन काम किया, तथा बैपारी और कारबारी-नामक पत्र भी निकाला जो बड़ा उपयोगी था। व्यापार आदि उपयोगी विषयों पर कई पुस्तकें लिखीं, और इसी प्रकार के बढ़िया लेख लिखते

पर सभा से पदक आदि भी पाए। आपके निम्न लिखित ग्रंथ हमने देखे हैं—लखनऊ की नवाबी, हमारा प्राचीन ज्योतिष, फरक्का, सुघड़ बनिता, मिस्ट्रीज़ कोर्ट ऑफ् लदन के कुछ अश का अनुवाद और व्यापारिक कोश। आप एक सज्जन पुरुष तथा मित्र वत्सल थे। चित्त की सफाई आपमे आधिक्य से थी। आपकी रचनाओं म साहित्यिक गौरव पर ध्यान न होकर उपयोगिता पर था।

नाम—(२४७६) बालमुकुंद गुप्त।

जन्म-काल—स० १९२२।

रचना-काल—१९४७।

विवरण—इनका जन्म स० १९२२ म रोहतक ज़िले म हुआ। इनको हिंदी लेखन से सदैव बड़ी रुचि थी, और इन्होंने पत्रों के संपादन से ही अपनी जीविका भी चलाई। आपने सात वर्ष बगवासी का संपादन किया, और फिर भारतमित्र के आप जीवन-पर्यंत सपादक रहे। रत्नावली नाटिका, हरिदास, शिवशभु का चिट्ठा, स्फुट कविता, खेलौना आदि पुस्तकें भी रचीं। इनकी गद्य और पद्य रचनाओं म सजीवता तथा मज़ाक की मात्रा प्रचुर थी, और वे बड़ी मनोरजक होती थीं। होली के सबध म य टेसू आदि खूब मार्के के बनाते थे। इनका शिवशभु का चिट्ठा एक बड़ा ही लोक प्रिय ग्रंथ है। गुप्तजी एक बड़े ही ज़िंदादिल लेखक थे तथा समालोचना भी अच्छी करते थे। इनका शरीरपात स० १९६४ में हुआ।

उदाहरण—

हुए मारली पद पर पक्के, बगालिन के लग गए धक्के।
बगाली समझे थे छक्के, होली है भइ होली है।
धग भग की बात चलाई, काटन ने तकरीर सुनाई।
तब मुरली ने तान लगाई, होली है भइ होली है।
होना था सो हो गया भैया, अब न मचाओ तोबा दैया।

घर को आयो लेउँ बलैया , होली है मइ होली है।
जैसे शिवरल तैसे टारी , जो परनाला सोई मोरी।
दोना का है पथ अघोरी , होली है मइ होली है।

नाम—(२५०७) राधाकृष्णदास।

यह महाशय काशी के रहनेवाले वैश्य तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र के फुफेरे भाई थे। इनकी मृत्यु २ अप्रैल सं० १९६४ में, केवल ४२ वर्ष की अवस्था में, हो गई। स्वयं भारतेंदु ने इन्हें, हिंदी लिखने को प्रोत्साहित किया था और धीरे धीरे यह विशद हिंदी लिखने भी लगे थे। यह महाशय बड़े ही सज्जन पुरुष और हमारे मित्र थे। इनसे मिलकर चित्त प्रसन्न हो जाता था। इन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा की सदैव सहायता की। यह उसके कुछ समय तक मंत्री और ग्रंथमाला के संपादक रहे। हमारे बाबू साहब प्राचीन पर भी विशेष ध्यान रखते थे। बहुत से प्राचीन कवियों का थोड़ा-बहुत हाल भी इन्होंने लिखा है। आपने भारतेंदुजी के कालचक्र, प्रशस्ति संग्रह, सती प्रताप रासिंह आदि अधूरे ग्रंथों को पूर्ण किया। इनके रचित ग्रंथों के नाम नीचे लिखे जाते हैं—

धर्म चरितामृत, धर्मालाप सरता क्या ॥ करता, स्वर्णलता, बापा रावल, दुःखिनी बाला, निःसहाय हिंदू सामयिक पत्रों का इतिहास, बाबू हरिश्चंद्र, सूरदास, नागरीदास और बिहारीलाल के संक्षिप्त जीवन चरित महारानी पद्मावती, राजस्थान केसरी नाटक, दुर्गेश नंदिनी महाराणा प्रताप आदि। इन्होंने नहुष नाटक, सूरसागर और भक्त नामावली का संपादन भी अच्छे प्रकार किया। इनका गद्य अच्छा होता था और पद्य भी यह साधारणतया अच्छा लिखते थे। इनके नाटक रुचिर हैं, पर उनमें कहीं-कहीं भारतेंदु के नाटकों की छाया आ गई है। बाबू साहब एक उत्कृष्ट लेखक और श्रमशील साहित्यिक पुरुष थे।

उदाहरण—

हे हठ वीर सिरोमनि सब सरदार हमारे,
हे विरंचि-सहचर प्रताप के प्रान पियारे;
सब गुन-बल सों मैं भयो रक्षा करन समर्थ,
मातृ भूमि स्वाधीनता भयउ आशु करि व्यर्थ।
अनेकन कष्ट सहि।
जो प्रताप ने उचित कह्यौ कै अनुचित मान्यो,
पर स्वतंत्रता-हत जगत-सुख तृन सम जान्यो;
राज महल रँगरल विविध सुख सामान बिहाय,
छानि बनन की धूरि को गिरि गिरि में टकराय।
जनम-सुख मेलि कै।

नाम—(२४७८) शरच्चंद्र सोम।

इन्होंने बारह पंडितों द्वारा समस्त १८ पर्व महाभारत को, प्रति श्लोक अनुवाद कराके सं० १९४७ में प्रकाशित किया। यह ग्रंथ बड़े ही महत्त्व का है। इसकी भाषा भी सरल और सुहावनी है। काशी-नरेश का महाभारत छंदोबद्ध है, और कुछ संक्षेप से लिखा गया है, परंतु इसमें महाभारत के संपूर्ण श्लोकों का अनुवाद साधु भाषा में किया गया है। यदि इसमें अनुवादकर्ता पंडितों के नाम भी दे दिए जाते, तो कोई हर्ज न होता। इस तरह जान नहीं पड़ता कि कौन किसकी रचना है? सोम महाशय ने यह काम बड़ा ही उत्तम किया कि भिन्न भाषा-भाषी होकर भी उन्होंने महाभारत-सरीखे भारी तथा लाभकारी ग्रंथ को हिंदी में लिखवाकर प्रकाशित किया। इसके लिये यह समस्त हिंदी-जाननेवालों के धन्यवाद के पात्र हैं। उदाहरणार्थ हम थोड़ा-सा अनुवाद यहाँ पर देते हैं—

श्रीवैशंपायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय! इस प्रकार कुरु-कुल-श्रेष्ठ पांडवों ने अपने संगियों के सहित प्रसन्न होकर अभिमन्यु का

विवाद किया, फिर रात्रि भर सुख से अपने घर में रहे और प्रात काल होते ही राजा विराट की सभा में आए। वह राजा विराट की सभा मणियों से खिंचा हुआ, फूल की मालाओं से सुशोभित और सुगंधित जल से छिड़की था। उसी में सब राजाओं में श्रेष्ठ पांडव लोग आकर बैठे। उनके बैठते ही सब राजाओं से पूजित बूढ़े महाराज विराट और द्रुपद आसनों पर बैठे। उनके पश्चात् श्रीकृष्ण बैठे। द्रुपद के पास कृतवर्मा और बलदेव बैठे। राजा विराट के पास महाराज युधिष्ठिर बैठे। राजा द्रुपद के सब पुत्र, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, प्रद्युम्न, साम्ब, अभिमन्यु और राजा विराट के महावीर पुत्र, ये सब एक स्थान पर बैठे। पांडवों के तुल्य रूपवान् और पराक्रमी द्रौपदी के पाँचों महावीर पुत्र मणिजटित सोने के सिंहासनों पर बैठे। जब उत्तम वस्त्र और आभूषणधारी राजा लोग अपने अपने योग्य आसनों पर बैठ चुके, तब वह राजाओं से भरी सभा ऐसे शोभित हुई, जैसे निर्मल तारों से भरा आकाश झलकता है।

समय—संवत् १६४८

नाम—(२७०१) जगन्नाथदास रत्नाकर बी० ए० (वैश्य), काशी।

जन्म-काल—सं० १९२३।

कविता-काल—सं० १९४८।

विवरण—बहुत काल आप अयोध्या नरेश के यहाँ निजी अमात्य (प्राइवेट सेक्रेटरी) रहे। आपने हिंडोला, समालोचनादर्श, साहित्य रत्नाकर, घनाक्षरी नियम-रत्नाकर और हरिश्चंद्र तथा उद्धव-शतक-नामक ग्रंथ रचे। कई वर्ष तक आपने 'साहित्य-सुधानिधि' नाम्नी मासिक पत्रिका का संपादन किया। आप ब्रजभाषा के एक उत्कृष्ट कवि थे। बिहारी-रत्नाकर आपका अच्छा टीका ग्रंथ है।

गंगावतरण, काव्य पर आपको हिंदी ऐकेडेमी से २०० रु० पुरस्कार में मिले। आप सूर-सागर को शुद्धता पूर्वक संपादित करने में व्यस्त थे कि १९८९ में आपका शरीरांत हो गया। आपकी रचना पद्माकरी ढंग की समझी जाती है। उसमें पुराने प्रकार के साहित्यिक भाव प्राचुर्य से हैं। आपके छंद तथा भाव प्राचीन कवियों की शैली लिए हुए होते थे, किंतु ऐसे कथन और विचार प्राचीन काल से कई बार कहे जाने के कारण अब कुछ आरोचन शून्य और फीके लगने लगे हैं। आपमें प्राचीन प्रथा का साहित्य-गौरव पाया जाता था, किंतु नवीनता की कमी से कुछ फीकापन झलक जाता था। हमारे प्राचीन मित्र थे और जब लखनऊ आते थे, तब हमसे प्राय मिल लेते थे तथा देर तक बातें करते थे। आपके छंदों में उमंग की मात्रा पदमैत्री-युक्त अच्छी थी। गंगावतरण, हरिश्चंद्र आदि रचनाएँ सभ्य-समाज में आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं। सूर और बिहारी पर रत्नाकर-जी ने अच्छा परिश्रम किया था।

नाम—(३४८०) जगलीलाल भट्ट (जगली), पैंतेपुर, जिला सीतापुर।

रचना—स्फुट काव्य।

जन्म-काल—सं० १९२३।

समय—१९४८।

विवरण—यह सीतापुर में शिक्षक हैं। कविता सरस तथा उत्कृष्ट करते हैं। कोई ग्रंथ नहीं बनाया है, परंतु स्फुट छंद बहुत से रचे हैं।

उदाहरण—

बिलुलित अलकैं ललित भाल बाल मुख
बनक बिसाल मदतावी दरसति है,
लोमी लच्छ लचनि नचनि चितवनि चख
चंचल तुरग-सी सितावी दरसति है।

सौरभित फूल-सी अतूल सुख-मूल दुति
जगली दुकूल में न दाबी दरसति है।
फाबी सित कचुकी में उरज सहायी आय
ऊपर अपूरब गुलाबी दरसति है।

नाम—(३७८१) देवकीनंदन खत्री, काशी निवासी।
जन्म-काल—सं० १९१८ (मुज़फ़्फ़रपुर में)
कविता-काल—सं० १९४८ के लगभग।

विवरण—२४ वर्ष की अवस्था तक यह मुज़फ़्फ़रपुर एवं गया ज़िले में रहे और इसके पीछे काशी में रहने लगे। इन्होंने जंगलों की अच्छी सैर की थी। अपने देखे हुए स्थानों एवं नगरों का वर्णन इन्होंने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया। इनके बनाए हुए चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति, नरेंद्रमोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेंद्रवीर, काजर की कोठरी, भूतनाथ आदि उपन्यास परम लोकप्रिय एवं मनोहर हैं। इनके उपन्यास ऐसे रोचक हैं कि बहुत-से लोगों ने उन्हें पढ़ने ही को हिंदी सीखी। इन्होंने पंडित माधवप्रसाद के संपादकत्व में सुदर्शन नामक एक मासिक पत्र भी निकाला था, पर वह बंद हो गया। इनकी देखा देखी हिंदी में बहुत से उपन्यास लेखक हो गए हैं, और इस विभाग की अच्छी पूर्ति हुई है। इनके उपन्यासों में असंभव बातें बहुत रहती हैं, जो अनुचित हैं। इनकी भाषा बहुत सरल होती है और वह मनोहर भी है। इनके उपन्यासों में लोक-हित-साधन का बहुत विचार नहीं रहता। इनका शरीरपात हो चुका है। इनके पहले तिलिस्म रूप बदलने से चरित्र का दिखलौवा बदलाव आदि का पूर्वरूप रेनाल्ड्स की पौधवाली मूर्ति नामक उपन्यास में है। ऐसे ही विचार कुछ अन्य योरपीय उपन्यासों में हैं। किसाना याज़ाद में ऐयारी का पूर्वरूप है। सं० १९५३वाले एक वैष्णवता विवर्द्धक हिंदी के उपन्यास में ऐयारी बड़ी हुई है। यह बहुत बड़ा ग्रंथ है।

फिर भी बाबू साहब ने चन्द्रकान्ता तथा चन्द्रकान्ता-संतति में तिलिस्म और ऐयारी को बहुत रोचक रूप से पूर्ण बनाया है, जैसा इनके पूर्ववर्ती लेखकों ने न कर पाया था। इस प्रकार के और भी बहुतेरे ग्रंथ इतरों ने बनाए, पर उन बूँदों भेंट न कर सके। भूतनाथ में तिलिस्म और ऐयारी के रहस्य इतने बढ़ गए हैं कि कोई घटना स्पष्ट होती ही नहीं। भूतनाथ अधिकाधिक घटना-योजन से बिलकुल बिगड़ गया है। बाबू साहब ने इसका आदिम भाग ही लिखा भी था और पीछे का बिगड़ा हुआ भाग दूसरों का है। चन्द्रकान्ता-संतति इनकी सर्वोत्कृष्ट रचना है।

नाम—(३४८२) भोगवतीजी।

ग्रंथ—सतमत प्रकाशिका।

मृत्यु काल—सं० १९७३।

विवरण—यह मुँगेर ज़िलान्तर्गत गोगरी के बाबू मंतरामजी की स्त्री थीं। इस समय इनके इकलौते पुत्र बाबू जयदेवरामजी बनेली-राज्य में एक उच्च कर्मचारी हैं। इनकी कविता भक्ति-रस की है।

उदाहरण—

विनय सुनहु मेरी मातु भवानी।
मैं अति दीन मलीन हीन मति, परहु दुखित माहिं जानी।
कृपा करहु भव पार उतारहु, देहु चरण गुण-खानी।
भुक्ति पदारथ तव चरणन मैं, पावहिं सुर, मुनि ज्ञानी।
पद पंकज रज देहु कृपा करि, निज किंकरि मोहि जानी।
शुंभ निशुंभ को नाश कियो तुम देवन त्रास मिटानी।
हरहु सोच मोहिं पार लगावहु, दया करहु रुद्रानी।

नाम—(३४८३) रामदास गौड़ एम्० ए०, बनारस।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) संक्षिप्त रामायण (अप्रकाशित), (२) स्वर्गादर्श, (३) राष्ट्रीय शिक्षावली (सात पुस्तकें), (४) हिंदी के ज्ञात ग्रंथों की सूची (अँगरेज़ी में), (५) भारी भ्रम (The Great Illusion का अनुवाद), (६) विज्ञान की हिंदी-उर्दू रीडरें।

विवरण—आप जाति के कायस्थ मुंशी ललिताप्रसादजी के पुत्र हैं। आपने शिक्षा सेंट्रल हिंदू-कॉलेज, बनारस तथा म्योर सेंट्रल कॉलेज, इलाहाबाद में प्राप्त की। इन्होंने दस वर्ष की अवस्था ही में संक्षिप्त रामायण नामक एक काव्य ग्रंथ, जो कि ऊपर दिया हुआ है, रचा। यह हिंदी गद्य तथा पद्य दोनों के लेखक हैं। दर्शन, इतिहास, विज्ञान, साहित्य आदि विषयों में इन्होंने असाधारण ज्ञान प्राप्त किया है। आप एक कट्टर देश भक्त तथा स्वतंत्रता प्रेमी हैं। कायस्थ पाठशाला, इलाहाबाद के रसायन विभाग के प्रोफ़ेसर आप कई वर्षों तक रहे। हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस से इनका संबंध भाष्य विभाग में रसायन के प्रोफ़ेसर के नाते बहुत समय तक रहा। आपकी रचना देश भक्ति लिए हुए सुपाठ्य तथा सुंदर होती है। (श्रीयुत रघुवरदयालजी मिश्र द्वारा ज्ञात)।

उदाहरण—

वंद भारतवर्षमुदारम्।

पावन आर्य भूमि मनभावन सरसावन सुख-सारम्।
हिमगिरि सेत मुकुट सम भ्राजत सुर प्रसून बरसावत,
सरन दीप जिमि कमल चरन पर सागर पाद्य दिवावत।
धमनी सिरा मनहुँ घन सरिता बहत अमिय की धारा,
तैंतिस कोटि बसत सुर थल तरु रोमावली अपारा।
गो, गज, बाजि, रतन, चमर धन अन्न अमल जल पूरे,
सुखद सघन बन नगर मनोहर हरित सस्यमय रूरे।
निज व्यवसाय निरत सुचरित जन कलह कलुष तें न्यारे।

सत्य सिपाह स्नेह की बेड़ी नहिं व्यभिचार निहारे।
देस-देस के प्रानी जीवत तेरी ही भुज छाया,
भए कनौड़े रानि सकत नहिं तव सहाय बिन माया।
देशनाश भर पाय चाह के दान मुक्त कर दीजे,
लुटे न पाप, छुटे सपति, मिन धम रहे सोइ कीजे।
नीच लुटेरे ना कहूँ ताकैं तेरी दिसि मिरछाहीं,
तैतिस कोटि उठे निमक भुज, सर्व बर हृद माहीं।
प्राण धन के लोभ पाप तें जिनमे शत्रु घनेरे,
जनपद तेरोइ तुहा प्रजापति, छय सांस इक तेरे।

नाम—(२८८४) शिवबिहारीलाल मिश्र।

जन्म-काल—सं० १६१७।

कविता-काल—१६४८ के लगभग।

विवरण—आपका जन्म संवत् १६१७ में इटौंजा ग्राम में हुआ था। आपके पिता पंडित बालदत्त मिश्र बड़े प्रसिद्ध महाजन, ज़मीदार और कवि थे। आपने बाल्यावस्था में इटौंजा और फिर महोना में उर्दू की शिक्षा पाई और अंत में लखनऊ में रहकर ऑगरेज़ी पढ़ी। एंट्रेंस पास करके बी० ए० तक आपने एफ़० ए० में शिक्षा पाई, पर इस समय आप कुछ ऊँचा सुनने लगे, सो क्लास में अध्यापकों का पढ़ाना भली भाँति न सुन पाते थे। इस कारण पढ़ने से आपका चित्त उब गया और आपने सरकारी नौकरी कर ली। थोड़े दिनों में वकालत पास करके संवत् १६४५ में आप लखनऊ में वकालत करने लगे। अपने इस काम से पैतृक संपत्ति बढ़ाने में आपने बड़ी सहायता दी और महाजनी के व्यापार को ज़मींदारी में बदल दिया। सं० १६५० में आप हैज़ा-रोग से बहुत पीड़ित हुए ... की कम आशा रही, पर ईश्वर ने अच्छा कर ... में आपको कुछ मास खाँसी और ज्वर का

रोगा रहा, और एक बार छ मास समुद्र-तट पर वाल्टेर में रहना पड़ा, जिससे उस रोग से भी मुक्ति हो गई, परन्तु श्वास की शिकायत कुछ चली ही जाती थी। आपका शरीरपात १९७४ में हो गया।

कविता की ओर पहले आपका ध्यान न था, पर पीछे से यह रुचि भी आपको हुई, और संवत १९४८ के लगभग से आप रचना करने लगे।

उदाहरण—

झूमत हैं मद मा भरिकै मृग से पुनि चौंकि चहूँ दिसि जो हैं,
खंजन से उड़ि जात सबै चल मीन सपच्छ मनौ गुन सो हैं;
नूतन कंज समान बिकास धरे चल ये सबको मन मो हैं,
पै उलटो गुन धारि सदा बनि बाम समान हनै मन को हैं। १।

मीन मृग खंजन तुरग सो चपलताई,
कंज दल ही सों लै सरूप शुद्ध पायो है।
बेधकपनो है औन अति अनियारो ताहि,
बानन सों लैके क्रूरताई उपजायो है।
स्यामता हलाहल सों मद सों ललाई पुनि
चार मतवारापन लैकैं सुधि छायो है।
अमिय सो लैके सेतताई जग मोहन को,
बिधना जुगल इन नैनन बनायो है। २।

आपके एक पुत्र और दो कन्याएँ हैं। पुत्र लक्ष्मीशंकर मिश्र विलायत में पढ़कर अब लखनऊ में बैरिस्टरी करते हैं।

नाम—(२४८९) बदरीदत्त शर्मा, काशीपुर, नैनीताल।

जन्म-काल—सं० १९२४।

समय—सं० १९४१।

ग्रंथ—(१) दशोपनिषद् (अनुवाद), (२) विवेकानंद के व्याख्यान (भाषा), (३) अद्वैत संताप, (४) संस्कृत प्रबोध,

(५) कर्म-योग, (६) मनुष्य का धर्म, (७) चरित्र शिक्षा, (८) विचार कुसुमांजलि, (९) विधवोद्वाह-मीमांसा, (१०) प्रबधार्कोदय।

विवरण—आपने दानापुर आर्य-समाचार का संपादन किया। कानपुर में आप अध्यापक और सवज्ञ लेखक थे। समाजी लेखकों में आप बहुसंख्या दृष्टिवाले शास्त्रज्ञ हैं। इनके द्वारा हिंदी में प्राचीन आर्यों की ज्ञान-वृद्धि हुई है। आपका श्रम श्लाघ्य है।

नाम—(१४८६) बिहारीलाल जैन (बुलंदशहरी), बाराबंकी।

जन्म-काल—सं० १९२४।

रचना-काल—सं० १९५१।

ग्रंथ—(१) बृहत् जैन शब्दार्णव (जैन साइक्लो पीडिया, सं० १९६६)।

(२) अग्रवाल-इतिहास (सं० १९७८)।

(३) बृहत् जिनचरितार्णव (अकारादि क्रम से कई भागों में तैयार हो रहा है)।

(४) धर्मकुमार-नाटक।

अपूर्ण:
(५) बृहत् हिंदी शब्दार्णव।
(६) हिंदी-व्याकरण के पारिभाषिक शब्द।
(७) प्रकीर्णक कविता-संग्रह।
(८) लघु स्थानांगार्णव।
(९) विज्ञानार्कोदय नाटक।
(१०) विश्वावलोकन।

(११) आश्चर्यजनक स्मरण-शक्ति।

(१२) अनमोल मूर्ती (निज-रचित उर्दू-पुस्तक का हिंदी-

रोग रहा, और एक बार छ मास समुद्र-तट पर वाल्टेर में रहना पड़ा, जिससे उस रोग से भी मुक्ति हो गई, परंतु श्वास की शिकायत कुछ चली ही जाती थी। आपका शरीरपात १९७४ में हो गया।

कविता की ओर पहले आपका ध्यान न था, पर पीछे से यह रुचि भी आपको हुई, और संवत् १९७८ के लगभग से आप रचना करने लगे।

उदाहरण—

भूलत हैं मद सों भरिकै मृग से पुनि चौंकि चहूँ दिसि जो हैं,
खंजन से उड़ि जात सबै थल मीन नपच्छ भनी जुग सो हैं,
नूतन कंज समान बिलास धरे चख ये सबको मन मोहैं,
पै उलटो गुन धारि सदा यमि वान समान हनै मन को हैं। १।

मीन मृग खंजन तुरग सा चपलताइ
कंज दल ही सों लै सरूप सुद पायो है।
बेधकपनो है जौन अति अनियारो ताहि,
बानन सा लैके क्रूरताई उपजायो है।
स्यामता हलाहल सों मद सों ललाई पुनि
चार मतवारापन लैकैं छबि छायो है।
अमिय सा लैके सेतताइ अग मोहन को,
विधना जुगल इन नैनन बनायो है। २।

आपके एक पुत्र और दो कन्याएँ हैं। पुत्र लक्ष्मीशंकर मिश्र विलायत से पढ़कर अब लखनऊ में बैरिस्टरी करते हैं।

नाम—(३७८९) बदरीदत्त शर्मा, काशीपुर, नैनीताल।

जन्म-काल—सं० १९२४।

समय—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) दशोपनिषत् (अनुवाद), (२) विवेकानंद के व्याख्यान (भाषा), (३) अबला संताप, (४) संस्कृत प्रबोध,

(५) कर्म-योग, (६) मनुष्य का धर्म, (७) चरित्र शिक्षा, (८) विचार-कुसुमांजलि, (९) विधवोद्वाह-मीमांसा, (१०) प्रयागाकोंदय।

विवरण—आपने कानपुर आर्य-समाचार का संपादन किया। कानपुर में आप अध्यापक और सबल लेखक थे। समाजी लेखकों में आप बहुमुखी दृष्टिवाले शास्त्रज्ञ हैं। इनके द्वारा हिंदी में प्राचीन शास्त्रों की ज्ञान-वृद्धि हुई है। आपका श्रम श्लाघ्य है।

नाम—(१७८६) बिहारीलाल जैन (बुलंदशहरी), बारावंकी।

जन्म-काल—सं० १९२४।

रचना-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) बृहत् जैन शब्दार्णव (जैन साइक्लो पीडिया, सं० १९६६)।

(२) अग्रवाल इतिहास (सं० १९७८)।

(३) बृहत् विश्वचरितार्णव (अकारादि क्रम से कई भागों में तैयार हो रहा है)।

(४) श्रीनवकुमार नाटक।

अपूर्ण:

(५) बृहत् हिंदी शब्दार्णव।

(६) हिंदी व्याकरण के पारिभाषिक शब्द।

(७) प्रकीर्णक कविता-संग्रह।

(८) लघु स्याद्वादार्णव।

(९) विज्ञानार्कोदय नाटक।

(१०) विश्वावलोकन।

(११) आश्चर्यजनक स्मरण शक्ति।

(१२) अनमोल बूटी (निज-रचित उर्दू-पुस्तक का हिंदी-अनुवाद, १९७०)।

(१३) जैन धर्म के विषय में अजैन विद्वानों की सम्मतियाँ, दो भाग।

(१४) हनुमान चरित्र नावेल भूमिका (हिंदी अनुवाद)।

(१५) चतुर्विंशति जिन पंच कल्याणक पाठक (एक प्राचीन सुप्रसिद्ध जैन कवि की कृति का संपादन)।

(१६) धनमाल विधि, न० १२।

(१७) उपयोगी नियम।

(१८) २४ जैन तीर्थंकरों के पंच कल्याणकों की शुद्ध तिथियों का तिथि क्रम से नम्बरों-सहित शुद्ध तिथि-कोष।

विवरण—आप सूर्य वंशोद्भव गोयल गोत्रीय अग्रवाल जैन श्रीयुत लाला देवीदासजी के सुपुत्र हैं। आपकी जन्मभूमि बुलंद शहर है। आप एन्ट्रेंस तथा सी० टी० परीक्षाएँ पास कर चुकने पर प्राय साथ गत ३० वर्ष से अध्यापक के नाते गवर्नमेंट सर्विस कर रहे हैं। इस समय आप गवर्नमेंट हाईस्कूल बाराबंकी में असिस्टेंट मास्टर हैं। यह महाशय बड़े साहित्यानुरागी तथा जैन समाज के एक सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित विद्वान् हैं। आप हिंदी उर्दू, फ़ारसी, अँगरेज़ी आदि भाषाओं का अच्छा परिज्ञान रखते हैं। ऊपर दिए हुए ग्रंथों के अतिरिक्त योगसार, प्रश्नोत्तरी स्वामी शंकराचार्य, मोक्षप्रबंध-नाटक, नीति-दर्पण, भर्तृहरि नीतिशतक आदि संस्कृत ग्रंथों का उर्दू में आपने अनुवाद किया है।

उदाहरण—

(प्रकीर्ण कविता संग्रह से)

सप्त दिवस की संपदा अवगुण लावे सात,
काम, क्रोध, मद, लोभ, छल तथा वैर अरु घात।
पर यदि पर उपकार में धन खर्चे मन खोल,
सप्त गुणन-कर गुण हो, सो नर रत्न अमोल।

क्षमा दया औदार्य अरु मादव मय सतोष,
आयव शाती-सहित जो श्री० एल्० वह निर्दोष।
अशुभ कम अँधियार में साथ देइ कुइ नाहि,
श्री० एल्० छाया मनुज की तजे अँधरे माँहि।
बहु मुरखो कम बोलबो, यह है परम विवेक,
श्री० एल्० यों निधि ना रचे, कान कोष जिम एक।
कहे बचन तिहुँ काल में सकल बोलत नाँहि,
श्री० एल्० यों विधि ना रचे हाड न जिह्वा माँहि।

नाम—(२४८७) भुवनेश्वर मिश्र।

यह दरभंगा निवासी हिंदी-गद्य के एक प्रतिष्ठित लेखक थे। आपका जन्म सं० १६२५ में हुआ। आपने अनेकानेक उत्कृष्ट लेख कई पत्रों में छपवाए और कवि-परिचय, कवि-सोपान, परलोक, घराऊ घटना, बलवंत भूमिहार आदि कई ग्रंथ रचे, जिनमें घराऊ घटना हमारे देखने में आया है। यह स्वभावोक्ति एवं हास्यरस पूर्ण ग्रंथ है। मिश्रजी की लेखन शैली बड़ी विलक्षण एवं चमत्कारिक है। यह महाशय दरभंगा में वकालत करते थे। आप चंपारन चंद्रिका तथा हिंदी बंगवासी के संपादक भी रह चुके हैं।

नाम—(२४८८) रामनारायण मिश्र, काशी।

ग्रंथ—जापान-दपण।

जन्म-काल—सं० १६२४।

विवरण—आप हिंदी के सुलेखक हैं। आपने बहुत दिन तक शिक्षा विभाग में डिप्टी इंस्पेक्टरी के पद पर नौकरी की। इस समय आप हिंदू यूनिवर्सिटी के स्कूल में हेडमास्टर हैं। आप हिंदी का बहुत काम कर रहे हैं। आपने और भी हिंदी की कुछ पुस्तकें लिखी हैं। हाल ही में अपने 'योरप प्रवास' पर एक अच्छी सी पुस्तक दो अन्य महाशयों के [illegible] है।

नाम—(२८८६) रामेश्वरबख़्शसिंह ठाकुर।

यह बड़े ज़मींदार परसेंडी सीतापुर के थे। आपका जन्म सं० १९२४ में परसेंडी में ठाकुर बेनासिंह के यहाँ हुआ। आपके पिता अच्छे शिव भक्त और हिंदी-साहित्य के ज्ञाता थे। हमारे ठाकुर साहब ने हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत और उर्दू भी पढ़ी। आपने हिंदी-काव्य के तीन ग्रंथ रचे, अर्थात् साहित्य श्रीनिधि, सोरठा शतक और स्फुट काव्य। हिंदी में आपका उपनाम श्रीनिधि था। आपने उर्दू-ग़ज़लें और हिंदी में बहुत-सी गाने की चीज़ें भी रचीं। गान विद्या में आपको अच्छा बोध था। आप बड़े उदार और सज्जन पुरुष थे। आपके छंद अनुप्रास पूर्ण और उत्कृष्ट हैं। थोड़े दिन हुए आपका शरीर पात हो गया।

उदाहरण—

श्रीनिधि, मानुष महीपन की कहै कौन,
जहाँ देवराज केऽसे चँवर ढरयो करैं,
ब्रह्मा विष्णु रुद्रऽसे परे हैं चरणांबुज में,
ऋषि-मुनि जाको ध्यान उर में धरयो करैं।
ऐसी आदि शक्ति मातु सोहति सिंहासन पै,
जाके रूप आगे रमा रति हू डरयो करैं,
दीस निसि भानु सित भानु जाकी फेरी करैं,
घरी सम ऋद्धि सिद्धि टहल करयो करैं। १।
राजती पताको वेस अजब कताकी प्रभा,
हेरि हरिता की हरी हरित लता की है,
पन्नग सुता की और नर बनिता की कहा,
अन्य समता की है न काहू देवता की है।
जगतपिता की वाम भगिनी सुमेनिष स
श्रीनिधि को दाइनी प्रकास कविता की है;

उदाहरण—

यौवन रूप अनूपम पायकै क्यों चलती हो इती इतरानी;
गाहक याहि गँवाइए ना फिरि ऐसो समै मिलिहै न सयानी।
प्रेम पयोधि ■ पानि पसारि ले ज्यों बहती दरयाव के पानी;
हौस गुराइ रुपी जा जिय की हँसि बोलि सुनाइ मनोहर बानी।
जा दिन तें तेरी तरुनाइ यह धाई धार कहर मचाई हाय सहर सहर है;
गैल-गैल देखिबे को छैल ललचाए रहैं घूमत दिवाने बने टहर-टहर है।
भूले ना हिय में यह नजर मुकीला घरी घरी छिन पल दिन पहर पहर है,
गोरा कपोलन पै अधर अमोलन पै गजब गुराइ रहा लहर-लहर है।

नाम—(३७६१) सुन्दरराम चौबे (कवि गुणाकरजी), ग्राम रहली, ज़िला सागर, (मध्य प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९२४।

कविता-काल—सं० १९५९ के लगभग।

ग्रंथ—(१) वर्ण प्रबोध, (२) गीत प्रबोध, (३) लिपि प्रबोध, (४) महिला गान माला (तीन भाग), (५) व्यायाम पुस्तक, (६) हिंदी मनोशिक्षा (दो भाग), (७) कान्यकुब्ज दर्पण, (८) 'स', 'श' का झगड़ा, (९) पाती पचक, (१०) तुलसी महिमा (अमुद्रित), (११) तुलसी कृत रामायण (समालोचनात्मक ग्रंथ, अमुद्रित)।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० गणेशप्रसादजी चौबे के पुत्र हैं। आप सुकवि ही नहीं, वरन् सुयोग्य वक्ता तथा लेखक भी हैं। आपकी रचनाएँ विशेषतया बाल-साहित्य, वीर-साहित्य, हास्य रस, नीति, प्रीति आदि विषयों से संबंध रखती हैं। आप 'गुणाकर' उपनाम से कविता की है। आपके काव्य गुरु एवं विद्या-गुरु सागर निवासी पं० जगन्नाथप्रसादजी थे। इस समय यह महाशय पेंशन प्राप्त

कर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। [प० रामनाथ शुक्ल, मॉरिस-कॉलेज, नागपूर द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

हमारी उनमें भक्ति महान।

सहज प्रसन्न बदन है जिनका, सन है तेज निधान,
पुष्ट बलिष्ठ, साहसी हैं जो कर्मवीर मतवान।
सरल, उदार, सदय, सतोषी, क्षमाशील, सुजान,
कहे हुए को पलट न जानें, जौं लौं तन में प्रान।
मिलें सबा से उर से उर ला, तजें घृणित अभिमान,
भाषा, भूमि, भूप, भगवत के, सच्चे भक्त जहान।
रहे लक्ष पर हित पै जिनका जिन्हें स्वहित इच्छा न,
कहे 'गुणाकर' जिन्हें हृदय से दें सज्जन सम्मान।

नाम—(२११२) हनुमतसिंह रघुवंशी क्षत्रिय।

जन्म काल—सं० १६२४।

आप राजपूत ऐंग्लो ओरियंटल प्रेस के अध्यक्ष और हिंदी के एक सुयोग्य एवं प्रसिद्ध लेखक हैं। आपके पिताजी ठाकुर गिरिवरसिंह भी हिंदी के अच्छे कवि तथा वक्ता थे। इनके चचेरे भाई ठाकुर उदयवीरसिंहजी अलीगढ़ के प्रसिद्ध बैरिस्टर हैं। आपका जन्म स्थान चाढ़ौस, ज़िला बुलंदशहर है। कुछ काल तक यह भिनगा नरेश श्रीराजा उदयप्रतापसिंहजी के यहाँ एक अच्छे पद पर थे। आपके बनाए प्राय २२ ग्रंथों में मेवाड़ का इतिहास, क्षत्रिय कुल तिमिर-प्रभाकर, महाभारत सार तथा वीर बालक मुख्य हैं। महाराष्ट्र केसरी शिवाजी, चरित्र चंद्रिका, गृहिणी कर्तव्य दीपिका, अभिमन्यु आदि का आपने संपादन भी किया है। आपके विषय स्तुत्य हैं तथा लेखन शैली

समय—संवत् १६५०

नाम—(३३१३) अर्जुनलाल सेठी।

ग्रंथ—महेंद्रकुमार-नाटक।

आप जयपुरवासी खंडेलवाल जैन हिंदी के परम प्रेमी हैं। जैन समाज में हिंदी की प्रतिष्ठा के लिये आपने बहुत कुछ उद्योग किया है। आजकल राजनीति में विशेष भाग लेते हैं, जिससे आपको कई बार कष्ट भी उठाने पड़े हैं। आप एक प्रसिद्ध देश प्रेमी हैं।

नाम—(३३१४) ऋषिदेव ओझा।

जन्म-काल—सं० १६२६।

रचना काल—सं० १६५०।

ग्रंथ—(१) सीता-स्वयंवर, (२) इरफ़ा-प्राकर, (३) रामचरित्र, (४) योगानंद तरंगिणी, (५) ज्ञान प्रभाकर, (६) मेघनाद वध नाटक (७) घायल माता नाटक

विवरण—आप हुसेपुर ज़िला सारन निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण प० कृष्णदेव ओझा के पुत्र हैं।

नाम—(३३१५) कनकलता, दतिया।

जन्म-काल—सं० १६२५।

ग्रंथ—(१) हित-चरित्र-तीर्थ-यात्रा, (२) वन-यात्रा, (३) व्रजभूषणायन-चालीसी, (४) रसिक-विनोद (५) पद।

विवरण—राधावल्लभी। दतिया नरेश महाराजा भवानीसिंहजी की खवासिन थीं।

नाम—(३३१६) कामताप्रसाद गुरु, सागर।

जन्म-काल—सं० १६३२।

ग्रंथ—भाषा-वाक्य पृथक्करण, हिंदी-व्याकरण।

विवरण—आजकल जबलपुर में निवास करते हैं। अच्छे व्याकरण-कार हैं।

उदाहरण—

उदय अस्त में एकसा है जिसका व्यवहार,
यही मित्र सूरजमुखी कर सकता है प्यार।
ज्ञान, द्रव्य, यश, स्वार्थ की है जिसमें भरमार,
बसे हुए उस हृदय में कहाँ बसेगा प्यार।

नाम—(२४९७) गौरीशंकर गुरु (कवींद्र), दतिया।

जन्म-काल—सं० १९२० (पद्माकर वंशी)।

रचना-काल—सं० १९५० के लगभग।

ग्रंथ—(१) प्रताप पचीसी, (२) कीर्ति पचासा, (३) कवित्त रामायण, (४) विश्व विलास (नाटक)।

विवरण—आप अग्निगोत्रीय द्राविड़ ब्राह्मण स्वर्गीय पद्माकरात्मज प० मिहीलालजी के पौत्र हैं। आपके पिता प० लक्ष्मीधर (श्रीधर) जी भी एक असाधारण कवि हो गए हैं। अपने पिताजी की भाँति आप भी दतिया के राजकवि के पद को सुशोभितकर रहे हैं। इनके पूर्वजों का, विशेषतया पिताजी का काव्य शक्ति के नाते बुंदेलखंड की प्राय समस्त रियासतों में विशेष सम्मान रहा। वर्तमान दतिया नरेश श्रीलोकेंद्रबहादुर गोविंदसिंहजू देव ने इनके 'विश्व विलास' नामक नाटक पर प्रसन्न होकर इन्हें कवींद्र की उपाधि एवं राज्य-सम्मान प्रदान किया है। राज्य-कार्यों में भी आपका मान है। कवि होने के अतिरिक्त आप धर्मोपदेशक भी हैं, और इसी कारण आपके नाम के साथ 'गुरु' शब्द संलग्न हो गया है। वास्तव में आपकी कविता शक्ति आपके कुल की संपत्ति है। कहा जाता है कि कवींद्रजी के निजू पुस्तकालय में पद्माकरजी आदि पूर्व कवियों के कई उत्तमोत्तम अप्रकाशित ग्रंथ संगृहीत हैं। ऊपर दिए हुए आपके ग्रंथों में से आखिरी दो ग्रंथ अभी अप्रकाशित रूप में हैं। आपकी साहित्य-रचना पद्माकरी शैली पर श्लाघ्य है।

उदाहरण—

(विरह-विलास)

कलित कलिंदी कूल कुंजन कदंबन की,
　　अवा की लतिका सुनाई छाइ घट की ;
दारुन तपन ताप ग्रीषम की सीषम में,
　　बैठे तहाँ आनँद अनूप छबि गट की।
राधे मुख-इंदु पै बिलोकि स्वेद बिंदु प्यारो,
　　करत समीर धीर लैकै पीत पट की।
काहू दस बार कहे तरुन मरीचि तहाँ,
　　लटक सुधीमी छाँह धावत मुकुट की।

नाम—(१७६८) चंद्रकला बाई, बूँदी।

समय—सं० १६६०

ग्रंथ—(१) करुणाशतक, (२) रामचरित्र, (३) पदवी-प्रकाश, (४) महोत्सव प्रकाश, (५) पत्रों की प्रायः हैं समस्या पूर्ति।

विवरण—यह कविराज गुलाबसिंहजी की दासी पुत्री कविता अच्छी करती हैं।

उदाहरण—

सागर धरम को उजागर प्रवीन महा,
　　परम उदार मन जन सुख दारनो ;
गुन रिझवार कवि कोविद निहालकर,
　　बैरी मद गार उपकार उर धारनो।
चंद्रकला कहे रनधीर पर पीरहार,
　　जस बिसतार कर जग सुख सारनो ,
मारवाड़ नाथ सरदारसिंह सील सिंधु,
　　आनँद को कंद दीन दारिद बिदारनो।

नाम—(३१९९) जगन्नाथ चौबे (माथुर), बूँदी।

जन्म-काल—सं० १९२८।

कविता-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) अलंकार-माला, (२) रामायण-सार, (३) माथुर-कुल-कल्पद्रुम, (४) शिक्षा दर्पण, (५) यमुना-पचीसी।

विवरण—यह सुकवि बूँदी दरबार के आश्रित कवि क्षारसीराम के पुत्र हैं।

उदाहरण—

> भूमि करयो अंबर दिगंबर तिलक भाल,
> 　　विप्र उपवीत करयो यज्ञ के हवन मैं;
> माथुर कहत सुरनाथ सुरभोग करयो,
> 　　वाहन बनायो विधि आपने गवन मैं।
> विस्व को सिंगार भयो सुखमा अपार धरि,
> 　　गैस निसि आदे तऊ छवि की छवनि मैं,
> बूँदीनाथ प्रबल प्रतापी रघुवीरसिंह,
> 　　तेरो जस आयत न चौन्हौ भुवन मैं। १।

नाम—(३२००) जैनेंद्रकिशोर।

ग्रंथ—(१) कमलिनी, (२) खगोल विज्ञान, (३) मनोरमा, (४) सोमा सती, परम आदि।

विवरण—आप गद्य के सुलेखक, आरा के प्रसिद्ध जमींदार अग्रवाल जैन हैं। कई छोटी-बड़ी कथाएँ भी लिख चुके हैं। नामी उपन्यास-लेखक हैं। परख पर आपको हिंदुस्तानी एकेडेमी से पुरस्कार मिला है।

नाम—(३२०१) भगवानदास बाबू (वैश्य)।

जन्मकाल—१९२५।

विवरण—आप काशी निवासी प्रसिद्ध विद्या प्रेमी एक परम प्रसिद्ध

पुरुष हैं। आप प्रथम तीन वर्ष तक तहसीलदार तथा चार वर्ष तक डिप्टी कलेक्टर रहे। फिर आपने १९०७ में इस्तीफ़ा देकर सेंट्रल हिंदू-कॉलेज का स्थापन तथा संवत् १९८० तक उसी का संचालन किया। आप उसी कॉलेज में सनातन धर्म पर व्याख्यान भी दिया करते थे। तत्पश्चात् काशी विश्वविद्यालय सोसायटी के उपमंत्री एवं विश्वविद्यालय के कोर्ट, कौंसिल, सेनेट तथा सिंडीकेट के सदस्य रहे। संवत् १९७८ में आप हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति थे। आपने धार्मिक तथा आध्यात्मिक विषयों पर अँगरेज़ी एवं हिंदी में कई पुस्तकें लिखीं। सामाजिक सुधार के भी आप पक्षपाती हैं। हिंदू धर्म पर आपके ग्रंथ बहुत विद्वत्ता-पूर्ण हैं। आप भारी विद्वान्, रईस और धार्मिक पंडित हैं।

नाम—(२४०२) भवानीप्रसाद पुरोहित।

जन्म काल—१९२१।

विवरण—शिक्षा विभाग-संबंधी बहुत-सी पाठशालोपयोगी पुस्तकें आपने लिखी हैं। आप दुबे कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० गिरधारीलाल के प्रपौत्र तथा पं० बालमुकुंद के पुत्र हैं। शिक्षा विभाग मध्यप्रांत में आपने स्वयं तथा आपके पिता पितामह ने भी नौकरी की।

नाम—(२४०३) भागवतप्रसाद (भानु), हरदी गाँव, रीवाँ राज्य।

जन्म काल—सं० १९२४।

कविता-काल—सं० १९५० के लगभग।

ग्रंथ—नगर दर्शन (नाटक)।

विवरण—आप हिंदी तथा उर्दू के अतिरिक्त अरबी और फ़ारसी के भी ज्ञाता थे। कहा जाता है कि क़ानून में भी इन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। यह महाशय हमें श्रीयुत भानुसिंह बघेल, रीवाँ द्वारा ज्ञात हुए हैं। कविता आपकी अच्छी है।

उदाहरण—

है नभ में स्यामा घटा की छटा छपे भानु नए उनए घन स्यामा ;
नाँचे निहारि हार पहार में है बरसा के बहार की सामा।
पाहुना पैसा भरी है सुहावना स्याम सों सावन की अभिरामा ;
दरिया मा यह सामा के खेत हैं देत हैं पैरो कबूतर कामा।

नाम—(२२०४) महावीरप्रसाद मालवीय, गोपीपुर, ज़िला मिर्ज़ापुर।

जन्म-काल—सं० १६२६।

ग्रंथ—(१) अभिनव विद्यासागर, (२) रामरसोदधि, (३) रसराजमहोदधि वैद्यक, (४) पाक तंत्र वैद्यक, (५) होली बहार, (६) बरसा-बहार, (७) मानस प्रबोध, (८) वीर निघंटु वैद्यक, (९) वैद्य दिवाकर।

विवरण—आप कुछ दिन प्रियंवदा मासिक पत्रिका के संपादक भी रहे। वैद्यक पर आपके ग्रंथ अच्छे हैं। आप पं० वैद्यनाथ मिश्र के पुत्र थे। प्राचीन की शिक्षा प्रणाली के अनुसार बारह वर्ष की अवस्था तक अमरकोश, सिद्धांतकौमुदी, रघुवंशादि काव्य आपको घर पर ही पढ़ाए गए। आगे आप संस्कृत-काव्य के अच्छे मर्मज्ञ तथा कवि हुए। हिंदी भाषा से आपको प्रेम था ही, संस्कृत-साहित्य में भी आपने विशेषतया पांडित्य प्राप्त किया था। कहा जाता है कि एक घंटे में यह महाशय ५० श्लोकों की रचना अच्छी तरह कर लेते थे।

आप काव्य-रचना के अतिरिक्त चित्र-कला तथा संगीत में भी निपुण थे। गया प्रांत के पीढ़ाचक ग्रामवाले बाबू देवनसिंह के यह आश्रित थे, और उन्हीं की दी हुई जमींदारी का उपभोग इनके वंशज आज तक करते हैं।

उदाहरण—

खैंचि कै चीर शरीर उघारत जो घर तें हम कुंमन आया ;
और मैं का से कहौं अब भारी के सोरि कै पूतम हार गिराया ।
रीति कुरीति भयै उनको 'रघुनाथ' न चाहत नारि पराया ;
री सखि ए कोउ सज्जन का, अरि ना सखि, ना सखि कुब्ज की हाया ।

× × ×

नाम—(३२०४) मुरारिदानजी कविराजा ।

यह महाशय जोधपुर नरेश के आश्रय में रहते और उनके राज्य के एक ऊँच कर्मचारी थे । इन्होंने जसवंत जसोभूषण-नामक अलंकार का एक बढ़िया तथा भारी ग्रंथ ८२१ पृष्ठों का सं० १९५० के लग भग बनाया । यह ग्रंथ सं० १९५४ में प्रकाशित हुआ । यह महाशय संस्कृत के अच्छे पंडित थे, और अलंकारों के गुरु लक्षण निरूपण करने में इन्होंने अच्छा श्रम किया । इन्होंने अलंकारों के नामों ही से उनके लक्षण निकाले और गद्य की भी अच्छी रचना की । इनका स्वर्गवास प्राय सं० १९६६ के निकट हुआ ।

उदाहरण—

कैसी भली की भली यह भानि है देखिए पीतम प्यार लगाय कै ;
छाक गुलाब म धू सों मुरारि सु बेलि नवलिन मैं निरमाय कै ।
खेलत कनकी नाय सुदीन [illegible] केलत आलसी हूद अघाय कै ;
आज जो जोवत थोवत दीस पै सोवत है नलिनी सँग आय कै । १ ।

नाम—(३२०६) रघुनाथप्रसाद शर्मा (करतार कवि), कचूरा, जिला सीतापुर ।

जन्म स्थान—कुँदेरा (जिला सीतापुर)।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

विवरण—आप काव्य-कला-कुशल पं० बैजनाथ के प्रपौत्र तथा पं० प्रयागदत्त (परवन) शुक्ल के पुत्र हैं । आपने एक हजार से

अधिक छंद रचे हैं, किंतु वे अभी अप्रकाशित रूप में हैं। आप एक सत्कवि हैं।

उदाहरण—

ललित कलेवर कलभ कमनीय मुख,
    सोहत सिंदूर भरो ललित लिलार है।
लसत मलिंद लट पटित सरोजन को ;
    सोनो लोल लंबित अनूठो उर हार है।
ध्यावत हौं तोहिं सिद्धिसदन शिवा के सुत,
    सपति समेत सुख लहत अपार है।
बुद्धि के प्रकाशन को विघन विनाशन को,
    रघुनाथ दासन को दूजो कौन द्वार है।
द्रुपद-सुता लखि दीन हरि अद्भुत बसन अमित ,
चीर हरन को कीन्ह जनु पूरण प्रायश्चित।
कौन कहत है कान्ह को कारो श्याम शरीर ,
यह ऐसी पै है कहाँ प्यारी प्रभा गँभीर।
कनक कुंज में कूजि अरु कुटिल करीली पाँति ,
निमि काटत ले हे भला तेई सखी दिन राति।
पथ पथिक पावन पवन पाचक पावत पाथ ,
जासु कृपा से तासु पै बलिहारी रघुनाथ।

× × ×

नाम—(३२०७) राजधरलाल खरे कायस्थ, तालबेहट (झाँसी)।

कविता काल—सं० १९१०।

जन्म-काल—सं० १८८३।

ग्रंथ—(१) दानलीला, (२) सुधाराज-सरोवर, (३) राज सतसई, (४) नारी प्रशंसा, (५) विनय चालीसी, (६) हनूमान-

पचीसी, (७) राम रहस्य और श्रीमद्भगवद्गीता का अनुवाद।

उदाहरण—

> द्रुपद पुत्र तव शिष्य सुधीरा;
> बुद्धिमान रण-कुशल गँभीरा।
> पांडु नृपति चतुरंगिनी व्यूह रच्यो गज साज;
> ताइ उपस्थित रण विषे युद्ध हेतु महराज।
> नाथ भीम अर्जुन सम भारी;
> शूरवीर अगणित धनु धारी।
> महारथी युयुधान गँभीरा;
> नृपति विराट द्रुपद सुधीरा।
> धृष्टकेतु जेहि विक्रम भारी;
> चेकितान यश अमित पसारी।

नाम—(११०७ अ) सरयूप्रसाद जायसवाल।

आपके पिता श्री परशुरामजी अपनी जन्मभूमि, जिला सुलतानपुर अंतर्गत बरघरापुर गाँव से आकर मुरार छावनी (रियासत ग्वालियर) में पहले बस गए थे, किंतु ग़दर के अवसर पर यह स्थान छोड़कर इन्होंने कनाधर ग्राम, रियासत ग्वालियर को अपना निवास-स्थान बनाया। इसी ग्राम में जायसवालजी का जन्म सं० ११२१ में हुआ। आपने वैराग्य, ईश्वर संबंधी उलाहना, समय की चपलता, संसार के भोग विलास की क्षण भंगुरता आदि विषयों का भी अच्छा वर्णन किया। कहा जाता है कि 'आनंद-सरोज' नामक आपकी एक हस्त लिखित पुस्तक उपलब्ध हुई है। यह उर्दू में विशेष रूप से काव्य रचना किया करते थे, और हिंदी-कविता की अपेक्षा इनकी उर्दू ही की कविता अधिक मात्रा में मिलती है। आपकी मृत्यु ८० वर्ष की अवस्था में सं० १२०१ में हुई।

उदाहरण—

मृगमद गले मृगछाल सा मकर के शशि मस्तक सोहै ;
शीश से गंग बहाय महश सो मज्जन सों अघ को प्रिय सोहै ।
शोक सुगंध उड़े जिहि गात की देह सुधारि सों कष्ट को मोहै ;
सो प्रथमै निरखी हरि के पद सों निहि दर्शन से मन मोहै ।

नाम—(३५०८) साधुशरणप्रसाद, जि० बलिया ।

जन्म-काल—सं० १९०८ ।

समय—सं० १९५० ।

ग्रंथ—भारत भ्रमण, पाँच भाग, धर्मशास्त्र-संग्रह ।

विवरण—इन्होंने भारत भ्रमण नामक ग्रंथ बड़ा ही प्रशंसनीय बड़े श्रम से बनाया । यह ग्रंथ परिभ्रमण करनेवालों को उपयोगी और सर्वसाधारण को दर्शनीय है । इसमें हरएक स्थान का प्रशंसनीय और यथोचित वर्णन किया गया है । इसके अतिरिक्त और भी कई ग्रंथ आपने बनाए । सं० १९६६ में आपका स्वर्गवास हो गया ।

नाम—(३५०९) सुदर्शनाचार्य, काशी ।

जन्म-काल—सं० १९२५ ।

ग्रंथ—(१) भगवद्गीता सतसई, (२) अलंकार-चरितामृत, (३) श्री चर्या, (४) नीति रत्नमाला, (५) विशिष्टाद्वैत अधिकरणमाला, (६) ब्रह्मसूत्रचंद्रिका, (७) संस्कृत भाषा, (८) श्री रंगम्शांक शतक, (९) भगवद्गीता भाषा भाष्य, (१०) शास्त्र दीपिका प्रकाश, (११) आर्य नलचरित्र-नाटक ।

नाम—(३५१०) हरीरामजी त्रिवेदी 'स्नेह', हटा, दमोह ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

कविता-काल—सं० १९५० ।

ग्रंथ—(१) केन्द्रं नाटक, (२) हरदौल नाटक, (३) स्फुट लावनियाँ ।

विवरण—आप प० पद्मादत्तराम शास्त्री के पुत्र हैं। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत के भी ज्ञाता हैं। व्रजभाषा में कविता करते हैं। आजकल श्रीकृष्ण-लीला पर 'प्रिय प्रवास'-नामक ग्रंथ व्रज भाषा में लिख रहे हैं। [श्रीयुत नन्हूलालजी, अध्यापक, हटा (दमोह) द्वारा ज्ञात]

नाम—(२२११) हेमन्तकुमारी चौधरी।

आपका जन्म सं० १९२५ में लाहौर में हुआ और १९४२ में विवाह के पश्चात् ये शिलांग चली गईं। आप कई स्थानों में रहीं और सदैव परोपकारी कार्य करती रहीं। आपने आदर्श माता, माता और कन्या, नारी पुष्पावली और हिंदी बँगला प्रथम शिक्षा नामक पुस्तकें रचीं। आप हिंदी में वक्तृता भी देती हैं। आपकी लेखन प्रथा उच्च है।

समय—संवत् १९४१

नाम—(२२१२) गदाधरसिंह ठाकुर सचेंडीवाले।

जन्म-काल—सं० १९२६ (कार्त्तिक)।

आपका निवास-स्थान सचेंडी, ज़िला कानपुर है। आप १८ वर्ष सरकारी पलटन में नौकर रहकर डाक-विभाग में १५०) मासिक वेतन पर पोस्ट मास्टर हुए। सेना विभाग में वर्मा एवं चीन के युद्धों में आप लड़े, तथा शाहंशाह एडवर्ड के तिलकोत्सव में निमंत्रित होकर विलायत गए। इन्होंने छोटे ग्रंथों के अतिरिक्त चीन में तेरह मास, हमारी एडवर्ड तिलक-यात्रा तथा रूस-जापान-युद्ध नामक तीन परमोत्तम भारी पुस्तकें भी लिखीं। इनके ग्रंथों में भारतोत्थान पर हर जगह बड़ा ज़ोर दिया गया है। देश-हित इस महापुरुष की नस नस में भरा था और रचनाओं से यह भली भाँति प्रदर्शित होता है। इनके ग्रंथों में ज़िंदा दिली की मात्रा खूब है और उनसे बहुत अच्छे उपदेश मिलते हैं। यह महाशय अपने मरण

के प्राय १९ वर्ष पूर्व से हमारे मित्र रहे और इनका व्यवहार सदैव एक-सा रहा। आर्य-समाज के यह एक बड़े पक्के सभासद् थे, और उसकी प्रार्थनाओं तथा कार्यवाहियों में बड़ी रुचि रखते थे। आर्य-सामाजिक पत्रों में भी इन्होंने बहुतायत से लेख लिखे। इनके ग्रंथ परम सजीव एवं उच्चाशय-पूर्ण हैं। आपका शरीर-पात सं० १९७५ के निकट हुआ। गत महायुद्ध में आकर आप रोग-ग्रस्त हो गए, जिससे कुछ दिनों में आपका स्वर्गवास हो गया।

नाम—(२५१३) गंगाशंकरजी पचौली, बूँदी।

जन्म-काल—सं० १९१४।

रचना-काल—सं० १९२१ ७१।

ग्रंथ—निम्न विषयों पर लेख मालाएँ हैं—

(१) कृषि विद्या	(१) खेत-भूमि की परीक्षा, औज़ार, बीज आदि। (२) खाद, (३) पशु परीक्षा, (४) दूध व उसका उपयोग, (५) ईंट और खाँड, (६) सकरीकरण अर्थात् पैवंद, क़लम चढ़ाना आदि। (७) केला, (८) नींबू-नारंगी, (९) तरु जीवन, (१०) कपास, (११) आलू, (१२) मूँगफली की खेती तथा उसके बीज का उपयोग।
(२) ज्योतिष	(१) नक्षत्र, (२) करण लाघव, (३) ग्रहण प्रकाश, (४) दृक् सस्करण।
(३) विज्ञान तथा हुनर	(१) स्वर्णकारी, (२) काग़ज़-काम, रद्दी का उपयोग आदि, (३) कृत्रिम काष्ठ, (४) रसायन-शास्त्र।

(४) विविध — (१) नागरोत्पत्ति, (२) भूगोल भरतपुर, (३) सनातनधर्म रत्नमयी, (४) रस-रत्नाकर, (५) निज उपाय, (६) संक्रांति निर्णय, (७) सायन, निरयन गणना पर विचार, (८) पुरानी घटनाओं के समय को निकालने में ज्योतिष क्या सहायता देता है, (९) पटल चित्र, (१०) हिंदू धर्म का प्रस्तार, (११) प्राकृतिक भूगोल, (१२) उपवन विनोद, (१३) सुभाषित-संग्रह, (१४) वर्षों के शासन व शत्रु, (१५) स्मृति-सार संग्रह।

विवरण—आप नागर ब्राह्मण-कुलोत्पन्न हैं। आपकी जाति का आदिम निवास-स्थान काठियावाड़ प्रदेशांतर्गत पुराण प्रसिद्ध चमत्कारपुर व आनंदपुर (सांप्रत बड़नगर) रहा है। आपके पूर्वज भी इसी स्थान के निवासी थे। कालांतर से पचौलीजी के पूर्वज अपना आदिम निवास स्थान छोड़कर अहमदाबाद में आकर बस गए, और वहीं आपका जन्म हुआ। आपने उच्च शिक्षा और विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त किया। आपकी लेख-मालाएँ इस बात का भली भाँति परिचय देती हैं। इस समय आप भरतपुर राज्य से पेंशन पा रहे हैं, और बूँदी-राज्य में न्याय विभाग के मेंबर हैं। आपके ग्रंथ उपयोगी विषयों पर हैं। ऐसे ही उपकारी तथा लोकोपयोगी लेखकों द्वारा हिंदी का मस्तक ऊँचा हो सकता है।

× × ×

नाम—(३९१४) दामोदरसहायसिंह।

जन्म-काल—१९३२।

रचना-काल—सं० १९९१।

ग्रंथ—(१) उद्यम विचार, (२) काल-पचासा, (३) हमारी शिक्षा प्रणाली, (४) श्रीहरिगीतिका, (५) नृपसूर्यास्त, (६)

आतृभाव-संगीत, (७) संकीर्तन-संगीत, (८) कविता-कुसुम, (९) बालक-चालीसी।

विवरण—आप मुंशी शिवशंकरसहाय के पुत्र हैं। आपने हिंदी मंदिर-नामक एक पुस्तकालय छपरे में सं० १९७१ में खोला, जिसके आप संयुक्त मंत्री हैं। यह महाशय सुकवि हैं।

उदाहरण—

प्रेम घन! प्यारा सभी को है घना, पर सभी का प्रेम तुमसे है घना ;
है महा सुरोह तेरा दृष्ट में, जान की बाजी लगाकर मैं बढ़ा।
निसि बासर चाहत चातक ह्वै फिरै चाग पूत्र की पायन मे ;
मरे पापरे पलो मरा हाँ पहाँ जितो भूठ भरो वो सुभायन में।
शुक है मुनि से मू दमादर की रस मग रहा न रमायन मे ;
मन भृंग फिरै भँवरात कहाँ बस रे बस गौरि के पायन में।

नाम—(२२१५) बलदेवप्रसाद मिश्र।

यह महाशय मुरादाबाद शहर के रहनेवाले पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र के छोटे भाई थे। इनकी अकाल मृत्यु केवल ३६ वर्ष की अवस्था में, सं० १९६२ में, ७ अगस्त को हो गई। यह महाशय हिंदी और संस्कृत के अच्छे लेखक थे, और तत्त्वप्रभाकर नामक पत्र भी इन्होंने कुछ दिन निकाला। मिश्रजी ने बहुत-से ग्रंथ स्वतंत्र और कुछ अनुवाद करके रचे तथा कतिपय नाटक-ग्रंथ भी बनाए, जिनमें नंद विदा-नाटक हमारे पास है। यह महाशय कविता भी प्रशस्त करते थे। इनके ग्रंथों में पानीपत, देवी उपन्यास, कुंदनंदिनी, दक्ष-संग्रह, राजस्थान, नैपाल का इतिहास, तौतिया भील, पृथ्वीराज चौहान, अध्यात्मरामायण भाषा, प्रद्युम्न और कल्किपुराण भाषा प्रधान हैं। हमारे मिश्रजी ही वर्तमान समय के लेखकों में पहलेपहल ऐसे थे, जिनका निर्वाह केवल अपनी पुस्तकों की बिक्री से होता था। यह इनके लिये बड़े गौरव की बात थी। इनके लेख बड़े गंभीर एवं

भाषा ललित होता था, पर इनके छंद वैसे अपूर्व न थे। इन्होंने महावीर चरित्र और उत्तर-रामचरित्र नामक भवभूति के नाटक-ग्रंथों के उल्था भी बनाए, जो अप्रकाशित अवस्था में महाराज छतरपुर के पुस्तकालय में हैं। इनकी अकाल मृत्यु से हिंदी की भारी क्षति हुई। यदि आप दीर्घजीवी होते, तो इनके परमोत्कृष्ट तथा गंभीर गद्य लेखक होने की आशा थी।

उदाहरण—

लग्यो यह कुंज बान अग नीको।
जनस्थान पश्चिम की भूमी चित्र बनो सुरजी को।
दानवगण अरु ऋषि मतंग को थान यही सुगती को।
श्रमणा धरम धारिणी शबरी लसी प्रेम यह ती को।

ये दोनों नाटक प्राय डेढ़ डेढ़ सौ पृष्ठों के हैं।

नाम—(२११६) मथुराप्रसादजी मिश्र।

आपका जन्म-स्थान ज़िला सुलतानपुर अमेठी-राज्य के अंतर्गत पश्चिम गाँव है। यह संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे और भाषा का काव्य मनोहर करते थे। बँगला का भी अभ्यास आपने किया था। इन्होंने बाबू कालीप्रसन्नसिंह सब जज लखनऊ की आज्ञानुसार और उन्हीं की सहायता से कृत्तिवास कृत बँगला-रामायण के लंकाकांड का छंदोबद्ध अनुवाद करके सं० १९२१ में प्रकाशित किया। उसके पीछे उत्तरकांड का भी अनुवाद आरंभ किया गया, परंतु वह प्रकाशित नहीं हो पाया, और बीच ही में पंडितजी एवं सब-जज साहब का स्वर्गवास हो गया। यह लंकाकांड संपूर्ण तुलसीदास की रामायण से आकार में कुछ कम न होगा। इसमें रायल अठपेजी के २१० पृष्ठों में कथा, १० पृष्ठों में भूमिका, ४ में विषय-सूची तथा ७८ पृष्ठों में टिप्पणी आदि हैं। कुल ६०२ पृष्ठों में यह कांड समाप्त हुआ। इसमें कथा बहुत विस्तार से लिखी

गई है। भाषा इसकी संस्कृत, ब्रज भाषा तथा बैसवाड़ी मिश्रित है। हम मथुराप्रसादजी को मधुसूदनदासजी की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण—

रवि किरण तनु ते प्रकट शशधर ज्योति ज्योतिष्मान;
श्रम बिंदु भलकत चन्द्रमुख अरबिंद बिंदु समान।
रवि उदय ते लगि अस्त युद्ध प्रवृत्त नहिं अवसान;
कर मध्य भीषण धनुष बरसहिं प्रखर अगणित बान।
रणधीर ते शर लेत छण पच्छमात्र बाण लगाय;
बरसात रिपु दल पर परत शत सहस ते अधिकाय। १।

सग्राम जासु यम आदि गए पराई,
कोदंड हाथ लखि न्पत देवराई।
जेते सुरासुर सुवीर त्रिलोक माहीं,
जाके कराल शर ते थिर कोउ नाहीं।
आदेश कारि शशि सूर समीर जाके,
त्रैलोक्य हर्षित महा त्रिनिपात ताके।
मानद देव-मुनि वृंद ऋचा सुनावैं,
गंधर्व दुंदुभि बजाय सुगीत गावैं।

नाम—(३२१७) रामनाथ ज्योतिषी वृंदावन शुक्ल के पुत्र।
जन्म-स्थान—भैरमपुर, रायबरेली।
जन्म-काल—सं० १९२१।
रचना-काल—सं० १९६१।
ग्रंथ—(१) सी० आर० दास की महायात्रा, (२) वीर नारी, (३) विधवा वर्त्तिका, (४) रामचंद्रीय महाकाव्य (मुद्रित), (५) महाभारत महाकाव्य, (६) लाहौर की कांग्रेस, (७) मोतीलाल जीवन चरित्र, (८) यतींद्र-नवरत्न, (९) जोतिषी-सतसई, (१०) कृष्णदत्त काव्य, (११) अयोध्या-शाकद्वीपीराज

पंग (गद्य), (१२) गाधी और गोलमेज, (१३) गाधी शत नाम-स्तोत्र (संस्कृत), (१४) शिवकुमार जीवन-चरित्र, (१५) सामयिक साहित्य-सरोवर, (१६) जगदेव सुयश कदंब, (१७) रामचंद्रोदय, (१८) शांति कुटीर जन्म ।

विवरण—भैरवपुर, ज़िला रायबरेली में कई राजदर्बारों में सम्मान सहित रहे । वैष्णव-सम्मेलन पत्र के संपादक रहे हैं । कट्टर सनातनी होने पर भी समाज-सुधारक । विधवा विवाह, अछूतो द्धार आदि के समर्थक । गाधी भक्त तथा विविध विषयों-सहित राष्ट्रीय ध्वनि । आजकल अयोध्या में राजकवि और पुस्तकालयाध्यक्ष हैं । रत्नाकरजी कृत विहारी रत्नाकर के लिये छह मास जयपुर में रहकर आप बड़ी सामग्री लाए थे, जिसका उल्लेख उक्त ग्रंथ की भूमिका में वर्तमान है । २४६ पृष्ठों का श्रीराम चंद्रोदय काव्य ग्रंथ छप चुका है, जो हमारे पास है । इनकी कविता प्रसाद-पूर्ण तथा श्लाघ्य है । आपने कुछ-कुछ केशवदास की प्रणाली ग्रहण की है । ज्योतिषीजी सज्जन पुरुष और उत्कृष्ट कवि हैं ।

उदाहरण—

रायबरेली प्रांत राज रहवाँ गुण-सहित,
नए भूप रघुवीरबक्स बलकीर्ति शराहित ।
रघुनंदन का शास्त्रि रहे परधानाध्यापक ;
तिनकी कृपा कटाक्ष 'जोतिसी' भे बहुव्यापक ।
विज्ञान, व्याकरण, न्याय नय,
ज्योतिष - काव्य कलाप पढ़ि ,
पुनि चंदापुर नृप सँग रहे ,
द्वादशाब्द मुद मान मढ़ि ।
पित्त नाश करि देत, वात को त्रास दिखावत ,
कफ जोतिसी विदारि, मारि, त्रय ताप भगावत ।

अपर रोग हरि हहरि बिहरि हरि सोग पलावत ;
सकल पाप सताप चाप शिर भार उगावत ।
असनान-पान मज्जन अमन,
दरस-परस सुख भूरि दै ;
शुभ अन्तिम 'तुलसी आमलक',
जीवन जीवन-मूरि है ।
न्याय और नीति के अवलम्ब-पद रक्षन की ,
जोतिसी प्रकाश-पुञ्ज मौड़ पर पौंसै ही ;
धारमिक नैतिक समाचार पूजन की ,
पूज पजवारी भारी स्वच्छ सुधि सारैं ही ।
देश धर-वीरन की इनकी विशाल भाल ,
पति औ सुरपति के रातिये की लागैं ही ,
पूछो बझो जाय हाय दौरि मन देखौ धाय ,
पढ़ो रामश्याम गुण्डी भारत की आँखैं हीं ।
गुरू औ पुजारी पढ़े पंडित भिखारी भद्र ,
रागी औ विरागी दागी काम करै चोरी के ,
नौकरी मैं घूस छूस राजा प्रजा धूम भए ,
धनिक पठावैं ब्याज आग जिमि होरी के ।
'जोतिसी' दुकान के मुनाफा को न परिमान ,
धरम विचार दान मान कमजोरी के ;
गारत न होय कैसे भारत स्वरूप यहि,
भारत मैं सारे रोजगार मुफ्तखोरी के ।
बेचत को वस्त कतवारिन को पूरो तत ,
घर को महत्त करै वैभव की परसा ;
गदो गेह रक्षक विदेशी वक्षभक्षक ह्वै ;
बोहे जोति 'जोतिसी' स्वतन्त्रता के कलश ।

एकता के सूत में अकूत देश बाँधै वीर,
देशी माल देश ही में राखै होहि हरखा;
अनरूप धारै, राना रंक की सँवारै देह,
चरखा चलाय टारै दारिद को चरखा।
परसुराम अरु राम कृष्ण के रहे विरोधी,
ईशो, बुद्ध, प्रताप, शिवादिक के पथ रोधी;
तिमि गाँधी के परे देखि जहँ तहँ रिपु रूरे,
वंचक देश सुधार धार के बंधन पूरे।
जाग्रत प्रभात में निरखि निज,
छिन्न भिन्न माया महल।
शुचि सृष्टि सुधारक के सदा,
रहते द्रोही दैत्य - दल।

समय—संवत १९५२

नाम—(२२१८) कृष्णबलदेव खत्री, कालपी।
जन्म काल—सं० १९२७ के लगभग।
समय—१९५२।
ग्रंथ—भर्तृहरि-नाटक, फाहियान भाषा, ह्वेन्त्सांग भाषा, विद्या विनोद पत्र का कुछ साल तक संपादन।

विवरण—यह महाशय हिंदी के बड़े रसिक और गद्य के सुलेखक थे। प्राचीन विषयों की खोज में भी इन्होंने समय लगाया। इनका भर्तृहरि नाटक पढ़ने में स्वाद आ जाती है। विद्या विनोद पत्र भी इन्होंने कुछ साल निकाला। आपका स्वर्गवास सं० १९८८ में हुआ। मरने के पूर्व इनको इस बात का कुछ भान हो गया था, जिससे यह हम तीनों लोगों तथा अन्य मित्रों से यही कहकर मिल गए कि शायद अब मिलना न हो।

नाम—(२२१९) गंगाप्रसाद अग्निहोत्री (पंडित)।

यह हमारे प्राचीन मित्र थे। आप हिंदी के एक परम प्रसिद्ध गद्य-लेखक और कई स्वतंत्र गद्य एवं अनुवाद-ग्रंथों के रचयिता थे। आप मध्य प्रदेश की छुईखदान रियासत में ऊँचे कर्मचारी थे। आपने मराठी के चिपलूणकर-नामक प्रसिद्ध लेखक के संस्कृत कवि पंच एवं निबंधमालादर्श का भाषा अनुवाद किया तथा रस-वाटिका नामक रस-संबंधी एक अच्छा रीति-ग्रंथ लिखा। भवभूति के आधार पर इन्होंने मालती माधव नामक एक ग्रंथ उपन्यास के ढंग पर बनाया। नर्मदा पर आपने एक कविता ग्रंथ भी रचा। आप भाषा के बड़े ऊँचे लेखकों में गिने जाते हैं। आपके ग्रंथों में निबंधमाला, प्रणयी माधव, राष्ट्र भाषा, संस्कृत-कवि पंच, मेघदूत, डॉक्टर जानसन की जीवनी और नर्मदा विहार मुख्य हैं। कुछ काल आप कोरिया रियासत के दीवान थे। गो-वंशोन्नति के आप बड़े ही प्रेमी रहे और इस विषय पर बहुत सी गद्य तथा पद्य-कविता आपने की। आपका स्वर्गवास सं० १९८८ में हुआ। आपके ग्रंथ गंभीरता पूर्ण तथा रोचकता से अलंकृत हैं।

नाम—(३१२०) जगन्मोहन वर्मा।

इनका जन्म सं० १९२७ में बस्ती ज़िले के देवीपार नामक ग्राम में हुआ। आप ठाकुर अजरानसिंह के पुत्र थे। आपने १६ वर्ष की अवस्था में उर्दू तथा फ़ारसी की शिक्षा घर पर ही समाप्त की। इसके पीछे आप अँगरेज़ी हिंदी तथा संस्कृत का अध्ययन करने लगे। सं० १९६६ में आप हिंदी शब्द-सागर के संपादन-कार्य में सम्मिलित हुए, तथा सं० १९७४ तक यह कोष-संपादन-कार्य करते रहे। आपने अनेकानेक लेख पत्र-पत्रिकाओं में लिखे। इनका स्वर्गवास हुए कई वर्ष हो गए हैं। आपके जंगबहादुर, बुद्धदेव, ह्युयेन च्वांग, लोक-वृत्ति, सुंगयुन नामक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं तथा स्वामी विवेकानंद का ज्ञान-योग, राजयोग, भक्ति-योग, काव्य-

कलानिधि, पिंगलावली, शब्द शास्त्र और पुरुषार्थ नामक ग्रंथ अभी अप्रकाशित हैं। आपकी हिंदी-सेवा उपयोगी विषयों पर होने से बहुत महत्ता युक्त है। भाषा तथा भाव भी उच्च कोटि के हैं। इनकी रचनाएँ स्वदेशानुराग-युक्त होने से और भी जगमगा उठी हैं।

नाम—(३२२१) दर्शनदुबे, ग्राम चंदनगार, परगना सवाल, (बिहार प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९३२।

कविता-काल—सं० १९९२।

मृत्यु-काल—सं० १९६६।

ग्रंथ—(१) दशानन निनाद (सं० १९९२), (२) मेघनाद वध नाटक (सं० १९९३), (३) नैं मा दुर्गा, (४) श्रीमच्छ कराचार्य विरचित मणिरत्नमाला का हिंदी गद्य पद्यानुवाद (सं० १९९३), (५) प्रबोध चंद्रिका (सं० १९९३), (६) प्रेम प्रवाह, (७) शैवानंद, (८) युगलविहार, (९) संगीतसार, (१०) उपासना विषय पर व्याख्यान (सं० १९९९), (११) दुर्गा आगमनी-स्तोत्र, (१२) निज भाषा की कविता, (१३) हरेर्नामैव केवलम् (हिंदी अनुवाद), (१४) पायस पचासा, (१५) शृंगार तिलक (१६) ऋतुमाला, (१७) शृंगार-संहार (संस्कृत-काव्य ग्रंथ), (१८) चैतामग्रह।

विवरण—आप भारद्वाज गोत्रीय पं० श्रवण दुबे के पुत्र थे। हिंदी तथा संस्कृत के अतिरिक्त आपने अँगरेज़ी की भी शिक्षा पाई थी। कविता करने की प्रवृत्ति आप में पहले ही से थी। इनका तथा इनके पूर्वजों का जीविका साधन कृषि-कर्म था। ऊपर दिए हुए अठारह ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने 'समस्या-पूर्ति प्रकाश' तथा 'द्रौपदी-चीर हरण' नामक दो ग्रंथ और बनाए, किंतु वे अब उपलब्ध नहीं हैं। शृंगार तिलक, ऋतुमाला तथा शृंगार-संहार इनकी रचनाओं के

सर्वोत्तम नमूने हैं, ऐसा कहा जाता है। आपकी सब रचनाएँ अभी तक अमुद्रित रूप में पड़ी हुई हैं। [पं० बालाप्रसाद दुबे, शिक्षक, गोंदा इंग्लिश-स्कूल, (सताल परगना) द्वारा ज्ञात] आप धार्मिक तथा दार्शनिक विषयों पर बहुत श्रम कर चुके हैं तथा सुकवि भी हैं।

उदाहरण—

कैधौं दल कंज मकरंद कुच पान हेतु,
चपकि मलिंद रंग मत्त बैठो परसी।
कैधौं कुसुमायुध के कंचन शिलीमुख पै
लसत कृशानु मुख सोहै हिमकरसी।
उपमा बिलोकि कुच कमल सरीखे कहैं,
हिम को सँयोग पाय नैहै स्थौं मरसी।
'दरसन' याही डर अचल दुरात कुच,
कलश ढकी है मनो देव पचशरकी।

× × ×

नाम—(३२२२) चमेली बाला।

यह विदुषी कवयित्री लाला भगवानदीन (संपादक, लक्ष्मी पत्रिका) की धर्मपत्नी थीं। शोक है कि इनका आषाढ़, संवत् १६६० में बैकुंठवास हो गया। इनकी रचित कविता का संग्रह करके चतुर्भुजसहाय वर्मा, छतरपुरवासी ने बालाविहार नाम से प्रकाशित किया। इसमें १२ विषयों पर कविता है, अर्थात् माता महिमा, पुत्री के प्रति माता का उपदेश, गृहिणी सुख, संसार सार, भवना उपालंभ, चाहिए ऐसे बालक, पुत्र, भारत का नक़शा, सावधान, बाल दिनचर्या, राधिका कृत कृष्ण चिंतवन और कृपा-कौमुदी। ये सब ग्रंथ ४० पृष्ठों में समाप्त हुए हैं। इसके प्रथम लाला भगवानदीनजी रचित विरह विलाप नामक काव्य छपा है। बालाजी का काव्य बहुत ही देश प्रेम-युक्त, सरस, मनोहर तथा उपदेश पूर्ण है। इसी भाँति के विषयों पर कविता

रचना आजकल प्रत्येक शिक्षित का काम है। बालाविचार बहुत प्रशंसनीय ग्रंथ है। उदाहरणार्थ हम भारत के नक़्शे से कुछ कविता यहाँ देते हैं। नक़्शे का बयान माता अपने पुत्र से कह रही है।

माता—

हे प्यारे कदापि तू इसको कुञ्ज श्याम रेखा मत मान ;
यह है शैल हिमाचल इसको भारत भूमि पिता पहचान।
नेह-सहित ज्यों पितु पुत्री का आदर पालन करता है ;
यह हिमगिरि त्यों ही भारत हित पितृभाव हिय धरता है।
गंगा-यमुना युगुल रूप से प्रेम धार को देकर दान ;
भारत भूमि रूप दुहिता का नेह-सहित करता सनमान।

पुत्र—

यह जो वाम ओर नक़्शे के रेखामय अतिशय अभिराम ;
शोभामय सुंदर प्रदेश है मुझे बता दे उसका नाम।

माता—

देख यह पंजाब-देश है पुण्य भूमि सुख शांति निवास ,
सर्व प्रथम इस थल पर आकर किया आर्यों ने निवास।
कहीं गान ध्वनि कहीं वेद ध्वनि कहीं महासभा का नाद ,
यज्ञ धूम से रहा सुवासित यह पनाथ सहित अहलाद।
इसी देश म बस के 'पोरस' ने रक्खा है भारत-मान ;
जब सम्राट सिकन्दर आकर किया चाहता था अपमान।
इससे नीचे देख पुत्र यह देश दृष्टि जो आता है ;
सकल बालुकामय प्रदेश यह राजस्थान कहाता है।
इसके प्रति गिरिवर पर बैठा अरु प्रत्येक नदी के तीर ;
देश-मान हित करते आए आत्मविसर्जन क्षत्रिय वीर।
कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ अमर चिह्नों के रूप ;
वीर कहानी रजपूतों की लिखी न होवे अमर अनूप।

छत्री कुल अवतंस वीरवर है 'प्रताप'जी का यह देश ;
रानी पद्मावती सती ने यहीं किया है नाम विशेष ।
क्षत्रीवंश-जात को चहिए करना इसको नित्य प्रणाम ;
इससे क्षत्रीवर्ग के जग में सदा रहेगा रोशन नाम ।

नाम—(३९२३) राजाराम शास्त्री ।

इनका जन्म सं० १९२७ में हुआ । आप दयानंद-कॉलेज, लाहौर में अध्यापक रहे । वाल्मीकीय रामायण, वेदांतदर्शन, योगदर्शन, मनुष्य-समाज, शंकराचार्य (जीवन-चरित्र), बृहदारण्यकोपनिषद्, ईशोपनिषद् भाष्य-नामक ग्रंथ आपने बनाए । आप भाषा के मर्मज्ञ और उपर्युक्त ग्रंथों के अतिरिक्त भी अन्य कई पुस्तकों के रचयिता थे । आप बड़े ही परोपकारी और धर्मनिष्ठ सज्जन कहे जाते हैं । आपका साहित्यिक श्रम बहुत उपयोगी तथा श्लाघ्य है ।

नाम—(३९२४) श्यामसुंदर (श्याम) ।

यह असनी, ज़िला फ़तेहपुर निवासी पंडित मन्नालाल मिश्र के पुत्र और कवि सेवक के शिष्य थे । इन्होंने सं० १९९२ में ठाकुर महेश्वर बख़्शसिंह तअल्लुक़दार रामपुर, मथुरा ज़िला सीतापुर के आज्ञानुसार महेश्वर-सुधाकर-नामक ग्रंथ बनाया । इसमें नायिका-भेद का वर्णन है, और अंत में समस्या-पूर्ति के छंद हैं । इस ग्रंथ की भाषा व्रज भाषा है । कवि ने प्रायः सब उदाहरणों का तिलक भी कर दिया है । यह महाशय साधारण श्रेणी में गिने जाते हैं । उदाहरणार्थ इनका एक छंद लिखा जाता है—

शोभित मोरपखा श्रुति कुंडल माल बिसाल हिए बिलसी है ,
स्याम-सरोज बिनिंदक नैन सुआनन की समता न ससी है ।
बैन सुधा मुसकानि अमी सम देखु अरी उर आनि गसी है ,
मूरति माधुरी मोहन की सुनतै सजनी मन माँहि बसी है । १ ।

समय—संवत् १९४२

नाम—(२२२५) जयदेवजी भाट, अलवर।

जन्म-काल—सं० १९२८।

रचना-काल—सं० १९५३।

रचना—स्फुट काव्य।

विवरण—आप राव राजा अलवर के आश्रित थे। आपकी कविता बड़ी ही सरस होती है।

उदाहरण—

फैली सुगंध भरी लतिका सोइ गोरसधाम प्रबंध बनायो।
त्यों जयदेव विभूति की भाँति बड़े अनुराग पराग लगायो।
नीरज नील निचोल मनोहर पिंडी धुनि बोल अतोल सुनायो।
मान की भीख वियोगिन पै त्रिपुरारि फकीर ह्वै माँगन आयो। १।
सारन को कहिबे कहुँ चातक मंद भरे घन मोर नचैंगे।
बारिद बाग छटा छुन देखि वियोगिन के तन ताप तचैंगे।
त्यों जयदेव उमंगन सों नर-नारि अपार विहार रचैंगे।
पावस की ऋतु मैं सजनी बिन पीतम के किमि प्रान बचैंगे। २।

नाम—(२२२६) मथुराप्रसाद पांडेय, मथुरा।

मृत्यु-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप एक अच्छे भाषाकवि थे। आपकी कुछ भाव रचनाओं के उदाहरण नीचे दिए गए हैं। ये प्रायः 'विचित्र' उपनाम से अंकित रहा करती थीं। कहा जाता है कि इन्होंने कई ग्रंथ लिखे हैं, किंतु वे अभी अमुद्रित हैं। यह महाशय भगवान् श्रीकृष्ण एवं मथुरापुरी के अनन्य भक्त थे, और इसी पुरी में सीप संन्यास ग्रहण करके निवास करते थे। [पं० जगदीशपति त्रिपाठी, काशी द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

बिलोकत जाकी नइ सुषमा सुरमानि समामे रहैं रतिमार ;
सने तन सोनजुही जासी के प्रसूनन हूँ से महा सुकुमार ।
जुरी पिचुरी यो घटा घन की-सी 'विचित्र' छटा सरसै ये सुमार ;
सो भानुकुमारी के तीर लसैं वृषभानुकुमारी वो नंदकुमार । १ ।
मयूरपखा उनके सिर पै इनके गुही बेनी कि महा मरोर ;
फर्बी उनके कटि काछनी पीत, खुमी उनके सुचि चूनरी छोर ।
'विचित्र' सों वे इनपै, उनपै ये, करैं रस बात मैं मात करोर ;
गड़ी उनकी अँखियाँ इनपै, उनकी इनपै बिगरी बरजोर । २ ।

नाम—(२१२७) महेंदुलाल गर्ग (पंडित)।

आपका जन्म सं० १९२८ में हुआ। आप सेना विभाग में डॉक्टर थे, सो स्थान स्थान पर प्रायः घूमे । आपने काश्मीर और चीन भी देखे। नग विनोद, अनंतज्वाला, पृथ्वी परिक्रमा, पति-पत्नी-सवाद, तरुणों की दिनचर्या, जापान दर्पण, चीन दर्पण, जापानीय स्त्री शिक्षा, प्लेग चिकित्सा, भ्रष्ट-देश, सुख-मार्ग, परिचर्या-प्रणाली आदि अनेक उपयोगी ग्रंथ आपने लिखे। इनके अतिरिक्त डाक्टरी विषय के भी आपके कुछ अन्य ग्रंथ हैं। अनंतज्वाला ग्रंथ हमारा देखा हुआ है। आपके ग्रंथ उपयोगी और शिक्षाप्रद हैं। आप बड़े उत्साही अपने धुन के पक्के सज्जन थे।

नाम—(२१२८) सकलनारायण पांडेय ।

आपका जन्म सं० १९२८ में हुआ। आप बड़े ही उत्साही पुरुष और उन्नति-संबंधी नवीन सामाजिक विचारों के पक्षपाती रहे। मुख्यतः आप ही के परिश्रम से आरा नागरी प्रचारिणी सभा स्थापित हुई। आपने अनेक ग्रंथ रचे, जिनमें से हिंदी सिद्धांत प्रकाश, सभ्यतत्त्व, प्रेमतत्त्व, आरापुरातत्त्व, वीरबाला निबंध-माला, व्याकरणतत्त्व आदि प्रधान हैं। राजरानी और अपराजिता आपके

उपन्यास हैं। आप बड़े ही मिलनसार और उदार प्रकृतिवाले पुरुष थे। आपने जैनेंद्रकिशोर की एक अच्छी जीवनी भी लिखी। अपराजिता उपन्यास में चरित्र चित्रण उच्च कोटि का है। पांडेयजी हमारे उत्कृष्ट गद्य लेखकों में से हैं।

नाम—(३९२९) हरिनाथ (आलू पंडित)।

जन्म-काल—सं० १९२३।

रचना काल—सं० १९९१।

ग्रंथ—(१) आलू पुराण, (२) हलचल हलका, (३) हलचल कजरी, (४) हलचल पुराण।

विवरण—माधवपुर सराय सकी में जन्म हुआ। आजकल काशी में चिरकाल से रहते हैं। हास्य-रस के उद्भट कवि एवं लेखक हैं। आलू पंडित के नाम से प्रसिद्ध हैं। समाज तथा देश सुधारक हैं।

उदाहरण—

> आलू पंडित की आई चौपाई,
> हर से खादै उदारिन खादै दूसर नइ सिखलाई।
> गुरू वही जो चेला सिखावै करै कमाई सो खाई।
> आलूजी के ब्याह भए जब दूनी दुलहिन पाई।
> है दुलहिन दूनी जो मोटी नाम है बैंगन माई
> नारद नित चाहत पंडित सँग जो भागत हरखाई।

समय—संवत् १९९४

नाम—(३९३०) गोप्यअलादेवी 'ज्ञान-कला', अपहर ग्राम, छपरा जिला।

जन्म-काल—सं० १९६९।

कविता-काल—सं० १९९४।

मृत्यु-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—(१) सियवर-सप्तक, (२) हनुमानाष्टक, (३) राम नाम-माहात्म्य-चालीसा, (४) विनय-पचासा, (५) झूला-बहार, (६) श्रीहनुमान यशावली, (७) श्रीसीताराम-होली बहार, (८) ध्यान निधि-दोहावली (अप्रकाशित), (९) जयकार शतक, (१०) युगल-केलि-गीतावली, (११) श्रीसीताराम-नख शिख, (१२) शिवाष्टक।

विवरण—आप कायस्थ कुलोत्पन्ना बाबू युगलकिशोरलालजी की पुत्री थीं। आपका जन्म गया ज़िलातर्गत निरनामा-नामक ग्राम में तथा विवाह अपहर ग्राम के निवासी बाबू कृष्णदत्तदेवजी के साथ हुआ। आप महात्मा श्रीतुलसीदासजी की शिष्य-परंपरा-वाले महात्मा श्रीजानकीशरणजी की शिष्या थीं, और इन्हीं के पास आपने रामायण का अध्ययन किया तथा कविता करनी सीखी। आपको संगीत से भी अनुराग था। इनके अप्रकाशित ग्रंथों की प्रतिलिपि प्रतियाँ उक्त महात्मा श्रीजानकीशरणजी के यहाँ मौजूद हैं। आप एक अच्छी स्त्री-कवि थीं। [श्रीरामचरणजी, किशोरी-भवन, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

कैधौं शोभा सर बिच विकस्यो सरोज, कैधौं
सोरह कलान-युत अद्भुत सुचंद है।
कैधौं विधि निज निपुनाई तैं मुकुर रच्यो,
देखि ताहि लियो करि मदन पसंद है।
कैधौं अवधेश फरजंद मन मोहिबे को,
सुंदर अनूप पंचबान केरे फंद है।
'गोपअली' कैधौं अद्भुत आब भरो,
मिथिलेश नंदिनी को मुख आनँद को कंद है।

नाम—(३१२१) प्रबोधचंद्र, कतरीसराय (गया)। ४

जन्म-काल—सं० १९२६।

उदाहरण—

निवेदन

यौवन ग्रीष्म प्रचंड-ताप में झुलस रहा है मेरा मन;
तीव्र-लालसा लू की लपटें बहती जाती हैं सन-सन।
अंतस्थल को जला रहा है धधक-धधककर प्रेम अनल;
फूट-फूटकर विलख रही है परदे में वासना विकल।
मेरी हृदय-वेदना हर आ दरस दिखाकर ऐ स्वामी;
पा विश्राम सुखद छाया में होऊँ तेरा अनुगामी।

नाम—(१९१२) भगवानदीन मिश्र (गौन)।

जन्म-काल—सं० १९११ (अनुमान से। हमारे मिलनेवाले थे।)

विवरण—यह खैराबाद, सीतापुर निवासी एक प्रशंसनीय कवि थे। आपने विविध छंदों में एक रामायण तथा बहुतेरे स्फुट छंद कहे। होली विषयक बहुत-से कबीरवत् विषयों के भी आपने घनाक्षरी आदि छंद रचे। साहित्य विषय के आनंद में प्राय आप निमग्न हो जाते थे। अनुचित अभिमान के यह ऐसे विरोधी थे कि उसको कदापि सहन नहीं कर सकते थे। दीन कवि दरिद्रता की दशा में भी उदारता का सुख अनुभव करने और यथासाध्य श्रीमान् मनुष्यों की भाँति व्यय करने से मुख नहीं मोड़ते थे।

इनके विषय में इनके मित्र ने क्या ही ठीक-ठीक कहा था कि—

मनत विशाल जग शोधक मँहीवा रवि,
 मानिन को मान अरसावत फिरत हैं।
धारि कविताई के अनंद को सरूप निज
 मीतन को दीन दरसावत फिरत हैं।

आपकी ब्रजभाषा-रचना उच्च कोटि की है। इनके छंद हमने बहुत सुने हैं, किंतु इस समय कोई उदाहरण हमारे पास नहीं है।

नाम—(२५२२) श्यामविहारी मिश्र (रायबहादुर तथा राव राजा)।

इनका जन्म सं० १९३० में इटौंजा, ज़िला लखनऊ में हुआ। इनके पिता पं० बालदत्त मिश्र एक सुकवि थे। बाल्यावस्था में उर्दू पढ़ इन्होंने लखनऊ आकर सं० १९४२ में अँगरेज़ी का पढ़ना आरंभ किया। सं० १९५२ में बी० ए० पास करके इन्होंने दूसरे साल एम० ए० पास कर लिया, और सं० १९५४ में ये डेपुटी-कलेक्टर नियत हो गए। सं० १९६२ में इन्होंने अपनी नौकरी पुलीस में बदलवाकर डेपुटी सुपरिंटेंट का पद पाया, और सं० ६७ में महाराज छतरपुर ने इन्हें अपनी रियासत के दीवान होने के निमित्त बुलाया। तब यह पुलीस छोड़कर फिर डेपुटी कलेक्टरी पर चले गए। अनंतर आप रजिस्ट्रार कोआपरेटिव-क्रेडिट-सोसायटीज़ तथा कौंसिल ऑफ़् स्टेट के मेंबर हुए। डेढ़ साल पछी डेपुटी-कमिश्नरी पर रहे। इन्होंने पद्य रचना १५ या १६ वर्ष की अवस्था से आरंभ कर दी थी, और सं० १९४९ में अपने कनिष्ठ भ्राता शुकदेवविहारी मिश्र के साथ लव-कुश-चरित्र-नामक पद्य ग्रंथ अलग ही रचा। इसी समय से प्रायः सब छंद और गद्य लेख साझे ही में बनते रहे। सं० १९५६ में सरस्वती पत्रिका निकली। तभी से गद्य लेख भी लिखने लगे। पहला गद्य लेख हम्मीरहठ की समालोचना विषयक था, जो सरस्वती के प्रथम भाग में छपा। पीछे से स्फुट लेखों के अतिरिक्त, विक्टोरिया अष्टादशी, व्यय, हिंदी अपील, रूस का इतिहास, भारत का इतिहास (दो भाग) जापान का इतिहास, नेत्रोन्मीलन नाटक, भारत विनय, सुमनांजलि, हिंदी-नवरत्न, मदन-दहन, रघुसमन, श्री काशीप्रकाश, बूँदी-वारीश, वीर-मणि, आत्म शिक्षण, पद्य पुष्पांजलि, पूर्व भारत नाटक, उत्तर-भारत नाटक, शिवाजी नाटक आदि ग्रंथ समय-समय पर इन्होंने अपने कनिष्ठ भ्राता के साथ बनाए। इनमें से व्यय, रूस का इतिहास,

जापान का इतिहास और हिंदी-नवरत्न गद्य में हैं। इन काशीप्रकाश और भारत विनय खड़ी बोली के पद्य में और नाटक छोड़ शेष ब्रज-भाषा पद्य में हैं। भूषण ग्रंथावली नामक ग्रंथ में भूषण की कविता पर टिप्पणी एवं समालोचना है। हिंदी नवरत्न तथा यह ग्रंथ मिश्र बंधु विनोद पं० गणेशविहारी तथा पं० शुकदेवविहारी के साथ बनाए गए। सं० १९८६ में आप हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति नियुक्त हुए। इन तीनों भाइयों के विचार नूतन हैं। काशी-नागरी प्रचारिणी सभा के द्वारा यू० पी० सरकार की सहायता से हिंदी लिखित ग्रंथों की खोज का काम प्रायः ३० वर्षों से हो रहा है। उसकी बहुतेरी वार्षिक तथा त्रैवार्षिक रिपोर्टें निकला करती हैं, जिन्हें सरकार अपने व्यय से छापती है। इस कार्य के निरीक्षण का काम श्यामविहारीजी ने ६ या १० वर्ष किया, तथा शुकदेवविहारीजी ने साढ़े डेढ़ साल। ज्येष्ठ भ्राता के इस काम की दो त्रैवार्षिक रिपोर्टें प्रायः पाँच-पाँच सौ पृष्ठों की हिंदी तथा अँगरेज़ी में निकलीं थीं, जो इन दोनों भाइयों ने लिखी थीं और जिन्हें सरकार ने छपाया। इस लंबे खोज के काम से मिश्रबंधु विनोद को बहुत कुछ सहायता पहुँची है। विनोद में खोज के अतिरिक्त और भी बहुत-सा मसाला है। हम लोगों के मिश्रबंधु विनोद तथा हिंदी नवरत्न कई उत्तर भारतीय विश्वविद्यालयों में पाठ्य ग्रंथ कई सालों से चले आते हैं। ये दोनों प्रधानतया खोज और समालोचना के ग्रंथ हैं। भारत के इतिहासवाले प्रथम खंड में प्रायः ६००० संवत् पूर्व से ६०० संवत् पूर्व तक का इतिहास है। दूसरे खंड में बौद्धकाल से प्रारंभ होकर मुसलमानों के आने तक का वर्णन है। इन दोनों भागों में ढूँढ़-खोज का बहुत काम है। आत्मशिक्षण एक उपदेश प्रद निबंध है, जिसमें चरित-संशोधन की शिक्षा दी गई है। भारत विनय खड़ी बोली में १३७ पृष्ठों का देश भक्ति पूर्ण काव्य-ग्रंथ है। हम लोगों

के चारों नाटक-ग्रंथ स्टेज पर खेलने योग्य हैं। दिवाजा अभी प्रकाशित नहीं हुआ है, किंतु जल्द छपेगा। पूर्व भारत काशी छतरपुर और वृंदावन में खेला जा चुका है, तथा पंजाब में पाठ्य पुस्तक है। इसके चार संस्करण निकल चुके हैं। इसका बँगला में अनुवाद भी हुआ है। वीरमणि उपन्यास-ग्रंथ है, जिसमें अलाउद्दीन के समय मेवाड़-युद्ध का भी वर्णन आया है। बूँदी-वारीश व्रजभाषा का काव्य ग्रंथ है। सुमनोंजलि तथा भारत के इतिहास में हिंदू धर्म पर भी भारी विवेचन है। मदन-दहन और रघुसंभव में कालिदास के साढ़े तीन अध्यायों का स्वच्छंद अनुवाद है। पद्य पुष्पांजलि में २४० पृष्ठों में हमारे चुने हुए पद्य-साहित्य का सन्निवेश है। शिवाजी स्वदेशानुराग युक्त नाटक है, और उत्तरभारत वैसा ही है, जैसा कि पूर्व भारत। नेत्रोन्मीलन में कचहरियों पर प्रकाश पड़ा है। रूस और जापान के इतिहास छोटे रूप में उन देशों का पूरा वर्णन करते हैं।

उदाहरण —

समरथ सुतन पै रावत पिता है प्रेम,
मातु पै कुपूतन बिसेस अपनावती,
हेरि मोद सुत को सुजस मन-मोद भरे,
आदर सों तबहू हिर्मौ न बिसरावती।
मातु भारती को हौं तौ कादर कपूत मति,
याते अब चरन सरन तकि धावती;
अरबिंद नद सों न सकति अमंद पाइ,
मातु नखचंद की छटा ही चित भावती।

× × ×

समय—संवत् १६५५

नाम—(३३३४) नारायण स्वामी, माड़वारी गली, लखनऊ

जन्म-काल—सं० १९३० के लगभग।

रचना काल—१९९९।

ग्रंथ—(१) स्वामी रामतीर्थ के व्याख्यानों के हिंदी अनुवाद (२) भगवद्गीता की व्याख्या (दो भागों में)।

विवरण—आप स्वामी रामतीर्थ के शिष्य तथा उनके आश्रम के अधिष्ठाता हैं। अँगरेज़ी जानते हैं, संस्कृत के अच्छे पंडित तथा हिंदी के उत्कृष्ट व्याख्याता हैं। आप बड़े परोपकारी, संयुक्त प्रांतीय धर्म रक्षिणी सभा के सभापति तथा उत्साही कार्यकर्ता एवं सज्जन हैं। कई मंदिरों का उद्धार एवं सुप्रबंध किया है। हम लोगों पर भी कृपा करते हैं। शास्त्रज्ञ भी हैं।

नाम—(२२२२) बनवारीलाल चतुर्वेदी, हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९३०।

मृत्यु-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—तिमिर प्रदीप।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण पं० गुलाबचंदजी मिश्रके पुत्र तथा हरदोई ज़िले के सदर ख़ज़ांची थे। आप सुकवि समझ पड़ते हैं।

उदाहरण—

> तिमिर प्रदीपक ग्रंथ लिख्यौं सुंदर सुगम्य युत,
> ज्योतिष दीप अपार तासु भाषा आशय युत।
> फलित गणित अरु प्रश्न तंत्र शुभ लग्न तंत्रिका;
> जय क्षु अजय के प्रश्न यामिनी मंत्र जंत्रिका।
> लघु जातक जातक सबै सय सुनि सुनि आशय सुदित,
> यह रच्यौ छंद रचना सुलभ सो सौंपत हौं आपु हित।

नाम—(२२२३) रामचंद्र दुबे।

जन्म-काल—१९३०।

ग्रंथ—(१) डूँगरपुर-राज्य का इतिहास, (२) बाँसवाड़े का इतिहास, (३) होरेशस या कुमारी, (४) निर्धन राम, (५) खेतड़ी राज्य का इतिहास।

विवरण—डूँगरपुर निवासी पं० मन्नालाल के पुत्र।

नाम—(२५३७) राय दर्वीप्रसाद (पूर्ण)।

जन्म-काल—सं० १६२२।

कविता-काल—सं० १६५५।

मृत्यु-काल—सं० १६७२।

विवरण—यह कायस्थ महाशय कानपुर में वकालत करते थे, जो अच्छी चलती थी। राय साहब कविता के बड़े प्रेमी और गाने-बजाने में भी निपुण थे। इनके रचित तथा अनुवादित मृत्युंजय, धाराधरधावन, चंद्रकलाभानुकुमार नाटक और बहुत-से स्फुट छंद हैं। यह रसिक-समाज के उपसभापति थे, और रस-वाटिका में इनकी बहुत-सी समस्या पूर्ति की रचना प्रकाशित हुई थी। सरस्वती में भी इनकी कविता प्रायः छपा करती थी। इनका काव्य बहुत सरस होता था। गद्य के भी यह अच्छे लेखक थे। इनका धाराधरधावन, (मेघदूत भाषा) एक सुंदर ग्रंथ है, जिसमें कालिदास के पूर्ण भाव लाने में यह समर्थ हुए हैं, और उस पर भी इसमें शिथिलता नहीं आने पाई, जो प्रायः अनुवादों में आ जाती है। यह खड़ी बोली का काव्य भी करते थे, जो प्रशंसनीय है। इनका नाटक खेलने के अयोग्य, किंतु काव्योत्कर्ष-पूर्ण होने से अच्छा कहा जा सकता है। वास्तव में नाटक न होकर वह नाटक के रूप में एक उत्कृष्ट काव्य ग्रंथ है। इनकी भाषा प्रायः व्रजभाषा होती थी, जो सानुप्रास और हृदय ग्राहिणी है। इनकी कविताओं का संग्रह 'पूर्ण संग्रह' नाम से छप चुका है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है। आप हमारे मित्र थे। इनमें कवित्व शक्ति उच्च कोटि की थी।

उदाहरण—

रुचा के भूखन सँवारे पुखराज वारे,
धारी जरतारी पीत सारी सुखकारी है;
सूनी दुपहर में निदाघ की विहारी पास,
पूरन सिधारी वृषभानु की कुमारी है।
मनचन्द्र ध्यान में मगन रसखान प्यारी,
ताती पौन लेखत बसत की बयारी है;
आतप अखंड रुदकर की प्रचंड सोऊ,
मानत सुचंद की अमंद उजियारी है। १।
कुंजन के सघन तमालन के पुंजन में,
करत प्रवेश न दिनेश उजियारो है;
प्यारी सुकुमारी स्याम सारी सजे ठाढ़ी तहाँ,
नीलमणि-मालन का जाल छवि धारो है।
छिटके बदन चन्द्र कुंतल अमंद स्याम,
स्यामा रंग पागी मान रमा को बिदारो है;
पूरन सुमगन पै सौरभ प्रसंग पाय,
झूमें स्याम भौंरन को झुंड मतवारो है। २।

नाम—(३२४८) शुकदेवबिहारी मिश्र, रायबहादुर।

इनका जन्म सं० १६३५ में इटौंजा में हुआ। इनके पिता पं० बालदत्त मिश्र एक प्रसिद्ध ज़मींदार और कवि थे। इन्होंने बाल्या वस्था में उर्दू पढ़कर सं० १६४६ में लखनऊ जाकर अँगरेज़ी पढ़ना प्रारंभ किया। सं० १६५७ में इन्होंने बी० ए० होकर सं० १६५८ में हाईकोर्ट वकालत की परीक्षा पास की। कुछ साल वकालत करके सं० १६६१ में इन्होंने मुंसफ़ी कर ली। इसके बाद सब-जज तथा रियासत छतरपूर में दीवान हुए। सं० १६८८ में स्नायु-रोग से पीड़ित होकर दवा करने को आप योरप गए, जहाँ छः महीने रहकर

आपने दवा की, तथा इटली, आस्ट्रिया, जर्मनी, हालैंड, इँगलैंड, फ्रांस और स्विट्ज़रलैंड देखे। अनंतर नीरोग होकर भी आपने उसी संवत् में नौकरी से पेंशन ले ली। सं० १९८४ में इन्होंने रायबहादुर की उपाधि पाई। इन्होंने पद्य-रचना १५ वर्ष की अवस्था से आरंभ की थी, परंतु प्रथम ग्रंथ लवकुश-चरित्र सं० १९५५ में अपने ज्येष्ठ भ्राता श्यामबिहारी मिश्र के साथ बनाया। सरस्वती पत्रिका के निकलने के साथ इन्होंने गद्य लिखना आरंभ किया। ग्रंथों के विषय में जो कुछ श्यामबिहारी मिश्र के बयान में लिखा है, वही इनके विषय में भी समझना चाहिए, क्योंकि इन दोनों की प्रायः सब हिंदी-रचनाएँ साझे ही में बनी हैं।

संवत् १९८६ में आप पटना विश्वविद्यालय में अवैतनिक रामदीन रीडर एक साल के लिये नियुक्त हुए। आपने नियमानुसार आठ व्याख्यान दिए। विषय था भारत के इतिहास पर हिंदी-साहित्य का प्रभाव। इन पर ३३४ पृष्ठों का एक ग्रंथ बन गया, जो छप चुका है।

उदाहरण—

बालमीकि व्यास कालिदास भवभूति आदि,
लाड़िले सुतन को न तेरे बिसरायो मैं,
पंगु सम तऊ गिरि लघन को धाय मातु,
तो सुत बनन हेतु लालसा बढ़ायो मैं।
आतन के धवल सुजस में कपूत बनि,
केवल कराल कालिमा को चपकायो मैं,
राखु मातु सारदा दया की दीठि फेरु तऊ,
साहस के अब तौ सरन तकि आयो मैं।

× × ×

पिंगल सों छाँटि सब सुंदर सरस छंद,
वरना के देवि यहि रचना मैं धारा करु,

रमता विदारि त्या प्रगाढ़ अधिकार दैके,
सबद-समूह मम सम्मुख पसारा कर।
परम विसाल ध्वनि व्यंजन को जाल धरि,
दोषन के जालन दया सों बेगि जारा कर,
भूषननि भावनि रसनि परिपूरित कै,
बाल कविता को मातु सारद सहारा कर।

नाम—(३५३६) सूर्यकुमार वर्मा, कठवारा, लखनऊ। हाल में ग्वालियर निवासी।

जन्म काल—लगभग सं० १६३०।

रचना-काल—सं० १६५५।

ग्रंथ—पुरातत्व एवं इतिहास पर कई ग्रंथ लिखे हैं।

विवरण—काशी-नागरी प्रचारिणी सभा के उत्साही सदस्य हैं। पहले काश्मीर में काम करते थे। अब ग्वालियर रियासत के उच्च कर्मचारी हैं।

समय—संवत् १६५६

नाम—(३५४०) अक्षयवट मिश्र (उपनाम विप्रचंद्र)।

इनका जन्म जेष्ठ शुद्ध १२, सं० १६३१ को डुमरांव में हुआ। इनके पिता राजेश्वरी राधाप्रसादसिंह महाराज डुमरांव के सभासद थे। यह शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। इन्होंने संस्कृत भाषा अच्छी पढ़ी है। चार वर्ष भालरा में इन्होंने जैन ग्रंथों का मागधी से संस्कृत में अनुवाद किया, और तीन वर्ष कलकत्ता एवं मेरठ-कॉलेज में संस्कृत का अध्यापन किया, तथा कुछ काल डुमरांव नरेश के बालक को पढ़ाया। एक वर्ष इन्होंने अवधकेसरी मासिक पत्र का संपादन किया। आपने संस्कृत के कुछ ग्रंथ बनाए, और आनंद कुसुमोद्यान एवं सदाचार नामक दो हिंदी पद्य ग्रंथ भी रचे। पहले में मनहरनों में शृंगार काव्य और द्वितीय में गाने की चीज़ें हैं।

इनके अतिरिक्त मिश्रजी ने गंगालहरी, गंगाष्टक, महिम्न, शिवताण्डव और भामिनीविलास का पद्य में तथा मार्कंडेय पुराण, देवी चौधरानी और दशकुमारचरित्र का गद्य में अनुवाद भी किया। आपने अयोध्या नरेश, महाराणा प्रतापसिंह, पंडित राधावल्लभ जोशी, भगवान कवि, बच्चू शुक्ल, बालराम शास्त्री, उमापतिदत्त शर्मा, कवि गोविंद गिल्ला भाई और दुर्गादत्त परमहंस के जीवन चरित्र लिखे। फुटकर छंद भी आपके बहुत हैं। उदाहरण में स्थानाभाव से केवल दो छंद यहाँ लिखे जाते हैं। आप उच्च श्रेणी के गद्य-लेखक और सुकवि हैं।

बार-बार चमकै चहूँघा चपला री देखु,
सिखचंद्र बारिद ह्वै बारि बरसावै हैं;
पौन पुरवाई बहै पपिहा पुकारै पीव,
मारदल कूकि कूकि मदन जगावै है।
ऐसे समै नाहीं निबहैगो तेरो ऐरी बीर,
नाहक अकेली बैठि बेदन बढ़ावै है;
मानि ले हमारी बात बेगि चलु मेरे साथ,
जोरि कर आतु तोहि कान्हर बुलावै है।
बसैं सु गंग तीर की निकुंज में निवास कै,
महेश को प्रणाम कै बिसारि नीच आस कै;
कलत्र पुत्र देह-गेह नेह छोड़ि हूँ सबै,
उचारि शंभु शुद्ध मंत्र होयँगे सुखी कबै।

नाम—(२५४१) गंगानाथ झा डाक्टर, महामहोपाध्याय, एल् एल्० डी० डी०, लिट्०।

जन्म-काल—सं० १९२९ के लगभग।

यह संस्कृत के महान् पंडित हैं। आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय के नौ वर्ष वायस-चैंसलर रहे। आपने संस्कृत के अनेक ग्रंथ रचे

तथा शुद्ध भाषा के श्री गद्य ग्रंथ गंभीर विषयों पर बनाए, और हाल ही में न्याय-दर्शन तथा वैशेषिक दर्शन नामक ग्रंथ लिखे हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डॉक्टर बेनीप्रसाद वैश्य, डॉक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, धीरेंद्र वर्मा आदि भी हिंदी के सुलेखक हैं।

नाम—(३५४२) रामसिंहजी के० सी० आई० ई०, राज्य सीतामऊ।

राठौर-कुल भूषण सीतामऊ नरेश श्रीराजा सर रामप्रतापसिंहजी का जन्म पौष वदी २, गुरुवार सं० १९३६ को धार राज्यांतर्गत कार्थी बड़ौदा नामक ग्राम में हुआ। श्रीमान् ने १२ वर्ष की अवस्था से इंदौर, डेली-कॉलेज में शिक्षा पाई। वहाँ का शिक्षण आपने सं० १९५५ में संपूर्ण किया, और तत्पश्चात् माल-संबंधी काम आपने भरतपुर में सीखा। वहाँ के तत्कालीन हाकिम बंदोबस्त स्टमाइ केल ओडायर ने आपके काम के विषय में बहुत प्रशंसा की। भारत सरकार ने निकट-संबंधी जाकर श्रीमान् शार्दूलसिंहजी के वैकुंठवास होने पर, आपको सीतामऊ राज्य का अधिकारी माना, और आपका राज्यारोहण सं० १९५६ में बड़े समारोह से हुआ। राज्यशासन-कला की दृष्टि से इनका जीवन प्रशंसनीय है ही, किंतु हिंदी-साहित्यिक सेवा की दृष्टि से भी इनका चरित्र मौलिक तथा अभिनंदनीय है। आप कवि हैं तथा विद्या-व्यसन आपका मुख्य व्यवसाय है। ब्रज भाषा तथा संस्कृत दोनों में आप कविता करते हैं। इनकी हिंदी कविता विशेषतया दो प्रकार के छंदों में विभक्त है—कवित्त और सवैया। इनकी प्रथम कृति 'राम विलास'-नामक काव्यात्मक ग्रंथ है, और यह सं० १९६३ में प्रकाशित हो चुका है। यह ग्रंथ भक्ति पूर्ण है। 'राम विलास' के पश्चात् यथावकाश आपने 'मोहन विनोद'-नामक दूसरा ग्रंथ रचा। यह नायिका भेद पर है, और

आपकी शृंगारिक कविता की मौलिकता इससे प्रकट होती है। ग्रंथ अभी अप्रकाशित रूप में है।

आपको काव्यानुराग के अतिरिक्त विज्ञान से भी रुचि है। आपका 'वायु विज्ञान' नामक तीसरा ग्रंथ भी बहुधा सं० १९६३ ही में प्रकाशित हुआ।

उदाहरण—

(राम विलास से)

अब बाधव संग जितै तितहीं,
सिसु रूपहि धारि फिरयौ करिए।
रजधानि मझे नर नारिन के,
नित लोचन लाभ सरयौ करिए।
चित चोरत तोतरि बातन तें,
पितु मातु प्रमोद भरयौ करिए।
रघुनाथ सदा यह साज सजें,
मम नेत्र पवित्र करयौ करिए।

(मोहन विनोद से)

मीन कंज खंजन के भए मद भंग सबै,
'मोहन' निहारे नेक नैनन सुहाई को,
पूरन सरद चंद छीन छवि होत वेगि,
पेखि जाके आनन की सोभा सुघराई को।
चाप चारु बिंबाफल देखि के लजात हिय,
भौंह की बँकाई अरु अधर ललाई को;
रसिक सुजान कान्ह रीझें क्यों न प्रेमी लखि,
राधा गुन-खान की स्वरूप अधिकाई को।

नाम—(२१४३) व्रजनंदनसहाय।

आपका जन्म सं० १९३३ में हुआ। आप ज़िला आरा में

अख्तियारपूर के कायस्थ श्रानूनगो वंशी बाबू शिवनंदनसहाय के पुत्र हैं। अँगरेज़ी बी० ए० पास करके आप आरा में वकालत करते हैं। आरा-नागरी प्रचारिणी सभा के मंत्री तथा नागरी हितैषिणी पत्रिका के आप संपादक रहे हैं। भाषा गद्य और पद्य के अच्छे लेखक हैं। कविता प्रशंसनीय होती है। निम्न लिखित २० ग्रंथ हिंदी में आपके रचित तथा अनुवादित हैं। इनके अतिरिक्त समाचार-पत्रों में आपके लेख तथा कविताएँ प्राय छपती रहती हैं। इनके ग्रंथों के नाम—

पद्य—(१) हनुमानलहरी, (२) श्रीनजविनोद, (३) सत्यभामा मंगल, (४) एक निर्वासन द्वीपवासी का विलाप।

नाटक—(१) सत्यम् प्रतिमा त्रोटक, (२) उद्धव-नाटक, (३) बूढ़ा वर (गद्य-पद्य मिश्रित प्रहसन)।

अनुवाद—(१) चंद्रशेखर उपन्यास, (२) कमलाकांत का इज़हार प्रहसन।

(१) अर्थशास्त्र।

समालोचना—चंद्रशेखर उपन्यास की समालोचना।

उपन्यास—(१) राजेंद्र मालती, (२) अद्भुत प्रायश्चित्त, (३) सौंदर्योपासक, (४) आदर्श मित्र।

जीवन-चरित्र—(१) पं० बलदेवप्रसाद की जीवनी, (२) राय बहादुर बंकिमचंद्र की जीवनी, (३) विद्यापति ठाकुर की जीवनी, (४) बाबू राधाकृष्णदास की जीवनी।

संपादित—मैथिल कोकिल।

आपने भाषा में कई आवश्यकीय विषयों पर रचना की है। आपका कविता-काल सं० १९९९ समझना चाहिए।

× × ×

समय—संवत् १९५७

नाम—(३२११) लाला कन्नोमल एम्० ए०, साहित्यालंकार।

आपका जन्म आगरे के एक सुसम्मानित वैश्य घराने में सं० १६२२ में हुआ। आप जाति के गर्ग गोत्रीय अग्रवाल वैश्य थे। एम्० ए० के अतिरिक्त इन्होंने क़ानूनी शिक्षा भी प्राप्त की।

सं० १६४४ के लगभग कॉलेज छोड़ने पर इन्होंने रियासतों में नौकरी स्वीकार कर ली। यह राज्य जोधपुर में ७ वर्ष तक उच्च पद पर रहे, और तब से मृत्यु पर्यंत यह रियासत धौलपुर में रहे। इस राज्य में आप बहुत काल पर्यंत शिक्षा विभाग के उच्च कर्मचारी रहे, और इस क्षेत्र के लिये जाने पर इसी वर्ष कार्तिक सं० १६८० में आपका स्वर्गवास हो गया। फिर ज्युडीशल सेक्रेटरी के पद पर सुशोभित हुए। आप दार्शनिक तथा धार्मिक विषयों में बड़ी योग्यता रखते थे, और आपके महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ मुख्यतः इन्हीं विषयों पर हैं। आपने आज तक २५ के ऊपर हिंदी-ग्रंथ लिखे। इनके अतिरिक्त लगभग २० ग्रंथ अँगरेज़ी भाषा में हैं। आपके हिंदी ग्रंथ ये हैं—(१) गीता-दर्शन (द्वितीय संस्करण), (२) साहित्य-संगीत निरूपण, (३) हर्बर्ट स्पेंसर की अज्ञेय मीमांसा, (४) हर्बर्ट स्पेंसर की ज्ञेय मीमांसा, (५) भारतवर्ष के धुरंधर कवि, (६) सामाजिक सुधार, (७) अँगरेज़ी-राज्य के सुख, (८) जैन-तत्त्व-मीमांसा, (९) हिंदी प्रचार के उपयोगी साधन, (१०) प्रश्नोत्तरमाला, (११) कबीर-सुभाषित रत्नमाला, (१२) सप्त भगिनय, (१३) हिंदू-सभ्यता की प्रारंभिक शिक्षा, (१४) हिंदी-व्याकरण-बोध, (१५) हिंदी-व्याकरण-सार, (१६) हिंदू-जाति में स्त्रियों का गौरव, (१७) पुनर्संयोग, (१८) योग दर्पण, (१९) वैशेषिक-दर्पण, (२०) न्याय-दर्पण, (२१) सनातनधर्म, (२२) भारतवर्ष का संदेश, (२३) बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र, (२४) महिला-सुधार, (२५) विविध विषय लेखमाला।

ऊपर दिए हुए ग्रंथों के अतिरिक्त समय-समय पर अनेकानेक

विषयों पर आपके कई सार-गर्भित लेख निकल चुके हैं। आपका शरीर पात १९६० में हुआ।

नाम—(३९९५) गणेशदत्त शास्त्री वाजपेयी, कन्नौज।

जन्म-काल—लगभग १९३९।

आप भारत धर्म महामंडल के सबल उपदेशक थे। आपने धर्म एवं दर्शन शास्त्र विषयक कुछ ग्रंथ भी लिखे। आपके विचार प्राचीन प्रथा के हैं।

नाम—(३९९६) गंगाप्रसाद गुप्त, काशी।

यह अग्रवाल वैश्य हैं। इनका जन्म काल सं० १९४२ है। आपने सं० १९६० से हिंदी लेखन का कार्य आरंभ किया, और अब तक आप २६ ग्रंथ रच चुके हैं, जिनमें उपन्यासों का प्राधान्य है। आपके ग्रंथों में मुख्य ये हैं—राजस्थान का इतिहास (पूर्वार्द्ध), वर्नियर की भारत-यात्रा, पंजाब-राज्य का इतिहास, लंका-भ्रमण, तिब्बत वृत्तांत, कालिदास का जीवन चरित्र, रामाभिषेक, दुःख और सुख, पूना में हलचल और हिंदी का भूत, वर्तमान और भविष्य। आपने समय-समय पर भारत-जीवन, हिंदीकेसरी, श्रीवेंकटेश्वर-समाचार और मारवाड़ी का संपादन किया, तथा हिंदी-साहित्य-नामक मासिक पत्र निकाला है। गत दस-ग्यारह वर्षों से यह काशी से हिंदी-केसरी नामक साप्ताहिक पत्र निकाल रहे हैं। आपके बहुतेरे ग्रंथ उपयोगी विषयों पर हैं। आप हमारे एक श्रमशील लेखक हैं।

नाम—(३९९७) जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, मलयपुर, मुंगेर।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—(१) वसंतमालती, (२) संसार-चक्र, (३) तूफ़ान, (४) विचित्र विचरण, (५) भारत की वर्तमान दशा, (६) स्वदेशी आंदोलन, (७) गद्यमाला, (८) मधुर मिलन आदि अनेक ग्रंथ लिखे हैं।

विवरण—विशेषतया उपन्यास-लेखक। आप बड़े ही मज़ाक़-पसंद सज्जन हैं। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति हो चुके हैं। विचार आपके पुराने ढंग के हैं।

नाम—(३२४८) जानकीशरण 'स्नेहलता' ग्राम सौर दरियापुर, गया।

जन्म-काल—सं० १९३२।

कविता-काल—सं० १९२७ के लगभग।

ग्रंथ—(१) विरहानल, (२) श्रीहरि-कीर्तनपदावली, (३) गजाष्टक, (४) श्रीहंसकला-समक, (५) नवीन भक्त-माल (१००० छप्पय अप्रकाशित), (६) मानस-उत्तर पदावली (३०० दोहे, अप्रकाशित), (७) स्फुट रचनाएँ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू श्यामदासजी के पुत्र हैं। आपके पिताजी एक भक्त पुरुष थे, और इन्हीं से आपने साहित्य का ज्ञान तथा रामायण का परंपरागत अर्थ प्राप्त किया है। यह महात्मा श्रीतुलसीदासजी के शिष्य परंपरा में से हैं। निम्न लिखित छंदों से इस बात का परिचय मिलता है।

> बिप्र किशोरीदत्त को प्रथमहार हो दीन,
> अरुपदत्त पढ़ि ताहि सों चित्रकूट महँ लीन।
> रामप्रसादहिं सो दई लहि तातें शिवलाल,
> दत्त फनीशहि जान निज सो दीन्यो सुखमाल।
>
> (मानस मयङ्कार शिवलाल पाठक)
>
> शेषदत्त सन तासु सुत लहि आनंदीप्रसाद,
> तिन प्रति श्याम सुदासजी पढ़े सहित अह्लाद।
> जिन सुत मानस अर्थ युत भावादिक शुभ रीति,
> पढ़े पढ़ाए करि कृपा 'स्नेहलता' हि सप्रीति।
>
> (जानकीशरण 'स्नेहलता')

किया जाता है। अकबरी फौज की आमद सुनकर राणा प्रतापसिंह अपने शूर-वीरों से कहते हैं—

सब वीरों से ललकार के यह बात सुनाई ;
यह आखिरी विनती मेरी सुन लो मेरे भाई।
पैदा हुआ संसार में एक रोज़ मरेगा,
मरना तो मुक़द्दम है न टारे से टरेगा।
फिर इससे भला मौक़ा कहो कौन पड़ेगा ;
रजपूती की क्या गोट का फी रोज़ अड़ेगा।
पौरुष करो तलवार तबर सार की मारो ;
रन रोज़ मरद का है मरद शत्रु को मारो।
पुरखों के बड़े बोल की इज़्ज़त को बचाना ;
माता व बहन बेटी का सत धर्म रखाना।
निज धर्म व सुर धामों का सम्मान बढ़ाना ;
तीरथ व महाधामों का सत्कार कराना।
इन कामों में गर जान का डर हो तो न डरिए ;
क्षत्री का परम धर्म है यह ध्यान में धरिए।
रन में जो हो एकलिंगजी भगवान् का आदर ;
बापा से व सांगा के हों उपकार सरों पर।
बहनों के व कन्याओं की इज़्ज़त की हो कुछ दर ;
यश लेने का कुछ ध्यान हो निंदा का हो कुछ डर।
श्रीराम की औलाद की इज़्ज़त प नज़र हो,
सो भाइयों यह वक़्त है बस बाँधो कमर को।

काश्मीरजी की परख पर हमारा इनका मतभेद था। आप बिहारी और केशवदास को देव कवि से श्रेष्ठतर समझते थे।

नाम—(३१११) श्यामसुंदरदास खत्री (रायबहादुर)।

इनका जन्म आषाढ़ सं० १९३२ में, बनारस में, लाला देवीदास

म्यदा के घर हुआ । इनके पूर्व पुरुष लाहौर वासी थे, किंतु वे बनारस में रहने लगे। आपने स० १६५४ में बी० ए० परीक्षा पास की, और स० १६६६ से दस वर्ष तक हिंदू-कॉलेज में अध्यापक का काम किया। काशी नागरी प्रचारिणी सभा स्थापित करने में आपने विशेष श्रम किया, और बारह वर्ष से अधिक आप उसके मंत्री रहे। सभा को वर्तमान उन्नत दशा में पहुँचाने में सबसे बड़ा श्रेय आप ही का है। आप ६ वर्ष तक हिंदी लिखित ग्रंथों के खोज वाला काम भी करते रहे। खोज की रिपोर्टों से आपकी विद्वत्ता प्रकट होती है। सरस्वती पत्रिका के आप दो वर्ष स्वतंत्र संपादक रहे, और पृथ्वीराज-रासो के संपादन में दो अन्य महाशयों के साथ इनके द्वारा अच्छा श्रम हुआ। 'हिंदी कोविद-रत्नमाला'-नामक ग्रंथ में आपने ८० लेखकों की जीवनियाँ दी हैं। आपने कई साल परिश्रम करके कई अन्य महाशयों के साथ 'हिंदी-शब्द-सागर'-नामक भारी कोष बनाया। इनके अतिरिक्त कई छोटे-बड़े ग्रंथ आपने बनाए और संपादित किए। आप गद्य-लेखक अच्छे हैं और आपके अन्वेषण महत्त्व पूर्ण होते हैं। हिंदी के लिये जितना श्रम आपने किया है, उतना बहुतों ने नहीं किया होगा। आपका जीवन हिंदी के लिये बड़ा ही उपकारी है। कई विद्वानों की सहायता से आपने ८ वर्ष के प्रचुर परिश्रम से 'हिंदी-वैज्ञानिक कोष'-नामक एक और भी उपयोगी ग्रंथ तैयार किया। आपमें एक विशेष गुण यह भी है कि आप दूसरों को प्रोत्साहन देकर हिंदी की सेवा में तत्पर करते रहते हैं। बहुत-सी पुस्तकें आपने संपादित की हैं। 'साहित्यालोचन' तथा 'हिंदी-भाषा और साहित्य'-नामक आपके ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। गवेषणा और संपादन आपके मुख्य विषय हैं।

समय—संवत् १६५८

नाम—(२५१३) गोकुलप्रसाद, कटनी-मुड़वारा।

जन्म-काल—स० १६३३।

मृत्यु-काल—सं० १९८३।

रचना-काल—सं० १९५८।

ग्रंथ—(१) रायपुर-रश्मि, (२) दुर्ग-दर्पण, (३) सिवनी सरोजिनी।

विवरण—आप रायबहादुर हीरालालजी (भूतपूर्व डिप्टी-कमिश्नर, मध्य प्रदेश) के भ्राता थे। आपने बी० ए० तक शिक्षा पाई, और मध्य प्रदेश में क्रमशः ऊँचे-ऊँचे पद प्राप्त किए। अंत में आप ११००) रु० माहवारी वेतन पर असिस्टेंट कमिश्नर, इनकमटैक्स हो गए। इनको हिंदी-साहित्य से बड़ा प्रेम था, और सरकारी काम में व्यस्त रहते हुए भी इन्होंने ग्रंथ लेखन बड़ी सफलता पूर्वक किया। ऊपर लिखे हुए आपके ग्रंथों पर सामयिक मासिक पत्रिकाओं में प्रशंसा पूर्ण समालोचनाएँ निकल चुकी हैं।

नाम—(३२२४) नंदकुमारदेव शर्मा।

जन्म-काल—सं० १९३६।

रचना-काल—सं० १९५८।

ग्रंथ—(१) युवक-शिक्षा, (२) बाल्डवीर चरितावली, (३) इटली की स्वाधीनता, (४) सिक्खों का उत्थान और पतन, (५) पंजाब-केसरी महाराजा रणजीतसिंह, (६) पंजाब हरण, (७) वीर केसरी शिवाजी, (८) लोकमान्य तिलक, (९) पत्र-संपादन-कला, (१०) महाराणा प्रतापसिंह, (११) लाजपति महिमा, (१२) महात्मा गोखले, और (१३) स्वामी विवेकानंद।

विवरण—आपकी जन्म भूमि मथुरा है। कार्य्य-वश कलकत्ता में निवास करते हैं। आप ज्ञानसागर, शर्मन समाचार, स्वदेश-बंधु, आर्यमित्र आदि कई पत्रों के संपादक रह चुके हैं तथा उत्कृष्ट गद्य लेखक हैं। आपके ग्रंथों के विषय बहुत उपादेय और श्लाघ्य हैं। ऐसे ही ग्रंथों की आज आवश्यकता है।

नाम—(३९९९) परमानंद भाई।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—(१) गीतामृत, (२) मेवा-संदेश, (३) वीर वैरागी, (४) आप बीती, (५) योरप का इतिहास, (६) भारतवर्ष का इतिहास, (७) हिंदू-जीवन का रहस्य। 'आकाशवाणी' साप्ताहिक पत्रिका के संपादक रहे।

विवरण—करियाला, ज़िला जेलम निवासी भाई ताराचंद के पुत्र हैं। आप देश हित-संबंधी कामों में सदैव लगे रहते हैं। आप आर्य-समाज के नेता हैं, और शुद्धि तथा संगठन का काम बड़ी मुस्तैदी से कर रहे हैं। हिंदू-सभा के आप स्तंभ रूप हैं। देश में आपका बड़ा नाम है। आपके ग्रंथ बहुत उपादेय तथा सुपाठ्य और शिक्षाप्रद हैं।

नाम—(३९९६) भवानीदास कायस्थ उर्फ़ 'सुशील कवि' तालबेहट (झाँसी)।

कविता-काल—सं० १९९८।

ग्रंथ—(१) सत्यनारायण व्रत-कथा का अनुवाद, (२) श्रीमद्भागवत पुराण (पृष्ठ-संख्या प्राय: २०००, अप्रकाशित)।

उदाहरण—

जनम अन्न जिन दान न दीन्हा ;
ते कंगाल जन्म तिन लीन्हा।
पेट भरन सिला निधि धारा ;
पावत जीव कष्ट संसारा।
× × ×
दारा सुवन आपने जानहिं ;
निज समय तिन हित धन आनहिं।
× × ×

ग्रंथ—(१) कुल-कलंकिनी, (२) भयानक भूल, (३) पर लोक की बातें, (४) आध्यात्मिक रहस्यों में सामाजिक जीवन, (५) विवेकानंद की जीवनी, (६) रोम का इतिहास, (७) राजनीतिक विकास, (८) पाटलिपुत्र का ऐतिहासिक महत्त्व, (९) अनोखा रहीमाखाँ (पद्य), (१०) अभिमन्यु का आत्मदान (खंड काव्य) आदि ग्रंथ तथा लेख।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ (दूसरे) श्रीयुत महावीर प्रसादजी के पुत्र हैं। आपकी माताजी सुशिक्षिता थीं। इसी से बाल्यावस्था से ही आपको हिंदी साहित्य से अनुराग हो गया। यह पहले हाजीपुर में रहते थे और पश्चात् पटने में निवास करने लगे। आपने हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत तथा अँगरेज़ी में भी ज्ञान प्राप्त किया है। बिहार प्रांत में हिंदी-साहित्य का प्रचार करने का श्रेय आपको बहुत कुछ है। कुछ काल तक यह 'बिहार-बंधु' नामक साप्ताहिक पत्र के संपादक थे। कहा जाता है कि मुक्तावली काव्य ग्रंथ के कर्ता विधाता पं० नित्यानंद को यह अपना गुरु मानते थे।

उदाहरण—

(निर्बल सेना से)

गंगा की धारा बैठ घाट पर निरखो,
जो गई, सदा के लिये न आई फिर वो।
विश्राम हीन यह कल-कल करती धारा,
दौड़ी है जाती तनिक न चलता चारा।
पीछे देती थपकियाँ करोड़ों आती,
हैं लगातार बस यही समा दिखलाती।
जीवन की धारा उसी तरह है भाई,
भूमंडल में अज्ञात स्रोत से आई।
टकराकर बुद-बुद बने—जीव भी बनते,

कुछ समय फुदकते पैंठ अकड़कर चलते।
पर फिर तुरत ही टूट किधर हैं जाते,
नहिं तनिक किसी को पता कभी बतलाते।
कैसा कहकहा दिखार यार है जीवन,
होते ही जिसके पार, न आता कुछ मन।
नहिं आदि अंत का पता संत घबराते,
ज्ञानी विज्ञानी खोज खोज मर जाते।

नाम—(३१११) गंगाप्रसाद एम्० ए० डेपुटी-कलेक्टर, गोरखपुर में थे। अब सरकारी नौकरी छोड़कर टेहरी राज्य में जुडीशल मेंबर हैं।

जन्म-काल—१९३४।

ग्रंथ—(१) ज्योतिष चंद्रिका, (२) सूर्य सप्तारवनयाम। अँगरेज़ी में आपने ईसाई और मुस्लिम धर्मों पर हिंदू-मत का अग्र एक बड़े ग्रंथ में दिखलाया है।

विवरण—आपके ग्रंथ विद्वत्ता पूर्ण हैं।

नाम—(३१६०) देवीप्रसाद शुक्ल बी० ए०।

यह कानपुर, मोहल्ला कुरसवाँ के निवासी एक सज्जन, उत्साही पुरुष और हमारे परम मित्र हैं। आप गद्य हिंदी अच्छी लिखते हैं। एक साल सरस्वती पत्रिका का आपने बड़ी योग्यता से संपादन किया, और काव्यकुब्ज-सभा एवं पत्र में भी बड़ा काम किया। आपका जन्म सं० १९३४ में हुआ। आप कानपुर के कॉलेज में अध्यापक थे, तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आजकल यही काम करते हैं। देश हित के कार्यों में आप सदैव तत्पर रहते हैं। इस समय आप प्रयाग हिंदू बोर्डिंगहौस के वार्डन भी हैं। आप बड़े ही सज्जन पुरुष हैं।

नाम—(३१६१) बदरीप्रसाद त्रिपाठी, नवीनगर, ज़िला सीतापुर

जन्म—संवत् १९३४ वि०।

यह महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण शिवराजपुर के तिवारी हैं। आप रियासत नवीनगर बटेसर से पेंशन पाते हैं। समय-समय पर आपने बहुत-सी प्रासंगिक कविताएँ कीं। इसके अतिरिक्त आपने दो स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखे—अर्थात् (१) बदरी-संहिता और (२) बालरामायण। इनका काव्य ऐतिहासिक होने के कारण रोला छंद प्रधान है, जिसका उदाहरण निम्न लिखित है। आपके पुत्र मन्नूप्रसाद भी सत्कवि हैं।

बदरी-संहिता

जदी ना वा घरी जा दुन लिख्यो पत्र दिवान ;
जैचंद कनउजराय जान्यो गोर देश कुशान।
हेतु फ़ुरन नेह पूर्वाराण वश संयोग ;
घरी संयोगिन स्वय भय प्राप्त मन संभोग।
पाय ऐसी आधि जागी जोगिनी परचंड ,
खाँधि सैनर चली भारतखंड जारन चंड।

नाम—(३२६२) रघुनाथसिंह बी० ए० ठाकुर।

यह बाराबंकी में वकालत करते थे। आपका जन्म सं० १९३४ में शाहपुर में हुआ। आपके पिता ठाकुर गिरधारीसिंह एक प्रतिष्ठित ज़मींदार थे। आपने गद्य और पद्य दोनो में रचना करने का अभ्यास बालकपन से ही रक्खा। स्फुट छंदों के अतिरिक्त आपने लखनऊ-वर्णन छंदों में लिखा था, जो सरस्वती पत्रिका में निकला। आपकी कविता मनोहर होती थी। आपका शरीरांत सं० १९८९ में हुआ।

उदाहरण—

फ़ैशन नूतन और पुरानो दुन मदमें लखि लीजै ;
चौक नाय शाही को अनुभव पूरन मन सों कीजै।
रक्स नवाबी सबे पट्टे चूड़ीदार दुपट्टा ;

कान फुरेहरी हाथ रुमलिया जूता रंग बिरंगा।
बने लिफाफा ऊपर चितवैं फूँकहु सों उड़ि जावैं,
घर में बेगम नंगी बैठी आप नवाब कहावैं।
ऊँचे महल गली सकरी अति कोठे नरक कि दूती;
सबक पढ़ाय छीनि धन सरबस पीछे मारें जूती।
इत सित चलदल असित रवान सह भैरवनाथ बिराजैं;
तेजपुंज अभिराम स्याम तन कोटि काम छवि लाजैं।
प्रति रविवार देव दरसन लगि होति इहाँ बड़ि भीरा,
गुरु रवि चौस भीर-भारन चपि धरति धरनि नहिं धीरा।

नाम—(३९६३) रामावतार पांडेय एम्० ए० (साहित्याचार्य) पटना।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—(१) योरपीय दर्शन, (२) हिंदी-व्याकरणसार आदि अनेक ग्रंथ रचे हैं।

विवरण—आप धुरंधर पंडित एवं सरल और निष्कपट पुरुष थे। पटना-युनिवर्सिटी में कार्यकर्ता तथा साहित्य सम्मेलन के सभापति थे। आपका शरीरांत लगभग १९८७ में हुआ। गद्य के सुलेखक थे।

नाम—(३९६४) सुंदरलालजी कटरा, प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—(१) बालोपदेश, (२) बाल-पंचतंत्र, (३) बाल गीतावलि, (४) बालस्मृतिमाला, (५) बाल-भोज-प्रबंध, (६) बाल-रघुवंश, (७) योगवाशिष्ठसार, (८) रामाश्वमेध, (९) भारत में अँगरेज़ी-राज्य (यह ग्रंथ ज़ब्त हो गया है)।

विवरण—प्राचीन निवास-स्थान धनमऊ, ज़िला मैनपुरी। आप देश भक्त तथा राष्ट्रीय कार्यकर्ता एवं सुलेखक हैं। कई बार देश-प्रेम के

कारण जेल जा चुके हैं। व्याख्यान भी आप प्रवाह धारा से देते हैं। आपके ग्रंथ देश-भक्ति पूर्ण तथा चरित्र-शोधक हैं।

समय—संवत् १९९०

नाम—(२२९१) अजमेरीजी।

जन्म-काल—१९३२ के लगभग।

रचना-काल—१९९०।

रचना—ओड़छा राजवंश, बुंदेलखंड-वर्णन, समुद्र-वर्णन आदि अनेक छोटे-बड़े ग्रंथ हैं।

विवरण—यह महाशय चिरगाँव, ज़िला झाँसी निवासी मुसलमान हैं। इनके पूर्व पुरुष भाट थे और यह वैष्णव हैं। देखकर कोई इन्हें अहिंदू नहीं कह सकता। आशुकवि तथा सभा चतुर हैं। औरों की बोली, बाजा आदि की ध्वनियाँ सुगमता पूर्वक मुख से उतार सकते हैं। वर्तमान ओड़छा नरेश ने ४०) मासिक नियत कर दिए हैं, और इन्हें वहाँ साल में दो ही बार जाना पड़ता है। आपका साहित्य देश भक्ति पूर्ण, रोचक, सरस, नव विचार-युक्त, गंभीर तथा उत्कृष्ट है। वर्तमान कवियों में आपका पद उच्च है।

उदाहरण—

> ओ अपार जल राशि सर्वदा उथल पुथल क्यों होती है ?
> ओ उन्मादिनि, क्या क्षण भर भी कभी नहीं तू सोती है ?
> देवि दूर से दीख रहा है हिल्लोलित हृदय स्पंदन;
> साथ-साथ ही सुन पड़ता है कोमल कंठ करुण क्रंदन।
> आतीं और लौट जाती हैं मग्न भावनाएँ तेरी;
> जाती हैं, गिरती हैं, फिर भी करतीं हैं फिर फिर फेरी।
> क्षण-भर भी न छिपा रहता है उद्वेलित उर का उच्छ्वास,
> अश्रु धार प्रतिपल पड़ती है पैरों, पर पैरों के पास।

नाम—(२१६६) इंदुबालादेवी, बी० ए० ।

कविता—स्फुट छंद ।

उदाहरण—

तुझे बुलाऊँ धरूँ सामने तेरे मैं क्या अपनी भेंट,
तुझे रिझाऊँ कैसे प्रभुवर! यह चिंता करती आखेट।
मेरी छिन्न भिन्न वीणा में नहीं प्रभो! मीठी झंकार;
मुरली में मृदु तान नहीं है, है केवल भीषण हुंकार।
शब्द शब्द में भरा हुआ है मेरा रोदन और विलाप;
हो करुणेश! इसे सुन करके नहीं पसीजोगे क्या आप?

नाम—(२१६७) कन्हैयालाल माथुर।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

कविता-काल—सं० १९६० ।

यह कायस्थ महाशय माथुर स्टेशन 'बसवा', रियासत जयपुर (राजपूताना) के रहनेवाले हैं। (इलाक़े राज जयपुर में हमारा गाँव है बसवा—नहीं आबोहवा में जिसका सानी शहर या क़स्बा) व्रजभाषा तथा उर्दू में कविता किया करते हैं। इनके पिता किशोरीलालजी तथा पितामह गूजरमलजी कविता के रसिक थे। इनकी भी बचपन से कविता की ओर रुचि रही। आप सैकड़ों ग्रंथ प्राचीन कवियों के हस्त लिखित व मुद्रित देखकर संग्रह करते रहते हैं। इनके मकान 'बसवा' के पुस्तकालय में २ ६ हज़ार के लगभग पुस्तकें हैं। इनके रचे हुए हिंदी में 'माथुर-प्रेम पताका' तथा उर्दू में भावेश 'तरंग नौजवानी' है। आप श्रीविष्णु स्वामी सम्प्रदाय के शिष्य हैं। कुछ दिनों रियासत जयपुर की पुलिस में थानेदार रहे हैं।

उदाहरण—

आपस मैं न करो चुगली, न करो अपने मुख आप बड़ाई;
नाहिं हँसो अँगहीनन को, न लखो पर नारिन सुंदरताई।

भीर समै नहिं हारिए हिम्मत, नाहिं बनो पग के दुखदाई,
'माथुर' है सुख के सब यार, भजो वृषभान-कुमारि-कन्हाई।

नाम—(३२६८) गयाप्रसादजी (सनेही) कानपुर निवासी।

जन्म-काल—सं० १९३२ के लगभग।

रचना-काल—सं० १९६०।

रचना—स्फुट छंद।

विवरण—आप कानपुर-साहित्य-समाज में गुरुवत् माने जाते हैं। छंद भी अच्छे बनाते हैं। सुकवि के संपादक हैं। आपके पढ़ने का ढंग अच्छा है। कवि सम्मेलनों में प्राय सभापति होते हैं। आपकी रचना उच्च श्रेणी की है। त्रिशूल के नाम से उग्र राजनीतिक साहित्य भी रचा है।

नाम—(३२६९) गोपालदेवी।

ग्रंथ—उपसंपादिका गृहलक्ष्मी। इनके पति भी लेखक हैं। गोपालदेवी ने स्त्रियों के पढ़ने योग्य कई ग्रंथ लिखे हैं।

नाम—(३२७०) देवकीनंदन मिश्र (सनाढ्य) ग्राम पुटेरा (झाँसी)।

जन्म-काल—सं० १९३२।

कविता काल—सं० १९६०।

विवरण—कवींद्र केशवदासजी के वंशज।

ग्रंथ—(१) रामाष्टक (२) ग्रमलिकाष्टक, (३) स्फुट छंद-संग्रह।

एकन यों बल तात सुमात के,
एकन भ्रात सुभाह दिमान के;
कोउ सुरूप गुमान भरे,
कोउ भूप बड़े बल जंग-जहान के।

कोउ प्रवीन मृदंग मुबीनन,
कोउ महा निज गान मुतान के,
'देवकिनन्द' हैं शरणागत,
श्रीरघुनन्द की आन के बान के।

नाम—(३२७० अ) देवनारायण क्षत्रिय सटवा, जौनपुर, हाल राज्य कालाकाँकर जिला प्रतापगढ़ (लला)।

ग्रंथ—(१) रामेश मनोरञ्जनी, (२) वियोग वारिधि, (३) मधुविद्रोह, (४) पावन पचासक, (५) यशायाथ, (६) मार्तंड इतिहास, (७) प्रेम पदावली, (८) शृंगार सारसी।

जन्म-काल—सं० १९३४।

रचना-काल—सं० १९६०।

विवरण—पद्य और गद्य में उत्कृष्ट काव्य किया है।

गंग-तरंग उठैं कच-बीच म, वाम उमा अरधंग बसी है;
संग है भृंग भुजंग है संग भुजंगम भूपण भाल ससी है।
प्यारे लला पग सेवत ही तव सेवक की विपदा बिनसी है;
संकर आय सहाय करी अब मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है।

बरसो रहत नहिं गरजो करत नित,
हरजो हमारो होत सुनि कैरि धम-धम;
जुगनू चमाकैं बहु चातकी प्रलापैं अलि,
धुरवा धरा पै धरो दरदरी दम दम।
घहरि घहरि आवैं ठहरि-ठहरि जावैं,
पहरि-पहरि उठैं गगन में घम-घम;
बिज्जुगन बिरही बिचारी उर चीरन को
तीरन की लीन्यो मनो प्यारे लला चम-चम।

नाम—(३२७१) नरदेव शास्त्री, गुरुकुल-महाविद्यालय, ज्वालापुर।

जन्म-स्थान—निज़ामराज्यांतर्गत कर्नाटक प्रदेश।

ग्रंथ—(१) आर्य-समाज का इतिहास भाग १, (२) आर्य-समाज का इतिहास भाग २, (३) आर्य-समाज का इतिहास भाग ३ (अप्रकाशित), (४) गीताविमर्श, (५) कारावास की कहानी, (६) ऋग्वेदालोचन।

विवरण—आप ऋग्वेदी देशस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा पूने के नूतन मराठी विद्यालय (न्यू पूना-कॉलेज) में हुई। इसके पश्चात् आपकी उच्च शिक्षा पंजाब में हुई, और वहाँ से आप सं० १९५२ में एन्ट्रेंस तथा सं० १९६० में शास्त्री परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए। कलकत्ता से इन्होंने सं० १९६३ में वेदतीर्थ की उपाधि प्राप्त की। कुछ काल तक गुरुकुल कांगड़ी तथा गुरुकुल वृंदावन म यह महाशय आचार्य रह चुके हैं। 'भारतोदय' तथा 'शंकर' साप्ताहिक पत्रों के संपादन का भी इन्होंने काम किया है। आजकल आप राजनीतिक तथा शिक्षा-संबंधी काम कर रहे हैं। आपके समालोचना ग्रंथ विद्वत्ता पूर्ण एवं सुपाठ्य हैं।

नाम—(३९७२) बाबूराव विष्णु पराड़कर।

जन्म-काल—सं० १९३८ के लगभग।

रचना-काल—सं० १९६० ।

विवरण—आप काशी से निकलनेवाले दैनिक 'आज' के संपादक और यशस्वी लेखक हैं। दैनिक 'भारतमित्र' के संपादक भी रह चुके हैं। आपके सभापतित्व में सर्व प्रथम संपादक-सम्मेलन हुआ।

नाम—(३९७३) याज्ञिकत्रय, शाहपुरा, अलीगढ़।

रचना-काल—सं० १९६० ।

रचना—स्फुट लेख प्रचुरता से।

विवरण—मयाशंकर याज्ञिक चचा हैं, तथा जीवनशंकर और

भवानीशंकर भतीजे हैं। इन महाशयों के लेख बहुधा खोज, इतिहास, पुरातत्त्व आदि पर होते हैं। जीवनशंकरजी स्वार्थ-पत्र के संपादक भी थे। आप महाशयों ने कई कवियों के विषय में विनोद-संबंधी कार्य में हमारी सहायता की, जैसा कि स्थान-स्थान पर लिखा हुआ है। आपके लेखों में खोज, विद्वत्ता और श्रमशीलता के उदाहरण मिलते हैं।

नाम—(३२७४) रामनारायण मिश्र सारस्वत तथा काव्य तीर्थ, आरा, हाल छपरा।

जन्म-काल—सं० १९४३।

कविता-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—(१) जनक-बाग-दर्शन नाटक, (२) कंस-वध-नाटक, (३) विरुदावली, (४) भक्ति-सुधा, (५) स्फुट काव्य गद्य तथा पद्य।

विवरण—संस्कृत के बहुत अच्छे विद्वान् हैं। सरकार से काव्य-तीर्थ तथा कलकत्ता-युनिवर्सिटी से सारस्वत की उपाधि मिली। भाषा गद्य तथा पद्य के आप अच्छे लेखक हैं। दो नाटक भी आपने बनाए हैं।

नाम—(३२७५) रूपनारायण पांडेय, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९४१।

रचना-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—(१) शिवशतक, (२) श्रीकृष्णमहिम्न, (३) गीत गोविंद की टीका, (४) रमा उपन्यास, (५) पतित पति उपन्यास, (६) गुप्तरहस्य उपन्यास, (७) हरीसिंह नलवह, (८) आँख की किरकिरी उपन्यास, (९) फूलों का गुच्छा, (१०) चौबे का चिट्ठा, (११) नीति-रत्न-माला, (१२) कृष्ण-

लीला नाटक, (१३) तारा उपन्यास, (१४) कृत्तिवासीय रामायण बालकांड, (१५) रसिकरंजन पद, (१६) आचार प्रबंध, (१७) प्रसन्न राघव नाटक, (१८) शुकोक्तिसुधासागर, (१९) रमा-शुक-संवाद, (२०) बाल कालिदास, (२१) चंद्रप्रभ-चरित, (२२) आशा कानन, (२३) पत्र पुष्प आदि।

विवरण—भारत धर्म महामंडल में निगमागम चंद्रिका का कुछ दिन तथा माधुरी और सुधा का कई साल संपादन किया है। आपने बहुत-से बँगला-नाटक और उपन्यासों के अनुवाद किए हैं, तथा कुछ मौलिक ग्रंथ भी लिखे हैं। आप अच्छे गद्य लेखक तथा सुकवि हैं। यदि जीविका साधनार्थ आपको अनुवादों पर ही बहुत अधिक ध्यान न देना पड़ता, अथच मौलिक ग्रंथों की ओर आप झुकते, तो संभवत परमोच्च श्रेणी के कवि होते।

उदाहरण—

बुद्धि विवेक की जोति बुझी, ममता मद मोह घटा घनी घेरी,
है न सहारो, अनेकन हैं ठग, पाप के पन्नग की रहै फेरी।
त्यों अभिमान को कूप इतै, उतै कामना रूप सिलान की ढेरी,
रे चलु मूढ़ सँभारि अरे मन, राह न जानी है, रैनि अँधेरी।

नाम—(३३७१ ख) लक्ष्मणाचार्य महंत वाणीभूषण। नरसिंह देवला, ज़िला अमभेरा।

जन्म-संवत् १९३४।

रचना काल संवत् १९६०।

ग्रंथ—(१) अद्भुत रामायण, (२) शिक्षा शतक।

विवरण—आप रियासत ग्वालियर में श्रीलक्ष्मीकांत नरसिंह देवला के महंत हैं। ग्वालियर की मजलिस आम के मेंबर हैं। आप एक सुकवि हैं।

उदाहरण—

विराजे ये निकुंज में श्याम।
चहुँदिशि ललित लतायें लहरत कदंब छाँह अभिराम।
मधुर मधुर कालिंदी कलरव दिग लगावन सुख दैन;
केकी कूक लगाय पिरकिंदें चले बलैया लैन।
कटि पट पीत किंग है धारन अरु पटुका थहरात;
बनमाला धरनन लौं ढलरत जन-मन-मधुप सुहात।
अलकावली कपोलन झिम्की मनु कोमल रिशु ब्याल;
शोभित मुकुट शीश पै जगमग कलगी सुकी विशाल।
मकराकृति कुंडल श्रवनन महँ भाल तिलक की रेख;
आभा पसरि रही है चहुँदिशि लजत भानु छवि देख।

सवत् १९४५ से ६० तक के शेष कविगण

समय—सवत् १९४५

नाम—(२२७६) गिरिधारी सातलपुत्र अवधवासी।

ग्रंथ—श्रीकृष्ण-चरित्र। [तृ० त्रै० रि०]

समय—सं० १९४५।

नाम—(२२७७) गुरुदयाल त्रिपाठी वकील, रायबरेली।

जन्म काल—सं० १९२१ के लगभग।

रचना-काल—सं० १९४५।

विवरण—आप कई वर्ष तक 'कान्यकुब्ज हितकारी' के सपादक रहे और, इस समय रायबरेली में वकालत करते हैं। कान्यकुब्ज पत्रों में प्राय लेख लिखा करते थे। हमारे मित्र और परम सज्जन पुरुष हैं।

नाम—(२२७८) गगाबख्श ठाकुर ताल्लुकदार, रामकोट, सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १९२०।

ग्रंथ—श्रीकृष्ण-चन्द्रिका।

विवरण—साधारण श्रेणी। १६६९ में स्वर्गवासी हो गए।

नाम—(१९०१) दामोदरसहायसिंह, 'कवि किंकर', सीतल पुर (सारन)।

जन्म-काल—सं० १९१२।

रचना-काल—सं० १९४९ के लगभग।

ग्रंथ—(१) सुधा-सरोवर, (२) रसाल, (३) सखि-संदेश, (४) हिंदी-गीता, (५) मातृ भाव, (६) शिक्षा निबंधावली आदि।

नाम—(१९८०) शरारथीदास उपनाम दिव्य।

ग्रंथ—रामलीलासहायक। [पं० ग्रै० रि०]

नाम—(१९८१) परसदास बैरागी ग्राम घगोई, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १९२० के लगभग।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप अभी वर्तमान हैं। इन्होंने बीकानेर-राज्यांतर्गत बापूवाला ग्राम निवासी ठाकुर चतुरसिंह राठूदर को सम्बोधित करके २४ छंद 'चतुर चौबीसी' नाम से बनाए। उक्त ठाकुर साहब के द्वारा हमें यह कवि ज्ञात हुए हैं।

उदाहरण—

> सन को देत न त्रास वचन अमृत-सम बोलै।
> मन न भाव मलीन कबहुँ नहिं राखै बोलै।
> चलै निगम की चाल, छिद्र-छल सारे काढ़ै।
> लालच ममता कूटि-कूटि घर बाहिर काढ़ै।
> सब कूड़ कपट त्यागन करै, रात दिवस इश्वर रटै;
> कवि परसदास उन पुरुष को दरस किए पातक कटै।

नाम—(१९८२) भीमसेन ब्राह्मण, गुरुकुल कांगड़ी।

ग्रंथ—योगशास्त्र भाषा।

नाम—(३२८३) मधुरअली (मंजुअली), ग्राम पुरैना, रीवाँ राज्य।

काल—बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध।

ग्रंथ—(१) युगल विनोद-पदावली (२०८ पृष्ठों का कविता-संग्रह), (२) युगल विनोद, (३) युगल हिंडोल-लीला।

विवरण—आपका जन्म वैस क्षत्रिय-कुल में हुआ था, और आप आन्ध्र संप्रदाय के साधु हो गए। रीवाँ नरेश महाराज रघुराजसिंहजी के आप कृपा-पात्र थे। नृत्य तथा गायन-कला में प्रवीण थे। कहा जाता है, नृत्य करते समय आप पद बनाते जाते और गाते जाते थे। इनकी कविता विशेषतया बघेलखंडी हिंदी में हुआ करती थी, जो सच्ची उपासना के भावों से भरी रहती थी। प्राचीन प्रथा के साधारण कवि थे। [श्रीयुत भानुसिंह बघेल, रीवाँ द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

> समर सुवेल तें लगाय लेत धका भर,
> दोनो दल दीरघ देखात बड़े चाय सों।
> हँकरि-हँकारि लेत पकरि पछारि देत,
> ऐसे भट भारी हैं भिरत वेग धाय सों।
> रावण को बेटा निज कुल को दुखदेटा वेस,
> 'मंजुअली' जीतन को कीन्हें यश जाय सों;
> लखन लला के हाँके हाय इत कप मार्‌यो,
> बांच्यो नहिं इंद्रजीत एक हू उपाय सों।

नाम—(३२८४) रघुनाथदास।

ग्रंथ—(१) विप्र सुदामा की गुदिया, (२) द्रौपदीजू की गुदिया, (३) स्वामीजू की गुदिया, (४) हनुमानजी की गुदिया,



नाम—(३५९३) विश्वेश्वरदयाल चतुर्वेदी, मैनपुरी।
जन्म-काल—सं० १९२० के लगभग।
ग्रंथ—महिम्नस्तोत्र का पद्यानुवाद।
विवरण—यह मैनपुरी के प्रसिद्ध 'पच्छैया' खानदान के हैं।
नाम—(३५९४) वेंकटेश स्वामी।
ग्रंथ—आत्मप्रबोध। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(३५९५) शारदाप्रसाद कायस्थ, सैहर।
ग्रंथ—(१) क्षीरजमयी, (२) बुद्धि मोदक, (३) शारदाष्टक, (४) रसेंद्र विनोद, (५) शारदा विनय, (६) उर्दू-रामायण, (७) उर्दू-भागवत।
जन्म काल—सं० १९३० ।
विवरण—फ़ारसी तथा संस्कृत के अच्छे ज्ञाता।
नाम—(३५९६) शिवनरेशसिंह ताल्लुक़दार, जगतापुर, ज़िला बहराइच।
ग्रंथ—शृंगार शिरोमणि। [पृष्ठ २६, द्वि० त्रै० रि०]
नाम—(३५९७) शीलमणि राजकुमार।
ग्रंथ—इश्क़लतिका [च० त्रै० रि०]। अष्टजाम [प० त्रै० रि०]
नाम—(३५९८) शंभूनाथ भंडारी।
ग्रंथ—प्रेममालिका। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—सरयूप्रसाद के साथ बनाया।
नाम—(३५९९) श्रीगोविंद साहिब।
ग्रंथ—सत्यसार। [पं० त्रै० रि०]
नाम—(३६००) सुधामुखी।
ग्रंथ—हरिनाम जसावली। [पं० त्रै० रि०]
नाम—(३६०१) सुवस।
ग्रंथ—देखो [खोज० सं० १९०२]

नाम—(२६०२) सूर्यनारायण।

ग्रंथ—राजतरंगिणी। [प० त्रै० रि०]

नाम—(२६०३) संत हजूरी।

ग्रंथ—अवधूत योगसार। [प० त्रै० रि०]

नाम—(२६०४) हीरा सखी।

जन्म-काल—सं० १९२० के लगभग।

ग्रंथ—अनुभव रस।

विवरण—राधावल्लभी।

समय—संवत् १९४०

नाम—(२६०५) अंबिकाप्रसाद त्रिपाठी, कुदौली नरवल, कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९१४।

रचना-काल—सं० १९३९।

मृत्यु-काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) प्रबंध मंजरी, (२) स्वामी भास्करानंदजी का जीवन-चरित्र, (३) मूल निवासी, ठाकुर प्रयागसिंह का जीवन चरित्र, (४) आत्म चरित्र।

विवरण—संयुक्त प्रांत में कुछ समय तक आप सब-डेपुटी इंस्पेक्टर-स्कूल्स थे। [प० लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, क्राइस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर द्वारा ज्ञात]

नाम—(२६०६) कन्हैयालाल ब्राह्मण, ग्राम धुर्को, ज़िला गया।

ग्रंथ—(१) पिंगलसार, (२) समस्यापूर्ति, (३) सरल-श्रमकरी, (४) विद्या-शक्ति, (५) गया पद्धति।

जन्म-काल—सं० १९२१।

नाम—(२६०७) गुरुदीन भाट ईसानगर, खीरी।

ग्रंथ—(१) भुनेश्वरपञ्च भूषण, (२) स्वर्गीत विनोद, (३) सिंगार।
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(२६०८) गोकुलनाथ औदीच्य ब्राह्मण, बनारस।
ग्रंथ—पुष्पवर्षा।
विवरण—गद्य-लेखक।
नाम—(२६०९) गोपालदास देवगण शर्मा, लाहौर।
ग्रंथ—दयानंद-जीवन चरित्र, संगीतसार। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(२६१०) जानकीदास।
ग्रंथ—मल्लबोध।
कविता-काल—सं० १९२१ के पूर्व।
नाम—(२६११) बलदेवदास कायस्थ रठवारा, जिला बाँदा।
ग्रंथ—(१) जानकी विनय, (२) रामायण विष्णुपदी।
नाम—(२६१२) रघुनारायणपाल ठाकुर, हरिपुर, बस्ती।
ग्रंथ—(१) प्रेम लतिका, (२) रसिकानंद।
जन्म-काल—सं० १९२१।
विवरण—तोष श्रेणी।
नाम—(२६१३) रामलाल ब्राह्मण ग्राम जोगीं जिला राय-बरेली।
ग्रंथ—४ ग्रंथ भाषा में।
जन्म-काल—सं० १९२१।
नाम—(२६१४) लक्ष्मणसिंह तिवारी, मलसड।
जन्म-काल—सं० १९२१।
नाम—(२६१५) वाचस्पति तिवारी (चेत) गोनी, जिला हरदोई।
ग्रंथ—(१) पर्चांगदीपिका व नष्टजन्मदीपिका, (२) मानस-

प्रश्न दीपिका, (३) कर्मसिद्धांतदीपिका, (४) आश्चर्यदीपिका, (५) गर्जाक्रायकर्तासी, (६) जादू बगान्द, (७) फ़ारसी-शब्द-संज्ञा, (८) यामिनी योगमालिका, (९) समस्या प्रकाश, (१०) सत्यनारायण-कथा।

जन्म-काल—सं० १९२१।

नाम—(३६१६) हरिदास, बिजावर।

ग्रंथ—कृष्ण चरित परसाइत को। [प्र० त्रै० रि०]

रचना-काल—सं० १९२१ के पूर्व।

नाम—(३६१७) हितप्रीतमदास।

जन्म-काल—सं० १९२५।

रचना-काल—१९४६ के लगभग।

ग्रंथ—(१) हितधर्म प्रकाश, (२) वृंदारण्य विहार, (३) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदाय के अनन्य वैष्णव थे।

समय—संवत् १९४७

नाम—(३६१८) कैलाशनाथ वाजपेयी कानपुर।

ग्रंथ—(१) आर्यगीतावली, (२) दयानंद-जीवनी, (३) पौराणिक भ्रांतिहरण, (४) कृष्ण-लीला।

समय—सं० १९४७।

नाम—(३६१९) गोपालदास वल्लभशरण, बिजावर।

ग्रंथ—संगीतसागर।

नाम—(३६२०) गोवर्धनलाल प्रेम कवि।

ग्रंथ—(१) प्रेम प्रकाश, (२) हितपथदर्शन, (३) प्रेम जगदीश।

विवरण—पहले वृंदावन में रहते थे, फिर मिर्ज़ापुर में रहे।

नाम—(३६२१) गौरीशंकर उपनाम सुधाकर भट्ट।

ग्रंथ—(१) नीति भाषा (१९२२), (२) विश्व विलास नाटक।
विवरण—दतिया-वासी पद्माकर-वंशज हैं।
नाम—(३६२२) जगदेवलाल।
जन्म-काल—सं० १९१० के लगभग।
रचना-काल—सं० १९४७।
ग्रंथ—(१) शिवाष्टक, (२) हनुमानाष्टक, (३) रामाष्टक, (४) फाग-राग।
विवरण—शरीरांत हो गया है। संगीत तथा कला प्रेमी, भगवद्भक्त सज्जन सदाचारी थे। वोसरीह बलिया के श्रीवास्तव कायस्थ थे। चारों धामों की यात्रा कर आए थे।
नाम—(३६२३) जयपाल महाराज।
ग्रंथ—रसिक-प्रमोद।
जन्म काल—सं० १९२२।
विवरण—शूजा ज़िला मुंगेर-वासी।
नाम—(३६२४) (महाराज) जवानसिंह (जी)
ग्रंथ—(१) रस तरंग, (२) नग सिख, (३) स्फुट कविता।
रचना-काल—सं०१९५० के लगभग।
परिचय—महाराज पृथ्वीसिंहजी के पुत्र तथा वर्तमान महाराजा के पिता थे। यह परम वैष्णव श्रीकृष्ण के उपासक थे।
उदाहरण—

घन सो नोपत धुरत हैं बिज्जुलता-सी वाल,
इंद्र धनुष पट लसत मनु बुंदनि बेंदी भाल।

नाम—(३६२५) दामोदर उपनाम उरदाम चौबे।
ग्रंथ—उरदाम प्रकाश। [च० त्रै० रि०]
रचना-काल—सं० १९४७ के पूर्व।
नाम—(३६२६) देवीदत्त ब्राह्मण जैथी, पो० बिहार।

जन्म-काल—सं० १९२२।

नाम—(३६२७) पीतांबर भट्ट ओरछा के राजकवि।

ग्रंथ—प्रताप प्रभाकर। [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—पद्माकर-वंशज। अब प्राय ७० साल के हैं।

नाम—(३६२८) भगवत चरखारी-वासी।

ग्रंथ—हनुमत-पचासा।

रचना-काल—सं० १९२२ के पूर्व।

नाम—(३६२९) भैरववल्लभ ब्राह्मण।

ग्रंथ—पाप विमोचन (शिवस्तुति)। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(३६३०) महीपतिसिंह ठाकुर।

ग्रंथ—बालविनोद।

जन्म-काल—सं० १९२२। मृत।

नाम—(३६३१) मुशीलाल।

ग्रंथ—(१) दरिद्रता से श्रेय, (२) कहानियों की पुस्तक, (३) शील और भावना, (४) शीलसूत्र, (५) छात्रों को उपदेश, (६) यश चंद्रामणि-काव्य का हिंदी अनुवाद।

विवरण—अग्रवाल जैन लाहौर-कॉलेज में संस्कृत के अध्यापक थे। आपने अब पेंशन ले ली है।

नाम—(३६३२) यशोश्वर, रामचंद्रपुर।

ग्रंथ—(१) यशोश्वर-विहार, (२) यशोरामनोरंजनी।

जन्म-काल—सं० १९२२।

नाम—(३६३३) लक्ष्मणाचार्य गोस्वामी वाणीभूषण, मथुरा।

ग्रंथ—(१) सूतक श्राद्ध विषयक प्रश्नोत्तर, (२) मुहूर्त-प्रकाश, (३) औषध भविष्य, (४) वेद निर्णय, (५) श्राद्ध-

सिद्धि, (६) शिक्षातत्त्व, (७) भारत-सेवा (काव्य), (८) कृषक प्रबोध शतक।

जन्म-काल—सं० १९३२।

नाम—(३६३४) लक्ष्मीनारायण।

ग्रंथ—(१) विद्यार्थी बाल-लीला, (२) गोरस-शतक।

रचना-काल—सं० १९९२ के पूर्व।

नाम—(३६३५) लालमणि वैश्य रंटगज, फर्रुखाबाद।

ग्रंथ—प्रमोद प्रकाश।

जन्म काल—सं० १९३२।

नाम—(३६३६) शीतलप्रसादसिंह गहरवार इमामगंज, गया।

ग्रंथ—श्रीसीतारामचरितायन।

जन्म काल—सं० १९३२।

विवरण—आप सुयोग्य कवि और सज्जन पुरुष हैं।

नाम—(३६३७) हरिचरणसिंह, अजमेर।

ग्रंथ—(१) वीर नारायण, (२) बूँदी-राज चरितावली, (३) पृथ्वीराज-महोबा-समास, (४) अनगपाल पृथ्वीराज-समम।

जन्म-काल—सं० १९३२।

समय—संवत् १९४८

नाम—(३६३८) अजबदास।

ग्रंथ—अजबदास के झूलना। [तृ० त्रै० रि०]

रचना-काल—१९४८ (१९९३ की लिखित प्रति मिली)

नाम—(३६३९) अंगदप्रसाद।

जन्म-काल—सं० १९२२।

रचना-काल—सं० १९४८ के लगभग।

नाम—(३६७०) ईश्वरदत्त, (स्वर्गीय)।

रचना—मानस दीपिका।

नाम—(३६७१) ईश्वरीप्रसाद तिवारी।

ग्रंथ—(१) भाषा भगवद्गीता, (२) भाषा भागवत।

जन्म-काल—सं० १९२३।

उदाहरण—

तू बैठो ही रामायण नित गावै।
तोतो राम रूप अति सुंदर छिन छिन मन में ध्यावै।
बालकांड प्रभु चरण कमल शुचि जग नंदन सुख छावै;
निर्गुण सगुण स्वरूप भाव कहि कथा प्रसंग लगावै।
बाल केलि पद ऊर्ध्व भाव लखि सुरता भृगुपति जावै;
ब्याह उछाह अनेक भाँति जहँ उर विक्रम प्रकटावै।
अति सुंदर कटि देश अयोध्या जहँ सत धम दिखावै;
प्रभुता और बंधु की करनी सिय पतिव्रत सरसावै।

नाम—(३६७२) कुंदनलाल, फतेहगढ़।

जन्म-काल—सं० १९१९।

मृत्यु-काल—सं० १९५१।

विवरण—आपने सं० १९४८ में 'कवि व चित्रकार'-नामक मासिकपत्र फतेहगढ़ से निकाला था, किंतु पीछे आपके अस्वास्थ्य के कारण यह बंद हो गया। आप हिंदी के प्रेमी तथा उन्नायक थे। कवि व चित्रकार में समस्याएँ भी रहती थीं, जिनकी पूर्ति में आप कवियों का यथायोग्य सम्मान भी करते थे।

नाम—(३६७३) गोपालदास, आगरा।

जन्म-काल—सं० १९२३।

विवरण—भूतपूर्व संपादक जैनमित्र।

नाम—(३६४४) छोटेलाल कायस्थ, देउरी, जिला सागर।

जन्म-काल—सं० १९२३।

नाम—(३६४५) पन्नालाल ब्राह्मण, सुजानगढ़, बीकानेर।

जन्म काल—सं० १९२३।

ग्रंथ—४० पुस्तकें।

विवरण—भूतपूर्व संपादक जैन हितैषी।

नाम—(३६४६) पहलवानसिंह, मकर दरगर, फर्रुखाबाद।

जन्म काल—सं० १९२३।

ग्रंथ—(१) नलोपाख्यान, (२) संक्षिप्त क्षत्रिय-व्यवस्था, (३) राठौर वंशावली।

नाम—(३६४७) शीलजी ब्राह्मण (शील), बैरिहा राज्य, रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९२३।

नाम—(३६४८) सूरतसिंह सुधी कवि।

जन्म-काल—सं० १९२०।

रचना-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) सूरति विनोद, (२) रसवृष्टि।

विवरण—आपके पिता का नाम रामदीनसिंह था।

उदाहरण—

> रति सों रसीली गुन आगरी मनोज भरी,
> बैठि कुरसी पै प्रानप्यारी केलि घर में।
> सुंदर सँवारि केस देखति मुखारविंद,
> मूरति अनत सुभ आरसी लै कर में।
> तामें ओप आनन की माँगहू समेत छवि,
> सोहै तौन उपमा कहत कौन उर में।
> सीस पै त्रिबेनी लै कलंक धोइबे के काज,
> मानो धस्यो मुदित मयंक मानसर में।

समय—संवत् १९४९

नाम—(३६४९) अनिरुद्धदास।

समय—सं० १९४९।

ग्रंथ—पद्य पचीसी।

नाम—(३६५०) आत्माराम, बड़ौदा।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—वैदिक विवाहादर्श।

विवरण—आप बड़ौदा राज्य में शिक्षा के डाइरेक्टर हैं।

नाम—(३६५१) कान्हलाल (कान्ह) गया जेल, नवागढ़ी।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—(१) मराीम मकरंद, (२) सावन मयूर, (३) सुधा तरंगिणी, (४) आनंदलहरी, (५) आम्नाय-माहात्म्य, (६) नख शिख [खोज १९०३], (७) आनंदसार रामायण, (८) काम विनोद, (९) वैद्यनाथ माहात्म्य, (१०) हास्य पद्य रत्न, (११) सुहृद् शिक्षक, (१२) विश्वमोहिनी-संग्रह।

नाम—(३६५२) गजराजसिंह क्षत्रिय, धौंमहरा, ज़िला सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—(१) अजिरविहार, (२) घनश्याम घुँघुनियाँ, (३) समस्या प्रकाश, (४) गर्भ गीता, (५) छायापुरुष।

विवरण—हिंदी के सिवा आप फ़ारसी में भी कविता करते हैं। कविता अच्छी होती है।

नाम—(३६५३) गोपाललाल खत्री, लखनऊ।

समय—सं० १९४९।

जन्म-काल—सं० १९२५ के लगभग।

रचना—बहुत-से लेख।

विवरण—आपने कई साल तक नागरी प्रचारक पत्र को घाटा सहकर भी चलाया, यद्यपि आपकी आर्थिक दशा वैसी अच्छी नहीं थी। आप हिंदी के अच्छे लेखक हैं, और आपने कुछ उपन्यास आदि लिखे हैं।

नाम—(३६२४) गौरीशंकर, ग्राम गोमता, राज्य गोंडल (काठियावाड़ प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १६२४।

ग्रंथ—(१) सौंदर्य वार्ता, (२) सुर-सुधाकर, (३) गायन-सरग, (४) भागीराज जीवन।

विवरण—आपने ग्रंथ नं० १ तथा २ गोंडल दरबार तथा वीर-पुर दरबार के अनुरोध से रचे हैं। आप अभी विद्यमान हैं।

नाम—(३६२५) देवदत्त बाजपेयी (पुरवर)।

जन्म-काल—सं० १६१८।

विवरण—आपने ब्रजभाषा में बहुत-सी स्फुट रचना की है। इनका शरीरांत प्राय सं० १६८६ में हुआ।

नाम—(३६२६) देवादयालु, जालंधर।

जन्म-काल—सं० १६२४।

ग्रंथ—जीवन-यात्रा।

विवरण—आप आर्यसमाज के उपदेशक हैं।

नाम—(३६२७) दौलतरामजी रिटायर्ड, सब डिप्टी-इंस्पेक्टर।

नाम—(३६२८) पुत्तूलाल (श्याम) हलवाई, साँड़ी, जिला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १६२४।

ग्रंथ—(१) उरग विपमर्दन, (२) श्याम कवि-पदावली, (३) श्याम शतक, (४) श्याम कवि-छंद।

नाम—(३६५९) बलभद्रसिंह बहेड़ा, पोस्ट सैरीघाट, ज़िला बहराइच।

जन्म काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—(१) मधुरातक, (२) रामप्रियापचीसी, (३) देशदीपिका, (४) जातियुवती, (५) प्राणपियारी, (६) महारानी अष्टक, (७) पद्यप्रैमावली, (८) सवाई गुरुनानक, (९) नवनाथ, (१०) चौरासी सिद्ध।

नाम—(३६६०) चोवईराम ब्राह्मण, सरोई, ज़िला मिर्ज़ापुर।

जन्म-काल—सं० १९२२।

ग्रंथ—प्रताप विनोद।

नाम—(३६६१) भैरवदान, बीकानेर।

कविता-काल—सं० १९५६।

ग्रंथ—'अलंकार रत्ननिधि'।

विवरण—इन्होंने कच्छ दरबार के ठाकुर भैरीमलजी के अनुरोध से उक्त ग्रंथ रचा।

नाम—(३६६२) विश्वनाथ शर्मा, मथुरा।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—(१) स्मावर्तनीय मीमांसा, (२) वर्ण व्यवस्था, (३) सुराज्य तरंग।

नाम—(३६६३) विष्णुलाल शर्मा एम्० ए० बरेली, सब जज अलीगढ़।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—आर्यसमाज परिचय।

नाम—(३६६४) शिवदुलारे पाडेय, मसूरी।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—हनुमान तमाचा।

नाम—(२६६५) शिवप्रसाद, जौनपुर।

जन्म-काल—सं० १९२४।

समय—संवत् १९५०

नाम—(२६६६) अनंतराम पांडेय, रायगढ़।

जन्म-काल—सं० १९२८।

मृत्यु-काल—सं० १९६४।

ग्रंथ—(१) ईशोपनिषद् भाष्य, (२) रायगढ़ का भूगोल, (३) कपटी मुनि नाटक।

नाम—(२६६७) अमीरअली सैयद (मीर) देवरीकलाँ, सागर।

ग्रंथ—(१) नीति दर्पण की भाषा टीका, (२) बूढ़े का ब्याह, (३) बच्चे का ब्याह, (४) सदाचारी बालक आदि कई ग्रंथ।

विवरण—कविता अच्छी करते हैं। समस्या-पूर्ति के इनके बहुतेरे छंद देखने में आए हैं। आप सुकवि हैं।

नाम—(२६६८) अमृतलाल माथुर, नं० ४ चीनी पट्टी, कलकत्ता।

ग्रंथ—(१) राम-रसामृत (अमृत-सतसई), (२) कीर्ति-राघव।

विवरण—आपके पिता ने भी राम-सुधारस नाटक एक ग्रंथ बनाया है, ऐसा इनका कथन है, किंतु आपने उसके नाम का उल्लेख नहीं किया है। अतएव हमने इस बात को इसी स्थान पर लिख देना उचित समझा है।

नाम—(२६६९) अक्षयवरप्रसाद साही क्षत्रिय, ग्राम महुअवा, जिला गोरखपुर। [द्वि० त्रै० रि०]।

ग्रंथ—(१) पृथ्वी नाटक (गद्य पृष्ठ १२४), (२) (पृष्ठ १०४)।

विवरण—वेनिस के व्यापारी के आधार पर प्रथम ग्रंथ है।

नाम—(२६७०) उदयलाल कासलीवाल।

आपने कई जैन ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया है। खंडेलवाल जैन। सत्यवादी के भूतपूर्व संपादक।

नाम—(२६७१) उदितनारायणलाल कायस्थ, गाज़ीपुर।

ग्रंथ—बँगला से कई उपन्यासों का भाषानुवाद किया है।

विवरण—यह गाज़ीपुर के प्रसिद्ध पुरुष थे।

नाम—(२६७२) केदारनाथ चतुर्वेदी उपदेशक, ग्वालियर।

जन्म काल—सं० १६२६।

ग्रंथ—(१) कन्या-बोधिनी (गद्य पद्य), (२) स्त्री-रत्नमाला (गद्य)।

नाम—(२६७३) गोपालदास बरैया।

ग्रंथ—(१) सुशीला (२) जैनसिद्धांत-दर्पण, (३) जैन सिद्धांत प्रवेशिका।

विवरण—आगरा निवासी। दिगंबर संप्रदाय के धुरंधर विद्वान्।

नाम—(२६७४) चंद्रानंतोश्वी, वनकटा, आजमगढ़।

नाम—(२६७५) जीतसिंह बुंदेलखंडी।

रचना काल—सं० १६५०।

ग्रंथ—विनयरसामृत।

नाम—(२६७६) जुगुलानंद ब्राह्मण, गोंडा।

ग्रंथ—स्वभाव-सुधासिंधु, (पृष्ठ ४८), [द्वि० त्रै० रि०]।

नाम—(२६७७) दिग्विजयसिंह राजा।

ग्रंथ—छंद दस्तप्रात, [प० त्रै० रि०]।

नाम—(२६७८) द्वारिकाप्रसाद कायस्थ, खटचारा, जिला बाँदा।

जन्म-काल—सं० १६२४।

रचना-काल—सं० १९५० ।

ग्रंथ—(१) स्वर-प्रबोधिनी, (२) रेनुका-रामायण ।

विवरण—रियासत मैहर में इंस्पेक्टर थे ।

नाम—(३६७९) पजनसिंह कायस्थ, बुंदेलखंड ।

रचना-काल—सं० १९५० ।

ग्रंथ—प्रश्न प्रश्न ज्योतिष [प्र० त्रै० रि०] ।

नाम—(३६८०) रघुनाथप्रसाद कायस्थ, पैंचयारा, ज़िला बाँदा ।

जन्म-काल—सं० १९२५ ।

कविता-काल—सं० १९५० ।

ग्रंथ—(१) रामभक्ति भूषण, (२) रसिक विलास ।

नाम—(३६८१) रघुनाथ शाकद्वीपी, ग्राम रायनपुर, ज़िला पटना ।

जन्म-काल—सं० १९२५ ।

मृत्यु-काल—सं० १९६२ ।

ग्रंथ—(१) सुभाषित भूषणम् काव्यम् । (सूक्ति विलास २०० श्लोक), (२) उद्धव चम्पू (काव्य), (३) आर्याचारादर्श (२५६ श्लोकों का चित्रबंध युक्त काव्य), (४) रसमंजूषा (हिंदी कविता, सं० १९४७, विहार बंधु प्रेस पटना से मुद्रित ।

नाम—(३६८२) रणमल ।

जन्म काल—सं० १९२५ ।

ग्रंथ—प्रवीनसागर ।

विवरण—आप राजकोट के निवासी चारण थे । उक्त ग्रंथ राजकोट के राजा महिरावनजी ने बनाया था, किंतु वह अपूर्ण रह गया । कहा जाता है कि आपने ही इस ग्रंथ को पूर्ण किया है ।

नाम—(३६८३) राधामोहनजी रावत (चिंतामणि), मैनपुरी।

मृत्यु-काल—सं० १९७१ के लगभग।

ग्रंथ—(१) श्रीकृष्ण विनोद, (२) रस-लहरी (दो भाग)।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण मैनपुरी निवासी थे। प्रथम यह स्थानीय गवर्नमेंट स्कूल में अध्यापक रहे, तत्पश्चात् वहीं के अध्यक्ष (सुपरिंटेंडेंट) हो गए। कुछ काल पर्यंत यह वर्तमान मैनपुरी-नरेश के शिक्षक थे। आपके ग्रंथ स्टीम प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हो चुके हैं।

उदाहरण—

कहा कहौं छबि श्याम युगल की।
सिंहासन पर केशव रावत शोभा छवि मद मदन हरन की।
कोउ कर जोरि सामुहें ठाड़ी भूमि रही कोउ चमर दुरन की।
'चिंतामणि' निरि प्रेम पुलक तन देखि रहे यह भाँति बदन की।

नाम—(३६८४) रामदासराय, मुजफ्फरपुर।

जन्म-काल—सं० १९२६ (अनुमानत)।

रचना-काल—सं० १९९० के लगभग।

ग्रंथ—(१) पद्य पाठ, (२) दूत-वाक्य, (३) हिंदी-व्याकरण आदि।

विवरण—आप भूमिहार ब्राह्मण हैं। इस समय आप मुज़फ़्फ़रपुर कॉलेज में संस्कृत तथा हिंदी के प्रोफ़ेसर हैं।

नाम—(३६८५) रामेश्वरप्रसाद पांडेय, भरतपुर, रीवाँ राज्य।

जन्म-काल—सं० १९२० ।

कविता-काल—सं० १९५० के लगभग।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप रीवाँ-राज्य में संस्कृत अध्यापक हैं। हिंदी तथा संस्कृत, दोनो में आप कविता करते हैं। आपकी रचनाएँ 'रमेश' अथवा 'अध्यापक' उपनामों से यदा-कदा अंकित रहती हैं। [श्रीयुत भानुसिंह बघेल द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

आयो है असाढ़ गाढ़ पीतम वियोगिन को,
　　छायो नभ मेघ घोर चातक सुनायो है;
गायो है नवीन धार वारिद त्यों बार बार,
　　सरस सुगंध महि मंडल पै छायो है।
छायो है सुगान त्यों बहूटी छटा छोनी मध्य,
　　मोर-गण शोर करि आनँद मचायो है;
आयो है न नेक चित्त चंचला चहुँघा देखि,
　　दरद दवाय। मोहिं पीतम न आयो है।

नाम—(३६८६) लालजी चतुर्वेदी, असनी, फतेहपुर।

विवरण—साधारण श्रेणी। यह महाशय बैरीसाल के वंशधर हैं। आप महाराजा रीवाँ के यहाँ नौकर हैं।

नाम—(३६८७) शत्रुजीतसिंह (रीवाँ)।

ग्रंथ—(१) अमर-वंश-रत्नाकर, (२) चंद्रमहल शतु।

विवरण—छत्रपुर-नरेश महाराजा विश्वनाथसिंहजूदेव के पितृव्य।

नाम—(३६८८) शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी।

ग्रंथ—(१) गृहस्थ धर्म, (२) छहढाला की टीका, (३) नियमसार की टीका, (४) अनुभवानंद।

विवरण—आप लखनऊ निवासी अग्रवाल जैन थे। समाज की सेवा निःस्वार्थ भाव से करने के वास्ते आप प्रायः १९५९ में गृहत्यागी भी हो गए।

समय—संवत् १६२१

नाम—(३६८६) गणपति मिश्र, नोखा, आरा।

ग्रंथ—सुद्धि भाग प्रकाश, (२) सुतानंद प्रकाश, (३) ऋतु दर्पण, (४) सिद्धेश्वरी स्तोत्र अभिषेक।

जन्म-काल—सं० १९२६।

विवरण—वैदिक उपदेशक।

नाम—(३६९०) गौरीशंकर भट्ट, कानपुर।

ग्रंथ—आपने १० छोटे-छोटे ग्रंथ लिखे, जिसमें अलंकृत अक्षर लिखने के भी ग्रंथ हैं।

जन्म-काल—सं० १९२६।

विवरण—भूतपूर्व संपादक भट्ट भास्कर।

नाम—(३६९१) छगनलाल मिश्र मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९२६ के लगभग।

ग्रंथ—(१) मैनपुरी-राज्य का इतिहास (छंदोबद्ध अनुवाद), (२) उजड़ ग्राम Goldsmith s Deserted Village। (३) गंगा लहरी, (४) अभिमन्यु वध, (५) मसलों की वार्जिनिया।

विवरण—आप पं० भगवानदासजी के पुत्र चतुर्वेदी ब्राह्मण हैं। आगरा कॉलेज में उच्च शिक्षा पाई। कुछ समय तक मैनपुरी नरेश के निमू अमात्य तथा राजपुत्र के शिक्षक थे। आपका निम्न लिखित छंद गंगा लहरी के एक श्लोक का अनुवाद है।

इकबार कढ़ी जटा जूटन सों निपरे शिर शीश विहार ठयो।
यह पेरि अलिगन प्रेम विषै गिरिजा चित कोध अपार भयो।
चख लाल भए, कहि नाथ नहीं, यह डाह जो सौति समाइ गयो।
भयते जननी विजयी लहरैं जिनको शिव शीश उठाइ गयो।

नाम—(३६९२) जागेश्वरप्रसाद कायस्थ, मैहर, मदनपुर।

ग्रंथ—चित्र विलास।

विवरण—[श्रीयुत महेशप्रसादजी मिश्र, कुंजविहारीलाल का मंदिर नं० ८१, घासी कटरा, गोरखपुर से ज्ञात] मिश्रजी का कथन है कि इन कवि की जीवनी 'कवींद्र'-नामक मासिक पत्र में प्रकाशित हो चुकी है।

समय—संवत् १९५२

नाम—(२९९८) ग्योरीलाल शर्मा।

ग्रंथ—रमलताजिक। [द्वि० त्रै० रि०]।

नाम—(२९९९) कालीशंकर व्यास, काशी।

जन्म-काल—सं० १९३०।

मृत्यु-काल—सं० १९९२।

नाम—(३०००) कृष्णलाल वर्मा।

ग्रंथ—(१) चंपा, (२) राजस्थ का परिचय, (३) दलजीतसिंह।

नाम—(३००१) जगन्नाथ द्विज।

ग्रंथ—चौताल रसिक मनभावन। [पं० त्रै० रि०]।

नाम—(३००२) जगन्नाथप्रसाद।

ग्रंथ—फाग शिरोमणि [पं० त्रै० रि०]।

नाम—(३००३) जगन्नाथ शुक्ल, पुञ्जरत, अमृतसर।

ग्रंथ—(१) स्त्री शिक्षा-मणि, (२) व्याख्यान विधि।

विवरण—आप एक प्रसिद्ध लेखक तथा व्याख्याता थे।

नाम—(३००४) जयदेव उपाध्याय, ज़िला बलिया।

समय—सं०—१९५२।

नाम—(३००५) जयमंगलसिंह, दुर्जनपुर।

जन्म-काल—सं० १९२७।

नाम—(३००६) दामोदर (दंपति)।

जन्म-काल—सं० १९२७।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

नाम—(२७०७) देवीप्रसाद (प्रीतम) कायस्थ, बिजावर।

जन्म-काल—सं० १९२७।

ग्रंथ—(१) श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, (२) गो-गुहार, (३) बिहारी-सतसई का उर्दू पद्यमय अनुवाद, (४) बुंदेलखंड का खजूम।

नाम—(२७०८) पन्नालाल ब्रह्मभट्ट।

जन्म-काल—सं० १९२७।

ग्रंथ—(१) अमृत अलंकार, (२) गोविंद-गीत (नीति) सुधा।

विवरण—गृहाय नाना विषय संग्रह।

नाम—(२७०९) प्रभाकर भट्ट, दतियावासी।

कविता-काल—सं० १९९२।

ग्रंथ—(१) प्रताप कीर्ति-चंद्रोदय, (२) षड्ऋतु-वर्णन, (३) हमीररासा-कल्पवृक्ष, (४) अलंकार, (५) भर्तृहरि नीति-शतक, (६) यथार्थगीत-सरोज।

नाम—(२७१०) बालगोविंद, अनवरगंज, कानपुर।

जन्म-काल—१९२७।

ग्रंथ—(१) मनोभव तथा स्फुट छंद। (२) बजरंग पचीसी (च० त्रै० रि०)।

नाम—(२७११) सुखदीराम शर्मा गौड़, ज़िला मेरठ।

जन्म काल—सं० १९२७।

ग्रंथ—(१) सुमापितरत्न, (२) मुक्तालिप्राप्ति, (३) सत्यार्थ प्रकाश (संस्कृत)।

नाम—(२७१२) मेदनीप्रसाद पाँडे, मालगुज़ार परसापाली, रायगढ़, छत्तीसगढ़।

जन्म काल—सं० १९२७।

ग्रंथ—(१) पद्य मंजूषा, (२) विष्णु षट्पदी, (३) शृंगार-सुधा-समुद्र, (४) गणेशोत्सव दर्पण, (५) सत्संग विलास-समूह।

विवरण—आपकी रचना ब्रजभाषा में है। आपने छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध कवियों का वर्णन एक कवित्त में किया है।

उदाहरण—

सुकवि गोपाल मिश्र द्विज प्रहलाद कवि,
बाबू रेवाराम रतपुर के न थामे भ्रम।
हो गए अनेक ये छत्तीसगढ़ माहँ कवि,
और हैं अनेक बुद्धि विद्या माहिं नाहिं कम।
सुकवि अनंतराम आदिक औ सुंदरजू,
लोचनप्रसाद कवि मति सम अनुपम,
मंदिनाप्रसाद तैसे भानु कवि भानु सम,
है न अति उक्ति कवि और हैं मयंक सम।

नाम—(२७१३) शिवदास पाँडेय, मस्तूरी।

जन्म-काल—सं० १९२७।

समय—संवत् १९५५

नाम—(२७१४) कन्हैयालाल।

रचना-काल—सं० १९५३।

ग्रंथ—भजनानंदसुंदरी।

विवरण—भरतपुर-वासी श्रीमाल जैन।

नाम—(२७१५) कमलावती।

ग्रंथ—भगिनी-संदेश आदि स्फुट कविता।

विवरण—आप श्यामाचरणजी की धर्मपत्नी हैं।

नाम—(२७१६) कृष्ण ब्रह्मभट्ट, असनी।

विवरण—महाराज डुमराँव के यहाँ राजकवि हैं।

नाम—(२७१७) गणेशप्रसाद (गणाधिप) बिसवाँ, सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १९२८।

ग्रंथ—गणाधिप-सर्वस्व।

नाम—(३७१८) गोपालदीन शुक्ल (शुक्ल), बिसवाँ, सीतापुर।

जन्म काल—सं० १९२८।

नाम—(३७१९) गोपालवल्लभ।

ग्रंथ—हिताचार्य महाप्रभु का जीवन चरित्र।

विवरण—राधावल्लभीय सम्प्रदाय में हैं।

नाम—(३७२०) जगन्नाथप्रसाद कायस्थ, बनारस।

नाम—(३७२१) जौहरीलाल शर्मा।

ग्रंथ—(१) व्याकरण निदप, (२) चौतालकार राम नाटक (च० त्रै० रि०)।

नाम—(३७२२) पतितदास स्वामी।

ग्रंथ—(१) गुप्तगीता, (२) भजनावली। (प० त्रै० रि०)।

नाम—(३७२३) मुहम्मद अब्दुलसत्तार (प्यारे)।

जन्म-काल—सं० १९२८।

नाम—(३७२४) रामदासराय पुस्तकालयाध्यक्ष, मुजफ्फर-पुर, बिहार।

जन्म-काल—सं० १९२८।

रचना-काल—सं० १९५३।

ग्रंथ—(१) शिक्षा-लता, (२) भारत दशा-दर्पण, (३) लिंग-भ्रम-संशोधन, (४) हिंदी-करीमा।

समय—संवत् १९५४

नाम—(३७२५) इंद्रजीत कायस्थ, जिलहर, शाहजहाँपूर।

जन्म-काल—सं० १९२१।

रचना काल—सं० १९५४।

ग्रंथ—नारी धर्म विचार (चार भाग), राग खिमटा।

नाम (३७२६) खुलासीराम (द्विज हेम), जबलपूर छावनी।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

नाम—(२०२७) छुट्टनलाल शर्मा, परीक्षितगढ़, मेरठ ।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

ग्रंथ—भागवत परीक्षा ।

नाम—(२०२८) तुलसीसाहब ।

रचना-काल—सं० १९२४ ।

ग्रंथ—घटरामायण (तृ० त्रै० रि०) ।

विवरण—हाथरस निवासी थे । ग्रंथ में योग-मार्ग का वर्णन है ।

नाम—(२०२९) निरंजनानंद स्वामी ।

रचना-काल—सं० १९२४ ।

ग्रंथ—निरंजन लहरी च० त्रै० रिपोर्ट ।

नाम—(२०३०) बरजोरसिंह परिहार, ग्राम बिहार, जिला फर्रुखाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

ग्रंथ—नीति शतक ।

नाम—(२०३१) बलदेवप्रसाद, रतेली, ज़िला हरदोई ।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

ग्रंथ—(१) प्रकाशित यम, (२) सुख की खानि, (३) जीवनोद्धार, (४) स्त्री, (५) संताप शतक ।

नाम—(२०३२) बाबूलाल ब्राह्मण, अलवर ।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

नाम—(२०३३) बालमुकुंद शर्मा, मुरादाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

ग्रंथ—(१) सुधर्म-मंजरी (सनातन धर्म-व्याख्या), (२) मुक्तावलि-रामायण (दोहा चौपाई), (३) आल्हखंड रामायण (राम चरित्र), (४) आल्हखंड-महाभारत (कौरव पांडव-लीला) आदि ।

नाम—(३०२४) रामाधीन शर्मा, लखनऊ।
जन्म-काल—सं० १९२६।
ग्रंथ—पांचाल ब्राह्मणोत्पत्ति-मार्तंड।
नाम—(३०२५) शारदाप्रसाद (रसेंद्र), मु० मैहर।
जन्म-काल—सं० १९२६।
ग्रंथ—रसत्रयी आदि।
नाम—(३०२६) शिवनारायण झा, मैनपुरी।
जन्म-काल—सं० १९२६।
ग्रंथ—विश्वकर्म वंश निर्णय।
नाम—(३०२७) सपति, मुजफ्फरपुर।
जन्म-काल—सं० १९२६।
ग्रंथ—(१) नीति भूषण, (२) मंत्रविद्याद्वार-चंद्रिका।
नाम—(३०२८) सीताराम (निकुंज), पन्ना।
जन्म-काल—सं० १९२६। (प्र० त्रै० रि०)
ग्रंथ—(१) रस-मार्तंड, (२) रसकलानिधि आदि कई ग्रंथ रचे।

नाम—(३०२९) हरिपालसिंह क्षत्रिय, सोहिला मऊ, डाकखाना सडोला जिला हरदोई।
जन्म-काल—सं० १९२६।
कविता-काल—सं० १९५४।
ग्रंथ—(१) दुर्गा विजय, (२) प्रेम-गीतावली, (३) श्याम-पचासी, (४) प्रेम पचीसी, (५) उषा अनिरुद्ध-नाटक, (६) वसंत-विनोद, (७) पावस प्रमोद, (८) सिंहासन बत्तीसी पद्य, (९) प्रेम-पारिजात, (१०) हरिपाल विनोद, (११) ऋतु-रसांकुर, (१२) राग रंग, (१३) राग रत्नावली, (१४) वियोग-वज्राघात, (१५) चंद्रहास नाटक, (१६) इंदुमती उपन्यास।

विवरण—आप उत्साही और अच्छे लेखक थे।

नाम—(३७४०) त्रिलोचन झा।

जन्म-काल—सं० १९३२।

रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—(१) गणपतिशतक, (२) श्रीमंगलशतक, (३) ग्राम-विनोद, (४) जनेश्वर विलाप, (५) शोकोच्छ्वास, (६) श्रीकृष्ण मद विनोद, (७) मिथिला की वर्तमान अवस्था और आवश्यक सुधार, (८) सम्मेलन-संवाद, (९) जीवन चरित्र विषय, (१०) शकुंतलोपाख्यान।

विवरण—आप बतिया, ज़िला चंपारन निवासी कुमार झा के पुत्र हैं।

उदाहरण—

लोचन सुंदर रूप बसी मन पीतम माँहि लगावति है;
पूजत नेह सरोज-कली अरु तुंग उरोज चढ़ावति है।
धो यह स्वेद चले तन ते अथवा फरि नेह नहावति है,
यों विपरीत रमैं ललना की मनान को मंत्र जगावति है।

समय—संवत् १९६९

नाम—(३७४१) अनिरुद्धसिंह।

कविता-काल—सं० १९६९।

यह जैपालपुर, ज़िला सीतापुर निवासी पँवार ठाकुर थे। आपकी अकाल-मृत्यु प्राय २७ वर्ष की अवस्था में हो गई। आप हमारे मित्र थे, और कविता अच्छी करते थे। समस्या पूर्ति के पद्य काव्य सुधाधर पत्र में भेजा करते थे। आप साधारणतया एक बड़े ज़मींदार थे।

नाम—(३७४२) अमीर राय (मोर), सागर, मध्यप्रदेश।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—कुछ ग्रंथ रचे।

नाम—(२७४३) अम्बिलाल, मु० गौरा, बादशाहपुर।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—(१) पावस प्रेमलता, (२) वैद्य-वल्लभ, (३) माना दोषान्त आदि।

नाम—(३७४४)—कुंजदासी।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(३७४५) रञ्जजीत मिश्र रायबहादुर, एम्० ए०, ल् एल्० बी०, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९३१ ।

कविता-काल—सं० १९६६ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण पं० नारायणदासजी के सुपुत्र हैं। आपने प्रांतीय कौंसिल के उपाध्यक्ष, असिस्टेंट कलेक्टर, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट, ज़िला बोर्ड के सभापति आदि के पदों को योग्यता पूर्वक सुशोभित किया है। आपके लेख प्रायः 'सरस्वती' तथा 'चतुर्वेदी' पत्रिकाओं में निकला करते हैं।

नाम—(३७४६) गंगाधरप्रसाद शुक्ल (द्विज शुक्ल), पाता खोम, सीतापुर।

ग्रंथ—रघुवंश-भाषा।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३७४७) गोपालप्रसाद शर्मा रैसलपुर होशंगाबाद।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—(१) हित - चरित्र भ्रमोच्छेदन, (२) बालपचरत्न, (३) रमणीपचरत्न, (४) गीता की अमितबोधिनी टीका।

(४) जीवन-चरित्र परमहंसजी को (पृ० २२) (द्वि० त्रै० रि०) ।

नाम—(२७५७) मैथिल परमहंस ।

ग्रंथ—१७ ग्रंथ बनाए ।

नाम—(२७५८) यज्ञराजदास भाट, श्रीनगर ।

जन्म-काल—सं० १६३० ।

ग्रंथ—(१) जगदेव पसाली, (२) कोशकली, (३) रामायण माला, (४) सुरसागर तरंग, (५) अष्टोपाख्यान, (६) बैद्यनाथ माहात्म्य ।

नाम—(२७५९) रघुपतिसहाय कायस्थ, गौसपुर, ज़िला ग़ाज़ीपुर ।

जन्म-काल—सं० १६३० ।

ग्रंथ—तुलसीदास का जीवन-चरित्र ।

नाम—(२७६०) रामचंद्र आनंदराव देशपांडे, अध्यापक नार्मल स्कूल, नागपुर ।

जन्म-काल—सं० १६३० ।

ग्रंथ—(१) शिक्षा विधि, (२) महाजनी हिसाब ।

नाम—(२७६१) रामचंद्र (चंद) ब्राह्मण जैन, मथुरा ।

जन्म-काल—सं० १६३० ।

ग्रंथ—(१) ध्यानदीपान, (२) आनंद-कल्पद्रुम, (३) चंद्र-सरोवर आदि १२ ग्रंथ रचे ।

नाम—(२७६२) रामदीनजी (पराशर) ।

जन्म-काल—१६३० ।

रचना-काल—सं० १६५५ ।

ग्रंथ—(१) जगत-ज्योति-नाटक, (२) किशनगढ़ का भूगोल, (३) शांति शतक का पद्यमय अनुवाद इत्यादि पुस्तकें लिखीं, अथवा अनुवादित की हैं ।

विवरण—किशनगढ़ राज्य में शिक्षा विभाग के कर्मचारी हैं। वास्तव में इटावा के अंतर्गत जसवंतनगर के निवासी हैं। राजपूताने के कई स्कूलों में अध्यापक रहे हैं। कविता से विशेष प्रेम है।

उदाहरण—

ऊँचे को नवाइ देत, गिरे को उठाइ देत,
अचल चलाय चल विचल कराते हैं;
कायर कपूत डरपोक रण आगे करि,
मरे गीदड़ों को हम सिंह सों लड़ाते हैं।
तीर तरवारि मादक जो न हावे काज,
उसे एक व्यंग्य की जवान से कराते हैं;
शासक नवाब राजा खातिर हमारी करें,
रवि शशि जाँय नहीं कवि जन जाते हैं।

नाम—(३७६३) रामलाल द्विवेदी, वृंदावन।
जन्म-काल—सं० १९३०।
ग्रंथ—अयोनि-मैथुन प्रायश्चित्त-व्यवस्था।
विवरण—आप नं० २६६४ के लघु भ्राता हैं।

नाम—(३७६४) रामलोचन पांडेय पैकवलि, बलिया।
जन्म-काल—सं० १९३०।
ग्रंथ—(१) कर्म दिवाकर, (२) सभा सुधार।

नाम—(३७६५) रोसनसिंह, बगरा, ज़िला जालौन।
जन्म-काल—सं० १९३०।
ग्रंथ—वेदसार।

नाम—(३७६६) लक्ष्मण भगत पंजाबी।
जन्म-काल—सं० १९३०।
ग्रंथ—स्फुट पद।
विवरण—राधावल्लभी।

(७) जीवन-चरित्र परमहंसजी को (पृ० २२) (द्वि० त्रै० रि०) ।

नाम—(३०५७) मैथिल परमहंस ।

ग्रंथ—१७ ग्रंथ बनाए ।

नाम—(३०५८) यहराजदास भाट, श्रीनगर ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—(१) जगदेव पमाली, (२) कोशवली, (३) रामायण माला, (४) सूरसागर-तरंग, (५) महोपाख्यान, (६) वैद्यनाथ-माहात्म्य ।

नाम—(३०५९) रघुपतिसहाय कायस्थ, गौसपुर, जिला गाजीपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—तुलसीदास का जीवन-चरित्र ।

नाम—(३०६०) रामचंद्र आनंदराव देशपांडे, अध्यापक नार्मल स्कूल, नागपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—(१) शिक्षा विधि, (२) महाजनी हिसाब ।

नाम—(३०६१) रामचंद्र (चंद) ब्राह्मण जैन, मथुरा ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—(१) आनंदोद्यान, (२) आनंद-कल्पद्रुम, (३) चंद-सरोवर आदि १२ ग्रंथ रचे ।

नाम—(३०६२) रामदीनजी (पराशर) ।

जन्म-काल—१९३० ।

रचना-काल—सं० १९५५ ।

ग्रंथ—(१) जगत ज्योति-नाटक, (२) किशनगढ़ का भूगोल, (३) शांति-शतक का पद्यमय अनुवाद इत्यादि पुस्तकें लिखीं, अथवा अनुवादित की हैं ।

विवरण—किशनगढ़ राज्य में शिक्षा विभाग के कर्मचारी हैं। वास्तव में इटावा के अंतर्गत जसवंतनगर के निवासी हैं। राजपूताने के कई स्कूलों में अध्यापक रहे हैं। कविता में विशेष प्रेम है।

उदाहरण—

ऊँचे को नवाइ देत, गिरे को उठाइ देत,
अचल चलाय चल विचल कराते हैं,
कायर कपूत डरपोक रण आगे करि,
मरे गीदड़ों को हम सिंह सा दागते हैं।
तीर तरवारि बनदूक जो न होवे काज,
उसे एक मग्य की जबान से कराते हैं,
शासक नवाब राना खातिर हमारी रखें,
रवि शशि जावें नहीं कवि-जन जाते हैं।

नाम—(३७६३) रामलाल द्विवेदी, वृंदावन।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—अयोनि-मैथुन प्रायश्चित्त-व्यवस्था।

विवरण—आप नं० २६६१ के लघु भ्राता हैं।

नाम—(३७६४) रामलोचन पांडेय पैकवलि, बलिया।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) कर्म दिवाकर, (२) सभा सुधार।

नाम—(३७६५) रोसनसिंह, वगरा, जिला जालौन।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—वेदसार।

नाम—(३७६६) लक्ष्मण भगत पंजाबी।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(२७६७) वृंदावनराम (व्रजेश) ब्राह्मण, एड़ा, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) हनूमानशतक, (२) हनूमानपचक, (३) दानलीला।

नाम—(२७६८) श्यामसेवक मिश्र सनाढ्य, मऊगज, रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३० के लगभग।

काव्य समय—सं० १९२९।

ग्रंथ—प्राय तीस पुस्तकें बनाई हैं।

विवरण—यह महाशय महाराज रीवाँ के यहाँ नौकर हैं। आप संस्कृत, फ़ारसी, बँगला और हिंदी के अच्छे विद्वान् हैं। यह कविवर केशवदासजी के वंशज हैं।

नाम—(२७६९) हमीरदान चारण, ग्राम रीणी, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १९३० के लगभग।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप अभी कस्बा रीणी में अध्यापक हैं। [ठाकुर चतुरसिंह, राष्ट्रवर, बीकानेर द्वारा ज्ञात]

नाम—(२७७०) हरिमंगल मिश्र।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३०।

रचना-काल—सं० १९२९।

विवरण—भारतवर्ष के इतिहास पर आपका एक अच्छा ग्रंथ है।

नाम—(२७७१) हरिशंकर ब्राह्मण, हरदा।

जन्म-काल—सं० १९३०।

विवरण—आपको सेठ की पदवी भी प्राप्त है।

नाम—(२७७२) हितप्रसाद उपनाम गंगादास।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) स्फुट छंद, (२) हितपंचक। (तृ० त्रै० रि०)

विवरण—राधावल्लभी अनन्यवीर सेवक।

समय—संवत् १९५६

नाम—(२७७३) अनिरुद्ध चौबे 'शेखर' कवि।

जन्म काल—सं० १९२६।

रचना-काल—सं० १९५६।

मृत्यु-काल—सं० १९६८।

ग्रंथ—(१) शिवरात्रि-माहात्म्य, (२) चपकवरणी, (३) हनुमान-चालीसा।

विवरण—आप रायगढ़ छत्तीसगढ़ निवासी हैं।

नाम—(२७७४) गणेशप्रसाद मिश्र (घनेस), खागी, ज़िला खीरी।

जन्म-काल—सं० १९३१।

नाम—(२७७५) गदाधरसिंह ठाकुर, बगौछा, ज़िला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९३१।

नाम—(२७७६) गिरिधरप्रसाद (प्रेम), चिंदोखर, तहसील हमीरपुर।

जन्म-काल—सं० १९३१।

ग्रंथ—(१) व्रजलीलासुधा, (२) श्यामलीला-शतक, (३) प्रेम पाती।

नाम—(२७७७) गेंदालाल मिश्र, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९३१।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप प० तुलसीरामजी के पुत्र हैं। कलकत्ते में अध्यापन कार्य करते थे।

उदाहरण—

पटके तरु-मूलन सो सिगरे फल फूले सभी बन के गटके ;
झटके भटके अट नेकहु बीर लँगूल घुमाइ सभी झटके।
खटके हिय में बजरंग बली रण छाँड़ि भजे घर को सटके ;
लखि मूरति उग्र भयंकर-सी भटके घर प्राणन ही पटके।

नाम—(३०७८) बुधन चौहान, हल्दी।

जन्म-काल—सं० १९२९।

नाम—(३०७९) भगवानदीन द्विवेदी (आतम), गोड़वा, जिला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९२९।

ग्रंथ—(१) तमाखू माहात्म्य, (२) शिव विनय-पचीसी, (३) कलियुगी सन्यास नाटक, (४) हत्याहरण-माहात्म्य, (५) बारहमासा, (६) बनूठी भगतिन (उपन्यास), (७) सदुपदेश-दोहावली, (८) भ्रमप्यारी, (९) रसिकराज पचाशिका।

नाम—(३०८०) भागवती देवी ठकुराइन, गहलौ, कानपूर।

जन्म-काल—सं० १९२९।

विवरण—भूतपूर्व संपादिका 'वनिता हितैषी'।

नाम—(३०८१) भगीरथ दीक्षित (कवींद्र), ऊगू, जिला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९२९।

ग्रंथ—(१) गोकर्ण-माहात्म्य, (२) भाँग अफ़ीम विवाद, (३) अयाचक की याचना, (४) अनिरुद्ध विजय, (५) रुद्र चापान-युद्ध (पद्य)।

नाम—(३०८२) मनोहरप्रसाद मिश्र।

ग्रंथ—विरह-बोध।

विवरण—आप प० रामकृपा मिश्र के पुत्र हैं। पृथ्वीराज मासिक पत्र भी आपने निकाला था।

नाम—(३७८३) महेशप्रसाद ब्राह्मण, शंकरगंज, रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९२१।

नाम—(३७८४) राधामोहनजी मिश्र, मैनपुरी।

मृत्यु-काल—सं० १९८१।

ग्रंथ—(१) पुरुषसूक्त की ऋचाओं का अनुवाद, (२) विदुर-नीति का पद्यानुवाद।

उदाहरण—

सहस सीस पग आँखि हुइ पूरि रहा जग जोइ;
भीतर बाहर विश्व के पुरुष कहावै सोइ।
व्यापक है ब्रह्मांड में और देह न जोइ;
अंतरयामी सकल को पुरुष कहावै सोइ।

नाम—(३७८५) रामनाथ शुक्ल, भरतपूर, डा० दलुरी, ज़िला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९२१।

ग्रंथ—(१) शांति-सरोरुह, (२) ऋतु-रत्नाकर।

नाम—(३७८६) लालमणि, बाँदा।

जन्म-काल—सं० १९२१।

नाम—(३७८७) शीतलाबख्शसिंह सेंगर ठाकुर, काँथा, ज़िला उन्नाव।

जन्म काल—सं० १९२१।

नाम—(३७८८) श्यामजी शर्मा (पांडेय), भदावरि, आरा।

जन्म-काल—सं० १९२१।

ग्रंथ—(१) छंद विलास, (२) भाग्यशालिनी, (३) श्याम-विनोद, (४) खड़ी बोली पद्यादर्श, (५) प्रेममोहिनी, (६) निया-घवल्लभ, (७) श्यामरूपघन, (८) सत्यामृतकाव्य, (९) बाल-विधवा, (१०) गोहारि, (११) स्वाधीन विचार, (१२) विधवा-विवाह, (१३) पंडित मानी-मति-चपेटिका ।

विवरण—गद्य और ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली पद्य के लेखक ।

नाम—(२७०९) हरिगोविंद ।

जन्म-काल—सं० १९२१ ।

समय—सं० १९५७ ।

नाम—(२७१०) चक्रपाणि त्रिपाठी, सुहागपुर, होशंगाबाद ।

ग्रंथ—राम यश-कल्पद्रुम ।

समय—संवत् १९५७

नाम—(२७११) जगन्नाथसिंह चौहान, भोगियापुर, ज़िला हरदोई ।

जन्म-काल—सं० १९३२ ।

नाम—(२७१२) परमेश्वरदयालु (रसिक), तमोली, डुमराँव ।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

ग्रंथ—(१) भक्ति-लता, (२) गाने की चीज़ें ।

नाम—(२७१३) वचनेश मिश्र ।

जन्म-काल—सं० १९३४ । (देखने से ऐसा समझ पड़ता है ।)

विवरण—यह रियासत कालाकाँकर में नौकर हैं । आप गद्य और पद्य के अच्छे लेखक तथा बड़े उत्साही पुरुष हैं ।

नाम—(२७१४) महात्माराम ।

ग्रंथ—गीता सटीक (च० त्रै० रि०) ।

नाम—(२७१५) माधौ तिवारी, जौनपुर ।

ग्रंथ—अध्यात्म-रामायण-सार-संग्रह। (द्वि० त्रै० रि०)

नाम—(२७१६) सितावसिंह, बरखेरवा।

जन्म-काल—सं० १६२२।

ग्रंथ—स्फुट पद।

नाम—(२७१७) मुकुटलाल उपनाम रंग कवि।

ग्रंथ—दुर्गा भाषा।

नाम—(२७१८) मूलाराम।

ग्रंथ—विज्ञान निरूपिणी। (प० त्रै० रि०)

नाम—(२७१९) यज्ञराज, नोनरा ग्राम, ज़िला सुल्तानपुर।

जन्म-काल—सं० १६२२।

ग्रंथ—(१) जगदंब-यशावली (लगभग २०० छंद), (२) रामायणमाला (लगभग १२० छंद), (३) बैजनाथ विनोद (लगभग १२० छंद), (४) अमरकोश का उल्था, (५) स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप अमर कवि के पुत्र हैं। यह महाशय साहित्य-प्रेमी महाराज कमलानंदसिंहजी बनेली, श्रीनगर के आश्रय में रह चुके हैं। [ज़िला सारन (छपरा) निवासी महाशय कपिलदेवनारायणसिंहजी द्वारा ज्ञात।]

उदाहरण—

> जहाँ देवासुर-युद्ध शत वर्ष भो सम्मुख,
> दानव प्रबल फिरैं देवता पराने ;
> जहाँ देखि दीन दास अब कीन्हो अट्टहास,
> बदि लागी है अकास भए सुखी देवताने ;
> जहाँ दीन्हे काहू वस्त्र काहू भूषण मकान्ह,
> दीन्हे अस्त्र शस्त्र यज्ञराज न प्रमाने ;

तहाँ करै को बखान मखै मान की समान,
जहाँ चंदी आँहु तान भूमि भारी किरवान।
(जगदंब-यशावली से)

कोटिन रमा को रूप वारति तिन्का तोरि,
कोटि पूनो सरद सुधाधर गनै नहीं;
बिकस्यो बिभाति कारि सरस अनंत कंज,
सौरभित सोऊ नेकु आवत मनै नहीं।
रमा उमा सारदादि सुंदरी समेटि सब,
यहराज ताहू पर उपमा भनै नहीं;
कोमल भरू को मुख हेरि हरि कौसला सों
हौसला के मारे कछू बोलत बनै नहीं।
(रामायण-माला से)

नाम—(१८००) युगल माधुरी।

ग्रंथ—मानसमार्तंडमाला। (द्वि० त्रै० रि०)

नाम—(१८०१) रामगुलाम राम जायसवाल, जमोर, गया।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—(१) रामगुलाम-शब्द कोश, (२) शकुनावली-रामायण, (३) नाम-रामायण, (४) पैसा प्रताप-पचासा।

नाम—(१८०२) रामनारायण (प्रेमेश्वर) भाट, पछरावाँ, जिला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—प्रेमेश्वर बिरद-दर्पण।

नाम—(१८०३) रामलगनलाल (छेम) कायस्थ, मदरा, जिला गाजीपुर।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—(१) विनय-पचीसी, (२) शंकर-पचीसी। (द्वि० त्रै० रि०)

नाम—(३८०४) लज्जाशंकर झा बी० ए०, जबलपुर।

जन्म काल—सं० १९३२ के लगभग।

ग्रंथ—(१) साहित्य-सरोज, (२) शालोपयोगी पाठ्य पुस्तकें।

विवरण—आप गुजराती ब्राह्मण हैं। मध्य प्रादेशिक शिक्षा विभाग के एक प्रसिद्ध पुरुष हैं। स्थानीय ट्रेनिंग-कॉलेज के आप कुछ काल तक प्रिंसिपल रह चुके हैं, और इस समय वहीं मॉडल हाईस्कूल के हेडमास्टर हैं।

नाम—(३८०५) श्रीलालजी टट्टू, आगरा।

ग्रंथ—(१) संस्कृत प्रवेशिनी, (२) जिनदत्त-चरित्र, (३) सुभाषितरत्न संदोह टीका, (४) पारवनाथ चरित्र, (५) गोंमट-सार।

विवरण—पद्मावती पुरवाल के संपादक।

नाम—(३८०६) शंकरप्रसाद, माधवगढ़, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३२।

नाम—(३८०७) हरनंदनलाल शुक्ल 'हरिनंद', भगवतपुर, जिला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३२।

कविता-काल—सं० १९५७।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ (अप्रकाशित)।

समय—संवत् १९५८

नाम—(३८०८) किशनलाल बी० ए० ओसवाल, दरबार जोधपुर।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—मारवाड़-सरोज (साहित्य)।

नाम—(३८०९) केशवप्रसाद ब्राह्मण, सिसेंडी, लखनऊ।

सहाँ करै को बखान भजै भान की समान,
जहाँ चंदी ओंह तान झूमि मारा किरवान।
(जगद्ध-पद्यावली से)

कोटिन रतो को रूप वारति तिनूका तोरि,
कोरि पूनो सरद सुधाधर गनै नहीं;
विकस्यो विभाति कोरि अरब अनंत कंज,
सौरभित सोऊ नेक आवत भनै नहीं।
रमा उमा सारदापि सुंदरी समटि सब,
यज्ञराज ताहू पर उपमा भनै नहीं;
कोमल धरू को मुख हेरि-हेरि कौसला सों
हौंसला के मारे कछू बोलत बनै नहीं।
(रामायण-माला से)

नाम—(१८००) युगल माधुरी।

ग्रंथ—मानसमातडमाला। (द्वि० त्रै० रि०)

नाम—(१८०१) रामगुलाम राम जायसवाल, जमोर, गया।

जन्म-काल—सं० १६३२।

ग्रंथ—(१) रामगुलाम-शब्द कोश, (२) शकुनावली-रामायण, (३) नाम-रामायण, (४) पैसा प्रताप पचासा।

नाम—(१८०२) रामनारायण (प्रेमेश्वर) भाट, पछरावाँ, जिला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १६३२।

ग्रंथ—प्रेमेश्वर विरद-दर्पण।

नाम—(१८०३) रामलगनलाल (क्षेम) कायस्थ, मदरा, जिला गाजीपुर।

जन्म-काल—सं० १६३२।

ग्रंथ—(१) विनय पचीसी, (२) शंकर-पचीसी। (द्वि० त्रै० रि०)

नाम—(३८०४) लज्जाशंकर झा बी० ए०, जबलपुर।

जन्म-काल—सं० १९३२ के लगभग।

ग्रंथ—(१) साहित्य-सरोज, (२) शालोपयोगी पाठ्य पुस्तकें।

विवरण—आप गुजराती ब्राह्मण हैं। मध्य प्रादेशिक शिक्षा विभाग के एक प्रसिद्ध पुरुष हैं। स्थानीय ट्रेनिंग-कॉलेज के आप कुछ काल तक प्रिन्सिपल रह चुके हैं, और इस समय वहीं मॉडल हाईस्कूल के हेडमास्टर हैं।

नाम—(३८०५) श्रीलालजी भट्ट, आगरा।

ग्रंथ—(१) संस्कृत प्रवेशिनी, (२) जिनदत्त चरित्र, (३) सुभाषितरत्न संदोह टीका, (४) पार्श्वनाथ चरित्र, (५) गोंमट-सार।

विवरण—पद्मावती पुरवाल के संपादक।

नाम—(३८०६) शंकरप्रसाद, माधवगढ, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३२।

नाम—(३८०७) हरनंदनलाल शुक्ल 'हरिनंद', भगवंतपुर, जिला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३२।

कविता-काल—सं० १९५७।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ (अप्रकाशित)।

समय—संवत् १९५८

नाम—(३८०८) किशनलाल बी० ए० ओसवाल, दरबार जोधपुर।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—मारवाड़-सरोद (साहित्य)।

केशवप्रसाद ब्राह्मण, सिसेंडी, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९३२ ।

नाम—(३८१०) कृष्णकुमारलाल ।

जन्म-काल—सं० १९२८ ।

रचना-काल—सं० १९६८ ।

ग्रंथ—कई लिखे, पर छप न सके ।

विवरण—बाँसडीह, बलिया निवासी सज्जन सदाचारी पुरुष तथा हिंदी, फ़ारसी के विद्वान् एवं पुराने लेखक । 'भारत मित्र', 'बिहार बंधु' आदि प्राचीन पत्रों में लिखते थे । अब भी कभी-कभी कुछ लिख देते हैं ।

नाम—(३८११) चुन्नीलाल मिश्र, मैनपुरी ।

जन्म-काल—सं० १९४६ ।

कविता-काल—सं० १९६८ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण प० पुरुषोत्तमलालजी मिश्र के पुत्र हैं । आपकी कविता प्रायः 'चतुर्वेदी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ करती है ।

उदाहरण—

गिरि कानन कामद रूप धरणी सरिता सर सोहत उज्ज्वल ही ;
बनगे फल-फूल उछाहन सों झुकि भूमि रहे थिति मञ्जुल ही ।
अलि पुञ्जन गुंजन गूँजि रहीं कल कोकिल कीर कुलाहल ही ;
सविता-कल-मंडन हेरन को सुरभानी लता फिरि तें उलही ।

नाम—(३८१२) गोकुलानंदप्रसाद कायस्थ, मानपुरा, मुज़फ़्फ़रपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३३ ।

ग्रंथ—(१) कमला-सरस्वती, (२) पवित्र जीवन, (३) मोती, (४) गार्हस्थ्य जीवन, (५) अग्नि-भेंट, (६) सिंहावलोकन ।

विवरण—संपादक आत्म विद्या।

नाम—(३८१३) गोरेलाल (मजु मुशोज) कायस्थ, दतरी, सागर।

ग्रंथ—स्फुट समस्या-पूर्ति।

जन्म-काल—सं० १६३८।

मृत्यु-काल—सं० १६६२।

विवरण—कुछ दिन लक्ष्मी पत्रिका, गया के संपादक रहे।

नाम—(३८१४) ज्वालाप्रतापसिंह (लाल), पन्नाकोटा, राज्य सिगरौला।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—(१) पावस प्रेम-तरंग, (२) वसंत विनोद, (३) प्रेम बिंदु, (४) वैरन वसंत।

नाम—(३८१५) देवीसहाय ब्राह्मण, (मृत)।

ग्रंथ—गद्य-लेखक।

नाम—(३८१६) धनीराम शुक्ल, सुकलन पुरवा, ज़िला लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १६३३।

ग्रंथ—स्फुट कविता तथा समस्या-पूर्ति।

नाम—(३८१७) धर्मराज मिश्र, शिवपुर, दियर, ज़िला बलिया।

ग्रंथ—रसिक-मोहन।

नाम—(३८१८) नारायणलाल (रसलीन), गोस्वामी पारी, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १६३३।

ग्रंथ—श्रीकृष्णाष्टक।

नाम—(३८१९) बख्सराम पाँडेय (हल्दी निवासी) 'सुजान कवि'।

पं० बख्सरामजी पाँडेय की कविता ललित है। आपने ७ ग्रंथ रचे। (१) सं० १९२८ में बना हुआ तन्मयादर्श पृष्ठ ३० का ग्रंथ पद्यमय शृंगार-रस से परिपूर्ण है। (२) श्रीकृष्णचन्द्राभरण अलंकार ग्रंथ पृष्ठ १४० का भी पद्यमय है। यह ग्रंथ भी सं० १९२८ का रचा हुआ है। (३) कमलानन्दविनोद पृष्ठ १२४ का है। यह पद्यमय ग्रंथ भी सं० १९२८ का रचा हुआ है। (४) राधाकृष्ण विनय १९६० के संवत् में बना हुआ २४६ पृष्ठों का ग्रंथ है। इनके अतिरिक्त (५) रुक्मिणी उद्व्याह पृष्ठ ५०, (६) सदुपदेश मालिका पृष्ठ २० और (७) श्रीरामेश्वर भूषण पृष्ठ १०६ (अलंकार-ग्रंथ) भी आपने रचे। ये तीनों ग्रंथ सं० १९६० में ही बने। कृष्णचंद्र चंद्रिका सं० १९५० में रची गई (द्वि० त्रै० रि०)। आपने समस्या-पूर्ति में बहुतेरे छंद बनाए। आप एक सुकवि थे। समस्या पूर्ति के बहुतेरे छंद देखने में आए हैं।

नाम—(३८२०) बनवारीलाल वैश्य, जबलपुर।

ग्रंथ—(१) बारहमासा, (२) बनवारा-कथा।

जन्म-काल—सं० १९२३।

नाम—(३८२१) मंगलीलाल कायस्थ, पैतेपुर, बाराबंकी।

ग्रंथ—(१) मंगलकोष, (२) विनय चंद्रिका, (३) कृष्णप्रिया।

नाम—(३८२२) रणजीतमल्ल (श्याम), मझौली।

जन्म-काल—सं० १९२३।

विवरण—महाराज मझौली उदयनारायणसिंह के भाई थे।

नाम—(३८२३) राजधरलाल (राज), नृसिंहपुर।

जन्म-काल—सं० १९२३।

ग्रंथ—(१) विनयपचीसी, (२) हनुमान-पैंतीसा, (३) भगवद्गीता का अनुवाद भाषा।

नाम—(३८२४) रामशरण गुप्त 'शरण' बी० ए०, जोधपुर (मारवाड़)।

कविता-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) पतिव्रतादर्श (दमयंती), (२) शरणेश विनय, (३) शरणेश देशोद्धार, (४) शरण प्रेमोद्गार, (५) शरण-कौतूहल (अनुवाद), (६) मातृ-वंदना (अनुवाद), (७) शरणोक्तिमाला, (८) शरण-विचारमाला (गद्यमाला), (९) शरण गल्पमाला, (१०) शरणोल्लेख, (११) मित्र मंडली (उपन्यास), (१२) वैदिक धर्म, (१३) संस्कृतानुवाद (पाठशालोपयोगी पुस्तक)।

विवरण—आप श्रीयुत बाबू ललिताप्रसादजी के पुत्र तथा लाला बिहारीलालजी के पौत्र हैं। हिंदी-साहित्य में आपको अपनी बाल्यावस्था से ही रुचि थी।

ऊपर दिए हुए शरणोल्लेख-नामक ग्रंथ में अपने आत्मजीवन चरित्र पर लिख रहे हैं। वास्तव में आपका मुख्य निवास-स्थान बामोली, ज़िला अलीगढ़ है, किंतु इस समय आप जोधपुर में हेडमास्टरी के पद पर होने से वहीं रहते हैं।

समय—संवत् १९५६

नाम—(३८२५) केदारनाथ, बस्तर-स्टेट।

जन्म-काल—सं० १९३४।

रचना-काल—सं० १९९६।

ग्रंथ—(१) विपिन विज्ञान, (२) बस्तर-भूषण, (३) वसंत-विनोद, (४) मैथिलवध वार्ता, (५) श्रीसत्यनारायण।

नाम—(३८२६) गोविंददास (दास), रुगार, छतरपूर।

नाम—(३८१६) बनसराम पांडेय (हल्दी निवासी) 'सुजान कवि'।

पं० बनसरामजी पांडेय की कविता ललित है। आपने ७ ग्रंथ रचे। (१) सं० १९५८ में बना हुआ सम्मयादर्श पृष्ठ ३० का ग्रंथ पद्यमय शृंगार-रस से परिपूर्ण है। (२) श्रीकृष्णचन्द्राभरण अलंकार ग्रंथ पृष्ठ १४० का भी पद्यमय है। यह ग्रंथ भी सं० १९५८ का रचा हुआ है। (३) कमलानंदविनोद पृष्ठ १९८ का है। यह पद्यमय ग्रंथ भी सं० १९५८ का रचा हुआ है। (४) राधाकृष्ण विजय १९६० के संवत् में बना हुआ २४६ पृष्ठों का ग्रंथ है। इनके अतिरिक्त (५) रुक्मिणी उद्वाह पृष्ठ ५८, (६) सदुपदेश मालिका पृष्ठ २० और (७) श्रीरामेश्वर भूषण पृष्ठ १०९ (अलंकार ग्रंथ) भी आपने रचे। ये तीनों ग्रंथ सं० १९६० में ही बने। कृष्णचन्द्र चंद्रिका सं० १९७० में रची गई (द्वि० त्रै० रि०)। आपने समस्या-पूर्ति में बहुतेरे छंद बनाए। आप एक सुकवि थे। समस्या पूर्ति के बहुतेरे छंद देखने में आए हैं।

नाम—(३८२०) बनवारीलाल वैश्य, जयलपूर।

ग्रंथ—(१) बारहमासा, (२) बनजारा-कथा।

जन्म-काल—सं० १९३३।

नाम—(३८२१) मंगलीलाल कायस्थ, पैंतेपुर, बाराबंकी।

ग्रंथ—(१) मंगलकोष (२) विजय चंद्रिका, (३) कृष्णप्रिया।

नाम—(३८२२) रणजीतमल्ल (श्याम), मझौली।

जन्म-काल—सं० १९३३।

विवरण—महाराज मझौली उदयनारायणसिंह के भाई थे।

नाम—(३८२३) राजधरलाल (राज), नृसिंहपुर।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—(१) विनयपचीसी, (२) हनुमान-सँतीसा, (३) भगवद्गीता का अनुवाद आप।

नाम—(३८२४) रामशरण गुप्त 'शरण' बी० ए०, जोधपुर (मारवाड़)।

कविता-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) पतिव्रतादर्श (दमयंती), (२) शरणेश विनय,(३) शरणेश दयोद्धार, (४) शरण प्रेमोद्गार, (५) शरण-कौतूहल (अनुवाद), (६) मातृ-वंदना (अनुवाद), (७) शरणाग्निमाला, (८) शरण-विचारमाला (गद्यमाला), (९) शरण-गल्पमाला, (१०) शरणोल्लेख, (११) मित्र मंडली (उपन्यास), (१२) वैदिक धर्म, (१३) संस्कृतानुवाद (पाठशालोपयोगी पुस्तक)।

विवरण—आप श्रीयुत बाबू ललिताप्रसादजी के पुत्र तथा लाला बिहारीलालजी के पौत्र हैं। हिंदी साहित्य में आपको अपनी बाल्यावस्था से ही रुचि थी।

ऊपर दिए हुए शरणोल्लेख-नामक ग्रंथ में अपने आत्मजीवन चरित्र पर लिख रहे हैं। वास्तव में आपका मुख्य निवास स्थान बामोली, ज़िला अलीगढ़ है, किंतु इस समय आप जोधपुर में हेडमास्टरी के पद पर होने से वहीं रहते हैं।

समय—संवत् १९५९

नाम—(३८२५) केदारनाथ, बस्तर स्टेट।

जन्म काल—सं० १९३४।

रचना-काल—सं० १९५९।

ग्रंथ—(१) विपिन विज्ञान, (२) बस्तर-भूषण, (३) बसंत-विनोद, (४) मैथिलवध वार्ता, (५) श्रीसत्यनारायण।

नाम—(३८२६) गोविंददास (दास), रगार, छतरपुर।

जन्म-काल—सं० १९३४। (मृत)

ग्रंथ—(१) यात्रा की सैर, (२) पेट-चपेट, (३) स्वदेश-सेवा, (४) काव्य और लोक-शिक्षा, (५) प्रेम, (६) युद्धजलद-रत्नमाला, (७) सभा माहात्म्य, (८) नगार जाति का इतिहास।

नाम—(३८२७) चतुर्भुजसहाय कायस्थ, छतरपुर।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—(१) लंबे घूँघटवाला (पृ० १२२), (२) बाबू ताराचंद (पृ० १०६) (१९६२) उपन्यास गद्य, (३) बीबी हमीदा (पृ० १८२) (१९६४) उपन्यास गद्य, (४) मंत्री हरिश्चंद्र (पृ० ६०) (१९६५) (द्वि० त्रै० रि०), (५) मधु मालती।

विवरण—आपको हिंदी बालकपन से ही अच्छी लगती थी। अब भी उसी की सेवा में आपका बहुत समय व्यतीत होता है।

नाम—(३८२८) द्वारिकाप्रसाद ब्राह्मण, चाँदा।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—भारतव्यापचंद्रिका।

नाम—(३८२९) ब्रह्मानंद सन्यासी (मृत)।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—सुशीलादेवी (उपन्यास)।

नाम—(३८३०) महावीरप्रसाद कायस्थ, रुद्रपुर।

ग्रंथ—ईश्वर भक्ति, स्त्री जीवन-सुधार।

नाम—(३८३१) राजेंद्रप्रतापनारायणसिंह, हल्दी।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—पावस प्रलाप।

नाम—(३८३२) रामगोपाल मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९३६।

रचना-काल—सं० १९५९।

ग्रंथ—(१) पतिव्रतोपाख्यान, (२) ईश्वर-प्रार्थना, (३) त्रिकाल-संध्या, (४) प्रेम-तत्व, (५) अग्निहोत्र विधि।
विवरण—पिपरिया चाँदोरी, ज़िला भंडारा निवासी।
उदाहरण—

सत्संग में जा सज्जनों से पूछ लो तुम कौन हो ;
जा तपस्या योगियों से पूछ लो तुम कौन हो।
गुरुदेव के उपदेश द्वारा जान लो तुम कौन हो ;
विज्ञान से यह तत्त्व साधन मान लो तुम कौन हो।

नाम—(१८२२) रामदयाल कायस्थ, बेलखेड़ा, जबलपुर।
जन्म काल—सं० १६२४।
ग्रंथ—(१) तिथिरामायण, (२) कृष्ण चरित्र, (३) सुदर्शन-विचार, (४) भागवत-माहात्म्य, (५) हित की बातें, (६) चित्रकेतु-कथा, (७) ज्ञानोपदेश बारहमासी, (८) दीन विनयपचासा, (९) ज्ञान प्रश्नोत्तरी, (१०) संग्रह-शतक।
नाम—(१८२४) सीताराम ब्राह्मण, निज़ामाबाद, ज़िला आज़मगढ़।
जन्म-काल—सं० १६२४।
ग्रंथ—स्फुट कविता।
नाम—(१८२५) सुंदरलाल (श्याम), बाँदा।
जन्म-काल—सं० १६२४।
नाम—(१८२६) हनुमानप्रसाद त्रिपाठी, सिउली, कानपुर।
जन्म-काल—सं० १६२४।
ग्रंथ—(१) वेदशास्त्र तालिका, (२) दया धर्म लक्षण-व्याख्या, (३) दृष्टांत-सागर, (४) पापप्रध्वंसिनी, (५) हनुमानचालीसा, (६) मन-दोष दर्पण, (७) छुआछूत।
नाम—(१८२७) हरिवंशदीन।

विवरण—आप नागौर (बीकानेर) के महंत हैं।

नाम—(३८९०) चाँदसिंह विशारद, बीकानेर।

विवरण—आप हिंदी-गद्य तथा पद्य दोनों लिखा करते हैं।

नाम—(३८९१) चिरंजीलाल शर्मा, अलीगढ़।

विवरण—हिंदी के आशुकवि और गद्य-लेखक हैं।

नाम—(३८९२) चंपाराम मिश्र, रायबहादुर, बी० ए०, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९३२।

कविता-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—(१) लीलावती की भाषा टीका, (२) तुलसीदास-कृत कवित्त-रामायण पर टिप्पणियाँ, (३) रघुनाथ शिकार (प्राचीन ग्रंथ) का संपादन।

विवरण—आप प० खड्गजीतजी मिश्र के छोटे भाई हैं। यह डिपुटी-डाइरेक्टर ऑफ़् इंडस्ट्रीज़ रह चुके हैं। ठाकुर कवि कृत बिहारी-सतसई की टीका का आपने संपादन किया है। इस काल आपछतरपूर रियासत के दीवान हैं।

नाम—(३८९३) छबीलेलाल गोस्वामी।

जन्म-काल—सं० १९४३।

ग्रंथ लेखक (गल्प), पद्य पुष्प, पद्य पराग, पद्य-कलिका, पद्य पल्लव, पद्य मंजरिका एवं आदि भी प्रकाशित हो चुकी हैं (पृष्ठ संख्या कुल मिलाकर प्राय ३००)।

विवरण—आप पं० किशोरीलालजी गोस्वामी के पुत्र हैं। देश प्रेम के कारण आप कुछ काल जेल भी भुगत चुके हैं। आप मथुरा के मासिक पत्र 'मोहन' तथा अवाले के 'ब्राह्मण' के संपादक रह चुके हैं। इन्होंने वृंदावन-म्युनिसिपैलिटी में हिंदी का प्रचार किया।

नाम—(३८२४) छबीले गोस्वामी, फतेहपुर ।

नाम—(३८२५) जगपालसिंहजी ठाकुर, बीकानेर ।

ग्रंथ—महाराज पृथ्वीराज-चरित्र-बेलि (काव्य ग्रंथ) की टीका ।

विवरण—आप बीकानेर के राजपूत रईस हैं । आपका उक्त ग्रंथ अभी अप्रकाशित है ।

नाम—(३८२६) जनार्दन झा 'जनसीदन', बाजीतपुर, मुजफ्फरपुर ।

जन्म-काल—लगभग स० १६२६ ।

रचना काल—लगभग स० १६६० ।

ग्रंथ—(१) चरित्र-गठन, (२) पुरुष परीक्षा आदि ।

विवरण—आपने कुछ काल तक 'सरस्वती' के सपादकीय विभाग में काम किया है । प्राय ६० ६५ ग्रंथों का आपने अनुवाद किया है ।

नाम—(३८२७) जुगलकिशोर जैन ।

ग्रंथ—(१) आर्य मत लीला, (२) पूजाधिकार मीमांसा, (३) विवाह का उद्देश्य ।

विवरण—देवबद, ज़िला सहारनपुरवासी अग्रवाल जैन । जैन धर्म एव साहित्य के आप प्रसिद्ध समालोचक हैं ।

नाम—(३८२८) ज्योति स्वरूप शर्मा, गभीरपुरा, अलीगढ ।

ग्रंथ—(१) कृषि-चन्द्रिका, (२) सदाचार, (३) धर्म-रक्षा आदि प्राय ४० ग्रंथ लिखे हैं ।

नाम—(३८२९) ज्वालादत्त शर्मा, मुरादाबाद ।

ग्रंथ—प्रायश्चित्तादर्श ।

नाम—(३८३०) ज्वालादेवी ।

ग्रंथ—स्त्री शिक्षा-सबधी कई ग्रंथ ।

विवरण—आप डॉक्टर रामचद्र की धर्मपत्नी हैं ।

नाम—(३८६१) देवीप्रसाद उपाध्याय ।
ग्रंथ—सुंदर सरोजिनी उपन्यास ।
विवरण—आप राज्य रामनगर, चंपारन के दीवान हैं।
नाम—(३८६२) पन्नालाल बाकलीवाल ।
ग्रंथ—(१) नानार्णव, (२) स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा ।
विवरण—आप सुजानगढ़ बीकानेर निवासी खंडेलवाल जैन हैं, तथा खंडेलवाल जैन हितैषी के संपादक हैं ।
नाम—(३८६३) प्रभू दान चारण, मारवाड़ ।
विवरण—आश्रयदाता महाराजा जसवंतसिंह ।
नाम—(३८६४) प्रयागनारायण मिश्र, लखनऊ ।
ग्रंथ—(१) वशीशतक, (२) मनोरमा, (३) राघव गान, (४) अनुकाव्य ।
नाम—(३८६५) प्रियाअली टोडी ।
जन्म-काल—सं० १९२५ ।
ग्रंथ—हितजू के विनय के पद ।
विवरण—राधावल्लभी ।
नाम—(३८६६) बतोले उपाध्याय ।
रचना-काल—सं० १९६१ के पूर्व ।
ग्रंथ—दीक्षा प्रबंध ।
विवरण—समथरवासी ।
नाम—(३८६७) बैजनाथसिंह 'इंदु', काशीपुर, ज़िला उन्नाव ।
जन्म-काल—सं० १९३५ ।
रचना-काल—अनुमानतः सं० १९६० ।
ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ ।
विवरण—आप कवि क्षमापति-चंद्रिकाप्रसादसिंहजी (नं०

२२७९) के छोटे भाई तथा श्रीयुत बख्तसिंहजी के पुत्र हैं। [फु० वाघसिंह क्षत्रिय, पिपरसंड (ज़िला लखनऊ) द्वारा ज्ञात]

नाम—(३८६८) मनोहरप्रसाद 'चेत', पाठकपुर, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२१।

रचना-काल—लगभग सं० १९६०।

विवरण—आपने दो ग्रंथ बनाए हैं, ऐसा श्रीवाघसिंह क्षत्रिय, पिपरसंड (लखनऊ) का कथन है।

नाम—(३८६९) माधवदास स्वामी, नागौर।

ग्रंथ—(१) राम-कीर्ति-सागर (महाकाव्य), (२) भगवद्-गीता का पद्यात्मक भाषांतर।

विवरण—आप पं० लक्ष्मण शास्त्री, बीकानेर के भाई हैं, ऐसा कहा जाता है। यह महाशय संस्कृत तथा हिंदी के अच्छे ज्ञाता हैं।

नाम—(३८७०) राधेश्याम मंत्री एडवर्ड हिंदी पुस्तकालय, हाथरस।

जन्म काल—सं० १९३९।

ग्रंथ—स्फुट छंद एवं लेख।

नाम—(३८७१) रामनारायण पांडेय कान्यकुब्ज, पैंतेपुर, ज़िला सीतापूर।

जन्म-काल—सं० १९३६।

रचना-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—(१) जैमिनिपुराण (आल्हा), (२) जन रघुनाथ जीवन चरितामृत, (३) रमारामा शतक।

विवरण—अच्छी कविता की है। काव्य के बड़े उत्साही हैं।

हमने परलोकवासी मगलदासजी के नाम कार्ड भेजा था, ... आपने उसका उत्तर और १४ कवियों का जीवन - चरित्र तथा उदाहरण तुरंत हमारे पास भेजे।

उदाहरण—

> आगे राम पाछे कटि काछनी पितबर की,
> पाछे बसु दच्छिन सा लच्छन लसे रहैं।
> नाहैं उर बनमाल मोतिन की माल पुनि,
> भाल पै तिलक श्रुति कुंडल रसे रहैं।
> सुखमा मुकुट सीस सरसै कलित कंठ,
> कंठ हू ललित कल कौतुक कसे रहैं,
> धारे धनु बान अरि मान के मथन वारे,
> जानकी समेत मेरे मानस बसे रहैं।

नाम—(१८७२) रामलालजी मनिहार, बलिया।

जन्म-काल—सं० १९१५।

ग्रंथ—शंभु-पचासी।

नाम—(१८७३) रामलाल शर्मा, मैनपुरी।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप स्थानीय स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, और पश्चात् वर्तमान मैनपुरी नरेश के यहाँ रहे।

नाम—(१८७४) लक्ष्मीनारायण, दतिया।

जन्म-काल—सं० १९१५।

ग्रंथ— हितजी का प्रागट्य स्फुट छंद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१८७५) लालारामजी शास्त्री।

ग्रंथ—(१) आदि-पुराण, (२) उत्तर पुराण, (३) धर्म प्रश्नोत्तर, (४) श्रावकाचार, (५) तत्त्वानुशासन, (६) चरित्र-सार,

७) शांतिनाथपुराण, (८) श्रुतावतार कथा, (९) इष्टोपदेश, (१०) षोडश संस्कार-विधि।

विवरण—आप 'जैन गजट' के सहायक संपादक हैं।

नाम—(३८७६) श्रीपालचंद्र यति।

रचना-काल—सं० १९६२ के पूर्व।

ग्रंथ—जैन-संप्रदाय शिक्षा।

विवरण—बीकानेर-निवासी।

नाम—(३८७७) श्रीराम नेव (रायसाहब)।

ग्रंथ—(१) साँची शिला-लेख व ताम्रपत्र, (२) राज्य ओरछा, (३) बुंदेल-वंश-वर्णन, (४) बुंदेला राज्य की समालोचना, (५) इतिहास ओरछा, (६) प्राचीन भारत।

विवरण—आप रियासत बिजावर के दीवान तथा हमारे मित्र थे।

नाम—(३८७८) संतदास।

जन्म काल—सं० १९३५।

ग्रंथ—(१) वृहद्ध्यान, (२) सेवाशतक, (३) मानसी भावना, (४) राधा-सुधा निधि की टीका।

विवरण—राधावल्लभी प्रसिद्ध महात्मा।

नाम—(३८७९) सूर्यकुमार वर्मा, भदौरिया।

जन्म-काल—सं० १९३५।

ग्रंथ—(१) अशोक का जीवन चरित्र, (२) बाल भारत, (३) गारफ़ील्ड, (४) धम्मपद, (५) मित्र-लाभ।

विवरण—ग्वालियर में राजकर्मचारी हैं।

नाम—(३८८०) हरिहरप्रसाद परिव्राजकाचार्य।

ग्रंथ—(१) तुलसीतत्त्वभास्कर, (२) तिलकतत्त्व।

नाम—(३८८१) हरीराम उस्ताद, मैनपुरी।

मृत्यु-काल—लगभग सं० १९७६।

हमने परलोकवासी भगवद्दासजी के नाम कार्ड भेजा था, उस आपने उसका उत्तर और १५ कवियों का जीवन - चरित्र तथा उदाहरण तुरंत हमारे पास भेजे।

उदाहरण—

> आजे राम काछे करि काछनी पितंबर की,
> पाछे बसु दच्छिन सा लच्छन लसे रहैं ;
> साह उर बनमाल मोतिन की माल पुनि,
> भाल पै तिलक श्रुति कुंडल रसे रहैं।
> सुखमा मुकुट सीस सरसै कलित कंठ,
> कंठ हू ललित कल कौतुक कसे रहैं ,
> धारे धनु बान अरि मान के मथन वारे,
> जानकी समेत मेरे मानस बसे रहैं।

नाम—(१८७०) रामलालजी मनिहार, बलिया।

जन्म-काल—सं० १९१९।

ग्रंथ—शम्भु-पचासी।

नाम—(१८७३) रामलाल शर्मा, मैनपुरी।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप स्थानीय स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, और पश्चात् वर्तमान मैनपुरी नरेश के यहाँ रहे।

नाम—(१८७४) लक्ष्मीनारायण, दतिया।

जन्म-काल—सं० १९३९।

ग्रंथ— हितजी का माहात्म्य स्फुट छंद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१८७५) लालारामजी शास्त्री।

ग्रंथ—(१) आदि पुराण, (२) उत्तर पुराण, (३) धर्म प्रश्नोत्तर, (४) श्रावकाचार, (५) तत्त्वानुशासन, (६) चरित्र-सार,

७) शान्तिनाथपुराण, (८) श्रुतावतार कथा, (९) इष्टोपदेश, १०) षोडश संस्कार विधि ।

विवरण—आप 'जैन गज़ट' के सहायक संपादक हैं।

नाम—(३८७६) श्रीपालचंद्र यति ।

रचना-काल—सं०१९९२ के पूर्व ।

ग्रंथ—जैन-सम्प्रदाय शिक्षा ।

विवरण—बीकानेर निवासी ।

नाम—(३८७७) श्रीराम सेठ (रायसाहब)।

ग्रंथ—(१) साँची शिला लेख व ताम्रपत्र, (२) राज्य ओरछा, (३) बुंदेल-वंश वर्णन, (४) बुंदेला राज्य की समालोचना, (५) इतिहास ओरछा, (६) प्राचीन भारत ।

विवरण—आप रियासत बिजावर के दीवान तथा हमारे मित्र थे।

नाम—(३८७८) सतदास ।

जन्म काल—सं० १९३२ ।

ग्रंथ—(१) वृहद्ध्यान, (२) सेवाशतक, (३) मानसी भावना, (४) राधा-सुधा निधि की टीका ।

विवरण—राधावल्लभी प्रसिद्ध महात्मा ।

नाम—(३८७९) सूर्यकुमार वर्मा, भदौरिया ।

जन्म काल—सं० १९३२ ।

ग्रंथ—(१) अशोक का जीवन चरित्र, (२) बाल भारत, (३) गारफ़ील्ड, (४) धम्मपद, (५) मित्र-लाभ ।

विवरण—ग्वालियर में राजकर्मचारी हैं ।

नाम—(३८८०) हरिहरप्रसाद परिव्राजकाचार्य ।

ग्रंथ—(१) तुलसीतत्त्वभास्कर, (२) तिलकतत्त्व ।

नाम—(३८८१) हरीराम उस्ताद, मैनपुरी ।

मृत्यु-काल—लगभग सं० १९७३ ।

ग्रंथ—स्फुट ख़्याल।

विवरण—आपके रचे हुए ख़्याल प्रायः गवैए गाया करते हैं।

उदाहरण—

माया मोह कि महिमा न मस्ती चढ़ती मस्तानों को,
मिलती है चलचल सज़ा फिर ऐसे वेईमानों को।
पढ़ो शास्त्र का करै मुलाला बाँचें वेद-पुरानों को,
लयी धोती पहिन-पहिन जाते गंगा-असनानों को।
भगवत में नहिं भक्ति भावना, पूजें भूत मसानों को;
निज नारिन का जतन करावें घर उलवा के स्यानों को।
पेट के कारन डाम चलावे फिरते दो दो दानों को,
मिलती है चलचल मज़ा फिर ऐसे वेईमानों को।

इकतालीसवाँ अध्याय

उत्तर नूतन परिपाटी

संवत् १९६१ से १९७८ तक

उत्तर नूतन परिपाटी के समय में राजनीतिक आंदोलन का देश में बल बढ़ा। बंग भंग से बंगालियों को बड़ा क्षोभ हुआ, और भारतीय शेष प्रांतों ने भी उनका साथ दिया। १९६३ में मुसलमानों का एक डेपुटेशन बड़े लाट साहब लॉर्ड मिंटो की सेवा में उपस्थित हुआ, और वहाँ से हिंदुओं के प्रतिकूल मुस्लिम अधिकार-वृद्धि के मामले में उसे आश्वासन के वचन मिले। १९६६ ६७ में भारत सचिव लॉर्ड मार्ली ने कुछ राजनीतिक उन्नति की, जिससे देश में कुछ सांत्वना हुई। १९६८ में सम्राट् की ताजपोशी का जलसा दिल्ली में हुआ, जिसमें बंग भंग का प्रश्न ठीक-ठीक निर्णीत हो गया। बंगाल के दोनों भाग एक हो गए, किंतु बिहार बंगाल से अलग हो

गया। बंगालियों को बिहार से बहुत लाभ था, क्योंकि दोनों प्रांत एक में होने से विद्वत्ता आदि में अधिक उन्नत होने के कारण बंगाली लोग बिहार के भाग की नौकरियाँ तथा अन्य पद अधिकता से लिए हुए थे। बिहार के अलग होने से बिहारियों के साथ न्याय हुआ, जिससे वे प्रसन्न हो गए, तथा हानि सहते हुए भी अपने पक्ष की निर्बलता के कारण बंगाली कुछ कह न सके। १९७१ से १९७५ तक महायुद्ध हुआ, जिसमें भारतीयों ने सरकार के पक्ष में लड़कर अच्छी राजभक्ति तथा शौर्य दिखलाए। उस काल देश में इतनी अशांति न थी कि भारतीयों द्वारा सरकारी सहायता के प्रतिकूल कोई आवाज़ उठाता। सं० १९७४ में सरकार ने यह घोषणा की कि समय पर भारत को भी प्रतिनिधि वल पूर्ण राज्य मिलेगा। भारत-सचिव माटेग्यू साहब यह जाँच करने को आए कि उपर्युक्त घोषणा के अनुसार भारत में प्राथमिक उन्नति कितनी हो? इस प्रकार उत्तर नूतन परिपाटी काल में राजनीतिक आंदोलन आशा के कारण कुछ मंद रहा, और देश में अशांति की कमी रही। अतएव जो हिंदी-कवितर इस काल बनी, उसमें अँगरेज़ों के प्रतिकूल कोई उद्दंडता न थी, और पूर्व प्रारंभिक समय में जो भाव प्रबल पड़ रहे थे, वे कुछ दबे, तथा राजभक्ति के प्रतिकूल भाव में कटु विचार कम पड़े।

इस समय नूतन परिपाटी काल के बहुतेरे सुलेखक प्रस्तुत रहे, तथा अब भी हैं, एवं दो-चार सुलेखक भारतेंदु-काल के भी वर्तमान हैं। चाहे उनमें उतनी कवित्व शक्ति न हो, तो भी प्राचीनता के कारण उनकी मर्यादा विशेष है, और स्वयं वे तथा अन्य साहित्यानुरागी उनकी महिमा कभी-कभी उचित से भी अधिक कहते हैं। एक यह भी बात है कि इन प्राचीन कालों के कवियों का पूर्ण महत्त्व निखर चुका है, किंतु नवीन समयवाले रचयिताओं की पूर्ण गुरुता अभी भविष्य की गोद में छिपी हुई है, क्योंकि इन्हें वृद्धावस्था

होना तथा उनके सब ग्रंथ बनना शेष है। अतएव उत्तर नूतन काल वाले कवियों के विषय में जो कुछ कहा जाय, उसमें कुछ अंश भविष्य की आशा का भी समझना चाहिए। कुल मिलाकर इस काल उपन्यास, नाटक, पद्य रचना आदि की वृद्धि दिखाई पड़ती है, तथा विविध विषयों का फैलाव अच्छा हुआ है। इस काल के मुख्य रचयिताओं में जयशंकरप्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, मन्नन द्विवेदी गजपुरी, स्वामी सत्यदेव रामदयाल, विश्वेश्वरनाथ रेउ, गोविंदवल्लभ पंत, जी० एम्० पथिक, गुलाबराय गुप्त, रामनारायण शर्मा (१९७१), जोटूसिंह, मोहनलाल महतो आदि गिनाए जा सकते हैं। कैदाशाद सयद (१९६२) तथा मोहम्मद यशीराली इस काल के श्रेष्ठ मुसलमान लेखक हैं। स्त्री लेखिकाओं या कवियों में मुख्यतया रानी रामप्रियाजी (१९६२), यशोदादेवी (१९६५), सरस्वतीदेवी (१९६५), रमादेवी त्रिपाठी (१९६६), रामेश्वरीदेवी नेहरू (१९६७), हेमंतकुमारीदेवी (१९६८), चन्द्राबाई (१९७०), प्रेमकुँवरि (१९७०), सुभद्राकुमारी चौहान (१९७०) तथा रत्नावती शर्मा (१९७२) के नाम इस काल आते हैं। इनमें से सुभद्राकुमारी चौहान तथा हेमंतकुमारीदेवी की कविता एवं गद्यों की अच्छी प्रसिद्धि है, और रामेश्वरी नेहरू सुलेखिका सभ्य सपादिका हैं। उपर्युक्त इतर देवियों की भी रचनाएँ कभी-कभी उच्च कोटि की होती हैं। बड़े हर्ष की बात है कि हमारा स्त्री-समाज इस थोड़े-से काल में इतनी देवियाँ साहित्य-क्षेत्र में उपस्थित कर सका। इन तथा ऐसी ही अन्य बातों से भारतोन्नति की आशा पाई जाती है। भक्तों में इस काल केवल रामजीशरणविष्याचलप्रसाद (१९६४) का नाम आता है। यह समय देवभक्ति का न होकर देश-भक्ति का है। देशभक्तों तथा राजनीतिज्ञों में कालूराम द्विवेदी (१९६२), स्वामी सत्यदेव (१९६२), मन्नन द्विवेदी (१९६२),

पुरषोत्तमदास टंडन (१९६९), रामचंद्र द्विवेदी (१९६८), हितैषीजी (१९७०) और दुर्गाप्रसाद गुप्त (१९७९) के नाम इस काल में मुख्य हैं। यों तो देश भक्ति की धारा ऐसे प्राबल्य से बह रही है कि हमारे बहुत अधिक लेखक इस संख्या में आ सकते हैं, फिर भी यहाँ हमने प्रति विषय के मुख्यातिमुख्य लोगों के नाम लिखे हैं। यह मुख्यता कवि विशेष द्वारा वर्णित विषयों के अनुसार मानी गई है, न कि इतरों से श्रेष्ठता के अनुसार। इनके वर्णन ग्रंथ में दिए ही गए हैं, सो यहाँ विस्तार नहीं किया जाता है। स्वामी सत्यदेव के लेख पाश्चात्य अनुभवों के कारण बहुत ही मनोरंजक एवं लाभकर हैं। मन्नन द्विवेदी एक अपूर्व रत्न था, जो हिंदी माता ने अकाल में खो दिया। इतर महाशय भी देश पर तन मन धन न्योछावर किए हुए हैं। इनकी कृतियों से आत्म-त्याग तथा देश प्रेम के महामंत्र प्रत्येक स्थान पर प्रतिध्वनित होते हैं। इनके जीवन धन्य हैं। इन सबकी सम्मतियों तथा कार्यवाहियों से हम लोगों का मतैक्य न होने पर भी इनके स्वार्थ त्याग पर अनुराग रखना ही पड़ेगा। जैन वैद्य (१९६२) भी कुछ ऐसे ही महाशय मुख्यतया समाज-सुधारक थे, जो हिंदी की उन्नति पर सदैव श्रमशील रहा करते थे। इनकी अकाल मृत्यु से राजपूताना प्रांत में हिंदी प्रचार को क्षति पहुँची है। जैन वैद्यजी तथा चन्द्रधर शर्मा गुलेरी अपूर्व रत्न थे, जिनसे जयपुर की शोभा थी। व्याख्या शाखा में यों तो उपर्युक्त तथा अन्य महाशयों में अनेकानेक सज्जन हैं, विशेषतया सत्यदेवजी, टंडनजी आदि, किंतु मुख्यतया नंदकिशोर शुक्ल (१९६२) और रामानंद (१९६९) के नाम इस विषय में कथन के योग्य हैं।

इस काल पत्रकारों की हिंदी में योग्यता और संख्या दोनों में अच्छी वृद्धि हुई। निम्न लिखित महाशयों के नाम इस विषय

में विशेषतया गिनाए जा सकते हैं—हरीकृष्ण जौहर (१६६२), छोटेराम शुक्ल (१६६०), इद्रजी (१६७०) (स्वामी श्रद्धानंद के सुपुत्र), मातादीन (१६७०), शिवराम पांडेय (१६७०), लक्ष्मणनारायण गर्दे (१६७१), भगवतीप्रसाद मिश्र (१६७२), माखनलाल (१६७२), बनारसीदास चतुर्वेदी (१६७४), शिवपूजनसहाय (१६७५)। इनमें हरीकृष्ण जौहर, इद्रजी, मातादीन शुक्ल, गर्दजी, बनारसीदास चतुर्वेदी तथा शिवपूजन सहाय आदि के नाम बहुत प्रसिद्ध हैं। उपर्युक्त सभी महाशय पत्र-संपादन कार्य सुचारु रूप से करते हैं। पुराने समय में हमारे पत्रकार लोग बहुधा धार्मिक, सामाजिक आदि विषयों में प्राचीन विचार रखते थे, किंतु अब परिष्कृत भाषा का साम्राज्य फैल रहा है। हमारी पत्र-संपादन कला उन्नति करती जाती है, किंतु समाज में हिंदी पत्रों का मान कई कारणों से वैसा नहीं है, जैसा अँगरेज़ी-पत्रों का। इससे हिंदी के मासिक, पाक्षिक आदि पत्र तो कुछ-कुछ उन्नति कर भी रहे हैं, किंतु दैनिक, साप्ताहिक आदि पत्रों की संतोष प्रदायिनी उन्नति नहीं है। संसार में स्थायी, अर्द्ध स्थायी तथा अस्थायी साहित्य का प्रचार होता है। उत्कृष्ट साधारण ग्रंथ प्रथम श्रेणी में हैं, मासिक तथा अर्द्ध मासिक पत्र दूसरी में और दैनिक, साप्ताहिक आदि तीसरी में। तीनो प्रकार का साहित्य समाज पर प्रभाव डालता है। स्थायी साहित्य प्रचुर काल तक स्थिर शिक्षा देता है, किंतु आह्निक काम-काजों एवं जनता की प्रगति पर जैसा प्रभाव साधारणतया अस्थायी साहित्य का पड़ता है, वैसा स्थायी का नहीं। अर्द्ध स्थायी का दर्जा दोनो के बीच में है। हमारा स्थायी तथा अर्द्धस्थायी साहित्य सामाजिक स्थिति के अनुसार बहुत करके योग्य सेवा कर रहा है, परंतु अस्थायी साहित्य ग्रामों में तो थोड़ा बहुत प्रभाव रखता है, किंतु नगरों की सुपठित जनता पर वह प्रभाव

अल्पमाय है। कारण यही है कि अनिवार्य कारणों से हमारे दैनिक पत्र तथा उनके संपादक सज धज एवं खोज-ज्ञान में अंगरेज़ी उत्कृष्ट पत्रों तथा संपादकों के अर्धांश तुल्य पाते हैं। फिर भी इनका प्रभाव देश प्रेम-वृद्धि में पड़ अच्छा रहा है। इनकी शोचनीय दशा अनिवार्य कारणों से होने के कारण समाज द्वारा हमारे पत्र प्रोत्साहन योग्य अवश्य हैं। ग्रंथ-संपादकों में इस काल नाथिस्पचंद्र जैन (१९६७) तथा मजरचदास (१९७२) मुख्य हैं। कई अन्य महाशय भी इस महत्कार्य में योग देते हैं, किन्तु इन दोनों सज्जनों ने अपने प्रयत्नों में इसी की मुख्यता रक्खी।

विविध विषय वर्णन में गंगाप्रसाद उपाध्याय (१९६२), चंद्रमौलि शुक्ल (१९६४) और श्रीकृष्णगोपाल माथुर (१९७१) मुख्य लेखक पड़ते हैं। रामचरित उपाध्याय (१९६५) तथा दयालचंद्र गोयलीय (१९७५) नीतिकार हैं। दोनों अच्छे लेखक हैं। उपयोगी ग्रंथकारों में इस काल कोई नवीन नाम नहीं आता। व्यापार संबंधी ज्ञान-वर्द्धन में जी० एस० पथिक (१९७०) ने बहुत ही श्लाघ्य कार्य किया है। इनके ग्रंथ बड़े लाभोपयोगी हैं। विशिष्ट विषयों पर हिंदी को ऐसे सुलेखकों की भारी आवश्यकता है। विज्ञान में महेशचरणसिंह (१९६५), महावीरप्रसाद (१९६९) और जगद्बिहारी सेठ (१९७५) के श्रम श्लाघ्य हैं। महेशचरणसिंह ने अमेरिका और जापान में शिक्षा पाई है। आपने रसायन पर ग्रंथ-रचना की है। सेठजी ने बिजली पर ग्रंथ लिखकर समाज का ज्ञान बढ़ाया है, और महावीरप्रसाद ने ज्योतिष तथा विज्ञान पर अच्छे ग्रंथ रचे हैं। ये तीनों महाशय हमारे उपयोगी ग्रंथकारों में परम स्तुत्य हैं। यात्रा पर स्वामी सत्यदेव (१९६३) तथा गौरीशंकर-प्रसाद (१९६२) के श्लाघ्य ग्रंथ हैं। दोनों ने अमेरिका, फ़िजी आदि देखकर रोचक साहित्य रचा है। प्रवास पर भवानीदयाल

(१९७०) और बनारसीदास चौबे (१९७४) ने परिश्रम किया है। इनके ग्रंथ और प्रयत्न श्लाघ्य हैं। भवानीदयालजी ने अधिकतया अफ्रिका का कथन किया है और चौबेजी ने उपनिवेशों की राजनीतिक स्थिति का। हास्य रस में इस काल बदरीप्रसादजी पांडेय (१९६८) तथा जी० पी० श्रीवास्तव (१९७२) कथय हैं। इन दोनो की कोई विशेष मुख्यता नहीं है। हास्य-रस के सफल कथन में परमोच्च साहित्यिक शक्ति की आवश्यकता है। पात्रों की मूर्खता के बल पर इस रस का उचित समावेश नहीं होता। फिर भी हमारे हास्य रस के लेखकों ने अब तक मूर्खता का सहारा छोड़कर इसके कथन में सफलता प्राय नहीं पाई है। आगरा में इस विषय पर कुछ श्लाघ्य श्रम हुआ है।

प्रेमात्मक विषयों पर जानकीप्रसाद द्विवेदी (१९६१), किशोरीदास (१९७९) तथा मोहनलाल (१९७९) के नाम इस काल आते हैं। द्विवेदीजी ने नल शिख तथा प्रेम पर काव्य रचा, किशोरीदास ने अलंकार पर तथा रीति ग्रंथ बनाए, और मोहनलालजी श्रव्य चित्रकार हैं। किसी समय में भक्ति तथा शृंगारी कविता का हमारे यहाँ बाहुल्य था, किंतु समय के उलट-फेर से अब ऐसे रचयिताओं की संख्या न्यूनप्राय है। शास्त्रकारों में इस काल केवल बाबू गुलाबराय एम० ए० का नाम आता है। आपने तर्कशास्त्र तथा दर्शन के इतिहास रचे हैं, जो उत्कृष्ट ग्रंथ हैं। इनमें इन शास्त्रों पर अँगरेज़ी तथा संस्कृत दोनो के विचारों के सार आ गए हैं। पौराणिक विषयों पर खंड काव्य की भाँति नाटक, काव्य ग्रंथादि तो बने, किंतु किसी ने पुराणों पर कहने योग्य निबंध न लिखा। आर्यसमाजी लेखकों में इंद्रजी के अतिरिक्त कोई भारी लेखक नहीं दिखाई पड़ता।

नाटककारों में इस काल जयशंकर प्रसाद (१९६१), माधव शुक्ल (१९६७), गोविंदवल्लभ पंत (१९७०), प्रेमचंद

(१९६९) और अंबिकादत्त त्रिपाठी (१९७२) प्रमुख हैं। इनमें जयशंकर प्रसाद तथा पंतजी न केवल इस काल के, वरन् हमारे सभी समयों के नाट्यकारों में स्तुत्य माने जा सकते हैं। जयशंकर प्रसाद-सा नाट्यकार हिंदी ने भारतेंदु के अतिरिक्त शायद अब तक नहीं उत्पन्न किया है। ईश्वर इन महाशय को चिरायु करे। इनसे हमारे नाटक-विभाग को बड़ी आशा है। इन्होंने कई नाटक ग्रंथ (विशाख, जनमेजय का नाग यज्ञ, चंद्रगुप्त मौर्य, अजातशत्रु, कामना, स्कंद गुप्त, कल्याणालय, राज्यश्री तथा एक घूँट) रचे हैं, जिनमें स्कंद गुप्त बहुत ही स्तुत्य है। चंद्रगुप्त और अजातशत्रु भी उत्कृष्ट नाटक हैं। अजातशत्रु की भाषा यत्र-तत्र क्लिष्ट है। यह बात स्कंद गुप्त में नहीं है। अजातशत्रु में पात्रों की परिस्थिति बदलती है, किंतु स्कंदगुप्त में यह भी नहीं है, जिससे खेलने में अड़चन न पड़ेगी। इन बातों के अतिरिक्त ये दोनो ग्रंथ प्रायः एक-से हैं। इनके चरित्र-चित्रण अच्छे हैं, जिनसे मानसिक वृत्तियों की वृद्धि दिखाई पड़ती है। करुणा आपका प्रधान रस है, जिसका चित्रण अपूर्व छटा दिखलाता है। ये नाटक भावात्मक, आदर्शात्मक तथा इतिवृत्तात्मक हैं, और यहाँ काफ़ी सुघरता है। अत्यधिक आध्यात्मिकता से कहीं-कहीं क्लिष्टता भी आ गई है। गाने नवीनता लिए हुए मार्मिक-पूर्ण हैं जो कंपनियों के क्लिष्टपन को दबाते हुए आरोचक लाते हैं। इनके नाटकों को लोग छायावादात्मक भी कहते हैं, विशेषतया कामना और अजातशत्रु को। कामना छायावाद के कारण अरोचक हो गया है, किंतु अजातशत्रु ठीक है। विशाख में महत्ता नहीं है। नाग-यज्ञ साधारण है। शेष नाटक भी ऐसे ही हैं। चंद्रगुप्त अवश्य उत्कृष्ट है। अभी तक प्रसादजी का प्रसादत्व अजातशत्रु, चंद्रगुप्त और स्कंदगुप्त पर अवलंबित है। भाषा की क्लिष्टता से अभिनय में इनके नाटक लोक-प्रिय न होंगे, इतना दोष

है। कथोपकथन कहीं-कहीं रोचकता को छोड़कर कल्पनिकता से दूषित हो गए हैं। पतजी की वरमाला अच्छे नाटकों में से है। भाषा तथा गीत काव्य दोनो इसमे श्रेष्ठ हैं। ग्रथ उच्च कोटि का है, किंतु प्रसाद तथा भारतेंदु के उत्कृष्ट नाटकों के पीछे रह जाता है। पतजी यदि इस विषय पर चित्त लगावें, तो उत्कृष्ट नाट्यकार हो सकते है। प्रेमचद के सग्राम और कर्बला नाटक हैं। कर्बला उच्च कोटि का ग्रथ है, जिसमें मुसलमानी मत से सहृदयता बहुत सराहनीय है। नाटक साग त निर्दोष उतर गया है। चरित्र चित्रण भी ठीक है। माधव शुक्ल का महाभारत-नाटक उत्कृष्ट है। उसकी भाषा प्राजल तथा प्रसाद पूर्ण है, और पद्य भी सुदर हैं। उग्र का ईसा भी बहुत ही मांसल और सुपाठ्य है। उधर नूतन परिपाटी के कुछ नाटक मौद हैं। इस विभाग की इस काल अच्छी ग्रग पुष्टि हुई है।

उपन्यासकारों में इस काल निम्न लिखित प्रधान हैं—हरीकृष्ण जौहर (१९६२), आत्माराम देवकर (१९६२), ओकारनाथ वाजपेयी (१९६३), प्रेमचदजी (१९६९), वृदावनलाल वर्मा (१९७०), अनूपलाल (१९७२), धन्यकुमार जैन (१९७५), प्यारेलाल गुप्त (१९७९) तथा बेचन शर्मा 'उग्र' (१९७९)। धन्यकुमार जैन अनुवादकर्ता गल्पकार हैं। ओंकारनाथ वाजपेयी का श्रम स्तुत्य है। उग्रजी बड़े सबल तथा यथार्थ लेखक हैं। इनकी लेखन-शैली बहुत स्तुत्य है, किंतु अश्लील विषयों में ज्ञान-वर्द्धन करते-करते कभी आप इतना दूर निकल जाते हैं कि समझ पड़ने लगता है कि आपको उसी वर्णन में मज़ा आता है। यदि ऐसे विषयों को छोड़कर आप सद्विषयों पर श्रम करें, तो अच्छी ख्याति के योग्य हो जायँ। अब आप सिनेमा में चले गए हैं। प्रेमचदजी हमारे उपन्यासकारों में सर्वोत्कृष्ट समझे जाते हैं। इ होंने लौकिक

ज्ञान का प्रकृष्ट समूह दिखलाया है। यदि इतिवृत्तात्मकता को कुछ कम करके आप आदर्शात्मिकता एवं भावात्मिकता की ओर कुछ झुक सकते, और अपने चरित्रों को साद्यंत एक-सा निभा सकते, तो परमोत्कृष्ट औपन्यासिक होने की पात्रता आपमें प्रस्तुत थी। देश-प्रेम की ओर तो आप बढ़े हैं, किंतु जितना कुछ देशीय मान है, उसकी भी सम्यक् रक्षा आपसे नहीं हो सकी है। एक क्षत्रिय रईस तो योरेशियन बालिका के साथ रंगभूमि में अपना पुत्र विवाहने की स्वीकृति दे देता है, किंतु जातीय अभिमान वश योरेशियन एक हिंदू से अपनी लड़की नहीं विवाहता। यह चित्रण असली चित्र का ठीक विपरीत दृश्य दिखलाता है। इतना सब होते हुए भी हम आपको एक भारी उपन्यासकार मानते हैं। आपके बड़े ग्रंथ उत्कृष्ट, किंतु सदोष हैं, तथा छोटी कथाएँ बढ़िया और निर्दोष हैं। इनमें बयान की शक्ति अच्छी है, किंतु कथाओं के देखते हुए प्राय अनुचित विस्तार द्वारा ग्रंथ बढ़ गए हैं। जयशंकर प्रसाद ने भी कंकाल-नामक उपन्यास लिखा है। उसका कथा भाग इतना घुमावदार और परिणाम ऐसा अरोचक है कि ग्रंथ उत्कृष्ट होकर भी पसंद नहीं आता। वृंदावनलाल के गढ़-कुंडार का प्रथमार्द्ध बढ़िया है, किंतु उत्तरार्द्ध शिथिल पड़ गया है। लेखक ने बुंदेलखंड का हाल खूब जानकर ग्रंथ लिखा है।

हमारे गल्प तथा आख्यायिका लेखकों में इस काल निम्न लिखित महाशयों की गणना हो सकती है—जयशंकर प्रसाद (१९६०), प्रेमचंद (१९६२), लक्ष्मीनारायण गुप्त (१९७०), विद्याभूषण (१९७१), कौशिकजी (१९७०), सुदर्शनजी (१९७०), चतुरसेन शास्त्री (१९६६) आदि। प्रसादजी की कहानियों में साहित्यिकता उत्कृष्ट है, तथा आध्यात्मिकता एवं ऐतिहासिक खोज को उसी में मिलाकर आपने अच्छी छटा दिखलाई है। जो

मुख्य गण उनके नाटकों में हैं, वही यहाँ भी मिलते हैं। प्रेमचंद ने समाज तथा कौशिकजी ने कुटुंब पर अच्छा प्रकाश डाला है। प्रेमचंदजी घटनाओं के सहारे अधिक चले हैं, किंतु प्रसादजी भावों की प्रधानता रखते हैं। सुदर्शनजी ने भारतीयपने को पाश्चात्य ज्ञान से मिलाकर रोचक प्रबंध बाँधे हैं। हृदयेश (चंडीप्रसाद) अलंकृत भाषा तथा वास्तविकता से आगे बढ़कर कथाओं में भी भावुकता दिखलाते हैं। चतुरसेन की भाषा में अपूर्व बल है। हम इनको प्रायः अद्वितीय गल्पकार मानते हैं। राय कृष्णदास उच्च कोटि की कहानियाँ लिखते हैं, किंतु आध्यात्मिकता के आधिक्य से सब लोग उनमें तादृश आनंद नहीं पाते। फिर भी हम इनके ग्रंथों में कुछ-कुछ जटिलता होते हुए भी अच्छा चमत्कार दिखाई पड़ता है। हमारा गल्प तथा आख्यायिका विभाग उत्तर नूतन परिपाटी काल ही में उठकर अति शीघ्र प्रौढ़ता को प्राप्त हो गया। अज़ीम-बेग चग़ताई की भी छोटी कहानियाँ अच्छी हैं, किंतु उनकी उर्दू-कहानियों के हिंदी में अनुवाद मात्र हुए हैं। इस विभाग की अग-पुष्टि भविष्य में भी अच्छी होगी, ऐसी आशा है। कई मासिक पत्र इस पर विशेष ध्यान देते हैं।

सार्कन्या में इस काल निम्न लिखित महाशयों के नाम सामने आते हैं—जानकीप्रसाद (१९६१) शिवरत्न शुक्ल (१९६१), देवीप्रसाद चतुर्वेदी (१९६२) जनार्दन मिश्र (१९६२), हरिदत्त दीन (१९६४), गदाधरसिंह (१९६५), नूतन (१९६५), चंद्रभानुसिंह (१९६७), सूर्यप्रसाद त्रिपाठी (१९६७), मातादीन शुक्ल (१९७०), चतुरसिंह (१९७०), मैथिलीशरण गुप्त (१९७०) लक्ष्मण शास्त्री (१९७०), मातादीन शास्त्री (१९७०), भवतबिहारीलाल माथुर (१९७२), रामनरेश त्रिपाठी (१९७२), जगदीश झा विमल (१९७१), लोचनप्रसाद पांडेय (१९७२),

अधिकादत्त त्रिपाठी (१६७२), केशवलाल झा (१६७४), रामकुमार वर्मा (१६७४), गुरुभक्तसिंह (१६७५), रामचरित उपाध्याय (१६७५), सुमित्रानंदन पंत (१६७५), उमरावसिंह (१६७५), नवीन (१६७५), रामनारायण शर्मा (१६७५), सियारामशरण गुप्त (१६७५) तथा वियोगी हरि (१६७५) ।

इन सब महाशयों ने उत्कृष्ट रचना की है। किसी किसी ने ब्रजभाषा में, किसी ने खड़ी बोली में और बहुतों ने दोनों में। इनमें से प्राय सभी के उदाहरण ग्रंथ में मिलेंगे, सो प्रत्येक साहित्यिक के विषय में कुछ अधिक विवरण अनावश्यक है। ग्रंथ में [illegible] उदाहरण दोनों सुगमता पूर्वक मिलेंगे। फिर भी [illegible] मैथिलीशरण गुप्त तथा गुरुभक्तसिंह विशेषतया [illegible] शुक्लजी ने कई उत्कृष्ट काव्य ग्रंथ रचे हैं, तथा [illegible] छोटे-छोटे ग्रंथों में काव्यत्व की कमनीयता अच्छी लिखी है [illegible] बहुत ही लोकमान्य सुकवि हैं, जिन्हें हम भी [illegible] देखते हैं। पं० सुमित्रानंदन पंत एक बहुत ही उच्च [illegible] हैं। इनके तीन ग्रंथ देखने में आए हैं, जिनमें [illegible] ग्रंथ का साहित्य परमालौकिक आनंद देता है। [illegible] यह आजकल के ऐसे कवि हैं, जिनकी [illegible] कवियों से निःसंकोच भाव से दे सकते हैं। [illegible] अनमेरानी वर्तमान काल के कवियों में [illegible] कविता अजमेरी जी में खूब है, भाव[illegible] तथा नवीनता की कमनीयता निराला [illegible] काल यदि केवल जयशंकर प्रसाद और [illegible] किए होता, तो भी वह धन्य होता।

टीकाकारों में इस काल [illegible] (१६७[illegible]) [illegible] प्राधान्य है तथा अनुवादकों में [illegible] (१६६[illegible]

शिवसहाय चतुर्वेदी (१९७२) और नरोत्तमदास (१९७५) का।
निबंधकारों में चंद्रमौलि शुक्ल (१९६८), रामचंद्र शुक्ल
(१९६९) तथा गुलाबराय (१९७१) इस काल में आते हैं। रामचंद्र
शुक्ल का हिंदी भाषा का इतिहास अच्छा है। आपसे हमारे
आलोचना विभाग को दीप्ति मिली है। गुलाबरायजी के दर्शनशास्त्र-
संबंधी निबंध स्तुत्य हैं। समालोचनाकार इस में काल रामचंद्र शुक्ल
(१९६९), रामनरेश त्रिपाठी (१९७१) और रामकुमार वर्मा
(१९७४) हैं। शुक्लजी ने जायसी पर अच्छा श्रम किया है।
इतिहासकारों में इस काल शिवनाथसिंह संगर (१९९१), चंद्र
मनोहर मिश्र (१९६३), मतिपालसिंह (१९६३), रामदेवजी
प्रोफ़ेसर काँगड़ी (१९६४), लक्ष्मीनारायणसिंह (१९६७),
जनार्दन भट्ट (१९७१) तथा छोटूसिंह (१९७६) मुख्य हैं।
इनमें रामदेवजी सर्वश्रेष्ठ हैं। इनका भारतवर्षीय प्राचीन इतिहास
सुपाठ्य तथा शिक्षाप्रद है। छोटूसिंहजी पुरातत्त्व पर श्रम करके
भारत का अच्छा इतिहास लिख रहे हैं। जनार्दन भट्ट ने देश-भक्ति
को लिए हुए इतिहास लिखा है। इतर महाशयों के भी परिश्रम
स्तुत्य हैं। पुरातत्त्व में काशीप्रसाद जायसवाल (१९६६),
विश्वेश्वरनाथ रेउ (१९६७), लोचनप्रसाद पांडेय (१९७२) तथा
उपर्युक्त छोटूसिंह वर्णनीय हैं। इन सभी ने इस विषय पर मान्य श्रम
किया है विशेषतया जायसवाल तथा रेउ महाशयों ने। जीवन
चरित्रकार इंद्रजी (१९००) तथा रामचंद्र टंडन (१९७०) हैं।
ये दोनो सुलेखक हैं। बनारसीदासजी चौबे ने चरित्र चित्रण अच्छे
किए हैं।

खड़ी बोली में इस काल मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत,
रामनरेश त्रिपाठी, लोचनप्रसाद पांडेय, जयशंकर प्रसाद, गोविंद
वल्लभ पंत, चतुरसेन शास्त्री, वियोगी हरि आदि उत्कृष्ट लेखक हैं।

अंतिम दो महाशय गद्य-काव्य के भी भारी रचयिता माने जा सकते हैं। छायावाद का कथन पहले अलंकार द्वारा होता था। इसे अन्योक्ति कहते हैं। कई कवियों ने अन्योक्ति पर कविता की है। व्यंग्य का विषय भी इसी में मिलता है। प्रतापसाहि ने व्यंग्यार्थ-कौमुदी नामक ग्रंथ ही बनाया था, और बाबा दीनदयाल गिरि ने अन्योक्ति-कल्पद्रुम रचा। कबीरदास ने उलटवाँसी आदि में बहुत कुछ अन्योक्ति-गर्भित रचना की। जायसी, कुतबन शेख़ आदि अनेकानेक सूफ़ी कवियों ने अपने कथा-प्रासंगिक ग्रंथों का कथा-विभाग छायावाद-गर्भित रक्खा। ब्लेक, उमर ख़ैयाम आदि भी ऐसे ही कवि। वड्सवर्थ, शेली आदि ने भी कुछ इसी प्रकार के कथन किए। कीट्स ने प्रकृति और सौंदर्य का अच्छा अवलोकन किया। महाकवि रवींद्र महाशय भी कुछ ऐसी ही रचना करते हैं। उत्तर नूतन परिपाटी काल में ही वर्तमान छायावाद का प्रचार हिंदी में हुआ। जयशंकर प्रसाद, मोहनलाल महतो तथा सुमित्रानंदन पंत इस काल के मुख्य छायावादी कवि हैं। निरालाजी भी ऐसी ही रचना करते हैं, किंतु केवल एक साल के अंतर के कारण इनका विवरण आगे के अध्याय में आवेगा। रहस्यवादी कवियों में कुछ कुछ आध्यात्मिकता, सांप्रदायिकता आदि प्रायः रहती है, यद्यपि अन्योक्ति के लिये किसी विशिष्ट विषय की आवश्यकता नहीं है। सबसे प्राचीन छायावादी साहित्य स्वयं वेद भगवान् में है।

बहुत-से वर्तमान समालोचक तथा प्राचीन लेखक हमारे छायावादी कवियों के निंदक हैं। हमने भी बहुतेरी छायावादी रचनाओं में असमर्थ तथा अप्रसाद दूषण पाए हैं। बहुत-से ऐसे कवि विचार धारा इतनी दूर बाँध ले जाते हैं कि उनके शब्द उतने ऊँचे भाव प्रदर्शन में अक्षम रहते हैं, जिससे रचना में असमर्थ दूषण आ जाता है। बहुतेरे कवि ऐसे शुष्क प्रकार से वर्णन करते हैं कि रचना में अलौकिक

आनंद की कमी से रमणीयता की तो कहना ही क्या है, साधारण आरोचन भी नहीं रहता। फिर प्राय सभी छायावादी पद्यकार गद्य कथा प्रभृति छोड़कर केवल मुक्तक पर अपनी रचनाओं को सीमित रखते हैं। ऐसे ग्रंथों में परमोत्कृष्ट रचना के अभाव में आरोचन की कमी स्वभावतः आ जाती है। कविताओं की जाँच में दो मुख्य प्रश्न यही रहते हैं कि कथा कथन वाच्य है या नहीं, तथा यह सुचारुरूपेण कहा गया है या नहीं? मुक्तक में बहुत करके कथा होती ही नहीं सो कथानक के सुगठन एवं विविध परिस्थितियों के यथायोग्य वर्णन में जो आनंद आता है, वह मुक्तक-मूलक रचना में रहता ही नहीं। एक प्रकार से कोरा वाच्य रह जाता है, जो परमोत्कृष्ट न होने से रोचक नहीं रहता। फिर ऐसे कविगण जहाँ कहीं छायावादात्मिका कथा भी कहते हैं, वहाँ प्राय आध्यात्मिक अथवा प्राकृतिक विचारों को कथा के रूप में चलाते हैं जिनमें कामना, लज्जा, छाया आदि पात्र रहते हैं, जिनके कथनों, कर्मों आदि से आध्यात्मिक प्राकृतिक आदि भाव तो दृढ़ होते हैं, किंतु कथा बिलकुल रूखी हुई रहती है।

जयशंकर प्रसाद का छायावाद उपयुक्त विचारों से उत्कृष्टता के सोपान तक नहीं पहुँच पाता। उनके जो मुख्य ग्रंथ हैं, उनमें ऐतिहासिकता की प्रधानता है, और छायावाद नहीं के बराबर है। यदि प्रसादजी केवल छायावादी होते, तो हम उन्हें बहुत ही साधारण कवि मानते। मोहनलाल महतो की कविता कुछ उत्कृष्ट है किंतु बहुत ऊँची श्रेणी को नहीं पहुँचती। सुमित्रानंदन पंत ने केवल पल्लव में साहित्यिक गौरव का चमकता हुआ उदाहरण दिखलाया है। इसमें है तो मुक्तकों का ही रूप, किंतु एक एक विषय पर वर्णन कुछ बड़े-बड़े भी हैं। इनमें केवल छायावाद नहीं है, वरन् इतर साहित्य के साथ कुछ कुछ वह भी मिल गया है। यदि

पंतजी का साहित्य प्रस्तुत न होता, तो हम भी शायद हिंदी के छायावादी कवियों के निंदक म होते। इनके तथा निरालाजी के होने से हम इस विभाग की मुक्त कंठ से स्तुति करेंगे। मुख्य बात कवि सामर्थ्य है। सुकविगण प्रत्येक विषय का जाज्वल्यमान विवरण लिख सकते हैं। योग्यता काम आती है। यह कहना हमारी समझ में अनुचित है कि हमारे छायावादी कविगण शेली, कीट्स आदि के बहुत पीछे छूट जाते हैं। अभी हमारे यहाँ इसका आरंभ ही है। संभव है, प्रसाद, पंत और निराला हो मिलकर भविष्य में इस विभाग को परमोत्कृष्ट बना दें। हम तो आप भी इसे उन्नत समझते हैं।

उत्तर नूतन परिपाटी काल तक हमारी हिंदी इतनी सुखद उन्नति कर आई थी कि इसके रूप के विषय में भी बड़ी तीव्रता से विवाद चलने लगा, जो अब तक चल रहा है। आदिम वैदिक समय में हमारी भाषा आसुरी कहलाती थी, जिसमें ऋग्वेद की ऋचाओं का गान हुआ। उस काल प्राकृत भाषा कैसी था, इसका पूरा पता नहीं चलता। ऋग्वेद में अनार्यों के विषय में लिखा है कि इनकी कोई भाषा नहीं है, और ये चिल्लाना-मात्र जानते हैं। फिर भी पंडितों ने जाना है कि जन समुदाय में उस काल भी या कम से-कम ब्राह्मण-काल में एक भाषा थी, जिसे पहली या पुरानी प्राकृत कहते हैं। समय के साथ इन दोनो भाषाओं का प्रभाव एक दूसरी पर पड़ते हुए नवीन आवश्यकताओं अथच विचारों के अनुसार दोनो का विकास हुआ। आसुरी बढ़कर पुरानी संस्कृत हो गई, और प्राकृत साहित्यिक भाषा। इस विषय का कथन हम(शुकदेवविहारी मिश्र)ने इतिहास पर हिंदी के प्रभाववाले ग्रंथ में भी कुछ किया है। सारांश यह कि सूत्रकाल में इन दोनो भाषाओं में साहित्यिक रचनाएँ होती थीं। सूत्र-काल में व्याकरण ने अच्छी उन्नति की, और प्रायः छठी शताब्दी संवत्-पूर्व तक यास्क, पाणिनि आदि व्याकरणकारों की सहायता से

आनंद की कमी से कमनीयता की तो कहना ही क्या है, भावार्थ आरोपण भी नहीं रहता। फिर प्रायः सभी छायावादी पद्यकार गद्य कथा प्रसंगादि छोड़कर केवल मुक्तक पर अपनी रचनाओं को सीमित रखते हैं। ऐसे ग्रंथों में परमोत्कृष्ट रचना के अभाव में आरोपण की कमी स्वभावतः आ जाती है। कविताओं की जाँच में दो मुख्य प्रश्न यही रहते हैं कि क्या कथन ग्राह्य है या नहीं, तथा यह सुचारुरूपेण कहा गया है या नहीं? मुक्तक में बहुत अच्छी कथा होती ही नहीं, तो कथानक के मुख्य एवं विविध परिस्थितियों के यथायोग्य वर्णन से जो आनंद आता है, वह मुक्तक-मूलक रचना में रहता ही नहीं। इस प्रकार से कोरा काव्य रह जाता है, जो परमोत्कृष्ट न होने से रोचक नहीं रहता। फिर ये कविगण जहाँ कहीं छायावादात्मिका कथा भी कहते हैं, वहाँ प्रायः आध्यात्मिक अथवा प्राकृतिक विचारों को कथा के रूप में पसारते हैं, जिनमें कामना, संध्या, छाया आदि पात्र रहते हैं, जिनके कथना, कर्मों आदि से आध्यात्मिक, प्राकृतिक आदि भाव तो कह जाते हैं, किंतु कथा बिलकुल व्यर्थ हुई रहती है।

जयशंकर प्रसाद का छायावाद उपयुक्त विचारों से उत्कृष्टता के सागर तक नहीं पहुँच पाता। उनके जो मुख्य ग्रंथ हैं, उनमें ऐतिहासिकता की प्रधानता है और छायावाद नहीं के बराबर है। यदि प्रसादजी केवल छायावादी होते, तो हम उन्हें बहुत ही साधारण कवि मानते। मोहनलाल महतो की कविता कुछ उत्कृष्ट है, किंतु बहुत ऊँची श्रेणी को नहीं पहुँचती। सुमित्रानंदन पंत ने केवल पल्लव में साहित्यिक गौरव का चमकता हुआ उदाहरण दिखलाया है। इसमें है तो मुक्तकों का ही रूप, किंतु एक-एक विषय पर वर्णन कुछ बड़े-बड़े भी हैं। इनमें केवल छायावाद नहीं है, वरन् इतर साहित्य के साथ कुछ-कुछ वह भी मिल गया है। यदि

पंतजी का साहित्य प्रस्तुत न होता, तो हम भी शायद हिंदी के छायावादी कवियों के निंदकों में होते। इनके तथा निरालाजी के होने से हम इस विभाग की मुक्त कंठ से स्तुति करेंगे। मुख्य बात कवि सामर्थ्य है। सुकविगण प्रत्येक विषय का आश्चर्यमान विवरण लिख सकते हैं। योग्यता काम आती है। यह कहना हमारी समझ में अनुचित है कि हमारे छायावादी कविगण शेली, कीट्स आदि के बहुत पीछे छूट जाते हैं। अभी हमारे यहाँ इसका आरंभ ही है। संभव है, प्रसाद, पंत और निराला ही मिलकर भविष्य में इस विभाग को परमोत्कृष्ट बना दें। हम तो आज भी इसे उन्नत समझते हैं।

उत्तर नूतन परिपाटी काल तक हमारी हिंदी इतनी मुखदा उन्नति कर आई थी कि इसके रूप के विषय में भी बड़ी तीव्रता से विवाद चलने लगा, जो अब तक चल रहा है। आदिम वैदिक समय में हमारी भाषा आसुरी कहलाती थी, जिसमें ऋग्वेद की ऋचाओं का गान हुआ। उस काल प्राकृत भाषा कैसी थी, इसका पूरा पता नहीं चलता। ऋग्वेद में अनार्यों के विषय में लिखा है कि इनकी कोई भाषा नहीं है, और ये चिल्लाना-मात्र जानते हैं। फिर भी पंडितों ने जाना है कि जन-समुदाय में उस काल भी या कम से कम ब्राह्मण-काल में एक भाषा थी, जिसे पहली या पुरानी प्राकृत कहते हैं। समय के साथ इन दोनों भाषाओं का प्रभाव एक दूसरी पर पड़ते हुए नवीन आवश्यकताओं अथच विचारों के अनुसार दोनों का विकास हुआ। आसुरी बढ़कर पुरानी संस्कृत हो गई, और प्राकृत साहित्यिक भाषा। इस विषय का कथन हम (शुकदेवविहारी मिश्र) ने इतिहास पर हिंदी के प्रभाववाले ग्रंथ में भी कुछ किया है। सारांश यह कि सूत्रकाल में इन दोनों भाषाओं में साहित्यिक रचनाएँ होती थीं। सूत्र-काल में व्याकरण ने अच्छी उन्नति की, और प्राय छठी शताब्दी संवत्-पूर्व तक यास्क, पाणिनि आदि व्याकरणकारों की सहायता से

पहली संस्कृत का अधिक संस्कार होकर यह दूसरी प्राकृत अथवा केवल संस्कृत कहलाने लगी। छठी शताब्दी बी० पू० में पाणिनि और बुद्ध के समय दूसरी प्राकृत (पाली) भी श्रेष्ठ साहित्यिक भाषा थी। इसके पीछे नंद-वंश के मंत्री महर्षि कात्यायन (तीसरी शताब्दी संवत् पूर्व) तथा पुष्यमित्र के पुरोहित महर्षि पतंजलि (दूसरी शताब्दी संवत् पूर्व) ने संस्कृत व्याकरण की और भी वृद्धि करके इसे बहुत कठिन कर डाला। यहाँ तक कहा गया कि जन्मभर पढ़ने से भी व्याकरण का अंत नहीं मिल सकता।

ऐसी जटिल भाषा स्वभावतः देश की मातृभाषा या राष्ट्र-भाषा नहीं हो सकती थी, क्योंकि साधारण देशी लोग केवल भाषा ज्ञान प्राप्ति में इतना समय नहीं व्यय कर सकते थे, जितना व्याकरण के प्रेमी लोग उनसे चाहते थे। फल यह हुआ कि देश में दिनोदिन संस्कृत का ह्रास तथा प्राकृत का प्रकाश होने लगा। व्याकरणकार लेखकों पर भाँति-भाँति के कथनों, गालियों आदि द्वारा दबाव डालते रहे। यहाँ तक कि प्राकृत का व्याकरण भी दृढ़ हो गया, जिससे देश के लिये किसी और भाषा की आवश्यकता हुई। ऐसी भाषा अपभ्रंश कहलाई। भारत एक भारी देश है। विविध प्रांतों तथा एक ही प्रांत में भी शब्दों के एकाधिक रूप चलने लगे, अथच व्याकरण-संबंधी नियमों की स्वभावतः अवहेलना होने लगी। लोग मातृभाषा चाहते थे, जो आप-से आप आ जाय, तथा वैयाकरण लोग पंडित भाषा चलानी चाहते थे, जिसके पढ़ने के लिये प्रचुर परिश्रम एवं समय की आवश्यकता थी। लोगों ने पंडितों के कथनों का तिरस्कार करके मातृभाषा का व्यवहार किया। केकइ, कैकेई, केकयी आदि एक ही शब्द के अनेक रूप प्रचलित रहे। पतंजलि महाराज ऐसे रूपों की घोर निंदा करते रहे, और पंडित लोग इस मातृ भाषा को अपभ्रंश कहकर अपमान करते रहे, किंतु संसार ने इसी का मान

किया। कालिदास और बाणभट्ट तक के समयों (पाँचवीं और सातवीं शताब्दी सवत्) में इसका प्रचार था। समय के साथ बदलती हुई यही भाषा हिंदी हो गई। प्रारंभिक समय में हिंदी का अपभ्रंश से मिलता जुलता रूप रहा, किंतु पीछे से इसने शीघ्रता पूर्वक उन्नति की। प्रौढ़ माध्यमिक काल तक हिंदी पूर्णतया प्रौढ़ होकर परमोत्कृष्ट पद्य ग्रंथ उत्पन्न कर सकी।

मुसलमानों के आगमन से हिंदू मुसलमानों के भाषा-भेद मिटाने को किसी नवीन भाषा की आवश्यकता पड़ी। ये लोग दिल्ली, मेरठ-प्रांत में पहले बसे थे, सो वहीं की भाषा में अपने भी कुछ शब्द जोड़कर बातचीत का काम चलाने लगे। यह भाषा उर्दू कहलाई। जहाँ-जहाँ मुसलमानों का प्रभाव फैलता गया, वहाँ-वहाँ के नगरों में उर्दू का प्रचार होता गया, किंतु ग्रामों में प्रांतीय भाषाएँ चलती रहीं। यही दशा आज तक है। शाहजहाँ के समय तक उर्दू ने भी अच्छी उन्नति कर ली थी। हमारे यहाँ तब तक गद्य-काव्य नहीं के बराबर था, तथा पद्य में व्रजभाषा का प्राधान्य था, अथच अवधी भी कुछ-कुछ चलती थी। अँगरेजी राज्य के स्थापन से गद्य की उन्नति हुई और लल्लूजीलाल, राजा शिवप्रसाद, स्वामी दयानंद, भारतेंदु आदि के साथ विविध रूप धारण करते हुए हिंदी-गद्य संस्कृत गुंफित रूप की ओर अग्रसर हुआ। भारतेंदु के समय तक देश भाषा से यह हिंदी बहुत पृथक् न थी; किंतु पीछे के कुछ कवियों आदि ने इसमें अधिकाधिक संस्कृत-शब्दों का प्रयोग बढ़ाया, सो हमारी उच्च श्रेणी की समझी जानेवाली हिंदी लोक-भाषा से दिनोंदिन अधिकाधिक दूर होती जाती है, जिससे इसकी प्रतियोगिनी उर्दू का प्रभाव नगर निवासी हिंदुओं पर से शिथिल होने के स्थान पर दृढ़ हो रहा है। इसी संस्कृत-बाहुल्य के कारण हिंदी के नाटक हमारे रंगमंच पर मान नहीं और

पहली संस्कृत का अधिक संस्कार होकर वह दूसरी संस्कृत अथवा केवल संस्कृत कहलाने लगी। छठी शताब्दी सं० पू० में पाणिनि और बुद्ध के समय दूसरी प्राकृत (पाली) भी श्रेष्ठ साहित्यिक भाषा थी। इनके पीछे नन्द-वंश के मंत्री महर्षि कात्यायन (तीसरी शताब्दी संवत् पूर्व) तथा पुष्यमित्र के पुरोहित महर्षि पतञ्जलि (दूसरी शताब्दी संवत् पूर्व) ने संस्कृत व्याकरण की और भी वृद्धि करके इसे बहुत कठिन कर डाला। यहाँ तक कहा गया कि असंख्य मास पठन से भी व्याकरण का अंत नहीं मिल सकता।

ऐसी जटिल भाषा स्वभावतः देश की मातृ-भाषा या राष्ट्र-भाषा नहीं हो सकती थी, क्योंकि करोड़ों देशी लोग केवल भाषा-ज्ञान प्राप्ति में इतना समय नहीं व्यय कर सकते थे, जितना व्याकरण के प्रेमी लोग उनसे चाहते थे। फल यह हुआ कि देश में दिनोंदिन संस्कृत का ह्रास तथा प्राकृत का प्रकाश होने लगा। व्याकरणकार लेखकों पर भाँति-भाँति के कथनों, गालियों आदि द्वारा दबाव डालते रहे। यहाँ तक कि प्राकृत का व्याकरण भी दृढ़ हो गया, जिससे देश के लिए किसी और भाषा की आवश्यकता हुई। यही भाषा अपभ्रंश कहलाई। भारत एक भारी देश है। विविध प्रांतों तथा एक ही प्रांत में भी शब्दों के एकाधिक रूप चलने लगे, अथवा व्याकरण-संबंधी नियमों की स्वभावतः अवहेलना होने लगी। लोग मातृभाषा चाहते थे, जो आप-से-आप आ जाय, तथा वैयाकरण लोग पठित भाषा चलानी चाहते थे, जिसके पठन के लिए प्रचुर परिश्रम एवं समय की आवश्यकता थी। लोगों ने पंडितों के कथनों का तिरस्कार करके मातृभाषा का व्यवहार किया। केकई, कैकेई, केकयी आदि एक ही शब्द के अनेक रूप प्रचलित रहे। पतंजलि महाराज ऐसे रूपों की घोर निंदा करते रहे, और पंडित लोग इस मातृ भाषा का अपभ्रंश कहकर अपमान करते रहे, किंतु संसार ने इसी का मान

किया। कालिदास और बाणभट्ट तक के समयों (पाँचवीं और सातवीं शताब्दी सवत्) में इसका प्रचार था। समय के साथ बदलती हुई यही भाषा हिंदी हो गई। प्रारम्भिक समय में हिंदी का अपभ्रंश से मिलता जुलता रूप रहा, किंतु पीछे से इसने शीघ्रता पूर्वक उन्नति की। प्रौढ़ माध्यमिक काल तक हिंदी पूर्णतया प्रौढ़ होकर परमोत्कृष्ट पद्य ग्रंथ उत्पन्न कर सकी।

मुसलमानों के आगमन से हिंदू मुसलमानों के भाषा-भेद मिटाने को किसी नवीन भाषा की आवश्यकता पड़ी। वे लोग दिल्ली, मेरठ-प्रांत में पहले बसे थे, सो वहाँ की भाषा में अपने भी कुछ शब्द जोड़कर बातचीत का काम चलाने लगे। यह भाषा उर्दू कहलाई। जहाँ-जहाँ मुसलमानों का प्रभाव फैलता गया, वहाँ वहाँ के नगरों में उर्दू का प्रचार होता गया, किंतु ग्रामों में प्रांतीय भाषाएँ चलती रहीं। यही दशा आज तक है। शाहजहाँ के समय तक उर्दू ने भी अच्छी उन्नति कर ली थी। हमारे यहाँ तब तक गद्य-काव्य नहीं के बराबर था, तथा पद्य में व्रजभाषा का प्राधान्य था, अवध अपभ्रंशी भी कुछ-कुछ चलती थी। अँगरेज़ी राज्य के स्थापन से गद्य की उन्नति हुई और लल्लूजीलाल, राजा शिवप्रसाद, स्वामी दयानंद, भारतेंदु आदि के साथ विविध रूप धारण करते हुए हिंदी-गद्य संस्कृत गुम्फित रूप की ओर अग्रसर हुआ। भारतेंदु के समय तक बोल भाषा से यह हिंदी बहुत पृथक् न थी, किंतु पीछे के कुछ कवियों आदि ने इसमें अधिकाधिक संस्कृत-शब्दों का प्रयोग बढ़ाया, सो हमारी उच्च श्रेणी की समस्त कार्यवाही हिंदी लोक-भाषा से दिनोंदिन अधिकाधिक दूर होती जाती है, जिससे इसकी प्रतियोगिनी उर्दू का प्रभाव नगर-निवासी हिंदुओं पर से शिथिल होने के स्थान पर दृढ़ हो रहा है। इसी संस्कृत-बाहुल्य के कारण हिंदी के नाटक हमारे रंगमंच पर मान नहीं पाते, और उस

पर उर्दू का सिक्का यथावत् जमा हुआ है। बहुत लोग समझते हैं कि वही हिंदी उच्च है, जिसमें संस्कृत-शब्दों का बाहुल्य हो। ऐसे लोगों का ग्राहिणि कि क्रिया आदि की जो थोड़ी-सी 'नीचता' उनके हिंदी लख में लगी रहती है, वह भी निकालकर करोति, वर्तति आदि लिखने लगें। वास्तव में उच्च हिंदी का उदाहरण यदि देखना हो, तो चतुरसेन शास्त्री तथा उग्र की भाषा पढ़ी जाय। यदि संस्कृत शब्द-बाहुल्य से ही हिंदी उच्च हो सकती, तो उत्कृष्ट गद्य लेखन बहुत सुगम हो जाता। वास्तव में संस्कृत द्वारा गुड़ की हुई भाषा निंद्य है, ऊँची नहीं।

इतना सब देखकर भी न देखते हुए हमारे संस्कृत मर्मी महाशय केवल संस्कृत शब्द बाहुल्य से संतुष्ट न होकर संस्कृत व्याकरण के नियमों का भी अधिकाधिक आरोप हिंदी पर करना चाहते हैं। पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इस विषय पर बहुत ही श्लाघ्य अथवा निंद्य श्रम किया। यह श्रम अदूरदर्शी संस्कृत प्रेमियों के लिये श्लाघ्य है और व्यापक साहित्य प्रेमियों की दृष्टि में निंद्य। हमने संवत् १९६७ के निकट अपना हिंदी नवरत्न ग्रंथ साधारण बोलचाल के निकटवर्ती भाषा में प्रकाशित कराया। इसमें शब्दों के रूप भी एकाधिक प्रकार से लिखे हुए थे। द्विवेदीजी ने सरस्वती पत्रिका के पचासों कालमों में हमारी भाषा की निंदा की। हमने उस लेख का उत्तर दिया, किंतु कुछ लोगों ने यह भी समझा कि मिश्रबंधु भूल से, बिना सोचे-समझे, शब्दों के अशुद्ध रूप लिख गए, तथा अब धींगाधींगी करके उन्हें नवीन सिद्धांतों द्वारा ठीक प्रमाणित करते हैं। अतएव परसाल हम (श्यामविहारी मिश्र) ने हिंदी साहित्य-सम्मेलन के सभापतिवाले आसन से इसी सिद्धांत पर पुनः कथन किए। विभक्ति प्रत्यय लिंग भेद आदि पर भी हम स्वच्छंदता के पक्षी हैं। इस विषय पर कई सज्जनों ने हमारा विरोध किया है,

जिनके उत्तर हमने माधुरी तथा सुधा पत्रिका में छपवाए हैं। इस वर्ष के (तेईसवें) सम्मेलन ने दिल्ली में हमारा यह विचार बिना विवाद किए ही मान लिया है। सभापति श्रीमान् गायकवाड़ नरेश, श्रीयुत विद्यार्थी, माखनलालजी चतुर्वेदी आदि ने अपना स्वतंत्र वक्तृताओं में भी यही मत देश के लिये अनिवार्य माना। प्रयोजन यह कि यह श्रम अथवा भूलों का विषय न होकर हिंदी के जीवन तथा राष्ट्रभाषापन का प्रश्न है। यदि हिंदी पर व्याकरण का विवाद रहा, तो यह मातृभाषा न रहकर मृत भाषाओं में चली जायगी। इसलिये हम लोग सिद्धांत के रूप में संस्कृत के नियमों को हिंदी में अमान्य समझकर शब्दों के वे रूप लिखते और इतरों से लिखवाना चाहते हैं, जो संस्कृत व्याकरण के नियमों से चाहे अशुद्ध हों, किंतु देश में उनका प्रचार हो। स्मरण रखना चाहिए कि हिंदी-भाषा ही उन नियमों की तिरस्कार रूपा उत्पन्न हुई है।

इस काल व्याकरणकारों में रामलोचनशरण (१९७५) मुख्य लेखक हैं। बालोपयोगी ग्रंथों में रामजीलालशरण (१९६९) ने विशेष श्रम किया।

उत्तर नूतन परिपाटी कालवाले लेखकों तथा कवियों के पृथक् वर्णन पूर्व क्रमानुसार आगे आते हैं।

समय—संवत् १९६१

नाम—(३८८२) जयशंकरप्रसाद, बनारस।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) कानन-कुसुम (१११ कविताओं का संग्रह), (२) प्रेम पथिक (भाव-पूर्ण छंदोबद्ध काव्य), (३) महाराणा का महत्त्व, (४) सम्राट् चंद्रगुप्त मौर्य (ऐतिहासिक नाटक), (५) छाया (चित्ताकर्षक ११ गल्पों का गुच्छ), (६) उर्वशी चंपू (संस्कृत द्वि० संस्करण), (७) राज्यश्री (नाटिका), (८)

करुणालय (नाटक), (६) प्रायश्चित्त (नाटक), (१०) करुणा का परिणाम (रूपक), (११) झरना (काव्यमाला), (१२) अजातशत्रु (बौद्धकालिक नाटक), (१३) स्कंदगुप्त विक्रमादित्य (नाटक), (१४) प्रतिध्वनि (गल्प, गद्य-काव्य), (१५) कंकाल (उपन्यास)। कई गल्प भी।

विवरण—आप काशी के गण्य मान्य रईस बाबू देवीप्रसादजी 'सुँघनी साहु' के सुपुत्र हैं। आप जाति के कनौजिया वैश्य हलवाई हैं। वर्तमान काल के आप एक सुकवि और उच्च कोटि के नाटक-रचयिता हैं। ऐतिहासिक विषय पर तथा गल्प ग्रंथ भी आपने अच्छे लिखे हैं। इनके नाटकों का आजकल बहुत मान है। भारतेंदु से इतर ऐसा नाटककार हिंदी में शायद कोई नहीं हुआ है। आपके स्कंदगुप्त विक्रमादित्य, अजातशत्रु और चन्द्रगुप्त बहुत ही उच्च कोटि के ग्रंथ हैं। लेखन विधि ऊँची है। नाटकों में गाने तथा छंद बहुत ही मनोहर अन्यान्य मिश्रित भी लिखते हैं। भाषा काठिन्य से इनके नाटक रंगभूमि में शायद खेले नहीं जावेंगे, क्योंकि सर्व-साधारण उन्हें समझ नहीं सकते। आपके नाटक परमोच्च पाठ्य ग्रंथ हैं। 'उर्वशी' तथा प्रेमराज्य आपकी प्रारंभिक रचनाएँ हैं। काशी की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका इंदु में इनकी गद्य तथा पद्य मय रचनाएँ प्रकाशित हुआ करती थीं।

उदाहरण—

> उदित कुमुदिनी-नाथ हुए प्राची में ऐसे—
> रत्नाकर से सुधा कलश उठता हो जैसे।
> धीरे धीरे उठे नई आशा से मन में;
> क्रीड़ा करने लगे स्वच्छ स्वच्छंद गगन में।
> चित्रकूट भी चित्र लिखा-सा देख रहा था;
> मंदाकिनी-तरंग उसी से खेल रहा था।

[illegible] विचारा क्या !

[illegible] बीति कै [illegible],

[illegible] मैं प्रेम का [illegible] क्या !

[illegible] हिय [illegible],

[illegible] ! [illegible] बिसारी क्यों !

नाम—(३८८३) जानकीप्रसाद द्विवेदी।

इनके पिता पं० रामगुलाम [illegible], जिला सागर, मध्यप्रदेश के रहनेवाले हैं। इनका जन्म सं० १९२६ में हुआ। कविता करना ही इनका व्यवसाय है। निम्न लिखित ग्रंथ इनके बनाए हुए हैं। मुद्रित ग्रंथ—(१) जानकी-[illegible], (२) मित्र-लाभ, (३) प्रिय परिचय, (४) रामायण-रहस्य का अनुवाद, (५) षट्ऋतु काव्य, (६) नर्मदा-माहात्म्य, (७) शृंगार तिलक, (८) वेश्या षोडश। अमुद्रित—(९) साहित्य-सरोवर, (१०) काव्य-दोष, (११) [illegible] भंडार, (१२) काव्य-कौमुदी, (१३) नारी नख शिख, (१४) प्रकृति-प्रसाद, (१५) अन्योक्ति-[illegible], (१६) अन्योक्ति-पचासा, (१७) राधा-कृष्ण-संवाद, (१८) रंभा शुक-संवाद, (१९) विनय शतक, (२०) समस्या-पचीसी, (२१) [illegible], (२२) महेंद्र-मंजरी।

विवरण—आपने विविध विषयों के चुनाव में अच्छी पटुता दिखलाई है। इस ओर आपके ग्रंथों का अभी बहुत चलन नहीं है।

नाम—(३८८४) शिवनाथसिंह सेंगर।

जन्म-काल—१९३६।

ग्रंथ—(१) सिंहल द्वीप में सेंगरों का राज्य, (२) गुहिलोत और नागर ब्राह्मण, (३) क्षत्रिय-वंशावलि-वेत्ताओं की निरंकुशता, (४) हिंदू देव मंदिर और पुराने समय के अँगरेज़ कर्मचारी, (५) लार्केंडाख्यान, (६) भरेह के सेंगर-वंश का संक्षिप्त इतिहास, (७) क्षात्र धर्म, (८) शिवनाथ भास्कर।

विवरण—आप कुँवर आनंदसिंह सेंगर के पुत्र तथा श्रीनगम्मन पुर-नरेश के समीपी भ्रातृ वर्ग में से हैं। आजकल आप बीकानेर राज्य में खासगी विभाग के ऑफ़िसर हैं। आपने क्षत्रिय-जाति का इतिहास बड़ी खोज तथा छानबीन के साथ लिखा है। आपका ऐतिहासिक श्रम श्लाघ्य है।

नाम—(३८८५) शिवरत्न शुक्र बछरावाँ, ज़िला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९३६।

ग्रंथ—(१) प्रभु-चरित्र, (२) श्रीरामावतार, (३) आर्य-सनातनी संवाद, (४) भिक्षां देहि, (५) स्वामी विवेकानंद के अँगरेज़ी लेखों तथा व्याख्यानों का अनुवाद, (६) स्वामी शंकराचार्य का जीवन-चरित्र, (७) उपदेश पुष्पांजलि, (८) परदा, (९) रामावतार, (१०) ऋतु-कविता, (११) कान्यकुब्ज-रहस्य, (१२) परिहास प्रमोद, (१३) भरत भक्ति। यह अंतिम प्रायः पाँच सौ पृष्ठों का उत्कृष्ट काव्य ग्रंथ है। रेल के विषय पर भी आप ने कई ग्रंथ लिखे हैं। आपका साहित्य श्लाघ्य है। यदि भरत भक्ति-सा चमत्कार-पूर्ण भारी ग्रंथ आपने किसी नूतन एवं अच्छे विषय पर लिखा होता, तो आपका परिश्रम वास्तव में श्लाघ्य होता।

विवरण—आप प० बचनि चावारीजी के पुत्र हैं। ऊपर दिए हुए प्रथा के अतिरिक्त इन्होंने "स्टेशन-मास्टर्स गाइड" 'शार्टस्ट रूट' और 'ट्रैफिक एकाउन्ट्स' आदि कई अँगरेज़ी की भी पुस्तकें लिखी हैं। इस समय यह श्रीतुलसीदासजीकृत रामायण का भाष्य कर रहे हैं। पहले आप खड़ी बोली में कविता करते थे, किन्तु अब व्रजभाषा में करने लगे हैं। इधर कुछ समय से बैसवारी भाषा में भी कविता करना आरंभ कर दिया है। थोड़े दिन हुए, आप रेल की सेवा से रिटायर वृद्धावस्था मना रहे हैं।

उदाहरण—

लागि गे गुलाब एक आर सब फीकी भई,
मधप हू मौन कीन्हें कोकिला बनाय कै,
थाकि चाकि चातक चितै के चहुँ ओर हरि,
शरद ह कोह कीन्ह वदन दुराय कै।
शिशिर, हेमंत हू तुषार धार कीन्ह बहु,
दलि डारयो कंज दल औरन भगाय कै,
माघ सुदि पंचमी शिशिर शीत दाह करि,
गाड़यो है बसंत डाह डोलहू बजाय कै।
आयो ना निदाघ अरु पावस शरद सखि,
शिशिर हेमंत हू विधान घोर छायो है;
आयो ऋतुराज सब सुख के समाज आन,
मधुप निकर पिक चातक सुहायो है।
मल्लिका गुलाब कचनार सु बन फूलि रहे,
मलय महँक मनसिज हू जगायो है,
कमला वियोग पीर अबलौं सहन करे
अबलौं न आयो कहाँ अब लौं

समय—संवत् १९६२

नाम—(३८८६) आत्माराम देवकर, हटा, जिला दमोह।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) त्रैलोक्य सुंदरी (उपन्यास), (२) आदर्श मित्र (उपन्यास), (३) मनमोहिनी (उपन्यास), (४) भयंकर दुर्दशा (उपन्यास), (५) माया मरीचिका (उपन्यास), (६) पानी का बुलबुला (उपन्यास), (७) स्नेह लता (गल्प), (८) कुसुम कला (काव्य, अमुद्रित)।

विवरण—आप महाराष्ट्र क्षत्रिय श्रीयुत सदाशिवराव देवकर के पुत्र हैं। आपने अपनी आय सभा पुस्तकें गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ को भेंट की हैं। उपन्यास विभाग पर आपने श्लाघ्य श्रम किया है।

नाम—(३८८७) कालूराम द्विवेदी (विद्यारसिक), राजपूताना।

जन्म-काल—सं० १९३०।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—
मुद्रित { (१) बाल विवाह-खंडन, (२) बाल विवाह-कुठार, (३) हिंदूपन की रक्षा, (४) भारत-दुःख नाशक अपूर्व औषधि (५) प्रार्थना बत्तीसी, (६) सहसराम का इतिहास।

अमुद्रित { (७) घरू ब्राह्मण, (८) भविष्यवाणी, (९) धर्म दिग्दर्शन, (१०) विवाह विधान।

विवरण—आप प० जयनारायणजी तेवारी के पुत्र हैं। गौड़ ब्राह्मणान्तर्गत चूंदीवाल आपका वंश है। [प० भावरमल्ल त्रिवेदी, जसरापुर, द्वारा ज्ञात] आप देशप्रेमी कवि हैं।

उदाहरण—

है उपासना सों प्रेम यदि भाखो दीनानाथ,
फल कहै ऐसा फिर औसर न पाओगे;
मौका है इसी समय डूबता है हिंदी धर्म,
राखो अवतार यह लेकर दिखाओगे।
नमो, गुरुमार्ग, चरणों कहूँ जो नाथ,
पूरन कामो दया दृष्टि ईश दरसाओगे,
मरजाद मिटती है देखत क्या कृपा सिंधु,
देरी यदि कराओगे, तो पाछे पछताओगे।

नाम—(२८८८) जैन वैद्य, जयपुर।

रचना-काल—१९६२।

विवरण—मिस्टर जैन वैद्य का नाम जवाहरलाल था। आप जाति के जैन वैद्य थल के थे। इनके पिता महाराणा जयपुर के यहाँ अच्छे पद पर थे। इनका जन्म सं० १९३[illegible] में हुआ। इन्होंने एंट्रेंस ही तक अँगरेज़ी पढ़ी थी, परंतु विद्या रसिक होने के कारण उसमें अच्छी उन्नति कर ली। आपने बँगला, उर्दू, मराठी, गुजराती और मागधी का भी अभ्यास किया। हिंदी के बड़े रसिक थे, और नागरी प्रचार का सदैव यत्न करते रहते थे। इन्होंने जैन मत पोषक, उचित वक्ता और जैन गज़ट-पत्र निकाले थे, परंतु वे चल न सके। समालोचक पत्र भी इन्होंने चार साल तक बड़े परिश्रम तथा व्यय से चलाया, जिसके कारण हिंदी संसार में इनकी बड़ी ख्याति हुई। छात्रावस्था में इन्होंने हिंदी के 'कमल मोहिनी भँवरसिंह नाटक', 'व्याख्यान प्रबोधक' और 'ज्ञान वर्णमाला' नाम्नी तीन पुस्तकें लिखीं। नागरी प्रचारिणी सभा के उत्साही सहायक थे। सभाओं एवं समाजों में सदैव योग देते रहते थे। हमारे मित्र थे। इन्होंने जयपुर में एक नागरी भवन खोला था, जो अब तक अच्छी

दशा में है । आप बड़े ही उदार, विद्या प्रेमी तथा मित्र-वत्सल थे। थोड़ी अवस्था में मित्र तथा कुटुंबियों को शोक-सागर में छोड़कर चैत्र संवत् १९६६ में चल बसे।

नाम—(३८८१) देवीप्रसाद चतुर्वेदी 'वचनेश'।

जन्म-काल—सं० १९३७।

रचना काल—सं० १९६२।

विवरण—आप फ़र्रुख़ाबाद के निवासी हैं। स्फुट छंद बहुधा कहा करते हैं, और सुकवि हैं।

उदाहरण—

जोग जग जाने जग त्यागिबो वियोग जाने,
परम वियोगी याग साधन सुगम है;
जगत बिसार जगदीश मन जोगै और,
चिंतावन करत की भावत निगम है।
प्रेम पति पागो त्यों वियोगी अरलीन मन,
सकल विकार हीन मारग अगम है,
योगी सब त्याग तिन्हैं त्यागत वियोगी कहौ,
योगिन ते याग में वियोगी कौन कम है॥ १॥
घुमड़ घमंड घन गरज गरज कैधौं,
सबल सरोष बीर दलन जमायो है;
गरज अकाश के तड़ाक ताप तुपन की,
भींगुर मँडूक बीर बाजन बजायो है।
दामिनी प्रकाश कैधौं खुले म्यान बीरन के,
धुरवा सुवाजि धार धरन धसायो है।
ग्रीषम महीप जार मान छाड़िबे के हित
पावस में इन्द्र बीर टोगो बनि आयो है॥ २॥

नाम—(३८९०) नंदकिशोर शुक्ल, वाणीभूषण।

जन्म-काल—सं० १९३७।

रचना-काल—सं० १९९२।

ग्रंथ—(१) उपनिषदों का उपदेश, (२) सनातन धर्म और दयानंदी मत, (३) तुलसी-महिमा, (४) तुलसी सूक्ति संग्रह, (५) भारत भक्ति पुरी प्रसाद-व्यवस्था, (६) रोज़ क्रियासक्ती राष्ट्रीय फाग, (७) सूफ़ी संप्रदाय, (८) पंच गकार प्यारे दोहे, (९) अद्वैतवाद, (१०) गीता रहस्य (११) भगवान् कृष्ण।

विवरण—आप उन्नाव ज़िलांतर्गत टेढ़ा निवासी पं० शिवप्रसाद के पुत्र हैं। भारी व्याख्याता एवं हिंदी के गद्य पद्य लेखक हैं।

नाम—(३८९१) मदन द्विवेदी गजपुरी बी० ए०, एम्० ए०, एम्० बी०।

गोरखपुर ज़िलांतर्गत राप्ती-तटस्थ गजपुर ग्राम में जीविका-वश उक्त कान्यकुब्ज घराने आ बसे हैं। इन्हीं में कश्यपगोत्रीय मंगलालय के दूबे लोगों का कुल भी है। इसी वंश में पं० मातादीन द्विवेदी एक प्रसिद्ध रईस ज़मींदार और ब्रजभाषा के कवि थे। पं० मदन द्विवेदी आप ही के पुत्र हुए। सं० १९४७ वि० की आषाढ़ी प्रतिपदा के दिन आपका जन्म हुआ। सब परीक्षाओं को अच्छी तरह पास करते हुए १९६९ में आपने गवर्नमेंट-कॉलेज, बनारस से बी०ए० पास किया। कविता करने और लेख लिखने का आपको लड़कपन से शौक़ था।

मुख्य काव्य ग्रंथ—(१) मातृभूमि से विदाई, (२) मातृभूमि, (३) मृत्यु-शरशय्याशायी रावण, (४) विंध्याचल, (५) भारत माता गांधी के प्रति, (६) प्रेम पंचक, (७) ग्रामीण दृश्य, (८) अर्धरात्रि, (९) जन्माष्टमी, (१०) दासत्व, (११) गृह-लक्ष्मी, (१२) सती सुलोचना, (१३) भावना, (१४) काशी, (१५) प्रयाग, (१६) हमारा ग्राम, (१७) विश्वामित्र

दशरथ के प्रति, (१८) उच्छ्वास, (१६) चकोर की वेदना और वर्षा । आप तहसीलदारी के काम से छुट्टी न रहने पर भी कुछ न कुछ लिखा ही करते थे । आपने निम्न लिखित और पुस्तकें लिखीं— (१) प्रभु विनय (पद्य), (२) धनुष भंग (पद्य), (३) रणजीत सिंह, (४) आत्म ललना, (५) नागरपुर विभाग के कवि, (६) भारतवर्ष के प्रसिद्ध पुरुष, (७) मुसलमानी काल का भारत । शोक का विषय है, आपका देहांत बहुत थोड़ी अवस्था में हो गया । आप उच्च श्रेणी के लेखक और सज्जन देशप्रेमी थे । आपकी अमर रचनाओं में बहुत ही श्लाघ्य अनुराग रहता था । यदि आप दीर्घ जीवी होते, तो वर्तमान लेखकों में बहुत ऊँचे स्थान के अधिकारी भरते । अब भी आपकी रचनाएँ बहुत ही श्रेष्ठ हैं ।

उदाहरण—

जन्म दिया माता सा जिसने किया सदा लालन पालन,
जिसके मिट्टी जल से ही है रचा गया हम सबका तन ।
गिरिवरगण रक्षा करते हैं उच्च उठा के शृंग महान,
जिसके लता द्रुमादिक करते हमको अपनी छाया दान ।
माता केवल बाल काल में निज अंकम में धरती है,
हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन पोषण करती है ।
मातृभूमि करती है मेरा लालन सदा मृत्यु पर्यंत,
जिसके दया प्रवाहों का नहिं होता सपने में भी अंत ।
मर जाने पर कण देहों के इसमें ही मिल जाते हैं,
हिंदू जलते यवन इसाई दफ़न इसी में पाते हैं ।
ऐसी मातृभूमि मेरी है स्वर्ग लोक से भी प्यारी,
जिसके पद-कमलों पर मेरा तन मन धन सब बलिहारी ।

आप बड़े ही देश भक्त तथा सज्जन थे । आपकी अकाल मृत्यु से हिंदी की भारी हानि हुई है ।

नाम—(३८१२) रामप्रियाजी।

श्रीमती रानी रघुराजकुँवरि उपनाम रामप्रिया अवधप्रदेशांतर्गत ज़िला प्रतापगढ़ के थानरेवुल राजा प्रतापबहादुरसिंह के० सी० आई० ई० की रानी थीं। इन्होंने महाराज एडवर्ड सप्तम के तिलकोत्सव में इँगलैंड जाकर महारानी से मुलाक़ात की थी। यह बड़ी विदुषी थीं। इन्होंने भक्ति पक्ष के अनेक रागों में रामप्रिया विलास नामक ग्रंथ रचा, जिससे इनकी विद्या का परिचय मिलता है। इसी ग्रंथ से एक पद नीचे लिखते हैं—

कहि रामप्रिया गुन गाऊँ, जो राम के, छंद रचौं जो हुलासन सों,
सुखसहज उर विचारयो मन नित बैठे रहै इक आसन सों।
फल चारिहु पावै बिना श्रम के भय ताहि कहाँ जम पासन सों,
फिरि अन्तहु स्वर्ग पयान करै चढ़ि बैठे बिमान हुलासन सों।

इन्होंने उपर्युक्त ग्रंथ के अतिरिक्त स्फुट रचना भी की है। इनकी भाषा प्रांजल और भाव सरल है।

इनका स्वर्गवास बैशाख सं० १९७१ में हो गया। इनकी कविता श्रेष्ठ थी।

नाम—(३८१३) सत्यदेव।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३६।

यह महाशय अमेरिका से विद्या प्राप्त करके लौट आए हैं। आपका हिंदी प्रेम बड़ा सराहनीय है। अमेरिका से भी अच्छे अच्छे गद्य लेख प्रसिद्ध प्रसिद्ध पत्रों में सदा छपवाते रहे, और स्वदेशानुराग पूर्ण लेखों में अनेकानेक बातों का वर्णन करते रहे। आपके यहाँ आ जाने से हिंदी उन्नति की विशेष आशा है। जाति के खत्री हैं। आपने जातीयशिक्षा, मनुष्य के अधिकार आदि कई उत्कृष्ट गद्य ग्रंथ रचे हैं। बहुतदिनों से आप देश भक्त सन्यासी हैं, परन्तु हिंदी का काम अब भी बड़े उत्साह से करते हैं। आपने अमेरिका, जर्मनी, कैलाश

आदि की यात्राएँ की थीं, जिनके बयान पुस्तक-रूप में प्रकाशित किए गए हैं। आपकी भाषा बड़ी ज़ोरदार होती है। कहीं-कहीं प्रत्युक्ति भी समझ पड़ती है। सामयिक पत्रों में आपके लेख निकला करते हैं। व्याख्यान भी अच्छे देते हैं। ऐसे ही नवीन भाव पूर्ण लेखकों की देश को आवश्यकता है। २०००० से ऊपर प्रतियाँ आपके बिगुल की बिक चुकी हैं। आपके कई ग्रंथों के बँगला, गुजराती आदि में अनुवाद हुए हैं। गरम विचार अवश्य रखते हैं, किंतु इतने नहीं कि जल नाना पड़ा हो।

नाम—(३८१४) हरीकृष्ण जौहर, कलकत्ता।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—(१) नापान वृत्तांत, (२) अफ़गानिस्तान का इतिहास, (३) भारत के देशी राज्य, (४) रूस जापान-युद्ध, (५) पलासी का लड़ाई, (६) कुसुमलता आदि बहुत-से ग्रंथ।

विवरण—आप हिंदी बंगवासी के संपादक एवं लब्धप्रतिष्ठ उच्च श्रेणी के लेखक हैं।

समय—संवत् १९६२

नाम—(३८१५) काशीप्रसाद जायसवाल एम्० ए० बैरिस्टर मिर्ज़ापुर, हाल पटना।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—कलवार-गज़ट, कई स्फुट लेख।

विवरण—आप बड़े मिलनसार सज्जन पुरुष हैं। पुरातत्त्व में आपने अच्छा श्रम किया है, और कई लेख लिखे हैं। प्रसिद्ध हिंदी प्रेमी और ज्ञाता हैं।

नाम—(३८१६) गिरिधर शर्मा नवरत्न।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना-काल—स० १९९२।

ग्रंथ—(१) सावित्री, (२) सुकन्या, (३) ऋतु विनोद, (४) कठिनाई में विद्याभ्यास, (५) ग्रंथ शास्त्र, (६) सुभूपा, (७) आरोग्य दिग्दर्शन, (८) जयानयत, (९) भीष्म प्रतिज्ञा, (१०) शुद्धाद्वैत सिद्धांत, (११) गीतांजलि, (१२) चित्रांगदा, (१३) बागवान, (१४) राई का पर्वत, (१५) पद्य रत्न प्रभा, (१६) उपा, (१७) सच्चे सुख की कुंजियाँ, (१८) संसार में सुख कहाँ है, (१९) बारह भावना, (२०) रत्नकरंड श्रावकाचार, (२१) भक्तामर कल्याण मंदिर, (२२) पंचस्तोत्र।

विवरण—आप प्रश्नोरा नागर ब्राह्मण मजेश्वर भट्ट के पुत्र संस्कृत के विद्वान्, अच्छे कवि तथा हिंदी के सुयोग्य लेखक एवं कविता प्रेमी हैं।

उदाहरण—

तिय मुख रहे निहार करे विचार न काम का;
करनी के निरधार वह मनुष्य किस काम का।
गिरिधर तत्त्व विचार दोनो की इक जाति है;
पर जग के व्यवहार वह हीरा यह कोयला।
जड़ से उखाड़ डारो डारो हे मुखाय मेर
प्राण घाटि डारे धर पुर्जों के मकान में;
मोरी गाँठ काटैं, मोहि चाकू से तरास डारैं,
श्रत चीर डारें धरें नाहिं व्यथा ध्यान में।
स्याही माँहि बोरि बोरि करें मुख कारो मेरो,
करूँ मैं उजारो तोहू ज्ञान के जहान में;
परहू पराए हाय! तजों न परोपकार,
चाहे घिस जाऊँ यों कलम कहे कान में।

नाम—(३८३०) चंद्रमनोहर मिश्र बी० ए०, एल्‌ एल्‌० बी०।

आप सरायमीरा [illegible]
यतानूलाल मिश्र के [illegible]
फ़रुखाबाद में वकालत [illegible]
में बनाया है। आपका [illegible]
१९६२ से प्रारंभ होता [illegible]

नाम—(२८१८) [illegible]
जिला संथाल (बिहार [illegible]
जन्म-काल—सं० १९ [illegible]
रचना काल—सं० १९ [illegible]
ग्रंथ—(१) जागे [illegible]
(३) रसबिंदु, (४) [illegible]
(७) काला पहाड़ (८ [illegible]
(१०) घटकपर काव्य, [illegible]

विवरण—आप पं० [illegible]
के प्रपौत्र हैं। मैथिल भा[illegible]
प्रेस में सहायक संपाद[illegible]
भागलपुर में 'कारोनेशन' [illegible]
कल्पलता नाम की एक [illegible]
संपादकत्व में 'सुप्रभात' [illegible]
यह पत्र धनाभाव के [illegible]
साहित्य के अतिरिक्त [illegible]
पाठ्योपयोगी पुस्तकें [illegible]
के सुलेखक हैं। वीर-वृत्त [illegible]
प्रकाशित होनेवाली हैं [illegible]
एवं प्रकृति निरीक्षण तथा [illegible]

उदाहरण—

[illegible]कार—अप्रकाशित महाकाव्य से]

[illegible] दल मुक्तावली-सी श्री[illegible],
[illegible] थे कादम्ब थी [illegible]।
[illegible] कूजता गूँजता थी,
प्रकृति पति को प्रेम से पूजता थी॥ १॥
[illegible] का [illegible] के [illegible] से ही
उद्दीपित किया [illegible] की ओर से ही।
[illegible] परे व्योम में [illegible],
[illegible] दिन गए नित्य उत्सुक [illegible]॥ २॥
[illegible] महा थी रहा विश्व मान्य,
विद्धित हुई [illegible] हाय [illegible]।
[illegible] भुवनमयी [illegible] थे,
[illegible] हुए भाग्य के चक्र से वे॥ ३॥
[illegible] यवन मारियों के दुराचार-पूर्ण
[illegible] जब हिय गया हिंदुओं का विदूर्ण।
तब हुए [illegible] तब न रक्खा विवेक,
कतिपय मिल धर्म की छोड़ टेक॥ ४॥
विगलित हुई राजती गर्वों से,
[illegible] भुवि का जा मिली [illegible] से।
जो [illegible] प्रजा [illegible] के [illegible],
प्रति विनय से नित्य [illegible] सलाम॥ ५॥
[illegible] यों दिन फिर गया, आ गई [illegible],
विलसित हुई [illegible] ध्वजा [illegible]।
यों विजय-गरिमा नित्य [illegible] से,
[illegible] सारी दिशा से॥ ६॥

(श्री) प्रतिपालसिंह ठाकुर, पहरा, राज्य छतरपुर।

ग्रंथ—(१) वीर बाला, (२) बुंदेलखंड का इतिहास (बड़ा ग्रंथ), (३) औद्योगिक शिक्षा (निबंध), (४) बैतालपचीसी, (५) शिशु-सबोधिनी, (६) बालिकाविनोदिनी, (७) बाल विहार, (८) बालवृंद, (९) विदुरप्रजागर (संपादन), (१०) हॉलीहजारा (संग्रह), (११) शृंगार-कुंडली, (१२) आर्य-देव-कुल का इतिहास, स्फुट लेख तथा कविताएँ।

विवरण—आपका जन्म पौष कृष्ण ८ बुधवार सं० १९३८ को, आपके पैतृक जागीरी स्थान पहरा में, हुआ। आप बुंदेला क्षत्रिय-कुलोत्पन्न दीवान भानुसिंह के सुपुत्र हैं। औद्योगिक शिक्षा पर आपको काशी-नागरी प्रचारिणी सभा से स्वर्ण-पदक भेंट में मिला।

उदाहरण—

वर वीर देश बुंदेलखंड,
तप त्याग-केंद्र हिय भरतखंड।
गुरु विशद विंध्यगिरि गगन ताहि,
नद, गर्त गूढ़ पाताल जाहि।
रमादि सर्व सरल अग,
कहुँ सुघल शुभ्र कहुँ कठिन शृंग।
कहुँ पुष्पित वन, सर, नगर, खेत,
कहुँ निर्जन, निर्जल, विकराल रेत।
कहुँ विकट खात रद कटकटात,
कहुँ लूक कत्रवर मुखस जात।
बहु गढ़ गुफादि मंदिर, कुटीर,
सत, रज, तम-गुणमय जीव भीर।
प्रख्यात धार सरितन मँझार,
गुण अति अनूप आनँद अगार।

आप सरायमीरा ज़िले [illegible]
यतानूलाल मिश्र के पुत्र [illegible] [लार—अप्रकाशित महाकाव्य से]
फ़रुखाबाद में वकालत क[illegible] [illegible] मुक्तामय्या आशिखिया,
में बनाया है। आपका [illegible] [illegible] थे कान्ति [illegible] गरिष्ठा।
१९९२ से प्रारंभ होता है। [illegible] प्रजा कहती गूँजती थी,
नाम—(३८१८) जन्म [illegible] पति को प्रेम से पूजती थी॥ १॥
ज़िला संथाल (बिहार) [illegible] का काल के कोप से हा
जन्म काल—सं० १९७० [illegible] किया कुल का भार से ही।
रचना काल—सं० १९९१ [illegible] परे व्योम में सूर जाता,
ग्रंथ—(१) नारी [illegible] दिन रण निज [illegible] जाता॥ २॥
(३) रसबिंदु, (४) पत्र [illegible] सदा जो रही विश्व मध्य,
(७) काला पहाड़ (अनु[illegible] [illegible] हुई अदिति हाय भाग्य!
(१०) षट्पद काव्य, ([illegible] [illegible] जनक्षयी [illegible] मे थे,
विवरण—आप प० सुरा[illegible] [illegible] हुए नाम के चक्र से वे॥ ३॥
के प्रपौत्र हैं। मैथिल ब्राह्मण [illegible] यवन-मदिरों के दुराचार पूर्ण
प्रेस में सहायक संचालक [illegible] गया हिंदुओं का विचूर्ण।
भागलपुर में कारोनेशन [illegible] [illegible] रहा विपक्ष,
कल्पलता नाम की एक [illegible] [illegible] मिले धर्म की [illegible]॥ ४॥
संपादकत्व में 'सुप्रभात' नाम [illegible] हुई [illegible] से,
यह पत्र धनाभाव के का[illegible] [illegible] मुनि का [illegible] से।
साहित्य के अतिरिक्त आ[illegible] [illegible] प्रजा [illegible] का वे गुमान
पाठशालोपयोगी पुस्तकें [illegible] जो [illegible] नित्य रहते सजान॥ ५॥
के सुलेखक हैं। वीर-वृत्तांत, [illegible] विनय से नित्य [illegible]
प्रकाशित होनेवाली हैं। [illegible] दिन फिर गया, हा गई [illegible],
एवं प्रकृति निरीक्षण तथा च[illegible] [illegible] हुई ज्यों [illegible] चाँदवाली।
उदाहरण— [illegible] विजय-गरिमा नित्य [illegible] से,
[illegible] सारे अवधि में आप सारा दिशा से॥ ६॥
[illegible] ठाकुर, पहरा, राज्य [illegible]।

ग्रंथ—(१) वीर बाला, (२) बुंदेलखंड का इतिहास (बड़ा ग्रंथ), (३) औद्योगिक शिक्षा (निबंध), (४) लेखपचीसी, (५) शिशु-सबोधिनी, (६) बालिकाविनोदिनी, (७) बाल विहार, (८) बालबूंद, (९) सिंदुरमजागर (संपादन), (१०) होलाहजारा (संग्रह), (११) शृंगार-कुंडली, (१२) आर्य वंश-कुल का इतिहास, स्फुट लेख तथा कविताएँ ।

विवरण—आपका जन्म पौष-कृष्ण ८ बुधवार सं० १९६८ का, आपके पैतृक जागीरी स्थान पहरा में, हुआ । आप बुंदेला क्षत्रिय-कुलोत्पन्न दीवान भानुसिंह के सुपुत्र हैं । औद्योगिक शिक्षा पर आपको काशी-नागरी प्रचारिणी सभा से स्वर्ण पदक भेंट में मिला ।

उदाहरण—

मह वीर देश बुंदेलखंड,
तप याग-केंद्र हिय भरतखंड ।
तुंग विशद विंध्यगिरि गगन ताहिं,
नद, गर्त गूढ़ पाताल जाहिं ।
रत्नादि सर्व संपन्न अंग,
कहुँ सुघड़ शुभ्र कहुँ कठिन शृंग ।
कहुँ पुष्पित बन, सर, नगर, खेत,
कहुँ निर्जन, निर्जल, विकराल रेत ।
कहुँ विकट घाँव रद कटकटात,
कहुँ सूक कलेवर मुलस जात ।
बहु गह गुफादि मंदिर, कुटीर,
सत, रज, तम-गुणमय जीव भीर ।
प्रख्यात चार सरितन मँझार,
तुव अति अनूप आनँद अपार ।

गिरधर धनाय ति-यति प्रमूर,
    यमीय कोल सुर माग सूर।
दिति-दनुज, गरुड़ द्राविड़ मु गांव,
    मुन सरल बारजन दिय बगोंद।
कुल सूर - चन्द्र सता महान,
    किय सभ्य प्रतिष्ठित ससमान।

नाम—(११००) रामचन्द्र द्विवेदी (श्रीपति) ग्राम अमौली, जिला बलिया।

जन्म-काल—सं० १९१८।

ग्रंथ (मुद्रित)—

(१) उपदेश-कुसुमाकर, (२) धर्म, (३) ईश्वरास्तित्व, (४) नारी-गुण दर्पण, (५) कल्प-क्रन्दन, (६) भारत विलाप-पचासी, (७) हिंदू जाति का संगठन और सुधार, (८) हिंदुओ सावधान, (९) शिक्षा, (१०) प्राचीन और अर्वाचीन भारत।

(अमुद्रित)—

(१) भारत-सुधार, (२) कवि सम्राट् तुलसीदास, (३) वैदिक सतसई, (४) लीलावती-लता (भास्कराचार्य-कृत लीलावती नामक गणित ग्रंथ का पद्यानुवाद), (५) सुरस शांति-सरोवर, (६) तुलसी-सतसई की टीका, (७) हिंदू धर्म-मीमांसा, (८) श्रीपति शतक (१०० भिन्न विषयों पर कविताएँ)।

विवरण—द्विवेदीजी हिंदी भाषा के अच्छे ममज्ञ हैं। आप हिंदी-साहित्य के लेखक तथा कवि होने के अतिरिक्त अच्छे व्याख्याता भी हैं। वैद्यनाथ धाम के गुरुकुल-स्थापना का मुख्य श्रेय आप ही को है। [प० गंगाशरणसिंह शर्मा, ... द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

चितै चित चाहि प्रभु जितै जित हेरयो तहाँ,
तेरा ही महान गुन गान गहने पर,
जल थल एको क्यूँ खाली न लखात प्रभु,
पूरन समान पीठ धाम दहने पर।
बागन में, बेलिन में श्रीपति चमेलिन म,
चन्द-सूर लोक में प्रतच्छ कहन पर;
ग्हो जगदीश ! तेरी महिमा अपार लखि,
पण्डित सुकवि हूँ को मौन रहने पर।
(श्रीपति शतक से)

अलकार गुण हीन दीन तृपा की पीना,
छद छटा की छीन छाव छमता की छीना।
भाव भक्ति रस चग भग नीरस सब भाँती,
नहिं कवि-कुल आत्रेय लेप दुजु ब्य निष्पाती।
कवि 'श्रीपति' जू गाधी-चरित ससि समान सुपमा दमी,
होइहिं सज्जन सुखदा सदा कलुषा कुक कविता तमी।
(गाधी-गुण दर्पण से)

समय—सं० १९६४

नाम—(३३०१) गगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए० दया-निवास चीरो रोड, प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९३९।

रचना-काल—सं० १९६४।

ग्रथ—(१) शेक्सपियर (छ भागा में समालोचनात्मक भूमि-काओं-सहित ग्रथ), (२) पशु-पक्षी-वृत्तात (चौदह भागों में), (३) अँगरेज़ जाति का इतिहास, (४) विधवा विवाह-मीमासा, (५) आर्य-समाज, (६) आस्तिकवाद, (७) श्रीशकराचार्य

अर्थात् 'मत-सिद्धांत समूह' का भाषानुवाद, (८) अद्वैतवाद (माधुरी पत्रिका में प्रकाशित), (९) धम्मपद (समालोचनात्मक भाषानुवाद, अभी छपना है), (१०) आर्य समाज के सिद्धांत विषयक ७१ ट्रैक्ट (हिंदी में ६७ और अँगरेज़ी में ४) ।

विवरण—आपका मुख्य निवास स्थान मथुरा, ज़िला एटा है। इस समय यह दयानंद हाइस्कूल, प्रयाग के सुविख्यात प्रधानाध्यापक हैं। आपने प्रयाग विश्वविद्यालय से अँगरेज़ी तथा दर्शनशास्त्र में एम्० ए० की उपाधि प्राप्त की। यह महाशय एक उच्च कोटि के विद्वान् हैं, और अपने विद्वत्ता-पूर्ण ग्रंथों द्वारा इन्होंने हिंदी साहित्य की प्रशंसनीय पुष्टि की है। ऊपर लिखे हुए ग्रंथों के अतिरिक्त आपने पाठशालोपयोगी नए ढंग के व्याकरण ग्रंथ तथा पाठ्य पुस्तकें रची हैं, और इस उपलक्ष में सरकार ने आपको पारितोषिक प्रदान करके सम्मानित किया है। आजकल आप 'समाज-सुधार' तथा 'महिला-व्यवहार-चंद्रिका' नामक पुस्तकें लिख रहे हैं।

नाम—(३३०२) चंद्रमौलि सुकुल, हिंदू विश्वविद्यालय, काशी।

जन्म-काल—सं० १९३१।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) मानस दर्पण (अलंकार ग्रंथ), (२) अकबर (अकबर की जीवनी तथा तत्कालीन इतिहास), (३) शरीर और शरीर रक्षा (४) भाषा-व्याकरण, (५) अरिथमेटिक-शिक्षा प्रणाली (अंकगणित पढ़ाने की विस्तृत रीति), (६) मनोविज्ञान (Psychology), (७) रचना विचार (हिंदी में निबंध तथा पत्र लेखन की रीति), (८) नाट्य कथामृत (अँगरेज़ी में 'लैंब्स टेल्स' की रीति पर), (९) जानकी-गीत संस्कृत की टीका (अप्रकाशित), (१०) सादी कृत 'करीमा' का हिंदी पद्यात्मक अनुवाद, (११) गणित की प्रथम पुस्तक (हिंदी), (१२) लोअर प्राइमरी

अरिथमेटिक, (१२) फ़ाइनल अरिथमेटिक, (१४) हिंदी-पाठ-संग्रह भाग दो, (१५) हिंदी-शब्दावली, (१६) मैक्मिलन हिंदी रीडर।

विवरण—आप श्रीयुत पंडित काशीदीनजी शुक्ल के पुत्र हैं। आपके पूर्वज बैसवाड़े में गंगातट-वर्ती भागू खेड़ा ग्राम के निवासी थे, किंतु अब इनका मुख्य निवास स्थान लखनऊ ज़िले के अंतर्गत अन-रौली ग्राम है। आप काशी-हिंदू विश्वविद्यालय ट्रेनिंग-कॉलेज के प्रिंसिपल (अध्यक्ष) हैं। इन्होंने कुछ काल तक 'कान्यकुब्ज' तथा 'क्षत्री अख़बार' का संपादन किया है। आप उच्च कोटि के गद्य-लेखक हैं।

नाम—(३१०३) माणिक्यचंद्र जैन बी० ए०, बी० एल्०।

यह खंडवा मध्यप्रदेश के वक़ील थे। आपकी अवस्था प्रायः ३० साल की थी कि आपका देहांत हो गया। हिंदी ग्रंथ प्रसारिणी मण्डली, प्रयाग के मंत्री और बड़े ही उत्साही पुरुष थे। हिंदी के अनेकानेक ग्रंथ खोज-खोजकर प्रकाशित करते थे। हमारा हिंदी-नवरत्न और यह इतिहास आप ही ने बड़े उत्साह पूर्वक हमसे सहर्ष लेकर प्रकाशित किया था। गद्य के एक उत्तम लेखक थे। बड़े ही होनहार पुरुष थे, तथा हिंदी की उन्नति की आपसे बड़ी आशा थी, परंतु शोक है, इनका देहांत युवावस्था में ही हो गया। हिंदी के बड़े प्रेमी तथा उत्साही थे। इनकी अकाल मृत्यु से हिंदी की बड़ी हानि हुई।

नाम—(३१०४) मुहम्मदवज़ीरख़ाँ, ग्राम हिंडोरिया, ज़िला दमोह।

जन्म-काल—सं० १९३२।

रचना-काल—सं० १९६५।

ग्रंथ—(१) वसंत बहार (अप्रकाशित), (२) सती सुलोचना (नाटक, अप्रकाशित), (३) सदाचार दर्पण (अप्रकाशित), (४) स्फुट कविताएँ।

विवरण—दवरी निवासी सैयद अमीरअली 'मीर कवि' आपके काव्य-गुरु थे। इस समय आप अध्यापक हैं। आपकी रचनाएँ कानपुर से निकलनेवाले 'सुकवि' पत्र में प्राय: निकला करती हैं। [श्रीयुत लक्ष्मीप्रसादजी मिश्री द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

देश-सुधार करें न कछू, पर भेष-सुधार अनेक करेंगे।
आपुस में करि बैर सदा, कबहूँ नहिं धर्म में ध्यान धरेंगे।
मानत साथ्य न वेदन की, कुल-लाज जहाज डुबाय भरेंगे,
जे नर दूसरे द्वारनि तें गर कूरहि स्वान-समान फिरेंगे।
पालहु धर्म सबै अपनो, नहिं दूसरे के पथ पैर बढ़ाओ;
आपुस बैर तजौ अबहू, निज देस दसा हिय में सरसाओ।
भ्रात सनेह करो सबसे अरु फूट प्रपंच को दूर भगाओ;
जान 'धरमीर' सु औसर को अब देश के सीस कलंक न लाओ।

नाम—(३६०५) रामचंद्र शास्त्री, लाहौर।

जन्म-काल—सं० १९३६।

रचना-काल—सं० १९६१।

ग्रंथ—(१) शुद्धि, (२) भारतगौरवादर्श।

विवरण—उत्कृष्ट लेखक।

नाम—(३६०६) रामजीशरण विंध्याचलप्रसाद, ग्राम हरपुर नाग, चंपारन (बिहार प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९३१।

ग्रंथ—(१) श्रात्मज्ञापन, (२) विनय रत्नाकर, (३) अष्टक भंडार, (४) कलादिदिग्दर्शीकरण, (५) नाम यश-दर्पण, (६) नाम यश कुठार, (७) जानकी-यश तरंगिणी (८) सीता सुयश पत्री, (९) गुरु-वंदना, (१०) विलोम-दोहावली, (११) सारदा प्रबोधर, (१२) प्रह्लाद सौगंध, (१३) कलह मोचनी, (१४)

विरचि भजन, (१८) कृष्ण-लतिका, (१६) हनुमद्यश-पताका, (१७) महासकट मोचन, (१८) तुलसी-चालीसा, (१६) सूर्य-चालीसा, (२०) भव सागर नौका, (२१) सद्गुरु-चालीसा, (२२) प्रेम विवर्द्धिनी, (२३) आनद गुटिका, (२४) गीत मुक्तावली, (२५) सज्जन चरित्र माला, (२६) विन्ध्याचल महिमा, (२७) भगवत्-मयूख, (२८) रामस्तव तिलक, (२६) प्रेम-कुसुमाञ्जलि, (३०) विनय पुष्पाञ्जलि, (३१) पत्र विन्यास।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ मुंशी शिवप्रसादलालजी के पुत्र तथा अपने प्रांत के एक जमींदार हैं। आपकी रचनाएँ विशेष-तया भक्ति-मार्ग से सबध रखती हैं। आपके उक्त ग्रथों मे से केवल दो ही ग्रथ—प्रेम विवर्द्धिनी तथा नाम-यश-दर्पण— मुद्रित हुए हैं। प्रेम-विवर्द्धिनी इनकी सबसे पहली रचना है। आयुर्वेद, ज्योतिष, तत्र-जाल इत्यादि विषयो के भी आप ज्ञाता हैं।

उदाहरण—

अब उर धरि पद राम सिया को, धृत बाना जन हृदय दिया को ;
गावत विशद चरित तिन केरा, जिन करुणा करि मानस प्रेरो।
जो परिपूरण तम अविनाशी, अगुण अलख साकेत निवासी ;
मानव अवधि प्रकटि जलजाता, भयउ भक्त-अलिगण सुखदाता।
सोइ भ्रमर गोकुल सरोजा, प्रकट होइ छवि कोटि मनोजा ,
द्वापर कीन चरित जग पावन, सोइ भनत कछु परम सुहावन।
कृतयुग नाना ध्यान समाधी, त्रेता विविध यज्ञ आराधी ;
द्वापर करि परिचर्या पी की, जो नरवर पावहिं गति नीकी।
सो वर फल सज्जन कलि पावहिं, हरि-यश गहि सद्म धन गावहिं ,
बिनु हरि यश विशेष कछु नाहीं, तरन उपाय आन कछु नाहीं।
राम-कथा दुर्गा यथा, असुर महाकलिकाल ;
पाठक जन वर विबुधगण टारहिं विपति विशाल। (कृष्णायन से)

नाम—(३१०७) रामदेवजी प्रोफ़ेसर।

इनका जन्म सं० १९३१ में हुआ। इस समय आप गुरुकुल काँगड़ी में अध्यापक हैं। इनका बनाया भारतवर्ष का इतिहास प्रशंसनीय है। यह बड़ा गवेषणा-पूर्ण ग्रंथ है। ऐसे ग्रंथों की इस समय आवश्यकता है। और भी कई ग्रंथ आपने बनाए हैं।

नाम—(३१०८) हरिदत्त 'दीन'।

जन्म काल—सं० १९२१।

रचना-काल—सं० १९६४।

ग्रंथ—(१) प्रबंध-दीपक, (२) सामान्य नीति, (३) दीन-विनोद, (४) ध्रुव-चरित्र, (५) सदार्य धर्म-रहस्य, (६) सुवर्ण माला, (७) माप नियम-चंद्रिका, (८) संगीत-रामायण।

खेमीपुर ज़िला आज़मगढ़ के निवासी। सरयूपारीय ब्राह्मण पं० प्रयागदत्त त्रिपाठी के आप पुत्र हैं। आप एक सुकवि हैं।

उदाहरण—

> कहे जात न्यारे हैं अभिन्न जल बीच चार
>
> सत चित आनँद सरूप गुण धाम हैं;
>
> भक्तन के हेत बार-बार अवतार धरि
>
> जग बीच चरित पसारत ललाम हैं।
>
> भिन्न भिन्न देश में अनेक भाँति पूजे जात,
>
> भिन्न भिन्न भाषा में अनेक ताके नाम हैं;
>
> कहैं द्विज 'दीन' गौरी शंभु राधा श्याम जग
>
> जननी-जनक सो हमारे सियराम हैं।

समय—सं० १९६५

नाम—(३१०९) कृष्णकांत मालवीय, प्रयाग-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) सोहागरात अथवा बहूरानी को सीख, (२) मातृत्व, (३) मनोरमा के पत्र ।

विवरण—आपने मातृत्व के विषय पर इन ग्रंथों द्वारा अच्छा प्रकाश डाला है । देश प्रेम के कारण कई बार जेल यात्रा कर चुके हैं । अभ्युदय तथा मर्यादा का संपादन बहुत दिन तक किया था । सोहाग रात बहुत ही विख्यात है ।

नाम—(३११०) गदाधरसिंह (सजौलिया निवासी), पो० सिधौली, जिला सीतापुर ।

जन्म काल—सं० ११७० ।

जन्म-समय के उपलक्ष में आपकी लिखी सवैया नीचे दी जाती है—
मेखहि लग्न बिजै दसमी बुध संवत चालिस प्रात शुभी ये ;
सप्तम राहु परातन केतु मयक बृहस्पति कर्क में चौथे ।
षष्टम सूरज शुक्र जुगी ये गदाधर हैं परे पूछा न कौथे ;
दूसरे में शनि, तीसरे मंगल, यों ग्रहदात सबै ग्रह नौ धे ।

ग्रंथ—(१) साहित्य दिवाकर (नायिका-भेद), (२) भामिनी भुर्मोज (अप्रकाशित) ।

विवरण—आप श्रीशमशेरसिंहजी के पुत्र तथा श्रीमान् राजा सूर्यप्रशसिंह सी० आइ० इ० कमलवाधिप के भतीजे हैं । यह महाशय न० २६६७ तथा न० २०२५ पर आए हुए इसी नाम के दो कवियों से भिन्न हैं । इनको यह कवि श्रीयुत महिपालसिंहजी, सिजौलिया (सीतापुर) द्वारा ज्ञात हुए हैं । इन्होंने षट् ऋतुओं का भी अच्छा बयान किया है ।

उदाहरण—

वा सुकुमार अती लगै सुंदर आभा है केशन में तम तोम की ;
सादी पोशाक सों जो छवि जाहिर अंगहि अंग औ' रोमहि रोम की ।

(७) आदर्श जीवन, (८) विश्व प्रपंच, (९) प्रवाहगामिनी माला, (१०) शशांक, (११) बुद्ध-चरित्र काव्य, (१२) तुलसी दासजी की जीवनी तथा उनके ग्रंथों की आलोचना, (१३) जायसी की समालोचना, (१४) हिंदी साहित्य का इतिहास।

विवरण—कवि एवं लेखक हैं। मिश्रबंधु नाम सुनते ही जाम बाहर हो जाते हैं। और बातों में उच्च कोटि के लेखक और समालोचक हैं।

नाम—(३११६) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', कानपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४९।

रचना काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—(१) चित्रशाला (दो भाग), (२) मा (दो भाग)।

विवरण—आप हिंदी मनोरंजन' के संपादक रह चुके हैं। कहानी के अच्छे लेखक हैं। आपकी कहानियों से गार्हस्थ्य जीवन पर अच्छा प्रकाश पड़ा है।

नाम—(३११७) रामानंद पाठक उपदेशक, खानपुर, औरैया, ज़िला इटावा।

जन्म-काल—सं० १९३६।

कविता-काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—(१) कुमार-कर्तव्य (दो संस्करण), (२) रामायण शिक्षावली।

विवरण—आप कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न पं० मातादीन पाठक के पुत्र हैं। इनको धार्मिक कामों से विशेष प्रेम रहता है, और इनका बहुत सा समय वैदिक धर्म प्रचार, अनेक गुरुकुल तथा अनाथालयों के कार्यों में व्यतीत हुआ है। इनके सदृश इनके तीन लघु भ्राता—पाठक महादेव, डॉक्टर कृष्णदत्त तथा पं० दयानिधिजी वकील—भी हिंदी-लेखक और व्याख्याता हैं।

उदाहरण—

एकहि भानु प्रकाशित ह्वै जग दूरि करै तम-राशि सदा हीं;
जीव सबै भयभीत रहैं मृगराज बसै इक कानन माहीं।
त्यों हीं रामानँद एक हि सूर दलै अरि के गण शक्त नाहीं;
एकहि धर्म प्रचार करैं जग धार्मिक जो न बसै छल छाहीं॥ १॥
धार्मिक भूप जबै जग के निज ध्यान प्रजा हित माहिं धरैंगे,
त्योंहि रामानँद वीर कुमार सबै मिलके पुरुषार्थ करैंगे।
दीन दया लखि कैं तबहीं जगदीश कृपा करि दुःख हरैंगे,
रे मन साहसि! साहस छोड़ न, साहस से सब काज सरैंगे॥ २॥

नाम—(३६१८) सत निहालसिंह।

जन्म काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—१९६९।

ग्रंथ—कई ओजस्वी, गभीर, गवेषणा पूर्ण लेख।

विवरण—आप अमरिका, योरप, जापान आदि हो आए हैं। ज्ञाता पुरुष हैं।

नाम—(३६१९) सरस्वतीदेवी।

यह भगवा गाँव ज़िला आज़मगढ़ के कवि त्रिपाठी रामचरित्रजी की पुत्री हैं। इनके छंद कानपुर के रसिक-मित्र में छपा करते थे। इनके पिता डुमराँव महाराज के यहाँ रहते थे। इनके बनाए (१) नीति निचोड़, (२) सुंदरी सुपथ, (३) वनिता मधु और (४) शारदा शतक ग्रंथ अच्छे हैं। इनमें से नीति निचोड़ हमने देखा है।

उदाहरण—

ऊधव, जाय कहो उनसों पठई पतिया जिन बुद्धि भरी है;
ज्ञानी वही जग जाहिर हैं, जिनसों नहिं नायन छू उबरी है।
साधन योग स्वतंत्र समाधि विरक्त भरी जग सों कुबरी है,
व्रजबाल बिहाल महान वियोग की मार प्रचंड परी है।

विवरण—आपने शालोपयोगी भारतवर्ष, दासबोध, रामदास चरित, हिंदी मेघदूत आदि लगभग ३० ग्रंथ लिखे हैं। आर्यमित्र तथा हिंदी चित्रमय-जगत् का संपादन भी कर चुके हैं। आप हिंदी के लब्ध प्रतिष्ठ लेखक और कवि तथा निरभिमानी एवं सहृदय साहित्य सेवी हैं। आजकल दारागंज, प्रयाग में तरुण भारत ग्रंथावली का संचालन एवं प्रकाशन करते हैं।

समय—संवत् १६६७

नाम—(३६२२) चंद्रभानुसिंह दीवान बहादुर, गरौली, बुंदेलखंड।

जन्म काल—लगभग सं० १६२५।

रचना-काल—सं० १६६७।

आपकी गणना स्वतंत्र रईसों में है। आप हिंदी के प्रेमी हैं तथा कविता भी उत्कृष्ट करते हैं। आपने एक दोहा सतसई लिखी है। आध्यात्मिक विषय में आपके बहुत गहन एवं गंभीर विचार हैं। हमारे मित्र भी हैं। आपकी रचना प्रशंसनीय है।

उदाहरण—

> उझकि झिझकि मकुचत हँसत लसत हगन रतनाइ।
> लचत मचत चलिया चहत बनत न कछु मनमाइ।
> छिन बैठत छिन छिन उठत, भुज उठाय जमुहात।
> अरी सखा, यह गात की बात कही नहिं जात।
> श्वेत पद सब ही कहत श्याम पद नहिं जोत।
> सुने जे गोकुल में हते उदय सु पच्छिम होत।
> मुरलीधर मुरली धरी मुरली धरत बनै न।
> मुरलीधर मुरली धरें मुरली धरत न बैन।
> बनसी बनसी वन बसी लावन बसी विरोध,
> बन बिनसी बन बन बसी बनसी बनसी भेध।

> श्यामरंग यदरा निरखि गरज मधुर सुन कान ;
> घोर ध्यान मुनियान फिर मारत जटा पखान ।
> कंज नखत खंभ केहरी वापी सर्प कपाल ;
> मृग कपोत बिंब धनुष शुक श्याम सेत शशिभाल ।

नाम—(३४२२) छोटेराम शुक्ल महोपदेशक, साहित्यरत्न।

जन्म-काल—सं० १९४२ (बुरहानपुर में)।

रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—(१) हीरे की अँगूठी, (२) संसार पाश, (३) सच्चे और झूठे मित्र, (४) विनोदी फक्कड़राम, (५) सच्चा आत्म-समर्पण, (६) भक्ति प्रदीप भजनमाला, (७) बदी का बदला नेकी, (८) बाबू खटमलचंद, (९) चतुर चपा, (१०) बड़े लोगों की अवस्था, (११) घर का फ़िज़ूलख़र्च, (१२) मारवाड़ी व्याकरण, (१३) प्रण-पालन, (१४) बालकों का सुधार, (१५) चरखा, (१६) ज्योतिष प्रवेश।

विवरण—आप खंडवा के शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण गुजराती, मराठी, हिंदी तथा अँगरेज़ी जानते हैं। आपने पचराज मासिक पत्र का कई वर्षों तक संपादन किया। आजकल मारवाड़ी हितकारक के संपादक हैं। आप हिंदी के सुकवि एवं अच्छे गद्य लेखक हैं।

उदाहरण—

> हे ईश, हे दयामय, इस जाति को सुधारो ;
> कुत्सित कुरीतियों से अब शीघ्र ही उबारो।
> हम भूलकर भले ही तुमको अचेत सोवें ;
> पर तुम हमें कभी भी जगदीश, मत बिसारो।
> है प्रार्थना यही अब, सुख शांति से रहें सब ;
> कट जायँ दुःख सारे, शरणागतों को तारो।

विवरण—आपने शास्त्रोपयोगी भारतत्रय, दासबोध, रामदास चरित, हिंदी मेघदूत आदि लगभग २० ग्रंथ लिखे हैं। धार्यमित्र तथा हिंदी चित्रमय जगत् का संपादन भी कर चुके हैं। आप हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक और कवि तथा निरभिमानी एवं सहृदय साहित्य-सेवी हैं। आजकल दारागंज, प्रयाग में सरल भारत-ग्रंथावली का संचालन एवं प्रकाशन करते हैं।

समय—संवत् १९६०

नाम—(३३२२) चंद्रभानुसिंह दीवान बहादुर, गरौली, बुंदेलखंड।

जन्म काल—लगभग सं० १९३२।

रचना-काल—सं० १९६०।

आपकी गणना स्वतंत्र रईसों में है। आप हिंदी के प्रेमी हैं तथा कविता भी उत्कृष्ट करते हैं। आपने एक दोहा सतसई लिखी है। आध्यात्मिक विषय में आपके बहुत गहन एवं गंभीर विचार हैं। हमारे मित्र भी हैं। आपकी रचना प्रशंसनीय है।

उदाहरण—

उझकि झिझकि मकुरात हँसत लसत दृग रतनाइ।
लचत मचत चलिबो चहत बनत न कछु मनमाइ।
छिन बैठत छिन छिन उठत, भुज उठाय जमुहात।
धरी सखी यह गात की बात कही नहिं जात।
श्वेत पद सब ही कहत श्याम पद नहिं जोत।
सुने जे गोकुल में हते उदय सु पश्चिम होत।
मुरलीधर मुरली धरी मुरली धरत बनै न।
मुरलीधर मुरली धरैं मुरली धरत न बैन।
बनसी बनसी बन बसी पावन बसी विशेष,
बन बिनसी बन बन बसी बनसी बनसी भेष।

स्यामरंग बदरा निरखि गरज मधुर सुन कान
छोड़ ध्यान मुनियान फिर मारत जटा पराान।
कज नखत खँभ केहरी वापी सर्प कपाल,
मृग कपोत चिर धनुष शुक स्याम सेत शशिपाल।

नाम—(३१२२) छोटेराम शुक्ल महोपदेशक, साहित्यरत्न।
जन्म-काल—सं० १९४२ (बुरहानपुर में)।
रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—(१) हीरे की अँगूठी, (२) संसार पाश, (३) सच्चे और झूठे मित्र, (४) विनोदी फक्कड़राम, (५) सच्चा आत्मसमर्पण, (६) भक्ति-प्रदीप भजनमाला, (७) यदी का बदला की, (८) बाबू खटमलचंद, (९) चतुर चपा, (१०) बड़ई लोगों की अवस्था, (११) घर का फ़िज़ूलख़र्च, (१२) मारवाड़ी व्याकरण, (१३) पशु-पालन, (१४) बालकों का सुधार, (१५) रपञ्जा, (१६) ज्योतिष प्रवेश।

विवरण—आप बग्ला के शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण गुजराती, मराठी, हिंदी तथा अँगरेज़ी जानते हैं। आपने पचराज मासिक पत्र का कई वर्षों तक संपादन किया। आजकल मारवाड़ी हितकारक के संपादक हैं। आप हिंदी के सुकवि एवं अच्छे गद्य लेखक हैं।

उदाहरण—

हे ईश, हे दयामय, इस जाति को सुधारो,
कुत्सित कुरीतियों से अब शीघ्र ही उबारो।
हम भूलकर भले ही तुमको अचेत सोवें,
पर तुम हमें कभी भी जगदीश, मत बिसारो।
है प्रार्थना यही अब, सुख शांति से रहें सब,
कट जायँ दुःख सारे, शरणागतों को तारो।

विवरण—आपने शास्त्रोपयोगी भारतवर्ष, दासबोध, रामदास चरित, हिंदी मेघदूत आदि लगभग ३० ग्रंथ लिखे हैं। आर्यमित्र तथा हिंदी चित्रमय जगत् का संपादन भी कर चुके हैं। आप हिंदी के लब्ध प्रतिष्ठ लेखक और कवि तथा निरभिमानी एवं सहृदय साहित्य-सेवी हैं। आजकल दारागंज, प्रयाग में तरुण भारत-ग्रंथावली का संचालन एवं प्रकाशन करते हैं।

समय—संवत् १९६७

नाम—(३३२२) चंद्रभानुसिंह दीवान बहादुर, गरौली, बुंदेलखंड।

जन्म काल—लगभग सं० १९३२।

रचना-काल—सं० १९६७।

आपकी गणना स्वतंत्र रईसों में है। आप हिंदी के प्रेमी हैं तथा कविता भी उत्कृष्ट करते हैं। आपने एक दोहा सतसई लिखी है। आध्यात्मिक विषय में आपके बहुत गहन एवं गंभीर विचार हैं। हमारे मित्र भी हैं। आपकी रचना प्रशंसनीय है।

उदाहरण—

झमकि मिझकि मकुचत हँसत लसत हगन रतनाइ।
लचत मचत चलिया चहत चलत न कछु मनमाइ।
छिन बैठत छिन छिन उठत, मुख उठाय जमुहात;
अरा सरा, यह गात की बात कही नहिं जात।
श्वेत चंद सब ही कहत श्याम चंद नहिं जोत;
सुने न गोकुल में हते उदय जु पश्चिम होत।
मुरलीधर मुरली धरी मुरली धरत बनै न।
मुरलीधर मुरली धरें मुरली धरत न बैन।
बनसी बनसी बन बसी बायन बसी विशेष
बन बिनसी बन बन बसी बनसी बनसी भेष।

श्यामरंग घटा निरखि गरज मधुर सुन कान ;
छोड़ ध्यान मुनियान फिर मारत जटा पलान ।
कज नख्त खँभ केहरी वारी सर्प कपाल ;
मृग कपोत बिंब धनुष शुक श्याम सेत कनियाल ।

नाम—(३५२३) छोटेराम शुक्ल महोपदेशक, साहित्यरत्न ।

जन्म-काल—सं० १९४२ (बुरहानपुर में) ।

रचना-काल—सं० १९६७ ।

ग्रंथ—(१) हीरे की अँगूठी, (२) संसार यात्रा, (३) सच्चे और झूठे मित्र, (४) विनोदी फक्कड़राम, (५) सुधा आत्म समर्पण, (६) भक्ति प्रदीप भजनमाला, (७) बदी का बदला नेकी, (८) बाबू खटमलचंद, (९) चतुर चपला, (१०) बड़े लोगों की अवस्था, (११) घर का फ़िज़ूलख़र्च, (१२) मारवाड़ी-व्याकरण, (१३) प्रण-पालन, (१४) बालकों का सुधार, (१५) चरचा, (१६) ज्योतिष प्रवेश ।

विवरण—आप गंगा के शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण गुजराती, मराठी, हिंदी तथा अँगरेज़ी जानते हैं । आपने पंचराज मासिक पत्र का कई वर्षों तक संपादन किया । आजकल मारवाड़ी हितकारक के संपादक हैं । आप हिंदी के सुकवि एवं अच्छे गद्य लेखक हैं ।

उदाहरण—

हे ईश, हे दयामय, इस जाति को सुधारो ;
कुत्सित कुरीतियों से अब शीघ्र ही उबारो ।
हम भूलकर भले ही तुमको अचेत सोवें ;
पर तुम हमें कभी भी जगदीश, मत बिसारो ।
है भावना यहाँ अब, सुख शांति से रहें सब ;
कट जायँ दुःख सारे, शरणागतों को तारो ।

नाम—(३३२२) रामेश्वरी नेहरू, देहली।

जन्म-काल—सं १९४२।

ग्रंथ—संपादिका स्त्री दर्पण।

विवरण—आप दीवान नरेंद्रनाथ डिप्टी कमिश्नर मुलतान की पुत्री और ब्रजलाल नेहरू असिस्टेंट एकाउ टेंड जनरल, देहली की धर्मपत्नी हैं। आपकी विद्वत्ता एवं उत्साह सराहनीय है। आपने भाषा-स्त्री करण-संबंधी कुछ काम किया है।

नाम—(३३२३) लक्ष्मीनारायणसिंहजी चौधरी 'ईश', काशी।

जन्म-काल—सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—(१) रस-रत्नाकर (नायिका भेद), (२) धनरत्न वध (ऐतिहासिक खंड काव्य), (३) श्यामा-श्याम विहार (राधा-कृष्ण का भाग, चरित्र-वर्णन), (४) अन्योक्ति-प्रबंध, (५) पद्य प्रबंध (स्फुट विषयों पर कविता), (६) वीरादश काव्य (ऐतिहासिक काव्य), (७) कानन-कुसुम (समस्या-पूर्तियाँ), (८) इंदुमती (उपन्यास)।

विवरण—आप भूमिहार ब्राह्मण चौधरी शिवमंगलसिंहजी के कनिष्ठ पुत्र हैं। ज़मींदार हैं, और महाजनी का भी व्यवसाय करते हैं।

उदाहरण—

अखिल, अखंड औ अनादि निरुपाधि आधि
व्याधि हू ते रहित अनादि आदि रस है।
अवनि अकास में अभायो अवकास अरि,
आस-पास छायो रहे देत ना दरस है।

सलिल समीर है ते व्यापक विभूति जाकी,
होत थ्युभूत पूत पावन सरस है;
मोदकर महत प्रमोदकर पारावार,
प्रेम-पय पूरित पियूष ते सरस है।

नाम—(३३२६) लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा'।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—(१) मधु वियोग (१९७२), (२) रेवा-माहात्म्य (१९६८), (३) फाग-संग्रह (१९६८), (४) स्तुति प्रबंध (१९६८), (५) दृष्टांत-माला (१९६८), (६) चतुर-सवैया (१९६८), (७) कव्वाली गुलपहार (१९६९), (८) भंगीपुकार (१९७०), (९) प्रभाती-संग्रह (१९७०), (१०) प्रेम प्रबोध (१९७१), (११) लावनी चौदह रत्न कलगी (१९७१), (१२) काल का चक्र (१९७१), (१३) उर्वशी-चरित्र (१९७२), (१४) राजकुमारी उषा (१९७३), (१५) स्वर्गांगना (१९७४), (१६) सती मदालसा (१९७४), (१७) प्रेमशतक (१९७४), (१८) लावनी लक्ष्मी विलास (१९७५), (१९) महाकवि केशवदास और उनके ग्रंथ (१९७८), (२०) राष्ट्रीय रस (१९८०)।

विवरण—आप ठाकुर अयोध्याप्रसादजी के पुत्र, हटा ज़िला दमोह में निवास करते हैं तथा विश्वकर्मा-वंशज शिल्पकार हैं। आपने विविध विषयों पर अच्छे ग्रंथ बनाए हैं।

उदाहरण—

आप भ्रमर ने कहा कब से हे सुखदायी, आनँद-कंद;
सध्या समय आप क्यों मुझको कर लेते हो उर म बंद।
उधर अकेली अलिनी मेरी कष्ट अनेकों सहती है;

नाम—(३१२४) रामेश्वरी नेहरू, देहली।

जन्म-काल—सं १९४२।

ग्रंथ—संपादिका स्त्री दर्पण।

विवरण—आप दीवान नरेंद्रनाथ डिप्टी-कमिश्नर मुलतान की पुत्री और मजलाल नेहरू असिस्टेंट एकाउंटेंट जनरल, देहली की धर्मपत्नी हैं। आपकी विद्वत्ता एवं उत्साह सराहनीय है। आपने भाषा-व्याकरण-संबंधी कुछ काम किया है।

नाम—(३१२५) लक्ष्मीनारायणसिंहजी चौधरी 'ईश', काशी।

जन्म-काल—सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—(१) रस-रत्नाकर (नायिका भेद), (२) अनरथ्य वध (ऐतिहासिक खंड काव्य), (३) श्यामा-श्याम विहार (राधा-कृष्ण का भाग, चरित्र-वर्णन), (४) अन्योक्ति प्रबंध, (५) पद्य प्रबंध (स्फुट विषयों पर कविता), (६) वीरादर्श काव्य (ऐतिहासिक काव्य), (७) कानन-कुसुम (समस्या-पूर्तियाँ), (८) इंदुमती (उपन्यास)।

विवरण—आप भूमिहार ब्राह्मण चौधरी शिवमंगलसिंहजी के कनिष्ठ पुत्र हैं। ज़मींदार हैं, और महाजनी का भी व्यवसाय करते हैं।

उदाहरण—

अखिल, अखंड औ' अनादि निरुपाधि व्याधि
व्याधि हू ते रहित अनादि आदि रस है;
अवनि अकास में अमायो अवकास भरि,
आस-पास छायो रहै देत ना दरस है।

सलिल समान छू ते व्यापक विभूति जाकी,
होत अनुभूत पूत पावन सरस हैं;
मोदकर महत प्रमोदकर पारावार,
प्रेम-पय-पूरित पियूष ते सरस हैं।

नाम—(३३२६) लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा'।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—(१) मधु वियोग (१९७२), (२) रेवा-माहात्म्य (१९६८), (३) कथा-संग्रह (१९६८), (४) स्तुति प्रबंध (१९६८), (५) दृष्टांत-माला (१९६८), (६) चतुर-गवैया (१९६८), (७) कव्वाली गुलजहार (१९६९), (८) भँगीपुकार (१९७०), (९) प्रभाती-संग्रह (१९७०), (१०) प्रेम प्रबोध (१९७१), (११) लावनी चौदह रत्न कजरी (१९७१), (१२) काल का चक्र (१९७१), (१३) उर्वशी चरित्र (१९७२), (१४) राजकुमारी उषा (१९७३), (१५) स्वर्गा गता (१९७४), (१६) सती मदालसा (१९७४), (१७) प्रेमशतक (१९७४), (१८) लावनी अष्टमी विलास (१९७५), (१९) महाकवि केशवदास और उनके ग्रंथ (१९७८), (२०) राष्ट्रीय रस (१९८०)।

विवरण—आप ठाकुर अयोध्याप्रसादजी के पुत्र, हटा ज़िला दमोह में निवास करते हैं तथा विश्वकर्मा-वंशज शिल्पकार हैं। आपने विविध विषयों पर अच्छे ग्रंथ बनाए हैं।

उदाहरण—

आप भ्रमर ने कहा कंज से हे सुखदायी, आनँद-कंद,
संध्या समय आप क्यों मुझको कर लेते हो उर में बंद।
उधर अकेली अलिनी मेरी कष्ट अनेकों सहती है,

मम वियोग के दुःसह दुख से निशि में व्याकुल रहती है।
कहा जलज ने—हे मलिन्द, जिमि तुमको नलिनी प्यारी है।
इसी तरह से मेरी भी तो मित्र! आपसे यारी है।
अपने अपने प्रेमी को पा सब ही हृदय लगाते हैं;
जीव-हीन, जड़ होकर भी हम 'लक्ष्मी' नेम निभाते हैं।
देखे मैंने विश्व-बीच में जितने सब सुंदर उपमान;
दीख पड़ा उन सबमें तेरा सौन्दर्य मुझको छविमान।
राका शशि में मिली दमकने आनन की सुंदरताई;
उषा किरणों में भी लक्ष्मी, अधरों की अरुणाई।
चाह हूँ जब से बचपन में, यही देखती प्राणाधार,
किया न होगा कभी आपने मेरे ऊपर निश्छल प्यार।
निममता भुँभलाना देखा, सुने सदा ही वचन कठोर,
प्रेम सिंधु में मुझे डुबाने कभी न आई प्रेम हिलोर।
नाथ नहीं, इस निष्ठुरता में मजा कौन-सा पाते हो,
हमें देखना है निर्मोही, कब तक तुम ठुकराते हो।

नाम—(३६३७) विश्वेश्वरनाथ रेउ, साहित्याचार्य, शास्त्री, एम्० आर० ए० एस्० ।

आपका जन्म सं० १९४७ में, जोधपुर में, हुआ। आप पं० मुकुंदमुरारिजी रेउ के सुपुत्र हैं। रेउजी जाति के काश्मीरी ब्राह्मण हैं। संस्कृत-साहित्य की आचार्य परीक्षा में सर्व प्रथम रहने के कारण जयपुर-राजकीय विद्या विभाग से आप एक पदक द्वारा गौरवान्वित किए गए। जोधपुर ऐतिहासिक विभाग में आपने प्रशंसनीय कार्य किया, और वहाँ रहते हुए डिंगल भाषा की कविता एकत्रित करने में बंगाल-एशियाटिक सोसायटी को सहायता दी। जोधपुर राज्य में यह अजायबघर, पुस्तकालय, ज्योतिष-कार्यालय, पुरातत्त्वानुसंधान आदि कई संस्थाओं के सफलता पूर्वक अध्यक्ष रह चुके हैं। इन्हें

पुरातत्त्व-कार्य से बड़ा प्रेम है, और बड़े परिश्रम से प्राचीन मुद्रा-लिपि, कारीगरी, मूर्तियाँ, चित्र आदि विषयों का इन्होंने अच्छा ज्ञान संपादन किया है। इनकी अनेक लेख मालाएँ तथा कविताएँ सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुकी हैं, और निकला करती हैं। आपने 'शैव सुधाकर'-नामक संस्कृत ग्रंथ की भाषा-टीका लिखी, तथा जोधपुर नरेश जसवंतसिंहजी-कृत वेदांत पंचक और महाराजा मानसिंहजी-रचित कृष्ण विलास-नामक ग्रंथों का योग्यता-पूर्वक संपादन किया है। आपकी महत्त्व पूर्ण ऐतिहासिक रचना 'भारत के प्राचीन राजवंश'-नामक ग्रंथ है। आपका श्रम, पुरातत्त्व विभाग पर, उपयोगी तथा श्लाघ्य है।

नाम—(३१२८) शिवप्रसाद गुप्त (बाबू) काशी निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४२।

रचना काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—पृथ्वी प्रदक्षिणा, स्फुट।

विवरण—'आज' दैनिक पत्र के स्वामी। आप बनारस के बड़े रईसों में हैं। हिंदी तथा कांग्रेस के बड़े उत्साही कार्यकर्ता हैं। देश-हित के कारण कई बार जेल जा चुके हैं। हिंदी विद्यापीठ कई लाख लगाकर स्थापित की। यह एक प्रकार से ऐसा विश्वविद्यालय है, जिसमें निवास करते हुए छात्र विद्याध्ययन करते हैं।

नाम—(३१२९) सूर्यप्रसादजी त्रिपाठी कवि।

आपका जन्म संवत् १९४२ विक्रमी में बाराबंकी (यू० पी०) के समीप ठाकुरपुर नामक ग्राम में हुआ। आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। आपके पिता का शुभ नाम प० भागवतप्रसादजी था। आपकी स्वतंत्रता आपके अनुज प० श्यामसुंदरजी की कर्तव्यपरायणता तथा सहनशीलता पर बहुत कुछ निर्भर है। छंद अच्छे बनाते हैं। हम लोगों के मित्र हैं। साहित्यिक सभाओं में जनता आपका मान

हिंदी-लेक्चरर हैं। आप विनोद प्रिय, सादे रहन-सहनवाले एक प्रतिभा पूर्ण एवं प्रभावशाली नाटककार और प्रहसन पूर्ण लेखक हैं।

नाम—(३९३२) लल्लीप्रसाद पांडेय।

जन्म काल—सं० १९४३।

रचना-काल—सं० १९६८।

ग्रंथ—(१) डोंक-पीटकर वैयरान, (२) रायबहादुर, (३) नव कथा, (४) पत्र पुष्प (५) पंच पल्लव, (६) भक्त चरित माला, (७) अमियनिमाई-चरित्र, (८) जगद्गुरु का आविर्भाव, (९) जीवन का मूल्य।

विवरण—आप सागर निवासी पं० रामलालके पुत्र तथा सुलेखक हैं। हास्य-रस पर आपने विशेष ध्यान दिया है।

नाम—(३९३३) हेमंतकुमारीदेवी (भट्टाचार्य)।

आपका जन्म सं० १९२३ में, लखनऊ में, हुआ, और विवाह सं० १९३६ में। आपको हिंदी से बड़ा प्रेम है, और उसकी उन्नति में आप सदैव श्रमशील रहती हैं। प्रयाग प्रदर्शिनी से लाभ-नामक १५० पृष्ठों के निबंध पर आपको २००) का तथा आदर्श पुरुष रामचंद्रवाले लेख पर ५०) का पुरस्कार मिला। आपने स्त्री कर्तव्य, युक्त प्रदेश का व्यापार, और वैज्ञानिक कृषि-नामक तीन ग्रंथ लिखे हैं।

समय—संवत् १९६९

नाम—(३९३४) चतुरसेन शास्त्री, दिल्ली निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९६९।

विवरण—आपने कई औपन्यासिक तथा अन्य परमोच्च श्रेणी के ग्रंथ लिखे हैं। आप वैद्य हैं, और वैद्यक पर भी एक भारी ग्रंथ लिख चुके हैं। भाषा बढ़िया है और आख्यायिकाएँ अच्छी लिखते

हैं। आप वर्तमान काल के प्राय सर्वोत्कृष्ट गद्य लेखक हैं। आपकी भाषा संस्कृतपन का सहारा न लेते हुए भी ख़ूब ज़ोरदार है, तथा भाव सबल और मनोरंजक हैं।

नाम—(३६३९) मथुराप्रसाद बाजपेयी, सराय मालीजी, लखनऊ-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९४४।

आपने स्वदेश प्रेम-संबंधी विषयों पर बहुत-से अच्छे छंद लिखे हैं। आप हमारे भागनेय और सुकवि हैं।

उदाहरण—

> भारत के नौनिहालो, आशा बड़ी लगी है;
> कुछ काम कर दिखा दो, गांधी कि लौ लगी है।
> खद्दर कवच तन में, सीना खुला हो रन में;
> गोली चले मनासन, हिंसा न होय मन में।
> आगे को उग बढ़ा दो, अंगद-समान पग हो;
> मुस्क्यान मुख मनोहर, मोहन कि जीत जग हो।

नाम—(३६३६) महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, बी० एस्-सी०, रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९४४।

जन्म-स्थान—ग्राम बिर्मोली, तहसील हंडिया, ज़िला इलाहाबाद।

ग्रंथ—(१) विज्ञान प्रवेशिका (दो भाग), (२) गुरुदेव के साथ यात्रा (पूर्वार्द्ध), (३) समुद्र की सैर (बँगला के 'सागर रहस्य'-नामक पुस्तक का अनुवाद), (४) सूर्य सिद्धांत का विज्ञान भाष्य (मूल संस्कृत के ग्रंथ का अनुवाद), (५) स्फुट वैज्ञानिक लेख।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ मुंशी शिवदयाललालजी के पुत्र हैं। आपने अपनी शिक्षा कायस्थ पाठशाला तथा म्योर-सेंट्रल कॉलेज, इलाहाबाद में प्राप्त की। इन्होंने अपने ग्रंथों तथा लेखों द्वारा

हिंदी-साहित्य के वैज्ञानिक अंग की अच्छी श्री-वृद्धि की है। आपका सूर्य सिद्धांत विज्ञान भाष्य एक महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ प्रतीत होता है। श्रीवास्तवजी का कथन है कि उनका यह ग्रंथ लगभग १००० पृष्ठों में पूरा होगा। समय-समय पर 'विज्ञान' मासिक पत्रिका में आपके ज्योतिष-संबंधी लेख निकला करते हैं। इस समय यह गवर्नमेंट हाइस्कूल, रायबरेली में अध्यापक हैं। यदि आजकल के सुलेखक लोग अपने अनुकूल दो-एक विषय चुनकर केवल उन्हीं पर अपनी-अपनी शक्ति लगावें, तथा परिश्रम एवं साधना से काम लेवें तो समाज का ज्ञान-वर्द्धन अच्छा हो, हिंदी में स्थायी साहित्य बने, तथा उसकी श्रीवृद्धि भी अच्छी हो। श्रीवास्तव महाशय ऐसे ही अपने अनुकूल विषय पर ही विशेष ध्यान देनेवाले साहित्यिक महापुरुष समझ पड़ते हैं।

नाम—(३६३०) सोमेश्वरदत्त शुक्ल बी० ए०।

इनका जन्म सं० १९४४ में, सीतापुर में, हुआ। आपने अपने मातामह से उत्तराधिकार में अच्छी संपदा पाई। इतिहास एवं अन्य विषयों के कई अच्छे गद्य ग्रंथ लिखे हैं। आप विद्या-व्यसनी हैं। छोटे छोटे कई ग्रंथ बना चुके हैं। कुछ कविता भी की है। इँगलैंड, फ्रांस, जर्मनी के इतिहास तथा साविन्नी सत्यवान-नाटक अच्छे हैं। हमारे मित्र भी हैं।

समय—संवत् १९७०

नाम—(३६३८) इंद्रजी, दिल्ली।

जन्म-काल—सं० १९४६।

रचना-काल—लगभग सं० १९७०।

ग्रंथ—(१) नेपोलियन बोनापार्ट की जीवनी, (२) प्रिंस बिस्मार्क का जीवन-चरित्र, (३) गैरिबाल्डी, (४) उपनिषदों की भूमिका, (५) संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशोधन, (६)

राष्ट्रीयता का मूल मंत्र, (७) राष्ट्रों की उन्नति, (८) बालोपयोगी वैदिक धर्म, (९) स्वयं-देश का उद्धार।

विवरण—आपका जन्म जालंधर शहर में हुआ था। आप स्वर्गलोक-वासी महात्मा श्रद्धानंद के सुपुत्र हैं। इस समय दैनिक 'अर्जुन' पत्र के व्यवस्थापक तथा संपादक हैं। यह महाशय 'स्वधर्म प्रचार', 'विजय', 'श्रद्धा' आदि पत्रों के संपादक रह चुके हैं।

नाम—(३५३९) (राय) कृष्णदास वैश्य, काशी निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४८।

रचना-काल—लगभग सं० १९७०।

आप काशी के रईस और चित्र कला के प्रेमी तथा हिंदी के उत्साही लेखक हैं। आपने नागरी प्रचारिणी सभा में एक कला भवन स्थापित किया है, तथा उसमें अपने यहाँ के बहुत-से चित्र प्रदान किए हैं। आप इस समय नागरी प्रचारिणी सभा के मंत्री और उत्साही कार्यकर्ता हैं। कई उपन्यास छायावादी ढंग पर लिखे हैं। हमको ये उपन्यास पसंद हैं, यद्यपि हमारे कई मित्र इस मत के विरोधी हैं।

नाम—(३५४०) कृष्णविहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५१।

रचना-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—(१) देव विहारी, (२) मतिराम ग्रंथावली। संपादक माधुरी तथा साहित्य-समालोचक।

विवरण—प्रसिद्ध कवि व्रजराज के भतीजे तथा लेखराज के पौत्र हैं। आजकल सेनापति के ग्रंथ का संपादन किया है। हिंदी-साहित्य के अच्छे तथा अपने समय के परमोत्कृष्ट समालोचक हैं।

नाम—(३६९१) गोविंदवल्लभ पंत, रानीखेत, ज़िला अल्मोड़ा (हिमालय)।

जन्म-काल—सं० १९५६ ।

कविता-काल—सं० १९७० ।

ग्रंथ—प्रकाशित—

(१) भारती-कविता गुच्छ (सं० १९८० ७५ तक की रचनाएँ), (२) झिली (कहानी, १९७६), (३) कंजूस की खोपड़ी (प्रहसन, १९८०), (४) ग्वशा नगर वन (प्रहसन, १९८०), (५) एकादशी (कहानियाँ), (६) वरमाला (पौराणिक नाटक, १९८०)।

अप्रकाशित—

(१) वही—(इतिहास-मूलक उपन्यास), (२) उदयोदय—(ऐतिहासिक नाटक), (३) अद्भुत गिनी—(सामाजिक उपन्यास), (४) रसहार (प्रहसन)।

विवरण—पंतजी ने अपनी उच्च शिक्षा हिंदू विश्वविद्यालय, काशी में प्राप्त की। बचपन से ही ललित कलाओं की ओर आपकी रुचि थी। रंग-मंच तथा नाटक आपके प्रियतम विषय हैं। आपने साहित्य, संगीत तथा चित्रकारी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है। नाटक तथा कहानियाँ लिखने के उपलक्ष में आपने स्वर्ण और रौप्य पदक भी प्राप्त किए हैं। आपके वरमाला नाटक की बड़ी धूम है। विषयों के चुनाव में आपने बहुत बड़े चातुर्य से काम किया है। नाटक तथा उपन्यासों के विषय आपके खूब बढ़िया हैं। प्रहसन की भी अच्छा पुट रखते हैं। पद्य-रचना भी भाव-पूर्ण की है। वर्तमान समय के कवियों में आपका स्थान ऊँचा है। यदि राजनीति के कामों में बहुत व्यस्त न रहा करते, तो आप एक अमर कवि होते।

उदाहरण—

छाया

सावधान हो, पद रखता हूँ फिर भी तव कोमल काया;
बार बार है दलित हो रही क्या पूछे चलती छाया।
रवि की किरणें तुली हुई हैं करने को मेरा अवसान;
तेरे चरणाश्रय में मुझको जीवन मिलता पथिक! सुजान।

मैं

सुरसरि हिय में छलक रहा है मेरे ही आँसू की धार;
नव वसंत की वर सुषमा में विलसा है मेरा शृंगार।
यहीं आ रही मलयानिल में मेरी है। चंचल निश्वास;
इस प्रफुल्ल शतदल में विकसित है मेरा हो हास विलास।
नील गगन की सघन घटा में छिपा हुआ है मेरा चंद;
बालक के पावन मुख में है प्रतिबिंबित मेरा आनंद।
कोयल के इस कलित कंठ में प्रतिध्वनित है मेरा गान,
इस अमाप की सीमा में परिमित है मेरा ही अवसान।

नाम—(३६४२) चतुरसिंह राष्ट्रवर बीका शृगोत, पो० नेहर, सरदार शहर, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

कविता-काल—लगभग सं० १९७० ।

ग्रंथ—अर्वाचीन प्राचीन सोरठा-संग्रह (सरस्वती प्रेस, भावनगर में मुद्रित, सं० १९७२)।

विवरण—आप ठाकुर बख्तावरसिंहजी के पुत्र तथा ठाकुर मुकनसिंह आप बीका शृगोत के पौत्र हैं। आजकल यह महाशय कस्बा सरदारशहर, रियासत बीकानेर में सब इस्पेक्टर पुलिस हैं। हिंदी भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनकी समस्या-पूर्तियाँ और स्फुट कविताएँ

'कवींद्र वाटिका', 'काव्य-पताका' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित चुकी हैं।

उदाहरण—

मोतिन की मंग है सुगंग नाहिं नेत्र नाहिं—
सीसरो सुकुकुम को टीको है मयान में,
चंद्र नाहीं भाल है, सुखेष नाहीं काली बेनी,
दीप नाहीं श्रोरें जरी लेपथ गलान में।
मैं हूँ वाला पीवत श्रो खावत धतूरा नाहीं,
वाटिका का सैर करूँ पीवहू के ध्यान में;
मैन न तो मारे मोहिं हर आने हूँ दत है,
बिहरत पीजुरी कनक-लतिकान में।

फुट सोरठा

कामिनि-नैन कटार, कोमल हिय नर कामि को,
पैठ जाति है पार, धारे बक चितौन की।
विद्या बसी विदेश, धर्म-कर्म घर पै नहीं;
तीन बिना चतुदेश, दशा जु बिगरी देश की।

नाम—(३३४३) चदाबाई जैन (पण्डिता)।

जन्म-काल—सं० १९४५।

ग्रंथ—(१) उपदेश रत्नमाला, (२) बालिका विनय, (३) सौभाग्य-रत्नमाला, (४) निबंध-रत्नमाला, (५) कर्तव्य-रत्नमाला।

विवरण—आप माननीय नारायणदासजी, वृंदावन, की पुत्री हैं। आपने संस्कृत तथा जैन-साहित्य का अच्छा अभ्यास किया है। जैन-महिलादर्श की संपादिका हैं। आरा में आपने अपने ही व्यय से एक जैन-बालाश्रम खोल रक्खा है, जिसमें बहुत-सी बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण करती हैं।

नाम—(३६३४) जो० एम० पथिक।

आपका पूरा नाम गौरीशंकरजी शुक्ल है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने पर आपका प्रधान ध्येय अपनी मातृ भाषा के साहित्य की पूर्ति करना रहा है। इनकी रचनाओं के प्रधान विषय व्यापारिक तथा सामाजिक हैं। व्यापार, उद्योग और अर्थशास्त्र-जैसे गहन विषयों पर इन्होंने लगभग चौदह ग्रंथ रचे हैं, जिनमें से मुख्य करेंसी, स्टाक एक्सचेंज, शिल्प विज्ञान, व्यापार-संगठन रीति, भारतीय कपड़े का व्यापार, भारतवर्ष के उद्योग धंधे, भारतवर्ष के बैंक आदि हैं। सामयिक हिंदी, अँगरेज़ी तथा बँगला पत्रों में आपके व्यापारिक लेख समय समय पर निकला करते हैं। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं पर भी इन्होंने विशेष रूप से आंदोलन किया है, और इसके उपलक्ष में ग्वालियर में सरस्वती पुस्तकालय स्थापित हुआ है। हिंदी साहित्य के व्यापारिक भाग की आप अच्छी श्री-वृद्धि कर रहे हैं। 'धर्माभ्युदय' तथा 'व्यापार' पत्रों का संपादन भी आपने सुचारु रूप से किया है। आप हमारे परमोपयोगी, श्रमशील तथा उच्च श्रेणी के लेखक हैं।

नाम—(३६३५) देवीदत्त शुक्ल, सौंईखेड़ा, ज़ि० उन्नाव।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९७०।

विवरण—यह हिंदी के अच्छे लेखक तथा 'सरस्वती' के संपादक हैं। 'किंकर' नाम से कविताएँ भी लिखा करते हैं।

नाम—(३६३६) प्रेमकुँवरि महारानी, दतिया।

जन्म-काल—सं० १९४९।

ग्रंथ—(१) पद्मप्रकाश, (२) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय शिष्या। रचना अच्छी है।

'कवींद्र-वाटिका', 'काव्य-पताका' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित चुकी हैं।

उदाहरण—

मोतिन की मग है सुगग नाहिं नेत्र नाहिं—
तीसरो सुकुंकुम को टीको है मथान में।
चन्द्र नाहीं भाल है, सुदीप नाहीं काढ़ो वेणी,
दीप नाहीं ओरें जरी लेवय गवान में।
मैं हूँ बाला पीवत औ खावत धतूरा नाहीं,
वाटिका की सैर करूँ पीवहू के ध्यान में।
मैन गू सो मारे मोहि [illegible] जाने हूँ इत है,
विहरत बीजुरी कनक-लतिकान में।

स्फुट सोरठा

कामिनि-नैन कटार कोमल हिय नर कामि को,
पैठ जाति है पार, धारे बक चितौन की।
विद्या बसी विदेश, धर्म-कर्म घर पै नहीं;
तीन विना चतुदेश, दशा सु बिगरी दश की।

नाम—(३६४२) चन्दाबाई जैन (पंडिता)।
जन्म-काल—सं० १९४९।
ग्रंथ—(१) उपदेश रत्नमाला, (२) बालिका विनय, (३) सौभाग्य-रत्नमाला, (४) निबंध-रत्नमाला, (५) कर्तव्य-रत्नमाला।
विवरण—आप माननीय नारायणदासजी, वृंदावन, की पुत्री हैं। आपने संस्कृत तथा जैन-साहित्य का अच्छा अभ्यास किया है। जैन-महिलादर्श की संपादिका हैं। आरा में आपने अपने [illegible] से एक जैन-बालाश्रम खोल रक्खा है, जिसमें बहुत-सी बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण करती हैं।

नाम—(३५४४) ओ० एम० पथिक।

आपका पूरा नाम गौरीशङ्करजी शुक्ल है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने पर आपका प्रधान ध्येय अपनी मातृ भाषा के साहित्य की पूर्ति करना रहा है। इनकी रचनाओं के प्रधान विषय व्यापारिक तथा सामाजिक हैं। व्यापार, उद्योग और अर्थशास्त्र जैसे गहन विषयों पर इन्होंने लगभग चौदह ग्रंथ रचे हैं, जिनमें से मुख्य करेंसी, स्टाक एक्सचेंज, शिल्प विज्ञान, व्यापार-संगठन रीति, भारतीय कपड़े का व्यापार, भारतवर्ष के उद्योग धंधे, भारतवर्ष के बैंक आदि हैं। सामयिक हिंदी, अँगरेज़ी तथा बँगला पत्रों में आपके व्यापारिक लेख समय-समय पर निकला करते हैं। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं पर भी इन्होंने विशेष रूप से आंदोलन किया है, और इस उपलक्ष में ग्वालियर में सरस्वती पुस्तकालय स्थापित हुआ है। हिंदी साहित्य के व्यापारिक अंग की आप अच्छी श्री-वृद्धि कर रहे हैं। 'धर्माभ्युदय' तथा 'व्यापार' पत्रों का संपादन भी आपने सुचारु रूप से किया है। आप हमारे परमोपयोगी, श्रमशील तथा उच्च श्रेणी के लेखक हैं।

नाम—(३५४५) देवीदत्त शुक्ल, सौंदेरेवा, ज़ि० उन्नाव।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९७०।

विवरण—यह हिंदी के अच्छे लेखक तथा 'सरस्वती' के संपादक हैं। 'किंकर' नाम से कविताएँ भी लिखा करते हैं।

नाम—(३५४६) प्रेमकुँवरि महारानी, दतिया।

जन्म-काल—सं० १९४९।

ग्रंथ—(१) धर्मप्रकाश, (२) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय शिष्या। रचना　　है।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) दुखहरन द्वादशी, (२) शक्ति-शतक, (३) शंकर-हृदय, (४) स्फुट छंद।

विवरण—पंडित व्रजगोपाल शुक्ल के पुत्र। पं० गयाप्रसाद प्लीडर, रायबरेली आपके ज्येष्ठ भ्राता हैं। स्वयं आप अवध में सब-जज और हमारे मित्र हैं। आपके उद्योग से सरस्वती-सदन नामक पुस्तकालय, रायबरेली में स्थापित हुआ। यह शारदा-सदन नाम से अब भी चल रहा है। सुकवि हैं। इनकी स्त्री भी कवयित्री हैं।

उदाहरण—

भामिनि महेश की है दाहिनि सदाई मेरे,
जारे अरि पाप भाल-ज्वाल श्रीमहेश की;
गोद में महेश की मिलैहैं सब मोद मोको,
प्यावै है पियूष शशि-कला श्रीमहेश की।
करुना महेश की कृतार्थ करती है मोहिं,
भावत सतत कल कीर्ति श्रीमहेश की;
कविता महेश की कर्रां मैं नाम शंकर लै,
बसै मन माहिं मञ्जु मूर्ति श्रीमहेश की।

नाम—(३६६२) मक्खनलाल शास्त्री।

ग्रंथ—(१) पंचाध्यायी टीका, (२) तत्त्वार्थ राजवार्तिक।

विवरण—आपका जन्म-स्थान चवली ज़िला आगरा है। आप जैन-धर्मावलंबी प्रसिद्ध हिंदी लेखक हैं।

नाम—(३६६३) रामनरेश त्रिपाठी।

जन्म-काल—सं० १९४६, जौनपुर ज़िले के कोइरीपुर ग्राम में।

विवरण—यह हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी तथा संस्कृत-भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनके अतिरिक्त गुजराती, बँगला, मराठी आदि प्रांतीय भाषाएँ भी जानते हैं। यह कुछ काल तक फ़तेहपुर में रहे, और वास्तव में यहीं से इनमें साहित्यिक अभिरुचि उत्पन्न हुई।

ग्रंथ—(१) कविता-कौमुदी (चार भाग), (२) पथिक (खंड काव्य), (३) मिलन हिंदी पद्य रचना, (४) हिंदी का संक्षिप्त इतिहास, (५) ग्राम गीत, (६) राम चरित-मानस (टीका), (७) हिंदी-शब्द-कल्पद्रुम (कोष), (८) नीति-रत्नमाला (तीन खंडों में), (९) लक्ष्मी (उपन्यास), (१०) पृथ्वीराज चौहान (जीवन चरित्र), (११) हिंदी-महाभारत, (१२) उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा (अँगरेज़ी उपन्यास का अनुवाद), (१३) आनंद-वीणा आदि। इनका 'पथिक' खड़ी बोली का एक खंड काव्य है, और इसी काव्य से इन्होंने अपनी प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है। हिंदी के प्रचार-कार्य में भी इन्होंने अच्छा योग दिया है। पंडितजी हमारे मित्र और हिंदी के भारी विद्वान् तथा लेखक हैं। विविध विषयों पर आपने अच्छा प्रकाश डाला है। आपका हिंदी-संबंधी श्रम परम स्तुत्य है। राजनीतिक कार्य में आप जेल भी जा चुके हैं। हिंदी के आप परमोत्कृष्ट कवि तथा लेखक हैं।

नाम—(३९६७) ललितकुमारसिंह 'नटवर', महुआर ग्राम, शाहाबाद, (बिहार-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—लगभग सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) ललितराग-संग्रह, (२) गुलाल (होली-सुधार की कविताएँ), (३) चतुर चर (स्काउटिंग), (४) आदर्श शासन, (५) बाँसुरी (कविता)।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) दुखहरन द्वादशी, (२) शक्ति-शतक, (३) शंकर-हृदय, (४) स्फुट छंद।

विवरण—पंडित व्रजगोपाल शुक्ल के पुत्र। पं० गयाप्रसाद प्लीडर, रायबरेली आपके ज्येष्ठ भ्राता हैं। स्वयं आप अवध में सब-जज और हमारे मित्र हैं। आपके उद्योग से सरस्वती-सदन नामक पुस्तकालय, रायबरेली में स्थापित हुआ। वह शारदा-सदन नाम से अब भी चल रहा है। सुकवि हैं। इनकी स्त्री भी कवयित्री हैं।

उदाहरण—

> भामिनि महेश की हैं दाहिनि सदाई मेरे,
>
> जारैं अरि पाप भाल-ज्वाल श्रीमहेश की।
>
> गोद में महेश की मिलैहैं सब मोद मोको,
>
> प्यावैं हैं पियूष शशि-कला श्रीमहेश की।
>
> करुना महेश की कृतार्थ करती हैं मोहिं,
>
> भावत सतत कल कीर्ति श्रीमहेश की।
>
> कविता महेश की करौं मैं नाम शंकर लै,
>
> बसै मन माहिं मंजु मूर्ति श्रीमहेश की।

नाम—(३३९४) मक्खनलाल शास्त्री।

ग्रंथ—(१) पंचाध्यायी टीका, (२) तत्त्वार्थ राजवार्तिक।

विवरण—आपका जन्म-स्थान चावली ज़िला आगरा है। आप जैन धर्मावलंबी प्रसिद्ध हिंदी लेखक हैं।

नाम—(३३९५) रामनरेश त्रिपाठी।

जन्म-काल—सं० १९४६, जौनपुर ज़िले के कोइरीपुर ग्राम में।

विषय—यह हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी तथा संस्कृत-भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनके अतिरिक्त गुजराती, बँगला, मराठी आदि प्रांतीय भाषाएँ भी जानते हैं। यह कुछ काल तक प्रतेहपुर में रहे, और वास्तव में वहीं से इनमें साहित्यिक अभिरुचि उत्पन्न हुई।

ग्रंथ—(१) कविता-कौमुदी (चार भाग), (२) पथिक (खंड काव्य), (३) मिलन हिंदी पद्य रचना, (४) हिंदी का संक्षिप्त इतिहास, (५) ग्राम गीत, (६) राम-चरित-मानस (टीका), (७) हिंदी-शब्द-कल्पद्रुम (कोप), (८) नीति-रत्नमाला (तीन खंडों में), (९) लक्ष्मी (उपन्यास), (१०) पृथ्वीराज चौहान (जीवन-चरित्र), (११) हिंदी महाभारत, (१२) उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा (अँगरेज़ी उपन्यास का अनुवाद), (१३) मानस-वीथ्या आदि। इनका 'पथिक' खड़ी बोली का एक खंड काव्य है, और इसी काव्य से इन्होंने अपनी प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है। हिंदी के प्रचार-कार्य में भी इन्होंने अच्छा भाग लिया है। पंडितजी हमारे मित्र और हिंदी के भारी विद्वान् तथा लेखक हैं। विविध विषयों पर आपने अच्छा प्रकाश डाला है। आपका हिंदी-संबंधी श्रम परम स्तुत्य है। राजनीतिक कार्य में आप जेल भी जा चुके हैं। हिंदी के आप परमोत्कृष्ट कवि तथा लेखक हैं।

नाम—(३९६७) ललितकुमारसिंह 'नटवर', महुआर ग्राम, शाहाबाद, (बिहार-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—लगभग सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) ललितराग-संग्रह, (२) गुलाल (होली सुधार की कविताएँ), (३) चतुर चर (स्काउटिंग), (४) आदर्श शासन, (५) [illegible])।

विवरण—इनका पहला नाम मौ० सतीफ्हुसैन 'नटवर' था। गत १८ सितंबर, सन् १९२७ को शुद्ध होकर फिर से हिंदू धर्म के अनुयायी हुए। इनके पिता ठाकुर महादेवसिंह, ज़िला शाहाबाद के राजपूत और माता सिसौली ग्राम, ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर के शेख़ महारु मियाँ की कन्या थीं। यह 'रमणी रत्न-माला', 'किसान-समाचार' तथा 'आशा' पत्रिका के संपादक भी रहे हैं। कविता अच्छी करते हैं।

नाम—(३६१८) लक्ष्मणनारायण गर्दे।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) महाराष्ट्र-रहस्य (१९७१), (२) सरल गीता (१९६६), (३) आरोग्य और उसके साधन (१९७१), (४) आत्मोद्धार (१९७२), (५) जापान की राजनीतिक प्रगति (१९८०), (६) कृष्ण-चरित्र (१९७६), (७) गांधी सिद्धांत (१९७७), (८) एशिया का जागरण (१९८१), और भी कुछ पुस्तकें लिखी हैं।

विवरण—आप महाराष्ट्र ब्राह्मण और भारतमित्र के संपादक हैं। संपादन-कला का आपको अच्छा ज्ञान है, और साहित्य संसार में आपने विशेष स्थान प्राप्त किया है।

समय—संवत् १९७२

नाम—(३६१९) अवधविहारीलाल माथुर एम्० आई० एस्० ए० 'अवध', गुना, ग्वालियर-रियासत।

जन्म काल—सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ (अप्रकाशित)—(१) हिंदी-पत्र पत्रिकाओं का इतिहास, (२) ग़रीब पढ़ा (उपन्यास), (३) डाका न डालनेवाला डाकू, (४) सेठजी की चोरी (उपन्यास), (५) निर्दोष को फाँसी (उपन्यास), (६) प्राचीन भारत, (७) स्फुट कविताएँ

(रामायणाष्टक), (८) होली-बहार, (९) कृष्ण लीला, (१०) कंस-वध, (११) कपोत-चरित्र, (१२) राजनीति, (१३) लक्षण-संग्रह, (१४) भक्त भजनावली, (१५) कृष्ण-जन्माष्टक, (१६) रामायण बहार।

प्रकाशित—(१) कविता-केलि, (२) कविता कुसुम, (३) गोरक्षण।

विवरण—यह सहारिया गोत्रीय मुंशी जगतबिहारीलाल के पुत्र हैं। आप प्रसिद्ध औपन्यासिक हैं, और ब्रज भाषा तथा खड़ी बोली दोनों में स्तुत्य कविताएँ करते हैं।

उदाहरण—

जहाँ बना आवास कभी था, रहते थे सुख अरु आनंद;
जहाँ प्रेममय हास कभी था, होता था विलास स्वच्छंद।
जहाँ स्वर्ग की माया भी बन, करती थी नित नूतन नृत्य;
पा करके संकेत तनिक-सा, जहाँ दौड़ पड़ते थे भृत्य।
जिसमें बड़े बड़े नृप करते थे सदैव आहार विहार;
यश-वैभव दुनिया का सारा जहाँ देखता था संसार।
जहाँ कभी थी स्वर्ग अप्सरा सजती नए नए शृंगार;
वही स्वर्ग-सा सदन पड़ा है सूना, करता हाहाकार।
चलती थी अति प्रीति-पगी-सी जहाँ प्रेम में मग्न पवन;
वहाँ आज भी खड़ा सुनाता अपनी गाथा भग्न भवन।

नाम—(३१७०) रंजनसिंह, करौंदी, जिला उन्नाव।

जन्म काल—सं० १९४७।

नाम—(३१७१) गंगाप्रसाद श्रीवास्तव (जी० पी० श्रीवास्तव)।

जन्म काल—सं० १९४७।

ग्रंथ—(१) लंबी दाढ़ी, (२) उलट फेर, (३) मर्दानी औरत,

(७) नोक-झोंक, (८) महाशय मदामसिंह शर्मा, (६) हुनदार आदमी, (७) गड़बड़झाला, (८) मिस्टर ललतवालाजा, (६) स्वामी चौपटानंद, (१०) मीठी हँसी, (११) गंगा-जमनी, (१२) कुर्सी मैन, (१३) मार-मारकर हकीम, (१४) आँखों में धूल, (१५) हवाई डाक्टर, (१६) नाक में दम, (१७) जवानी बनाम बुढ़ापा, (१८) रंग बेढ़ब, (१६) धोखाधड़ी, (२०) बदौलत-सीट, (२१) चाट्ठा गुरुघंटाल, (२२) काठ का उल्लू, (२३) प्राणनाथ।

विवरण—यह गोंडे के प्रसिद्ध वकील हास्य रस के अच्छे लेखक हैं। फिर भी इतना कहना पड़ता है कि इनका हास्य सब कहीं ऊँचे दर्जे का नहीं है।

नाम—(३६०२) नर्मदाप्रसाद बी० ए०, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १६४७।

विवरण—यह 'हितकारिणी' के उप संपादक तथा 'श्रीशारदा' पत्रिका के संपादक रह चुके हैं। इन्होंने हिंदी साहित्य-सम्मेलन से विशारद तथा कलकत्ते से साहित्य शास्त्री की पदवियाँ पाई हैं।

नाम—(३६०३) लोचनप्रसाद पांडेय।

जन्म काल—प्राय सं० १६४८।

ग्रंथ—(१) दो मित्र (२) प्रवासी, (३) नीति-कविता आदि छोटे-मोटे ११ ग्रंथ।

विवरण—यह बालपुर, ज़ि० बिलासपुर निवासी हैं। आपने कई गद्य पद्य खड़ी बोली में अनेक पद्य ग्रंथ रचे हैं। आप एक होनहार लेखक हैं। आपने कविता-कुसुममाला में कई वर्तमान कवियों की रचनाओं का संग्रह किया तथा देश भक्ति पर भी अच्छी कविता रची है।

नाम—(३६०४) ब्रजरत्नदास, काशी।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—(१) मआसिरुलउमरा (लगभग ३०० हिंदू-सरदारों की जीवनियों का फ़ारसी से हिंदी अनुवाद), (२) बुंदेलखंड का इतिहास, (३) कँच-जाति का इतिहास ।

सपादित ग्रंथ

(१) सुजान चरित्र (२) रहिमान विलास, (३) अमर-गीत (नंददास-कृत), (४) मुद्राराक्षस, (५) भाषा भूषण (महाराजा यशवंतसिंह-कृत), (६) खुसरो की हिंदी-कविता, (७) प्रेम-सागर, (८) राम-स्वयंवर इत्यादि ।

विवरण—यह वैश्य-कुलावतंस श्रीयुत बलदेवदासजी के सुपुत्र हैं। भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्रजी की एकमात्र पुत्री विद्यावती इनकी माता थीं। आपको इतिहास से प्रेम और संपादन कला में अच्छी सफलता प्राप्त है। तुलसीदास ग्रंथावली के तीन संपादकों में से यह भी एक रह चुके हैं। साहित्यिक गौरव पर आपका वंश-परंपरागत अधिकार है।

समय—संवत् १९७२

नाम—(३४७२) श्री विश्वनाथ त्रिपाठी, ग्राम रेमोपुरी, तहसील अहरौला, ज़िला आज़मगढ़।

जन्म-काल—सं० १९५१ ।

कविता-काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—(१) सीय-स्वयंवर (नाटक), (२) भंग में रंग, (३) आदर्श वीरांगना-नाटक, (४) चर्खा, (५) युगल चालीसा, (६) अहिंसा-संग्राम, (७) एक-न एक लगा रहता है, (८) भीष्म प्रतिज्ञा ।

विवरण—यह महाशय पं० गुरुदीनजी त्रिपाठी के सुपुत्र हैं। इन्होंने काव्य कला की शिक्षा अपने भाई पं० जयगोविंदजी से प्राप्त

विवरण—आप 'कलकत्ता-समाचार' नामक पत्र के संपादक हैं। आपके द्वारा हमें कई लेखकों के विवरण प्राप्त हुए हैं। आप उत्कृष्ट लेखक तथा परोपकारी महात्मा हैं। आपका आदर्श जीवन है।

नाम—(३१७८) लौटूसिंह गौतम।

ग्रंथ—(१) सत्पथदर्शक, (२) प्राचीन भारत, (३) जीवन-मुक्ति, (४) शिक्षा पद्धति।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९७३।

विवरण—हरीघाट ज़िला ग़ाज़ीपुर निवासी डॉक्टर शिवकरणसिंह के पुत्र। इस काल क्षत्रिय-कॉलेज, बनारस में आप अध्यापक हैं। इतिहास पर श्रम कर रहे हैं, जो स्तुत्य और अनुकरणीय है।

समय—संवत् १९७४

नाम—(३१७९) केशवलाल झा 'अमल', सोन्हौली, तारापुर (मुंगेर)।

जन्म-काल—सं० १९५१।

रचना काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) काव्य प्रबोध, (२) प्रेम पुष्प-मालिका, (३) ललित मालती, (४) प्रलाप (गद्य-काव्य)।

विवरण—आप प० गोपाल झा के पुत्र और खड़ी बोली के सुकवि हैं।

उदाहरण—

रूप

मनोहारिणी मदन-सुषमा,
राका शशि की निर्मल कांति;
मादकता मदिरा का प्याला,
या स्वर्गिक शोभा की भ्रांति।

विश्व माधुरी की शुचि आभा,
या यौवन का सुंदर फूल;
है सोहाग की छटा मनोहर,
या विरही जीवन का शूल।
प्रकृति नटी का हास्य-ज्योति या
मधुर मिलन का भाव अनूप;
शीतल शीतल जलनेवाला,
या तरुणी रमणी का रूप।

नाम—(३९८०) बनारसीदास चतुर्वेदी।

जन्म-काल—सं० १९४९।

ग्रंथ—(१) हृदय-तरंग (२) राष्ट्र भाषा, (३) रानडे, (४) केशव चंद्रसेन, (५) भारत भक्त एंड्रूज़, (६) प्रवासी भारतवासी, (७) फ़िजी की समस्या, (८) फ़िजी प्रवासी।

विवरण—फ़ीरोज़ाबाद, ज़िला आगरा निवासी पं० गनेशीलाल के पुत्र हैं। यह आजकल कलकत्ते में रहकर 'विशाल भारत' पत्र का संपादन करते हैं। उपनिवेशों पर आपने विशेष श्रम किया है। हिंदी-गद्य के सुलेखक हैं।

नाम—(३९८१) राजकुमार वर्मा 'कुमार', साहित्य रत्नाकर, जबलपुर।

जन्म-काल—सं० १९६१।

कविता-काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) भीम प्रतिज्ञा (नाटक), (२) वीर हम्मीर (पद्य ग्रंथ), (३) सुखद सम्मिलन, (४) गाधी गान, (५) प्रणय परिचय, (६) साहित्य-समालोचना, (७) कबीर का रहस्यवाद।

विवरण—आप कायस्थ कुलोत्पन्न श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद श्रीवास्तव भूतपूर्व एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर मंडला के पुत्र हैं। यह इस

समय प्रयाग विश्वविद्यालय में हिंदी के आचार्य हैं। अच्छी प्रथा की बढ़िया कविता रचते हैं।

उदाहरण—

देश-दशा का ध्यान हृदय में होवे प्रतिक्षण,
उसकी सेवा हेतु बहे चाहे शोणित-कण।
तन मन धन सर्वस्व देश हित होवे अर्पण,
मुख से संकट सहूँ यही मुख से निकले प्रण।
भारत के शुभ नाम की माला हाथों में लसे,
हृदय कमल में देश की सेवा भ्रमरी आ फँसे।
आह! हमारे हाथों से लुट जावे जीवन धन कैसे?
प्रेम सुधा से सिंचित उपवन बन जावे हा! वन कैसे?
दुख दोषों के महातिमिर में छिप जावे विधु मन कैसे?
अपनी आँखों ही के सम्मुख मा का घोर पतन कैसे?

समय—संवत् १९७८

नाम—(३९८२) गुरुभक्तसिंह (भक्त) ठाकुर।

जन्म-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) भक्त भारती, (२) प्रेम पाश नाटक, (३) मणिमाला।

विवरण—यह जमानिया, ज़िला गाज़ीपुर निवासी डॉक्टर कालिकाप्रसादसिंह के पुत्र, बलिया के प्रसिद्ध रईस तथा हिंदी के कवि एवं प्रेमी हैं। आपकी खड़ी बोली की रचना काव्यत्व की कमनीयता से मंडित है।

उदाहरण—

इसे रुलाया, उसे हँसाया, कहीं वृक्ष को दिया ढकेल,
इसे हिलाया, उसे सुलाया, क्या अद्भुत है तेरा खेल।

नवल नायिका सी रस भीनी नौका जो मदमाती है;
छाती फूली हुई पालकी कड़क हर्ष से जाती है।
सलिल वीचि पर मौज उड़ाती इतराती लहरी ऊपर;
कर पतवारों से पानी म इधर उधर से छप छप कर।

नाम—(३९८३) गौरीशंकर द्विवेदी (शंकर), टीकमगढ़।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२०।

रचना काल—सं० १९७५।

ग्रंथ—बुंदेलखंड के कवि और लेखक (अमुद्रित)।

विवरण—ग्रंथ बड़ा और उपयोगी है। टीकमगढ़ में आप पोस्ट मास्टर हैं। खड़ी बोली में अच्छी कविता करते हैं। श्रमशील हिंदी प्रेमी सज्जन हैं।

नाम—(३९८४)जगद्विहारी सेठ।

जन्म काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) प्राचीन भारत के उपनिवेश, (२) वाटरलू का युद्ध (३) प्राकृतिक दृश्य, (४) बंबई प्रांत का पर्यटन, (५) बस विहीन लंदन, (६) पदार्थ किस प्रकार बना है, (७) बिजली के लैंप, (८) बिजली का चालक शक्ति।

विवरण—बाबू युगलविहारी सेठ रिटायर्ड जज के पुत्र तथा लाहौर गवर्नमेंट-कॉलेज में भौतिक विज्ञान के अध्यापक हैं। आप विलायत से पास करके आए हैं, और आइ० ई० एस० श्रेणी में हैं। आपके ग्रंथों द्वारा उपयोगी विषयों पर समाज की ज्ञान वृद्धि होती है। आपका परिश्रम श्लाघ्य है।

नाम—(३९८५) ठाकुरदास जैन बी० ए०, तालबेहट (झाँसी)।

जन्म-काल—सं० १९५२।

कविता-काल—सं० १९७५।

विवरण—अध्यापक सवाई महेंद्र हाईस्कूल, टीकमगढ़।

उदाहरण—

अभिलाषा

प्रभो, आवेगा कब वह काल ?

जब कि राजनीतिक सामाजिक संस्थाओं के कार्य।
सर्वहितकर विश्वबंधुता से होंगे निर्धार्य।
मित्रता होगी एक विशाल,
प्रभो, आवेगा कब वह काल ? ॥१॥
जब आभ्यंतर शत्रु विजय से द्योतित होगी शक्ति,
सदाचारमय सत्प्रवृत्ति जब यह करेगी भक्ति।
निष्कपट होगी सबकी चाल;
प्रभो, आवेगा कब वह काल ? ॥२॥

नाम—(३३८५ अ) तोरनदेवी शुक्ल (लली), लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९६३।

रचना-काल—सं० १९७५।

ग्रंथ—साहित्य-चंद्रिका।

विवरण—आप लगभग पंद्रह वर्ष से साहित्य सेवा कर रही हैं। स्त्री कवियों में आपका स्थान ऊँचा है।

नाम—(३३८६) दयाचंद्र गोयलीय।

ग्रंथ—(१) मितव्ययता, (२) युवाओं को उपदेश, (३) शांति-वैभव, (४) अच्छी आदत डालने की शिक्षा, (५) चरित्र गठन और मनोबल, (६) पिता के उपदेश, (७) आत्माहाम-लिंकन।

विवरण—आप अग्रवाल जैन तथा लखनऊ-कालीचरण हाईस्कूल के हेडमास्टर थे। जाति प्रबोध नामक मासिक पत्र भी आपने निकाला था। आपका देहांत हो गया है।

नाम—(३६८७) देवीप्रसाद गुप्त कुसुमाकर बी० ए०, एल्० एल्० बी० ।

जन्म काल—सं० १९५० ।

रचना-काल—सं० १९७१ ।

ग्रंथ—(१) इतिहास दर्पण, (२) अमेरिकन संयुक्त राज्य की शासन प्रणाली, (३) स्वराज्य, कबीर और होली, (४) उपाधि की व्याधि, (५) जंगल में गुलज़ार, (६) दुर्गावती नाटक, (७) कुसुमाकर विनोद, (८) बना हुआ गवाह, (९) भारत की स्वतंत्रता, (१०) हम स्वराज्य क्यों चाहिए, (११) केसर शतक, (१२) दो सती बालाएँ ।

विवरण—सोहागपुर निवासी तथा जाति के वैश्य हैं । होशंगाबाद में आप वकालत करते हैं । देश प्रेम पूर्ण तथा उपयोगी ग्रंथ रचे हैं । फड़का देनेवाली रचना की है ।

उदाहरण—

किस दुखिया का हृदय फटा, यह काला बादल कैसा ?
बिजली बनकर तड़प रहा है, कोई घायल जैसा !
किसके आँसू यह आज, ये पानी बरस रहा है ।
नभ में चारों ओर दुःख ही दुःख अब दरस रहा है ?
इंद्र धनुष को उठा लिया है जिसने आज कुपित हो ?
तारा न आँखें मींचा है, जिससे हृदय व्यथित हो ।
घमासान घन उमड़ रहे हैं सेना यह चढ़ती है,
किस दुखिया घायल पर फिर फिर धावा कर चढ़ती है ।
नभ में छाई है यह लाली किसका रुधिर बहा है ;
वीरबहूटी बन करके जो भू पर टपक रहा है ।

नाम—(३६८८) धन्यकुमार जैन, उपनाम 'सिंह' ।

ग्रंथ—वसंतकुमारी ।

जन्म-काल—सं० १९६० (विजयादशमी)।

मृत्यु-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) प्रह्लाद (खंड काव्य), (२) गंधर्व, (३) बिहार का इतिहास (अपूर्ण), (४) प्रेमांजलि, (५) स्तुति, (६) मलयच ।

विवरण—यह बाबू ठाकुरप्रसादजी चौधरी के सुपुत्र थे। इन्होंने अल्प जीवन-काल में अपनी प्रखर बुद्धि एवं प्रतिभा द्वारा हिंदी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। मैट्रिक्युलेशन परीक्षा में हिंदी विषय में सर्व श्रेष्ठ उत्तीर्ण होने के कारण इनको पटना विश्वविद्यालय से स्वर्णपदक प्राप्त हुआ, किंतु इस फल के प्रकाशित होने के दो सप्ताह पूर्व ही इनकी अकस्मात् मृत्यु हो चुकी थी। बड़े देशप्रेमी, उदार हृदय पुरुष-रत्न थे।

उदाहरण—

जाता हूँ मैं स्वर्ग को देकर यह संदेश—
गाकर मेरे गीत को करना सुखी स्वदेश।

स्वदेश

हे हे प्रियतम स्वदेश !
लोक - विदित वंद्य देश !
वीर देश, आदि सभ्य, विश्व ज्ञानदाता !
महिमा तव अति अपार
पावें कविगण न पार।
सृष्टि द्वार सुखमा घर भारत-जन त्राता !
स्वामि ! पा विभूति-दास
रहते तुम क्यों उदास ?
व्यर्थ त्रास, निर्भय हो स्वर्ग लोक आता !

जीवनोद्देश

यह दुर्लभ नर देह व्यर्थ में हमें न खोना,
मर्त्यलोक म कौन अमरता का है बोना
सुख में हँसना नहीं, न है दुख में कुछ रोना,
रहे हमारे साथ सदा वह श्याम सलोना।
अपने हित करना नहीं हमको कुछ अब शेष है,
करना सुखी स्वदेश को जीवन का उद्देश है।
जैसे हो प्रण प्राण-सग निवाह करेंगे,
कभी विघ्न भय की न तनिक परवाह करेंगे।
नर को पूछे कौन, काल से भी न डरेंगे।
जनम जिसके लिये, उसी के लिये मरेंगे।
भूले भटको के लिये यह 'विभूति'-सदेश है,
करना सुखी स्वदेश को जीवन का उद्देश है।
जैसे हो भरना हमें निज भाषा भडार,
एकमात्र बस है यही देशोन्नति का द्वार।

नाम—(११११) मोहनलाल मेहतो गयावाल।

ग्रंथ— (१) निर्माल्य, (२) एकतारा, (३) रेखता।

विवरण—आप पडित श्यामलाल मेहता गयावाल के पुत्र हिंदी, उर्दू, बँगला, मराठी, अंगरेज़ी और सस्कृत से परिचित हैं। व्यग्य चित्रकार भी हैं। खड़ी बोली तथा ब्रज भाषा दोनो में कविता करते हैं। छायावाद पर कई पुस्तकें बना चुके हैं। अच्छे और उत्साही कवि हैं। छायावादी कवियो में आपका उच्च आसन है।

उदाहरण—

चद तथा प्रतिमा इक चंद को दै अपनी उर ज्योति उज्यारी;
भावुक भाव के हाथन सों सब भाँति सँभारि-सँभारि

देख रहे अनिमेष अनेक सुमाग्न के परसिद्ध पुजारी;
भारत मातु के भाल की भव्य है बिंदी प्रभामयी हिंदी हमारी।
जो अव्यक्त सिंधु कल्लोलित है वसुधा में आठों याम।
मैं हूँ वही भिन्न होने पर मेरा हुआ दूसरा नाम।
है विभिन्नता नाम-मात्र की सुक्ष्म उसमें भेद नहीं;
जल-गत रवि की छाया का क्या और नाम है सुना कहीं।

नाम—(३६६३) मंगलदेव शास्त्री एम्० ए०, डी० फिल।

रचना-काल—सं० १९७९।

रचना—हिंदी शब्द-शास्त्र पर ग्रंथ।

विवरण—आप एक उच्च कोटि के लेखक हैं। विषय भी बहुत गंभीर चुना है।

नाम—(३६६४) रामनारायण शर्मा, राज्य छतरपुर, बुंदेलखंड।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) व्यंग्य बवंडर (२) नुड़िया पुराण, (३) संगीत-सुधाकर, (४) गंगाधर ग्रंथावली (अप्रकाशित), (५) स्फुट लेख तथा कविताएँ।

विवरण—यह कान्यकुब्ज द्विवेदी-कुलोत्पन्न लेखक हैं। इनका निवास-स्थान कानपुर प्रांतांतर्गत इयेरवा ग्राम है। कुछ दिन आप श्रीमान् महाराजा साहब छतरपुर के हिंदी पुस्तकालय में काम कर चुके हैं। इनकी कविता नूतनता से मंडित परम ओजस्विनी है।

उदाहरण—

प्रकृति

मम माया से हूँ मैं परे, प्रकृति, परमेश्वरि जगजननि;
नहीं कहते हैं मुझको व्यर्थ, नचा सकती सुसृष्टि को स्वयं ॥ १ ॥

पाद कंदुक मेरा मार्तंड, बनाकर कर-कंदुक मैं चंद ;
तारकावलि गोली इव मान, खेलती फिरती अंबर मध्य ॥ २ ॥
धरास्थित थावर-जंगम सर्व, कभी करती हूँ उथल-पथल ;
डगमगा जगती को जब कभी, मुश्किल करती उल्कापात ॥ ३ ॥
गर्भ से सरिताओं को डाल, खलबला कर मैं सारा नीर ;
विशद वारिधि के अतल्तल, विषम बड़वानल देती फूँक ॥ ४ ॥
धनजय की धधकित धधरि, जग में धक, धक, धक धधका ;
धूम्रमय धू धू धू प्रतिध्वनि, सुना करती हूँ अधाधुंध ॥ ५ ॥
अवनि अम्बुधि को करके नष्ट, शून्यमय दिग्दिगंत को कर ;
मौज आई, तो रचता हूँ, आदने को अंबर अवर ॥ ६ ॥
प्रभंजन का मैं प्रबल प्रवाह, प्रथम कर देती हूँ आरंभ ;
सृष्टि ले अंतरिक्ष की गोद, अवनि अवर कर देती एक ॥ ७ ॥
हृदय में गिरि राजों के सदा, जलाती हूँ भीषण ज्वाला ;
हिमालय को भी मैं नित धुला, बहाती अगणित सरिताएँ ॥ ८ ॥
सार गर्भित बादल के दल, परस्पर टकरा देती जब ;
प्रतिध्वनित होता है अंबर, अंबुमय करता सारी अवनि ॥ ९ ॥
विश्व वीणा के टूटे तार, जोड़ गाती हूँ षट्-ऋतु राग ;
मौन नीरव प्रलयंकर गान, श्रवण कर धाराता मझार ॥ १० ॥
विश्व के कोने कोने में, जमा है मेरा ही आतंक ;
सृष्टि का उत्पादन पालन, किया करती मैं ही संहार ॥ ११ ॥
निरंतर परिवर्तन में लीन, न लेती कहीं कभी विश्राम ;
घोर रुचिकर प्रियकर सर्वदा, किया करती उत्थान-पतन ॥ १२ ॥

नाम—(३६६९) रामरखसिंह सहगल, प्रयाग निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५० ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

ग्रंथ—संपादक चाँद मासिक पत्रिका ।

विवरण—उत्साही, देश प्रेमी तथा उद्योगी। ग्राम-प्रेम के कारण जेल जा चुके हैं।

नाम—(३९९६) राहुल सांकृत्यायन।

जन्म काल—लगभग सं० १९५३।

रचना-काल सं० १९७१।

विवरण—आप संस्कृत तथा पाली भाषाओं के विद्वान् एक बौद्ध भिक्षु हैं, जो प्राचीन लेखकों एवं विषयों पर उत्तम लेख लिखा करते हैं। आपका कोई ग्रंथ हमारे देखने में नहीं आया, पर लेखन-शैली गंभीर एवं गवेषणा पूर्ण है। आपने तिब्बत, नेपाल, सीलोन इत्यादि देशों का भ्रमण करके बौद्ध धर्म एवं प्राचीन विषयों की अच्छी जाँच की है। हिंदी के अत्यंत प्राचीन कवियों के विषय में जो लेख आदि का लेख आपने 'गंगा' मासिक पत्रिका के विशेषांक में, अभी थोड़े ही मास हुए, प्रकाशित कराया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। उसको पचास साठ नैपाली, भूटानी तथा अन्य बौद्ध ग्रंथों के आधार पर आपने लिखा है।

नाम—(३९९७) विष्णुदत्त शुक्ल।

जन्म काल—लगभग सं० १९५०।

रचना-काल—सं० १९७१।

ग्रंथ—पत्रकार-कला। प्रताप के सहायक संपादक।

विवरण—पत्रकार-कला एक उत्कृष्ट ग्रंथ है। हम इसे पुरस्कार के योग्य समझते हैं।

नाम—(३९९८) शिवपूजनसहाय, उनवास, इटाढ़ी, शाहाबाद (बिहार)।

जन्म काल—सं० १९५०।

रचना-काल—अनुमानतः सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) देहाती दुनिया, (२) महिला-महत्त्व, (३) विहार का विहार आदि।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू वागेश्वरीदयाल के पुत्र हैं। जागरण, 'मतवाला' आदि के संपादक भी रह चुके हैं। आप अच्छे हास्य पूर्ण लेख लिखते हैं। उच्च श्रेणी के गद्यकार तथा ज़िंदादिल व्यक्ति पुरुष हैं।

नाम—(३९९९) श्रीनाथसिंह, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९७९।

विवरण—इनकी 'यौवन-स्वास्थ्य और प्रेम' नामक पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई है। हिंदी के अच्छे लेखक, कवि और 'बाल-सखा' के संपादक हैं। सरस्वती का संपादन भी करते हैं। 'बाल-साहित्य'-विषयक कई पुस्तकें लिख चुके हैं।

नाम—(४०००) श्रीप्रकाश बैरिस्टर, काशी निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२।

रचना-काल— सं० १९७९।

रचना—स्फुट लेखक तथा पत्रकार हैं।

विवरण—संपादक दैनिक पत्र 'आज'। बाबू भगवानदास के पुत्र, प्रसिद्ध देश भक्त और हिंदी प्रेमी हैं। विचारों के कारण जेल जा चुके हैं। काशी के रईस हैं।

नाम—(४००० अ) सच्चिदानंद उपाध्याय (सनाढ्य) 'आशुतोष', टीकमगढ़।

जन्म-काल—सं० १९५४।

कविता-काल—सं० १९७९।

विवरण—डाक-विभाग में क्लर्क हैं।

उदाहरण—

को तनु धारी मरत नहिं, जनमत या संसार।
'आशुतोष' ते धन्य जो, करत जाति-उपकार।
(अप्रकाशित मुद्रिका-रहस्य से)

थी चल रही शुचि वायु परिमल मंद-मंद सुचाल-सी।
अरु चंद्रिका प्रसरित उदित थी श्वेत शुभ्र मराल-सी।
थी गुंज धुनि अलि पुंज की जब कुंज कुंज गुंजा रही,
कुसुमित कदंबास्य हो कादंबरी था गा रही।

नाम—(४००१) सियारामशरण गुप्त, चिरगाँव, झाँसी।

जन्म काल—सं० १९५२।

रचना काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—कुछ बनाए ५। कुछ अनुवाद भी हैं। आत्मा नामक ग्रंथ भी है।

विवरण—प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त के आप कनिष्ठ भ्राता हैं। कविता आप भी अच्छी करते हैं। सामाजिक विषयों पर सुरुचि पूर्ण कविताएँ लिखते हैं।

नाम—(४००२) सुमित्रानंदन पंत।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५९।

रचना काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) वीणा (२) पल्लव, (३) गुंजन-नामक एक नाटक-ग्रंथ भी लिख रहे हैं।

विवरण—आप खड़ी बोली में बहुत चमत्कार-पूर्ण रचना करते हैं। छायावादी भी हैं। इनके उपर्युक्त तीनों ग्रंथ हमारे देखे हुए हैं। पल्लव बहुत पसंद है। इनकी रचना हिंदी के प्रसिद्ध प्राचीन कवियों की भी साहित्य का सामना कर सकती है। भावों का अनूठापन तथा उनकी सबलता इनके मुख्य गुण हैं। हम पंतजी को वर्तमान कवियों में बहुत ही आदरणीय दृष्टि से देखते हैं। प्रकृति का सौंदर्य आपने अच्छा देखा है। कोमलता इनका रलाघ्य गुण है।

उदाहरण—

डोलने लगी मधुर मधु वात, हिला तृण, व्रतति, कुञ्ज, तरु, पात ;
डोलने लगी प्रिय, मृदु वात, गुञ्ज मधु गंध धूलि हिम गात।
खोलने लगीं शयित चिरकाल, नवल कलि अलस पलक दल जाल ;
बोलने लगीं डाल से डाल, प्रमुग्ध पुलकाकुल कोकिल बाल।

नाम—(४००३) हरप्रसाद (वियोगी हरि)।

जन्म-काल—लगभग स० १९५०।

कविता काल—स० १९७२।

ग्रंथ—(१) वीर-सतसई, (२) अन्तर्नाद आदि कई अन्य ग्रंथ।

विवरण—आप रियासत छतरपुर के रहनेवाले हैं, किंतु बहुत दिनों से प्रयाग में रहते हैं। गद्य और पद्य दोनों में अच्छी रचना करते हैं, किंतु विचार कुछ-कुछ प्राचीन हैं। निर्धन होकर भी आप बहुत उदार पुरुष हैं। वीर सतसई में नए भाव नहीं हैं, किंतु अन्तर्नाद अच्छा ग्रंथ है।

१९७१-७८ के शेष कविगण

समय—संवत् १९७१

नाम—(४००४) ऋषिलाल साहु कलवार, महोली, जिला सीतापुर।

जन्म काल—स० १९२६।

ग्रंथ—(१) शृंगार दर्पण (२) पिंगलादर्श, (३) विज्ञान-प्रभाकर, (४) अलंकार भूषण, (५) निदान मंजरी।

नाम—(४००५) कृष्णचंद्र।

जन्म-काल—स० १९२६।

मृत्यु काल—स० १९७६।

ग्रंथ—(१) पद्यानुवाद वाल्मीकीय रामायण (सुंदरकांड), (२) गद्य पद्यमय अनुवाद—भवभूति-कृत उत्तर रामचरित, [illegible] माधव का [illegible] (कुछ अंश), (३) महावीर [illegible]

विवरण—आप भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्रजी के कनिष्ठ भ्राता गोकुलचंद्रजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। इन्होंने अपने व्यय से ही भारतेंदु-नाटक-मंडली स्थापित की, जो अपना कार्य अभी तक भली भाँति कर रही है। आपका वाल्मीकीय पद्यानुवाद विशेषतया रोला छंदों में है। इनका साहित्य ब्रज-भाषा में है, किंतु उसमें संस्कृत शब्दों का अत्यधिक प्रयोग है।

नाम—(४००६) गोवर्द्धनलाल (लाला) बसौदा, ग्वालियर।

जन्म-काल—सं० १९३६।

ग्रंथ—(१) पूर्ति प्रमोद, (२) साहित्य भास्कर, (३) नगवन (नागदमन)।

नाम—(४००६ अ) गोविंददास व्यास (सनाढ्य ब्राह्मण) ताल नेहट (झाँसी)।

जन्म-काल—सं० १९४७।

कविता-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) शिव शिवा स्तवन, (२) सीता विवाह, (३) कृष्ण चरित्र, (४) जीवन के चार दिन, (५) पुत्र की गर्दन, (६) लोहू का घूँट, (७) परीक्षित शाप, (८) श्रीकृष्ण-जन्म, (९) वृंदावन वास, (१०) गोवर्धन लीला, (११) रास-क्रीड़ा मथुरागमन, (१२) उग्रसेन का राजतिलक, (१३) द्वारिका-वास, (१४) भक्ति-चरित्र, (१५) ऊषा-अनिरुद्ध, (१६) योगिराज।

उदाहरण—

हिमागार शिखरस्थ वट शीत छाया,
परम रम्य जन शून्य कैलास भाया।
सुखासीन आनाम शैलात्मजा हैं,
सुभाये प्रवाहित सुदेवापगा हैं।

नमो भूतनाथ नमो रौद्ररूप,
नमो भीष्य सिंधु नमो देवभूपं;
नमो कर्करार्क नमो कामध्वज,
नमो विश्वनाथ नमो शम्भुराज।

नाम—(४००७) चन्द्रशेखर मिश्र, चंपारन।

ग्रंथ—(१) मंपारक विद्याधर्म-दीपिका, (२) रत्नमाला, चंपारन।

विवरण—सुलेखक हैं।

नाम—(४००८) चंपालाल जौहरी (सुधाकर), रामगंज, सहवा।

रचना-काल—सं० १९६१।

ग्रंथ—(१) माधवी कथा, (२) वियोगिनी, (३) शिक्षकों का कर्तव्य आदि ८ पुस्तकें आपने बनाई हैं।

नाम—(४००९) जयपाल ब्रह्मभट्ट।

जन्म-काल—सं० १९२२।

रचना-काल—सं० १९६१।

ग्रंथ—रसिक-प्रमोद (१९९१)।

विवरण—आप सूना ग्राम, ज़िला मुंगेर निवासी शंभु महाराज के पुत्र हैं। कवि-यशी हैं तथा समय समय पर स्फुट कविताएँ रचा करते हैं।

उदाहरण—

मति प्रीति के छंदन माहिं परा पग मारग दु:ख पदावनो है।
पय माहिं निदाघ के पावक को चढ़ि मोम-तुरंग पै धावनो है।
मनसूर के ऐसे जो सूलि चढ़े नहिं ताहु पै नेकु डरावनो है,
जयपाल जू ताते विचारि कहै कछु नीको न नेह लगावनो है।

नाम—(४०१०) नारायणजी पुरुषोत्तम (ज्ञात)।

जन्म-काल—सं० १९३१।

कविता-काल—लगभग सं० १९६१।

ग्रंथ—गुजराती भाषा काव्य के नौ दस ग्रंथ। हिंदी में (१) जसवंत यशोधान, (२) काव्य-कलाप (तीन खंड)।

विवरण—मोरवी राज्य के राजपुरोहित तथा गुजराती एवं हिंदी के कवि। जसास-राज्य से सम्मान-सहित दो ग्राम पाए हैं। 'सुकवि' के नवंबर १९३१ के अंक में इनकी जीवनी छपी है।

नाम—(४०११) बजरंगसिंह, हथिया, सीतापुर।

जन्म काल—सं० १९३६।

ग्रंथ—(१) रुद्र पचीसी, (२) षट्ऋतु, (३) वैद्यनाथ पचीसी, (४) स्फुट कविता, (५) काशी-कोतवाल-पचीसी।

विवरण—आपका स्वर्गवास हो गया है।

नाम—(४०१२) मधुसूदन गोस्वामी, वृंदावन।

ग्रंथ—अमियनिमाइ चरित्र। चैतन्य महाप्रभु का जीवन चरित्र वार्तिक २७२ सफ़ा रॉयल १२ पेजी में लिखा गया है। एक ऐसा ही ग्रंथ पहले बाबू शिशिरकुमार घोष ने बँगला में बनाया था, जिसका यह अनुवाद है। कहीं कहीं एक आध छंद भी है। यह पुस्तक हमें दरबार छतरपुर में देखने को मिली। उपासना-तत्त्व, प्रतिमा-तत्त्व, गायत्री परिचय, विक्टोरिया चरित, आर्यसमाजीय रहस्य आदि भी इनके ग्रंथ हैं।

नाम—(४०१३) महादेवप्रसाद (मदनेश) पटना, मो० फ्राऊगंज।

ग्रंथ—(१) गंगा लहरी, (२) नख शिख रामचंद्रजी, (३) मदनेश-मौक्तिका, (४) मदनेश-कल्पद्रुम, (५) सकम्मोचन आरसी, (६) मदनेश-कोष, (७) सन तीन ताजा की तरहदार कुंजी (८) भैरवाष्टक।

नाम—(४०१४) रामावतार द्विवेदी, फतेहपुर, जिला बाराबंकी।

जन्म-काल—सं० १९३६।

रचना-काल—सं० १९६१।

नाम—(४०१५) शुकदेवनारायण कायस्थ, रामधारीसहाय के पुत्र डीहो, जिला सारन।

जन्म-काल—सं० १९३६।

ग्रंथ—नारद मोह वाटिका।

समय—संवत् १९६२

नाम—(४०१६) अमोरराय, भभुआ, साहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—(१) रामायण बालकांड छप्पय में, (२) गुलिस्ताँ का आठवाँ बाब कविता में।

नाम—(४०१७) अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, कानपुर, संपादक भारतमित्र।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—शिक्षा अनुवाद।

विवरण—नृसिंह हिंदीबंगवासी एवं हितवार्ता का संपादन किया। आपके विचार प्राचीन प्रथा के हैं।

नाम—(४०१८) कीर्तिनारायणसिंह, ग्राम चंदनपट्टी, जिला मुजफ्फरपुर (बिहार प्रांत)।

कविता-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) कीर्ति स्तोत्र मंजरी, (२) कीर्ति राग-मंजरी (दो भाग), (३) श्रीजाज बत्तीसी, (४) सतनाम।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ बाबू शुभकरणलालजी के पुत्र हैं। स्थानीय लोकल बोर्ड तथा एग्रीकल्चरल एसोसिएशन के यह

सभासद् रह चुके हैं। (बाबू गिरींद्रनारायणसिंह, चंदनपट्टी, मुज़फ़्फ़रपुर द्वारा ज्ञात)।

उदाहरण—

कान वही जो सुनै हरिगान, औ ज्ञानी वही जो भजै यदुराई।
प्रीति वही जो सदा निबहै, अरु संत वही जो तजै ममताई।
मृत्य वही जो उठे परमारथ, नेत्र वही जो तकै न बुराई।
'कीर्तिनरायन' हाथ वही, जो करै सद ही धनदान उठाई।

नाम—(४०१९) गौरीशंकरप्रसाद बी० ए०, एल् एल्० बी०, वैश्य, वकील, जुलानाला, बनारस।

जन्म काल—अनुमान से सं० १९२०।

ग्रंथ—स्फुट लेख, योरप-यात्रा (तीन लेखक मिलकर)।

विवरण—आप कई वर्षों तक नागरी प्रचारिणी सभा के मंत्री रहे हैं। हिंदी के आप बड़े शुभचिंतक और उत्साही पुरुष हैं। बनारस में वकालत करते हैं। आप हमारे प्राचीन मित्र हैं।

नाम—(४०२०) चतुरसिंह रूपाहेली, मेवाड़, राजपूताना।

ग्रंथ—(१) चतुर कुल-चरित्र, (२) खगोल विज्ञान, (३) सोरठा-समह।

विवरण—आप एक प्रतिष्ठित लेखक हैं।

नाम—(४०२१) छेदा साह, सैयद पोहार जिला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—(१) काव्य शिक्षा, (२) भगवद्गीता की टीका, (३) हरगंगा-रामायण, (४) ज्ञानोपदेश-शतक, (५) भक्ति पंचाशिका, (६) कृष्णा-पचीसी, (७) नारी गारी, (८) गंगा-पंचाशिका, (९) मार्कंडेय-वंशावली, (१०) कृष्ण प्रेम-पचीसी, (११) कान्यकुब्ज-पुष्पांजलि, (१२) काव्य-समह, (१३) सत्य नारायण, (१४) ज्ञान पाठे उपन्यास, (१५) हितोपदेश।

विवरण—मुसलमान होकर आपने हिंदुओं केसे भी ग्रंथ रचे हैं।

नाम—(४०२२) द्विजेश पांडेय (दंडपाणि), पंडित पुरवा, लखनऊ।

जन्म काल—स० १९३०।

रचना-काल—स० १९६२।

नाम—(४०२३) ब्रजेश महापात्र, असनी, फ़तेहपुर।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४०२४) भगवानबख़्शसिंह, राज्य कटारी, पोस्ट गौरा।

जन्म काल—स० १९३७।

ग्रंथ—(१) बुद्धि प्रकाश, (२) शतपदी भाषा-टीका, (३) लिंगार्थसार भाषा-टीका, (४) सीता विजय, (५) भजनावली, (६) विनय प्रकाश, (७) सीता राम रहस्य आदि १४ ग्रंथ रचे हैं।

नाम—(४०२५) मन्नीलाल गोस्वामी, उपनाम प्रेमवधु।

जन्म-काल—स० १९३७।

ग्रंथ—(१) श्री श्रीहिताष्टक (१९५०), (२) श्रीहित बारहखड़ी (१९७३), (३) सेवा शतक (१९७३), (४) हित नयपदी, (५) गुरु-गीता, (६) स्फुट पद।

विवरण—आप राधावल्लभीय गौड़ ब्राह्मण श्रीनंदकुमारलाल गोस्वामी के पुत्र हैं। आप वृंदावन-वासी हैं और बँगलावाले महाराज के नाम से प्रसिद्ध हैं।

नाम—(४०२६) माधौसिंहजी कविराज, बूँदी।

विवरण—यह कविराव रामनाथ के पुत्र हैं। कविता अच्छी करते हैं।

नाम—(४०२७) रामचरण भट्ट ब्राह्मण, पिहानी, ज़िला हरदोई।

जन्म-काल—स० १९३७।

ग्रंथ—(१) सुरभी शतक, (२) गो विलाप, (३) अर्य विलाप, (४) प्रेमामृत तरंगिणी, (५) प्रेमामृतवर्षिणी, (६) मतामत विचार।

नाम—(४०२८) रामजीदास वैश्य, ग्वालियर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३७।

रचना काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—सुघर चमली।

विवरण—पाठ्य पुस्तका का संकलन किया है।

नाम—(४०२९) शिवदयाल (केवल) कायस्थ, मगलपुर, जिला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—(१) काव्य समूह, (२) राम विनोद, (३) नीति शतक, (४) चौमासा चतुरंग।

नाम—(४०३०) शिवमंगलसिंहजी, राजाबहादुर, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९३०।

कविता-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—बिहारी-सतसई की छंदोबद्ध टीका।

विवरण—आप चौहानवंशीय क्षत्रिय [राजा रामप्रतापसिंहजी मैनपुरी नरेश के पुत्र हैं। आपका उक्त ग्रंथ स्थानीय नारायण प्रेस से प्रकाशित हो चुका है।

नाम—(४०३१) श्यामसुंदरलाल कायस्थ, एम्० ए० एल्० एल्० बी०, मैनपुरी।

ग्रंथ—(१) स्थावर जीव-मीमांसा, (२) मानव-वर्ण व्यवस्था।

नाम—(४०३२) हरिदास जैन।

रचना काल—सं० १९६२।

विवरण—वृंदावन जैन कवि के पौत्र।

समय—संवत् १९६२

नाम—(४०२३) ओंकारनाथ वाजपेयी, प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) लक्ष्मी-उपन्यास, (२) दो कन्याओं की बात-चीत, (३) माता। और भी कई जीवन चरित्र तथा उपन्यास आपने लिखे थे।

विवरण—अच्छे गद्य-लेखक थे। आपने ओंकार प्रेस खोलकर अच्छी अच्छी पुस्तकें प्रकाशित की थीं। शोक है, आपका देहांत हो गया है। प्रेस का काम आपके लड़के चला रहे हैं।

नाम—(४०२४) गणेशप्रसाद कायस्थ, टीकमगढ़।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—मणि द्वीप-मंजरी।

नाम—(४०२५) गयाप्रसाद (माणिक), गया।

जन्म-काल—सं० १९३८। वर्तमान हैं।

नाम—(४०२६) गोवर्धननाथ (लल्लूजी), वल्द प० गोपीनाथ।

जन्म-काल—सं० १९१८।

नाम—(४०२७) दयाशंकर, मथुरा।

ग्रंथ—शिशु-बोध।

नाम—(४०२८) देवनारायण उपाध्याय, गहमर, गाज़ीपुर।

कविता-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) पद्य पद्धति (पिंगल), (२) लोकोक्ति शिक्षक, (३) भारत की प्रतिष्ठा आदि।

विवरण—आप प० रामपतनजी उपाध्याय के पुत्र तथा स्कूल के अध्यापक हैं। इनकी स्फुट कविताएँ 'आर्य-महिला', 'धर्म प्रकाश'

आदि पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुका है। [श्रीयुत प्रसिद्धनारायण शर्मा गहमरीजी से ज्ञात]।

उदाहरण—

उडुगन हो तुम चमक रहे इतरा इतराकर।
श्वेत अंग निज देख गर्व करते इठलाकर।
गगन-श्यामता पेखि सदा हँसते रहते हो।
बसे उसी के मध्य कृतघ्नी क्यों बनते हो।
रखना इसका ध्यान तुरत फल मिल जावेगा,
हो जाओगे म्लान कलेजा हिल जावेगा।
इसी कालिमा गगन मध्य में रवि प्रगटेगा,
होगे आभाहत शीघ्र तुम्हारा दर्प मिटेगा।

नाम—(४०२९) बदलूप्रसाद त्रिपाठी, करथिगवाँ कानपुर।

ग्रंथ—(१) गुलाब-संग्रह, (२) मायाकुंज-समयावली, (३) बारहमास्या (सागर) (४) बारहमासी विरह-मंजरी, (५) बारहमासा विरहभार।

नाम—(४०३०) बाँकेलाल चौबे, मंगलपुर ज़िला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) स्फुट छंद, (२) सतसई (अपूर्ण), (३) वाणी विनोद, (४) स्वप्न-सुंदरी, (५) बारहमासा, (६) माखन लीला, (७) द्रौपदी नाटक (८) चौब चौमासा, (९) राम-शतक, (१०) सिलक्लोस्मन (११) विद्यावाला, (१२) वैद्य पाँके।

नाम—(४०३१) बुद्धिसागर मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) विनयबावनी (२) चारुचंद्रिका, (३) ईश विनय, (४) मरुस्थदुर्ग, (५) इज़्ज़त बेग।

विवरण—आप पदनी, जिला बस्ती-निवासी सरवरिया ब्राह्मण प० रामगरीब मिश्र के पुत्र हैं। व्रजभाषा में साधारणतया अच्छी रचना करते हैं।

नाम—(४०४२) भागीरथ स्वामी वद्य, फर्रुखाबाद।

जन्म-काल—सं० १६३८।

ग्रंथ—(१) दुखभंजन-स्तोत्र, (२) गंगा-स्तोत्र, (३) नंदिनी नंदन नाटक आदि सात आठ पुस्तक तथा सामयिक पत्रों में लेख।

नाम—(४०४३) मनीलालजी मिश्र।

जन्म-काल—सं० १६३८।

ग्रंथ—(१) आनंद सुधांबुधि, (२) प्रमोद-सुधा-तरंगिणी, (३) भगवद्भक्ति भूषण, (४) कान्यकुब्ज भूषण, (५) कात्यायनी स्तवन, (६) कान्यकुब्ज हितोपदेश, (७) अपूर्व रामायण, (८) जैसलमीर-चरित्र, (६) गाने का कई पुस्तकें।

विवरण—आप बैनगाँव निवासी प० बालमुकुंद मिश्र के पुत्र हैं। आपको नाद विद्या से भी प्रेम है।

उदाहरण—

सखिन समेत प्यारी यमुना नहान चली,
धारे नील सारी अंग सुखमा अमंद है,
मारग में मोहन अचानक ही आयो जान,
लाजवश घूँघट से कीन्हों मुख बंद है।
मिश्र मणिलाल प्रभा पीतम बिलोकी ऐसी,
कीन्हीं अनुमान तान उपमा स्वछंद है।
राहु को महान भय मानि कै अयान मानो,
सागर पिता की अंक आय छिपो चंद है।

नाम—(४०४४) मयूर मदारीसिंह वाछिल, महसुई, जिला सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

विवरण—यह महाशय अधिक कविता नहीं करते थे। इन्होंने कभी-कभी समस्या पूर्ति की है।

नाम—(४०४५) महादेवशरण पाँडे, सारन।

नाम—(४०४६) महेशबख्शसिंह, पन्हौना, उन्नाव।

ग्रंथ—महेशमनरंजन।

नाम—(४०४७) मुकुंदलाल, टीकमगढ़ वासी।

ग्रंथ—शिव माहात्म्यसागर (१९६३), कुबेश्वर पचीसी (१९९१) (प्र० त्रै० रि०)।

नाम—(४०४८) मुनिजिन विजयजी।

ग्रंथ—स्फुट लेख।

विवरण—श्वेतांबर जैन साधु तथा हिंदी के प्रेमी।

नाम (४०४९) रत्नेश मिश्र।

ग्रंथ—रसकलश।

विवरण—कुछ छंद इनके हमने देखे हैं।

नाम—(४०५०) राजदेवी कुँवरि ठकुरानी, गया।

ग्रंथ (१) समस्या-पूर्ति (२) रसिक मित्र, (३) रसिक रहस्य।

नाम—(४०५१) राधाकृष्ण वाजपेयी चौपटियाँ, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९३८।

विवरण—यह द्विजराज कवि के जामातृ हैं, और आजकल वैद्यक करते हैं। हिंदी-कविता तथा लेख पत्रों में देते रहते हैं। आपको काव्य का अच्छा ज्ञान है।

नाम—(४०५२) रामचरणलाल ब्राह्मण, कौंच, जिला जरई।

ग्रंथ—(१) सनातन धर्म दर्पण, (२) रामायण-पचासा।

नाम—(४०५३) रामनारायणलाल (चौरन) कायस्थ, छतरपुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

नाम—(४०५४) लालसिंह क्षत्रिय।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) चंद्रावली, (२) कृषि सिद्धांत, (३) वीरबाला, (४) आश्रम व्यवस्था, (५) भवानी पुराण, (६) सहकारिता।

विवरण—आप हिंगूतरगढ़ ग्राम, जिला गाज़ीपुर वासी लक्ष्मण सिंह के पुत्र हैं। आपने राजपूत बागरा का एक वर्ष संपादन किया, और अब क्षत्रिय मित्र काशी का संपादन करते हैं।

नाम—(४०५५) विश्वेश्वरप्रसाद ब्राह्मण, घुघुचिहाई, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३८।

नाम—(४०५६) घोरेश्वर उपाध्याय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, जारी, इलाका छोटा नागपुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) आल्हा रामायण, (२) अद्भुतावतार-कांड, (३) आनंद-संजीवनी, (४) फाग चितचोर चालीसा, (५) भक्ति-संजीवनी, (६) भजन मात चालीसी, (७) मदन-मोहिनी (उपन्यास गद्य)।

नाम—(४०५७) शिवकुमारसिंह ठाकुर, काशी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३९।

रचना-काल—सं० १९६२।

विवरण—आप बड़े उत्साही लेखक, काशी नागरी प्रचारिणी सभा के जन्म दाताओं में से हैं। डेपुटी इंस्पेक्टर स्कूल्स थे। हिंदी में कई ग्रंथ लिखे हैं।

नाम—(४०२८) शिवबालकराम पांडे (बालक), दिलवल खानपुर, ज़िला कानपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

ग्रंथ—(१) धनुषयज्ञ नाटक, (२) स्वदेशी काव्य-कल्पद्रुम, (३) स्फुट काव्य गद्य तथा पद्य ।

नाम—(४०२९) शुकदेवप्रसाद तिवारी (निर्बल), सोहागपुर, ज़िला हुशंगाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९४६ ।

रचना-काल—सं० १९६१ ।

ग्रंथ—(१) सावित्री चरित्र (नाटक), (२) हिंदी दशा (नाटक), (३) कमला प्रताप (उपन्यास), (४) हिंदी-विषयक कविताएँ, (५) होली की राख (कविता), (६) ग्रामीण जीवन (गद्य), (७) निबल-क्रंदन (कविता), (८) हिंसा का बीभत्स दृश्य (गद्य), (९) भारतीय स्वास्थ्य पर अँगरेज़ी राज्य का प्रभाव, (१०) महिला-सस-सरोज इत्यादि ।

विवरण—आप कसा मानिकपुर निवासी जुझौतिया ब्राह्मण प० धन्नालालजी तिवारी के पुत्र हैं । आप कुछ काल तक 'पंचराज' नामक माहेश्वरी-समाजवाले मासिक पत्र के संपादक रहे । बंबई से 'नव-शक्ति'-नामक पत्र निकालने का भी इन्होंने आयोजन किया । आपकी रचनाएँ सामाजिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक विषयों पर हुआ करती हैं । आपकी पत्नी श्रीमती गायत्रीदेवीजी भी एक अच्छी स्त्री-कवि तथा लेखिका हैं, और इन्होंने महिला दर्पण' तथा महिला-गान-नामक पुस्तकें लिखी हैं । [प० श्रोत्रिय जागेश्वर प्रसादजी शर्मा द्वारा ज्ञात]

नाम—(४०३०) श्यामबिहारी शर्मा ।

रचना-काल—सं० १९६१ ।

ग्रंथ—प्रेम प्रकाश।

विवरण—हमारे पंडितजी, कानपुर निवासी अकबरपुर उपाध्याये, ० माधव-प्रसाद के पुत्र हैं। आपको चित्र-काव्य से विशेष प्रेम है।

उदाहरण—

> आपु देत राम-यश पावन दिगंतन मे,
> भक्त-उर भक्ति नव चतुर उगाए देत।
> गाए देत चारों फल विमल विकास धारि,
> कवरपुष्प आपने प्रभाव तें लजाए देत।
> नाए देत मुक्ति मुक्ति जग मैं विहारीराम,
> गंग-सी पवित्र पाप पुंज का बहाए देत;
> देसन विदेसन में आठो याम सब ठाम,
> कविता-गुसाईं को पियूष बरसाए देत।

नाम—(४०६१) संतराम, लाहौर।

विवरण—आप 'आर्य प्रभा' पत्र का संपादन करते थे।

नाम—(४०६२) हनुमानप्रसाद वैश्य, अहरौरा बाजार, जिला मिर्जापुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) जानकी स्वयंवर, (२) दुर्गा प्रभाकर, (३) चंद्रलता, (४) हनुमान हाँक, (५) चंद्रकला-चंद्रिका, (६) कविता सुधार, (७) स्फुट काव्य।

समय—संवत् १९६४

नाम—(४०६३) अखिलानंद शर्मा, बदाऊँ।

जन्म-काल—सं० १९३९।

ग्रंथ—(१) दयानंद लहरी, (२) दयानंद दिग्विजयार्क, (३) आर्य शिक्षा, (४) आर्य विद्योदय, (५) दयानंद दिग्विजय।

नाम—(४०४८) शिवनालकराम पाडे (वालक), दिलनल रानपुर, जिला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) पशुपयज्ञ नाटक, (२) स्वदेशी काव्य-कल्पद्रुम, (३) स्फुट काव्य गद्य तथा पद्य।

नाम—(४०९९) शुकदेवप्रसाद तिवारी (निर्बल), सोहागपुर जिला हुशंगाबाद।

जन्म-काल—सं० १९४६।

रचना काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—(१) सावित्रा चरित्र (नाटक), (२) हिंदी दशा (नाटक), (३) कमला प्रताप (उपन्यास), (४) हिंदी विषयक कविताएँ, (५) झाली की रानी (कविता), (६) ग्रामीय जीवन (गद्य), (७) निबल क्रदन (कविता), (८) हिंसा का बीभत्स दृश्य (गद्य) (९) भारतीय स्वास्थ्य पर अँगरेज़ी राज्य का प्रभाव (१०) महिला-सत-सरोज इत्यादि।

विवरण—आप कड़ा मानिकपुर निवासी ज़ुझौतिया ब्राह्मण प० भवानीलालजी तिवारी के पुत्र हैं। आप कुछ काल तक 'पंचराज' नामक माहेश्वरी-समाजवाले मासिक पत्र के संपादक रहे। बंबई से 'नव-शक्ति'-नामक पत्र निकालने का भी इन्होंने आयोजन किया। आपकी रचनाएँ सामाजिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक विषयों पर हुआ करती हैं। आपकी पत्नी श्रीमती गायत्रीदेवीजी भी एक अच्छी स्त्री-कवि तथा लेखिका हैं, और इन्होंने महिला दर्पण तथा 'महिला-गान नामक पुस्तकें लिखी हैं। [प० श्रोत्रिय जागेश्वर प्रसादजी शर्मा द्वारा ज्ञात]

नाम—(४०६०) श्यामविहारी शर्मा।

रचना-काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—प्रेम प्रकाश।

विवरण—हमारे पंडितजी, कानपुर निवासी अकबरपुर उन्नाववाले, पं० माधवप्रसाद के पुत्र हैं। आपको चित्र काव्य में विशेष प्रेम है।

उदाहरण—

> छाए देत राम-यश पावन दिगंतन में,
> भक्त-उर भक्ति नव अंकुर उगाए देत।
> गाए देत चारो फल विमल विकाश वारि,
> कल्पवृक्ष आपने प्रभाव तें लगाए देत।
> नाए देत भुक्ति मुक्ति जग में बिहारीराम,
> गंग-सी पवित्र पाप पुंज को बहाए देत,
> देसन विदेसन में आठो याम सब ठाम,
> कविता-गुसाईं को पियूष बरसाए देत।

नाम—(४०६१) संतराम, लाहौर।

विवरण—आप 'आर्य सभा' पत्र का संपादन करते थे।

नाम—(४०६२) हनुमानप्रसाद वैश्य, अहरौरा बाज़ार, ज़िला मिर्ज़ापुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) जानकी स्वयंवर, (२) दुर्गा प्रभाकर, (३) चंद्रलता, (४) हनुमान हाँक, (५) चंद्रकला-चंद्रिका, (६) कविता सुधार, (७) स्फुट काव्य।

समय—संवत् १९६४

नाम—(४०६३) अखिलानंद शर्मा, बदाऊँ।

जन्म काल—सं० १९३९।

ग्रंथ—(१) दयानंद लहरी, (२) दयानंद दिग्विजयार्क, (३) आर्य शिक्षा, (४) आर्य विद्योदय, (५) दयानंद दिग्विजय।

नाम—(४०६४) कृष्णानंद पाठक, माधवरामपुर, डा० गोपीगंज, जिला मिर्ज़ापुर।

जन्म-काल—सं० १९३१।

विवरण—आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं। भाषा-कविता की समस्या पूर्ति इत्यादि करते हैं। आपके लगभग ४०० छंद छप हैं।

नाम—(४०६५) चंद्रशेखर (द्विजचंद्र) ब्राह्मण, रानीपुर, जिला आज़मगढ़।

जन्म—काल—सं० १९३१।

नाम—(४०६६) नाथूराम प्रेमी, देवरी, सागर।

जन्म-काल—सं० १९३१।

विवरण—संपादक जैन हितैषी। आपने हिंदी ग्रंथ रत्नाकर निकाला है, जिसमें हिंदी के पचास साठ अच्छे ग्रंथ छप चुके हैं। आपने जैन ग्रंथों का अच्छा अध्ययन किया तथा जैन ग्रंथ माला में बहुत से ग्रंथ प्रकाशित किए हैं। आप बड़े उत्साही पुरुष हैं।

नाम—(४०६७) पन्नालाल, घाटमपुर, जिला कानपुर।

नाम—(४०६८) पुरुषोत्तमप्रसाद पांडेय, बालपुर चंद्रपुर, बिलासपुर।

ग्रंथ—(१) लालगुलाल, (२) अनंत लेखावलि, (३) खेल माला।

नाम—(४०६९) ब्रजनाथ बी० ए०, एल्-एल्० बी०, मुरादाबाद।

जन्म-काल—सं० १९३१।

नाम—(४०७०) ब्रह्मदेवनारायण, मु० बेलवाँ, पो० देव, जिला गया।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—(१) कल्कि-चरित्र, (२) कृष्ण चरित्र, (३) कलियुग चरित्र।

नाम—(४०७१) माधवप्रसाद शुक्ल।

विवरण—आप कलकत्ते में रहते हैं। कवि, अभिनेता, गायक, नाटककार, देश-प्रेमी और सज्जन हैं।

ग्रंथ—महाभारत नाटक।

नाम—(४०७२) राधाकृष्ण अवस्थी।

ग्रंथ—देवीप्रसाद भूषण।

नाम—(४०७३) राधाकृष्ण (घनश्याम), जयेंद्रगञ्ज, ग्वालियर।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—(१) भजनसार, (२) उपकार बत्तीसी आदि।

नाम—(४०७४) राधाकृष्ण मेहता, लाहौर।

ग्रंथ—स्वामीजी के जीवन चरित्र का अनुवाद।

नाम—(४०७५) ललितकिशोरी गोस्वामिनी।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—ललित-तरंगिणी।

विवरण—राधावल्लभीय।

नाम—(४०७६) श्रीलक्ष्मणसिंह क्षत्रिय, लोमामऊ।

जन्म-काल—सं० १९३३।

विवरण—आपने कई ग्रंथ रचे हैं।

नाम—(४०७७) लक्ष्मीनारायण, बरेली निवासी।

ग्रंथ—स्त्री पुरुष धर्म।

नाम—(४०७८) वामनाचार्य 'वामन' गोस्वामी, मिर्जापुर।

ग्रंथ—पचानन-पचीसी।

नाम—(४०७९) शीतलप्रसाद ब्राह्मण, भरसरा, ज़िला गोरखपुर।

ग्रंथ—(१) रामचरितावली नाटक गद्य-पद्य, (२) विनय पुष्पावली, (३) भारतोन्नति सोपान (१९६४, पृ० १०२), द्वि० त्रै० रि०।

विवरण—आपमें साहित्य-सेवा जैसी है, यह काव्य से प्रकट होती है। राम भक्ति के सिवा आपमें देश भक्ति भी है। यह अनुपम गुण है।

नाम—(४०८०) सत्यानंद जोशी M B E

ग्रंथ—संपादक अभ्युदय।

विवरण—अच्छे लेखक हैं। आप आजकल प्रांतीय लाट साहब के दफ़्तर में सुपरिंटेंडेंट हैं।

नाम—(४०८१) सरयूप्रसाद आचारी, रईस जगदीशपुर, ज़िला बस्ती।

ग्रंथ—प्रेम मालिका।

विवरण—वर्तमान हैं। प्रति एक है, कर्ता दो हैं। शम्भुराम भण्डारी भी कर्ता हैं।

नाम—(४०८२) सावित्रीदेवी ब्राह्मणी।

विवरण—पं० बालकृष्णजी भट्ट की पुत्री थीं।

नाम—(४०८३) हरसहायलाल बी० ए०, डिप्टी मजिस्ट्रेट, बाँकीपुर।

ग्रंथ—(१) अवतार पराभव, (२) कांतावियोग, (३) शकुंतला अनुवाद।

विवरण—आप अच्छे कवि थे।

समय—संवत् १९६५

नाम—(४०८४) अशर्फीलाल कायस्थ, बलरामपुर।

ग्रंथ—बाल विहार (कृष्ण-चरित्र, पृष्ठ ६४६)।

नाम—(४०८१) इन्द्रदेवलाल कायस्थ, मनियार, बलिया।
जन्म-काल—सं० १९४०।
ग्रंथ—स्फुट पद।
नाम—(४०८६) गणेशरामचंद्र शर्मा, अजमेर।
ग्रंथ—स्वामीजी के मराठी तथा गुजराती व्याख्यानों का अनुवाद।
नाम—(४०८७) गदाधरप्रसाद पाठक, दारागंज, इलाहाबाद।
ग्रंथ—(१) लेक्चर्स टीचर, (२) मक्खन परिचय, (३) शिक्षा-कल्पद्रुम, (४) काव्य-दर्पण।
नाम—(४०८८) गनपाल (वर्तमान)।
ग्रंथ—प्रिया शतक विलास।
नाम—(४०८९) गिरिजाशरण, वृन्दावन।
जन्म-काल—सं० १९४०।
नाम—(४०९०) गौरचरण गोस्वामी।
जन्म-काल—सं० १९४३।
रचना-काल—सं० १९६२।
ग्रंथ—(१) जाओ फूललाल, (२) रूपया-रूपया, (३) विचित्र जाल, (४) श्रीगौरांग चरित्र, (५) चोरी है कि दगा-बाजी, (६) अभिमन्यु वध, (७) अथाना, (८) चैतन्य विजय की समालोचना पर समालोचना, (९) श्रीविष्णु प्रिया चरित्र।
विवरण—आप गोस्वामी राधाचरण के ज्येष्ठ पुत्र संस्कृत, बँगला, हिंदी, अँगरेज़ी आदि के अच्छे लेखक थे। बाल्यावस्था में भारी मानसिक परिश्रम करने से आपका स्वर्गवास हो गया।
नाम—(४०९१) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, जयपुर।
जन्म-काल—सं० १९४०।
विवरण—आप अच्छे पंडित एवं बड़े ही नम्र और निष्कपट पुरुष

थे। आपसे हिंदी-सहायता की बड़ी आशा थी। शोक है, आपका असमय देहांत हो गया।

नाम—(४०१२) चंद्रलाल गोस्वामी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीयाचार्य।

नाम—(४०१३) चंद्रिकाप्रसाद मिश्र 'चंद्र' गुरार, ग्वालियर निवासी।

जन्म-काल—सं० १९३०।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

उदाहरण—

कृष्णा कालिंदी का कल कल विहग वृंद कलरव स्वरधार।
ललित-लताओं का यह कुसुमद त्रिविधि समीरण का संचार।
वृक्ष-वल्लियों का सम्मतन कोकिल कूजित कलित निकुंज।
सरस सुगंध सनी सुमनावलि गूँज रहे जिस पर अलि पुंज।
सभी मनोरम, सभी मधुर हैं, सब जगती से न्यारा है।
नर क्या, देवों को भी प्यारा भारतवर्ष हमारा है।

नाम—(४०१४) जयलाल, किशनगढ़ राज्य।

ग्रंथ—(१) प्रतिष्ठा प्रकाश (किशनगढ़ाधीश महाराजा मोह-कमसिंहजी की रानी के बनवाए हुए गोवर्द्धन-मंदिर का वर्णन), (२) छप्पन भोग, (३) कवि-सार-समुच्चय, (४) छत्तीसा राज्य किशनगढ़।

विवरण—आप शाकद्वीपी भोजक ब्राह्मण हैं, और अभी विद्यमान हैं। कविताओं में यह अपना नाम 'जय' रखते हैं।

नाम—(४०९५) धनुर्धर शर्मा।

जन्म-काल—सं० १९४०।

ग्रंथ—(१) राम-कैकयी-संवाद, (२) जनक-मरणोत्ताप, (३) भीष्म भीष्मागमन, (४) भट्टिकाव्य का पद्यानुवाद, (५) अन्योक्ति पुष्पावलि, (६) समस्या-पूर्ति।

नाम—(४०९६) निकुंज श्रीरा राधावल्लभीया।

जन्म-काल—सं० १९४०, वर्तमान।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—टोडी फ़तेहपुर की रानी।

नाम—(४०९७) नूतन (कवि), उन्नाव निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।

कविता-काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—स्फुट काव्य।

विवरण—व्रजभाषा तथा खड़ी बोली में अच्छी कविता करते हैं। आप परिश्रमी और साधु प्रकृति के सज्जन हैं।

नाम—(४०९८) पूरनमल झाँसी।

नाम—(४०९९) प्यारेलाल कायस्थ, गौरहर।

नाम—(४१००) ब्रह्मदत्तजी, देवबंद, ज़िला सहारनपुर।

जन्म-काल—सं० १९४५।

रचना काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—(१) प्रेम-चर्चा (पद्य), (२) प्रेमनिधि का आदेश (आध्यात्मिक गद्य ग्रंथ), (३) स्वराज्य पथ, (४) अध्यात्म-गीता, (५) प्रेम निकुंज, (६) आत्मोद्धार (अपूर्ण)।

विवरण—आप प० भागीरथलालजी के पुत्र तथा स्थानीय स्कूल में संस्कृत अध्यापक हैं। [श्रीयुत कन्हैयालाल शास्त्री, देवबंद द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

मेरे दृग बस रहो आली स्याम।
सजल जलद द्युति बदन मनोहर सब गुण उपमा धाम;
अमित दिवाकर सत्कर विविध प्रभु कीन मुकुट विश्राम।
पार कीट द्युति अलक पलक भ्रू बसत दामिनी दाम।
श्रुति-कुंडल नाना मनि शोभा राजत तिलक ललाम।
रवेत बिंदु-कण तारा गुन गण लसत अमित गुण याम;
मुक्ता-दशन अधर विद्रुम प्रभु निरख थकित सुर बाम।
कवि, विधु रविज भानु मणिमाला गल-राजत जय नाम;
भुज केयूर वलय कर पहुँची कटि काची अभिराम।
अमित कोटि ब्रह्मांड कि शोभा सकोचित लख काम;
नूपुर चरन-कमल ध्वनि म 'शिशु' कियो चेतन विश्राम।

नाम—(४१०१) भगवानदास केला, वृंदावन निवासी वैश्य।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४९।

रचना काल—लगभग सं० १९६८।

ग्रंथ—विश्ववेदना और इतिहास तथा अर्थ शास्त्र पर कई अच्छे ग्रंथ लिखे हैं। प्रेम-महाविद्यालय में कई साल अध्यापक तथा प्रेम-पत्र के संपादक रहे हैं। हिंदी के उत्साही लेखक तथा कवि हैं।

नाम—(४१०२) भगवानदास हालना।

विवरण—आप हिंदी के प्रसिद्ध लेखक हैं।

नाम—(४१०३) भगवानदीन मिश्र, शाहपुरा, जिला मंडला।

जन्म-काल—सं० १९४०।

ग्रंथ—(१) राजेंद्र विलास, (२) श्रीरामरघुवंश-विनय, (३) श्रीराम धनुष-यज्ञ, (४) शंभु विवाह, (५) राम रजनी, (६) दूत-वाटिका।

नाम—(४१०४) भवानीचरण (लालन), फतेहपुर।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

ग्रंथ—(१) कालिका-स्तुति, (२) विनय-रसिक-लहरी, (३) छवि प्रिया, (४) अयोध्या-माहात्म्य आदि ।

नाम—(४१०५) भोलानाथ राधावल्लभी ।

जन्म काल—सं० १९४० ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विवरण—हिंदी-साहित्य को ऐसी पैनी पुस्तकों की बड़ी ही आवश्यकता है । बाबू साहब ने एक बड़े अभाव की पूर्ति की । आपने अमरिका तथा जापान जाकर विद्या पढ़ी थी ।

नाम—(४१०६) यशोदादेवी संपादिका स्त्री धर्म शिक्षक ।

ग्रंथ—सच्ची माता ।

नाम—(४१०७) रघुनंदनसिंह, ग्राम गग्घो, ज़िला लखनऊ ।

जन्म काल—सं० १९४० ।

ग्रंथ—(१) स्फुट कविताएँ, (२) भूगोल, ज़िला लखनऊ तथा संयुक्त-प्रांत, (३) नूतन संगीत दर्पण, (४) स्वदेशोद्धार-शतक ।

विवरण—आप इस समय अमेठी में, मिडिल स्कूल के, हेडमास्टर हैं । कविता अच्छी करते हैं ।

उदाहरण—

पंच यज्ञ वेद बिन द्विजहू पतित सब,
अक्षर विहीन पीन दंभ द्वेष घाती में ;
ऊँच नीच छुआछूत ही को सब ठौर राज,
एक जाति बैठि ना सकत एक पाँती में ।
'रघुनंद' केतिक अभेद कारी वित्त बिन,
बहु नारी विधवा विलाप करैं जाती में ;

स्वारथ के बस बिन पूछता बिहाल खेद,
हिन्दुन की हीन दसा छेद करै छाती में।
खान सुक तिल औ' तमोल को न लीजे नाम,
असन बसन बिन केते बिललात हैं;
तापि-तापि सिगरी बितावति हैं राति, भोर,
होत ही तरनि तेज तास्त घमात हैं।
अस्थि-चर्म ही है अवशिष्ट देह पंजर में,
सभ्यताभिमानी देख दूर ते घिनात हैं।
कीजै 'रघुनन्दन' सहाय ऐसे दीनन की,
शिशिर सताए अकुलाए मर जात हैं।

नाम—(४१०८) राघवप्रसादसिंह 'महत', (राघव) घैनी ग्राम, ज़िला दरभंगा।

जन्म-काल—सं० १९४५।

कविता-काल—सं० १९६९ (सन् [illegible])।

ग्रंथ—(१) राष्ट्रीय संगीत, (२) कथा-मंजरी (शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है) (३) बालक रामायण।

विवरण—आप शाखाचार मूल के भूमिहार ब्राह्मण बाबू जगदेव नारायणसिंह के पुत्र तथा अपने प्रांत के एक प्रतिष्ठित ज़मींदार हैं। आप बिहार प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन के जन्म दाताओं में से हैं। बाल-साहित्य के सुसम्बर्धन में आप विशेषकर योग दे रहे हैं। कविता अच्छी करते हैं।

उदाहरण—

जननी तुम्र पद कोटि प्रणाम।
चमकत सुभग मुकुट तव सिर पै शैलराज हिम धाम।
सुर नर मुनि सबके मन मोहत सुखकर रूप ललाम।

विष्णुपदी रविजा युग सरिता मणि-माला सित श्याम ;
विलसति कलुष राशि विनशावनि तव उर शोभा धाम।
यमन धम शुभ गात अनूपम पूरत सब मन काम ;
चंग चग बहुमूल्य अभूषण सुर-मंदिर अभिराम।
सज्जन भृत्य तव घहरत निशि दिन हिंद-महोदधि नाम ;
चरण धोइ सुर चरण जलज-रज धरत शीश बसु-याम।

नाम—(४१०९) राजेंद्रसिंह (कुँवर), सीतापुर।

विवरण—आप राजा श्रीपालसिंह तालुकदार के सुयोग्य पुत्र हैं। आपको हिंदी से विशेष प्रेम है। आप ३ साल तक यू० पी० में मिनिस्टर रहे। हाल में गवर्नमेंट से राय न मिलने पर आपने इस्तीफ़ा दे दिया।

नाम—(४११०) राधारमणप्रसादसिंह रईस।

ग्रंथ—(१) महिम्न स्तोत्र भाषा (१९९९), (२) स्तोत्र रत्नावली (१९६६)। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(४१११) रामचरण नागार्च।

कविता-काल—सं० १९९९।

ग्रंथ—(१) प्रेम स्तुति, (२) हित ध्यान प्रेमाष्टक, (३) गुरु-प्रेमाष्टक, (४) ध्यान-स्तुति।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४११२) रामचरित उपाध्याय, नरसिंहगढ़ (मालवा)।

ग्रंथ—प्रकाशित—

(१) सूक्ति मुक्तावली, (२) रामचरित चंद्रिका, (३) रामचरित चिंतामणि, (४) राष्ट्रभारती, } सत्साहित्य-प्रथमाला, कानपुर।

स्वारथ के बस विन एकता विहाल खेद,
हिंदुन की हीन दसा छेद करै छाती में।
खान सुक तिल औ' तनोज को न जीजे नाम,
असन बसन बिन केते बिललात हैं।
सारि-सारि सिगरी चितावति है राति, भोर,
होत ही तरनि-तेज ताप्त घमात हैं।
अस्थि-चर्म ही है अवशिष्ट देह पंजर में,
सभ्यताभिमानी देख दूर ते घिनात हैं।
कीजै 'रघुनंदन' सहाय ऐसे दीनन की,
शिशिर सताप अकुलाए मरे जात हैं।

नाम—(४१०८) राघवप्रसादसिंह 'महंत', (राघव) बैनी ग्राम, ज़िला दरभंगा।

जन्म-काल—सं० १९७५।

कविता-काल—सं० १९९२ (सन् १९०-)।

ग्रंथ—(१) राष्ट्रीय संगीत, (२) कथा मंजरी (शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है), (३) बालक-रामायण।

विवरण—आप द्रोणावार मूल के भूमिहार ब्राह्मण, बाबू जगदेव नारायणसिंह के पुत्र तथा अपने प्रांत के एक प्रतिष्ठित ज़मींदार हैं। आप विहार प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन के जन्म दाताओं में से हैं। बाल-साहित्य के पुष्ट-वर्धन में आप विशेषकर योग दे रहे हैं। कविता अच्छी करते हैं।

उदाहरण—

जननी तुम पद कोटि प्रणाम।
चमकत सुभग मुकुट तव सिर पै शैलराज हिम धाम।
सुर नर मुनि सबके मन मोहत सुखकर दृश्य ललाम।

विष्णुपदी रविजा युग सरिता मणि-माला सित स्याम ;
विलसति कलुष-राशि विनशावनि तव उर शोभा धाम।
यसन धर्म शुभ गात अनुराग पूरत सब मन काम ;
अँग अँग बहुमूल्य आभूषण सुर-मंदिर अभिराम।
सज्जन भृत्य तव बहरत निसि दिन हिंद महोदधि नाम ;
चरण धोइ मृदु चरण-जलज रज धरत शीश वसु-याम।

नाम—(४१०९) राजेंद्रसिंह (कुँवर), सीतापुर।

विवरण—आप राजा श्रीपालसिंह तालुक़ेदार के सुयोग्य पुत्र हैं। आपको हिंदी से विशेष प्रेम है। आप ३ साल तक यू० पी० में मिनिस्टर रहे। हाल में गवनमेंट से राय न मिलने पर आपने इस्तीफ़ा दे दिया।

नाम—(४११०) राधारमणप्रसादसिंह रईस।

ग्रंथ—(१) महिम्न स्तोत्र भाषा (१९६२), (२) स्तोत्र-रत्नावली (१९६६)। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(४१११) रामचरण नागार्च।

कविता-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) प्रेम स्तुति, (२) हित ध्यान प्रेमाष्टक, (३) गुरु-प्रेमाष्टक, (४) ध्यान स्तुति।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४११२) रामचरित उपाध्याय, नरसिंहगढ़ (मालवा)।

ग्रंथ—प्रकाशित—

(१) सूक्ति मुक्तावली, (२) रामचरित चंद्रिका, (३) चिंतामणि, (४) राष्ट्रभारती, } सत्साहित्य-ग्रंथमाला, कानपुर।

(५) देव-दूत, (६) देव-सभा; } हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, कार्यालय, बंबई।

(७) भारत भक्ति, (८) उपदेश रत्नमाला, } एम्० एँड कंपनी, गढ़मर, शाहपुर।

(९) सत्य हरिश्चंद्र, (१०) भगवती सुंदरी, (११) देवी द्रौपदी, } गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ।

(१२) सुधा शतक (१३) व्रजा चौसई, (१४) मेघदूत का पद्यानुवाद। } इंडियन प्रेस, प्रयाग।

अप्रकाशित—(१) सतसई, (२) उपदेश-शतक, (३) सूक्ति रत्नावली, (४) सिंदूर प्रकरण।

नाम—(४११३) रामजीलाल शर्मा।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२२।

मृत्यु-काल—लगभग सं० १९८३।

विवरण—यह प्रयाग में रहते थे। आपने गद्य में कई उत्तम पुस्तकें लिखीं, जिनमें २६६ पृष्ठों का एक ग्रंथ सीता चरित्र है। आपके १६ ग्रंथों में से ६ बालकों के लिये लिखे गए। आपने कुछ काल विद्यार्थी नामक मासिक पत्र निकाला, तथा एक हिंदी प्रेस जारी किया। आप कुछ काल हिंदी-साहित्य सम्मेलन के मंत्री थे और हिंदी के लिये श्रमशील रहा करते थे। प्रतिभा पूर्ण लेखक थे।

नाम—(४११४) रामनारायण (रमेश कवि), फर्रुखाबाद।

ग्रंथ—(१) सीता-स्वयंवर, (२) गंगा लहरी।

उदाहरण—

सिरस ज्ञान, विज्ञान, नाम अरु बल, विद्या-समाम ;
सकल कला तेरो जग छायो देश देश सब ठाम।
विश्व भरणि ! त्रिभुवन पति प्यारी ! धन भारत गुण धाम,
सब महिमा राघव किमि बरणै निज मुख बरन्यो राम।

नाम—(४११४) रामरत्नजी परमहंस।
ग्रंथ—(१) छन्द, (२) कुंडलियाँ।
नाम—(४११६) वासुदेव उपनाम पठानअली, फौलारस।
जन्म काल—सं० १६७० ।
ग्रंथ—हित महाप्रभु की विनय।
विवरण—राधावल्लभी।
नाम—(४११७) विंध्याचलप्रसाद कायस्थ, हरपुरजाग, चंपारन।
ग्रंथ—१८ पूर्ण और ८ अपूर्ण छोटे-छोटे ग्रंथ।
नाम—(४११८) वेणीमाधव, क्षित्रा, राज्य रीवाँ।
जन्म काल—सं० १६४० ।
ग्रंथ—आनंदरामायण का छंदोबद्ध अनुवाद।
नाम—(४११६) शालग्राम शास्त्री।
जन्म-काल—लगभग सं० १६४५ ।
रचना-काल—सं० १६६६ ।
ग्रंथ—(१) साहित्य दर्पण की विमला टीका, (२) आयुर्वेद-महत्त्व, (३) रामायण में राजनीति आदि।
विवरण—आप हिंदी के उत्कट समालोचक एवं उच्च कोटि के लेखक हैं। संस्कृत एवं भाषा-शास्त्र के अच्छे ज्ञाता हैं। काशी में होनेवाले अ० भा० संस्कृत-सम्मेलन में आप सभापति हुए थे। आजकल आप लखनऊ में प्रमुख वैद्य माने जाते हैं। हिंदी मासिक पत्रों में आपके लेख निकला करते हैं।
नाम—(४१२०) शिवप्रसाद हेड प० दरभगा।
नाम—(४१२१) शिवलालराय।
जन्म-काल—सं० १६४० ।
ग्रंथ—स्फुट छंद।

नाम—(४१२२) शिवाधार पांडे, प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९६२।

विवरण—इँगलिश-रीडर इलाहाबाद विश्व विद्यालय। हिंदी के अच्छे लेखक तथा श्रेष्ठ कुल के सुशिक्षित सदाचारी महाशय।

नाम—(४१२३) सुंदरीशरण, जयपुर।

जन्म-काल—सं० १९४०।

ग्रंथ—नाटक एवं स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४१२४) सूर्यनारायण दीक्षित वकील, खीरी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९६५।

ग्रंथ—कुछ ग्रंथ लिखे हैं।

विवरण—खीरी के अच्छे वकील हैं। इनकी कन्या एम्० ए० पास है।

नाम—(४१२५) हरीहरलाल गोस्वामी, मुकाम धारी, राज्य रीवाँ।

विवरण—आप हिंदी के बड़े भारी शुभचिंतक थे। हम लोगों को इस ग्रंथ के प्रथम संस्करण के बनाने में आपसे सहायता मिली थी।

समय—संवत् १९६६

नाम—(४१२६) उदयनारायण वाजपेयी।

जन्म-काल—सं० १९४२।

ग्रंथ—(१) प्राचीन भारतवासियों की विदेश-यात्रा व वैदेशिक व्यापार, (२) महाराज पंचम जार्ज, (३) विकाश सिद्धांत, (४) कर्म-क्षेत्र।

नाम—(४१२७) नंदकिशोर ब्राह्मण, मुरारिमऊ।

जन्म-काल—सं० १९४१।

ग्रंथ—संगीत विचाररत्नाकर। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(४१२८) बैजनाथ शुक्ल, पैंतेपुर, जिला बारावंकी।

नाम—(४१२६) महादेवप्रसाद मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९४१।

ग्रंथ—(१) श्रासावर देवी-माहात्म्य, (२) बजरंग-पचासा, (३) रसिक पचीसी।

नाम—(४१३०) (लाल) रघुबरप्रसाद, ग्राम हिंडोरिया, दमोह।

जन्म काल—सं० १९३८।

कविता-काल—सं० १९६६।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप दीवान गिरिधारीलाल के पुत्र हैं। श्रीयुत लक्ष्मी-प्रसादजी मिश्री का कथन है कि दीवानगिरी का पद आपके पूर्वजों को महाराज छत्रसाल के अनंतर जो राजा हुए, उनसे प्राप्त हुआ था, और वही पद आज तक आपके वंश में चला आता है। इनकी कविताएँ 'रसिक मित्र', 'काव्य-पताका', 'सुकवि' आदि पत्रों में प्रकाशित हुआ करती हैं।

उदाहरण—

पूरब पुन्य पुराकृत से मन मूरख! मानुप को तन पायो,
नाहक को जग जालन में फँसि के तिहि को शठ! बादि गमायो।
आयु तमाम श्याम भई, कबहूँ सुख से नहिं राम रमायो,
भाषत हैं 'रघुबीर' वृथा सुर-दुर्लभ देह को दाग लगायो।

नाम—(४१३१) रमादेवी त्रिपाठी, प्रयाग।

ग्रंथ—(१) रमा विनोद (१९६६), (२) अबला पुकार, (३) स्फुट लेख तथा काव्य पत्रों में।

विवरण—इसमें नीति और चेतावनी के १११ दोहे कहे गए हैं। आप प० चंद्रिकाप्रसाद त्रिपाठी, प्रयाग की सहधर्मिणी हैं।

नाम—(३१३२) राघवेंद्र त्रिपाठी, गोनी, जिला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९४१।

ग्रंथ—ब्रजेंद्र विनोद।

नाम—(३१३३) रामअधीन कायस्थ, मैहर।

जन्म-काल—सं० १९४१।

ग्रंथ—(१) सुंदरकांड, (२) रामाष्टक, (३) मुख्तसर रामायण।

नाम—(३१३४) शिवसागरराम शर्मा रैना, फ़तेहपुर।

ग्रंथ—सत्यनारायण भाषा।

नाम—(३१३५) सत्यनारायण त्रिपाठी, मधना, कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९४१।

ग्रंथ—गो विचार।

नाम—(३१३६) सत्यानंद सन्यासी।

ग्रंथ—(१) पाखंड मत-कुठार, (२) कबीर-पंथ की समीक्षा।

नाम—(३१३७) सालिग्राम शर्मा, अजमेर।

ग्रंथ—न्याय दर्शन भाषा-टीका।

समय—संवत् १९६७

नाम—(३१३८) जगन्नाथसिंह बरसेरवा, जिला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९४२।

ग्रंथ—पत्नी वियोग।

विवरण—हमारे जाननेवालों में हैं। रचना उत्कृष्ट है।

नाम—(३१३९) जुगलप्रसाद जमींदार।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप मिज़ाइ बी० एन्० आर० में रहते हैं।

नाम—(४१५०) दद्दूलाल जैन।

ग्रंथ—भजन-मंजरी।

विवरण—आप सरूपचंद के पुत्र हैं।

नाम—(४१५१) भगत कवि।

ग्रंथ—भगत-चालीसा।

नाम—(४१५२) मनोहरकृष्ण गोलवलकर, बी० ए०, एल् एल० बी०, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४२।

विवरण—आप जबलपुर के प्रसिद्ध वकीलों में से हैं। यह महाराष्ट्र ब्राह्मण होते हुए भी हिंदी भाषा से विशेष प्रेम रखते हैं। कुछ काल तक 'श्रीशारदा' पत्रिका के संपादक रहे, और आजकल स्थानीय राष्ट्रीय हिंदी-मंदिर के सभापति हैं।

नाम—(४१५३) यज्ञेश्वरसिंह आरण, मुज़फ़्फ़रपुर।

ग्रंथ—(१) यज्ञेश्वर विनोद, (२) राम रहस्य नाटक, (३) सीताराम नाटक।

नाम—(४१५४) रामप्रतापसिंह राजा, मांडा-नरेश।

नाम—(४१५५) व्रजनाथ मिश्र बी० ए०, एल् एल० बी०, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९४८।

कविता काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप स्वर्गीय वकील पंडित लक्ष्मीलालजी मिश्र के पुत्र हैं। इनकी कविता 'चतुर्वेदी' पत्रिका में प्रकाशित होती रहती है।

नाम—(४१५६) शिवकरणप्रसाद (सत्यदेव), ग्राम महाराजगंज, जिला आज़मगढ़।

जन्म-काल—सं० १९४२।

ग्रंथ—(१) सत्यदेव विनोद, (२) पूर्ति प्रमोद, (३) भक्ति शिरोमणि।

नाम—(४१४७) शिवनारायण कायस्थ (मित्र), सनिगवाँ, ज़िला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९४२।

ग्रंथ—(१) सुखद सगीत, (२) स्फुट काव्य।

नाम—(४१४८) शंभुराम।

ग्रंथ—प्रेम मालिका।

विवरण—शंभुप्रसाद आचारी ने भी शंभुराम के साथ यह ग्रंथ रचा।

नाम—(४१४९) सगुनचद्र कायस्थ।

ग्रंथ—साधारण धर्म।

नाम—(४१५०) सत्यनारायण पांडे (सत्यदेव), सरवरिया, विष्णुपुर, जि० आजमगढ़।

जन्म-काल—सं० १९४२।

ग्रंथ—(१) सत्यदेव विनोद (२) गीताख दिवाकर (८ भाग), (३) साहित्य शिरोमणि-सग्रह।

समय—संवत् १९६८

नाम—(४१५१) कदमलाल गोस्वामी, बूँदी।

विवरण—इनकी अवस्था इस समय लगभग ४० वर्ष की होगी। कविता भी कुछ कुछ करते हैं।

नाम—(४१५२) कर्णसिंह पँहड़ौलो, अलीगढ़।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) शुद्धि-पथ, (२) यवन-मतादर्श, (३) मेरा मत,

४) कर्णामृत, (५) अमृतोदधि, (६) काव्य-कुसुमोद्यान, (७) संगीत-रत्न प्रकाश।

विवरण—गद्य-पद्य-लेखक।

नाम—(४१५३) गोपालशरणसिंह, इलाक़ा नई गढ़ी, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—आप सेंगर वंशोत्पन्न लाल जगतबहादुर के पुत्र हैं। रीवाँ-राज्य के सुप्रतिष्ठित एवं राज्य चिह्नों से सुशोभित इलाक़ेदारों में से हैं। १९६७ से सरस्वती, माधुरी आदि पत्रिकाओं में आपकी कविताएँ प्रकाशित होती हैं। ये सरस और सरल हैं। सं० १९८२ में आप अखिल भारतवर्षीय कवि-सम्मेलन, वृंदावन के निर्वाचित सभापति हुए।

नाम—(४१५४) चंद्रराज भंडारी।

ग्रंथ—(१) भक्ति-योग, (२) आदर्श देश-काल, (३) गांधी-दर्शन, (४) सिद्धार्थ कुमार, (५) सम्राट् अशोक, (६) भारत के हिंदू सम्राट्, (७) नैतिक जीवन, (८) नाट्य-कला-दर्शन।

विवरण—आप भानपुरा, इंदौर के रहनेवाले तथा सुखसंपत्तिराय के कनिष्ठ भ्राता हैं।

नाम—(४१५५) जगकृष्ण मिश्र बी० ए०, मैनपुरी।

कविता-काल—सं० १९६८।

ग्रंथ—अँगरेज़ी की प्रसिद्ध गीतिका (Gray's Glegy) का पद्यानुवाद।

विवरण—यह पं० श्यामजीराम मिश्र के पुत्र हैं। इनका जन्म स्थान पिनाहट, ज़िला आगरा है, किंतु अब यह मैनपुरी में रहते हैं। आप

खड़ी बोली और व्रजभाषा दोनों में कविता करते तथा स्थानीय चतुर्वेदी-पुस्तकालय के जन्मदाताओं में से हैं।

उदाहरण—

पित चालक पै चल चारु चलें जय की जनु काम ध्वजा फहरैं।
अधरान पै सोहे गुलाल मनो बुँद बुंद अमी बिधु बाल भरैं।
पलकानि मैं चौंपैं लसैं जनु स्याम सितउद मैं चपला छहरैं।
बस बाल नवेलि विलोकि उठैं मन माहिं मनोभव की लहरैं।

नाम—(४१२६) दवनारायणसिंह (लाल), सटा, डाकखाना शाहपुर।

ग्रंथ—रमेश-मनोरजनी।

नाम—(४१२७) मुख्तारसिंह जाट, गिरिधरपुर, मेरठ।

ग्रंथ—हिंदी-वैज्ञानिक स्वपत्तव बनाते हैं।

नाम—(४१२८) रमेश पाँड़े (रामेश्वर), मडित पुरवा, जिला लखनऊ।

जन्म काल—सं० १९७३।

नाम—(४१२९) सत्यव्रत शर्मा, मुरादाबाद।

समय—संवत् १९९६

नाम—(४१३०) गोविंदप्रसादजू देव चौबे।

जन्म-काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—विनय-शतक।

विवरण—आप नया गाँव पालदेव जागीर के युवराज हैं।

नाम—(४१३१) चंद्रभानुराय।

ग्रंथ—नरसिंहपुर नयन।

विवरण—आप बाबू गोकुलप्रसाद के ज्येष्ठ पुत्र हैं, तथा दुर्ग, ज़िला रायपुर, मध्यप्रदेश में निवास करते हैं।

नाम—(४१६२) चन्द्रीसिंह वर्मा, अटिया, उन्नाव ।

ग्रंथ—वीरांगना-चरित्र ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

नाम—(४१६३) मदनमोहनलाल दीक्षित, शिवरामऊ, ज़िला फ़र्रुख़ाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

ग्रंथ—(१) अनुचरी या सहचरी (उपन्यास), (२) बात की चोट (उपन्यास), (३) संसार-सेवा (उपन्यास), (४) प्रबंध-दर्पण दो भाग (प्रबंध लिखने की विधि), (५) मोहन-मंजरी (उपन्यास) ।

विवरण—आप भारद्वाज गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० शंकरलाल दीक्षित के पुत्र हैं। गद्य तथा पद्य दोनों लिखते हैं। इनके ग्रंथों में से मोहन मंजरी को छोड़कर शेष सब मुद्रित हो चुके हैं। समस्या-पूर्ति में भी आपको रुचि रहती है। इस समय यह महाशय टाउन स्कूल, शिवरामऊ के प्रधान अध्यापक हैं।

नाम—(४१६४) रामचीज पाँड़े, अरवल, गया ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

ग्रंथ—(१) बिहारी वीर (गद्य), (२) मित्र-वेष में शत्रु (पद्य) ।

नाम—(४१६५) वचनेश, फ़तेहगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

ग्रंथ—वीरांगना चरित्र ।

नाम—(४१६६) वीरसिंह उपदेशक आर्य समाज, फुलपुरा, हिसार ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

विवरण—आजकल राजपूत-सभा की ओर से उपदेशक हैं ।

नाम—(४१६७) शिवदास गुप्त 'कुसुम', ज़िला गोरखपुर।

जन्म-काल—सं० १९२३।

जन्म-स्थान—बरहज बाज़ार, ज़िला गोरखपुर।

कविता-काल—सं० १९६६।

मृत्यु-काल—श्रावण शुक्ला २ बुधवार, सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) भारत की शासन प्रणाली, (२) श्यामा (उपन्यास), (३) आरती (काव्य), (४) कीचक-वध (काव्य), (५) सप्तर्षि (जीवनी), (६) कुसुम-कली (स्फुट कविताएँ), (७) कर्मवीर बेंजेमिन फ्रैंकलिन (जीवनी)।

विवरण—आप अपने पिता श्रीयुत रामगुलामजी के सबसे छोटे पुत्र थे।

नाम—(४१६८) शंकरलाल व्यास (महेश)।

जन्म-काल—सं० १९४७।

रचना-काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—(१) अश्रु-दर्पण, (२) बाल विवाह-नाटक (मुद्रित), (३) निमाड़ दिग्दर्श (अमुद्रित)।

विवरण—होलकर राज्य के कसरावद निवासी गौड़ ब्राह्मण तथा खड़ी बोली के कवि हैं।

समय—संवत् १९७०

नाम—(४१६९) उमाशंकर, वृंदावन।

जन्म-काल—सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९७०।

विवरण—गद्य पद्य लेखक एवं सुयोग्य वैद्य।

नाम—(४१७०) (बारहट) कृष्णसिंह (जी)।

रचना-काल—सं० १९७०।

विवरण—यह चारण कवि शार्दूलसिंहजी के समकालीन थे। इनके स्फुट छंद जो पत्रों में छपे हैं, उनमें से एक यहाँ देते हैं।

उदाहरण—

अम्बर के अब्द का प्रचार कर अथुरा ते,
वेदमत मानिन को सुखदा सुजान भो।
धर्म को सुधारो धर्म मर्म को विचारयो यात,
कष्ट कलिकाल बीच कृतयुग मान भो।
शिक्षा रूप भयो भूरि इतरि बराटन कों,
पाटन को छोनी तज सुयश वितान भो,
कृष्णानंद धरा धन्य धरापति अवि धन्य,
जामे हू अनन्य ध य जाहिर जहान भो।

नाम—(४१७१) खगेश कवि (श्यामलाल)।

जन्म-काल—सं० १९४५।

नाम—(४१७२) गंगानारायण द्विवेदी, लखनऊ निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४६।

रचना काल—सं० १९७०।

विवरण—कान्यकुब्ज-कॉलेज, लखनऊ में अध्यापक। स्फुट पद्यकार।

नाम—(४१७३) गोविंद शुक्ल।

आप दामोदरपुर, जिला भागलपुर निवासी सरयूपारीय ब्राह्मण हैं। हिंदी से विशेष प्रेम रखते हैं।

नाम—(४१७४) चुन्नीलाल पांडेय।

जन्म काल—सं० १९४५।

ग्रंथ—(१) पद्मपुष्प माला, (२) स्फुट कविता।

विवरण—आप कृष्णानंद पांडेय के पुत्र तथा गवर्न-स्कूल मुजफ्फरनगर में संस्कृताध्यापक हैं।

उदाहरण—

कोकिल की कल कूक कलेजा हूक उठावत एक निराली,
आग लगी-सी लगे बन में मोहि टेसुन की छवि के नवलाली।

देखत राह थकीं अँखियाँ नहिं आए सखी अजहूँ बनमाली।
मो-सी अभागिन को यह आज बसंत नहीं बस घंत है आली।

नाम—(४१७५) छेदालाल कायस्थ।

ग्रंथ—अबला-मनरंजन।

नाम—(४१७६) जगतनारायणलाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, एम्० डी०, पटना।

जन्म-काल—सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९७० के लगभग।

ग्रंथ—(१) एक ही आवश्यक बात, (२) अर्थशास्त्र, (३) हिंदू धर्म।

विवरण—आपने अर्थशास्त्र तथा हिंदू धर्म पर कई पुस्तकें लिखी हैं। पटने से निकलनेवाले 'महावीर' पत्र के संपादक हैं। इस समय बिहार आइन-सभा के सदस्य हैं।

नाम—(४१७७) जगदयाप्रसाद (हितैषी), कानपुर-निवासी ब्राह्मण।

जन्म-काल—सं० १९४५ के लगभग।

रचना-काल—सं० १९७०।

रचना—स्फुट छंद।

विवरण—राजनीतिक कार्यकर्ता, जेल मुक्त, देश-प्रेमी महाशय हैं। रचना भी अच्छी करते हैं।

नाम—(४१७८) दशरथ बलवंत यादव, देवरी, सागर (मध्यप्रदेश)।

जन्म-काल—सं० १९४६।

रचना-काल—सं० १९७० के लगभग।

ग्रंथ—(१) सदाचार-सोपान (अनुवाद), (२) त्रिदेव निरूपण (अनुवाद), (३) श्री शिक्षा, (४) माता का कर्तव्य

(गुजराती पुस्तक का अनुवाद), (२) प्रेम-मंदिर (मराठी पुस्तक का अनुवाद), (३) मार्टिन लूथर इत्यादि।

विवरण—आप श्रीयुत बलवंत राव यादव के पुत्र हैं। आपके पूर्वज वाघोली (महाराष्ट्र प्रांत) के निवासी थे। आप महाराष्ट्र-क्षत्रिय तथा बँगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के जानने-वाले हैं।

नाम—(४१७९) नारायणप्रसाद बेताब, दिल्ली निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४८।

कविता काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—दस पंद्रह नाटक तथा अन्य कई ग्रंथ बनाए हैं।

विवरण—इनके नाटकों में बेपढ़ी जनता को प्रसन्न करनेवाली बातें अधिक रहती हैं, तथा पांडित्य पूर्ण प्रयत्न कम। समालोचना असंयत भाषा में भी कर बैठते हैं। यथानाम तथा गुण की कहावत चरितार्थ कर देते हैं। नाटकों में चरित्र चित्रण बिगड़ जाता है।

नाम—(४१८०) पन्नालाल भैया गयावाल, 'छैल'।

ग्रंथ—(१) कजली विनोद, (२) वसंत बहार, (३) काली घटा (४) कुंडलिया-कुंडल, (५) जमाल माला, (६) उर्वशी, (७) मोहनकुमारी, (८) भर्तृहरि भूषण, (९) मन मंजरी।

विवरण—आप बाबू श्यामजी भैया गयावाल के पुत्र हैं।

उदाहरण—

घोर घटा घहरै चहुँ ओर मचावत मोर हैं सोर बहार सों;
झूलत काहु कि बाम के संग लखी पिय को घर लाइ सिंगार सों।
रोस किते करे कवि 'छैल' परोसि जऊ समझाय बिचार सों;
तऊ स्याम के गात पै मारत हाथ चमेली कि डार सों।

देखत राह थकीं अँखियाँ नहिं आए सखी अजहूँ बनमाली।
मो-सी अभागिन को यह आज बसंत नहीं बस अंत है आली।

नाम—(४१७२) छेदालाल कायस्थ।

ग्रंथ—अबला-मनरंजन।

नाम—(४१७६) जगतनारायणलाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, एम्० डी०, पटना।

जन्म-काल—सं० १९४७।

रचना-काल—सं १९७० के लगभग।

ग्रंथ—(१) एक ही आवश्यक बात, (२) अर्थशास्त्र, (३) हिंदू धर्म।

विवरण—आपने अर्थशास्त्र तथा हिंदू धर्म पर कई पुस्तकें लिखी हैं। पटने से निकलनेवाले 'महावीर' पत्र के संपादक हैं। इस समय बिहार-व्यवस्थापक-सभा के सदस्य हैं।

नाम—(४१७७) जगदंबाप्रसाद (हितैषी), कानपुर निवासी ब्राह्मण।

जन्म-काल—सं० १९४५ के लगभग।

रचना-काल—सं० १९७०।

रचना—स्फुट छंद।

विवरण—राजनीतिक कार्यकर्ता, जेल मुक्त, देश-प्रेमी महाशय हैं। रचना भी अच्छी करते हैं।

नाम—(४१७८) दशरथ बलवंत यादव, देवरी, सागर (मध्यप्रदेश)।

जन्म-काल—सं० १९४६।

रचना-काल—सं० १९७० के लगभग।

ग्रंथ—(१) सदाचार सोपान (अनुवाद), (२) त्रिदेव-निरूपण (अनुवाद), (३) स्त्री शिक्षा, (४) माता का कर्तव्य

(गुजराती पुस्तक का अनुवाद), (५) प्रेम-मंदिर (मराठी पुस्तक का अनुवाद), (६) मार्टिन लूथर इत्यादि।

विवरण—आप श्रीयुत बलवंत राव यादव के पुत्र हैं। आपके पूर्वज वायोली (महाराष्ट्र प्रांत) के निवासी थे। आप महाराष्ट्र-क्षत्रिय तथा बँगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के जानने-वाले हैं।

नाम—(४१७९) नारायणप्रसाद बेताब, दिल्ली निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४८।

कविता-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—दस पन्द्रह नाटक तथा अन्य कई ग्रंथ बनाए हैं।

विवरण—इनके नाटकों में बेपढ़ी जनता को प्रसन्न करनेवाली बातें अधिक रहती हैं, तथा पांडित्य पूर्ण प्रयत्न कम। समालोचना असंयत भाषा में भी कर बैठते हैं। यथानाम तथा गुण की कहावत चरितार्थ कर देते हैं। नाटकों में चरित्र चित्रण बिगड़ जाता है।

नाम—(४१८०) पन्नालाल भैया गयावाल, 'छैल'।

ग्रंथ—(१) कजली विनोद, (२) वसंत बहार, (३) काली घटा (४) कुंडलिया-कुंडल, (५) जमाल माला, (६) उर्वशी, (७) मोहनकुमारी, (८) भर्तृ हरि भूषण, (९) मेघ मंजरी।

विवरण—आप बाबू श्यामजी भैया गयावाल के पुत्र हैं।

उदाहरण—

घोर घटा घहरैं चहुँ ओर मचावत मोर है सोर बहार सों;
झूलत काहु कि वाम के संग लखी पिय को घर जाइ बिगार सों।
रोस कितेक करे कबि 'छैल' परोसि जऊ समझाय बिचार सों;
सावन में तऊ श्याम के गात पै मारत हाथ चमेली कि हार सों।

नाम—(४१८१) प्यारेलाल मिश्र भंडारी, वृंदावन।

नाम—(४१८२) बचईलाल, माऊनपुर, इलाहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९४५।

ग्रंथ—बजरंग विनय आदि।

नाम—(४१८३) (बारहट) मुरारदानजी।

विवरण—यह किशनगढ़-राज्य में रहते हैं। डिंगल पिंगल की कविता करना पुश्तैनी पेशा है।

नाम—(४१८४) रघुनंदनसिंह वर्मा 'लाल', ग्राम समहद, बिधूना, इटावा।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—(१) लाल तरंग (३६० छंद, अप्रकाशित), (२) स्फुट लेख।

विवरण—आप सगर क्षत्रिय श्रीयुत लाल नरपतिसिंहजी (लाल नाहरसिंहजी) के पुत्र हैं। आप एक ज़मींदार और साहित्य नुरागी पुरुष हैं।

नाम—(४१८५) (महाराज) रघुराजसिंह (सी० आई० ई०)।

रचना काल—सं० १९७०।

परिचय—महाराज पृथ्वीसिंह के छोटे पुत्र थे। गत महायुद्ध में सरकार की बहुत सहायता की। गुणी जनों का बड़ा आदर करते थे। गंगादीनजी की मृत्यु पर 'गंगा-वाक्य विनोद' को छपवाया, तथा निम्न लिखित सोरठा वियोग में कहा—

> आवै निशि दिन याद, गंग बिना नहिं आपड़ै,
> कविता रो वह स्वाद, कबै न सुणस्यां कान में।

नाम—(४१८६) राजेंद्रप्रसाद एम्० ए०, एम्० एल्० ।

जन्म-काल—सं० १९४१ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७० ।

ग्रंथ—(१) चंपारन में महात्मा गांधी, (२) अर्थशास्त्र ।

विवरण—आपका जन्म सारन ज़िलांतर्गत जिरादेई ग्राम में हुआ। विश्वविद्यालय की उच्च परीक्षाओं में आप प्रायः प्रथम रहे हैं। 'देश' नामक बिहार का साप्ताहिक पत्र आप ही का निकाला हुआ है। हिंदी-साहित्य से आपकी विशेष रुचि रहा करती है।

नाम—(४१८७) राधाकृष्ण झा एम्० ए० कहलगाँव, भागलपुर।

जन्म-काल—सं० १९४९ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७० ।

मृत्यु-काल—सं० १९८३ ।

ग्रंथ—(१) भारत की सांपत्तिक अवस्था, (२) भारतीय शासन-पद्धति ।

विवरण—आप पटना-कॉलेज में कुछ समय तक प्रधान अध्यापक तथा बिहार प्रांत में शिक्षा-कला विभाग के भूतपूर्व प्रधान थे। सामयिक मासिक पत्र पत्रिकाओं में आपके लेख प्रायः निकला करते थे। यों तो आपने बहुतेरे ग्रंथ रचे हैं, किंतु उनमें से मुख्य दो ऊपर दे दिए गए हैं। [श्रीयुत मंगलाप्रसादसिंहजी द्वारा ज्ञात]

नाम—(४१८८) रामकुमार गोयनका ।

ग्रंथ—ऐतिहासिक लेख ।

विवरण—आप कलकत्ता-कार्पोरेशन के सभ्य तथा हिंदी-प्रेमी महाशय हैं।

नाम—(४१८९) लक्ष्मीदत्त त्रिपाठी, [illegible], कानपुर

जन्म-काल—सं० १९४० ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७० ।

ग्रंथ—(१) ब्लैकी के 'सेल्फ़ कल्चर' का अनुवाद (प्रकाशित), (२) गीतांजलि (टैगोर कृत) का अनुवाद ।

विवरण—आप पं० अविकाप्रसाद त्रिपाठीजी के कनिष्ठ भ्राता हैं ।

नाम—(४१६०) वैद्यनाथ मिश्र 'विह्वल', लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२ ।

रचना-काल—सं० १९७० ।

विवरण—स्फुट कविता (ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली) ।

नाम—(४१६१) शालग्राम भार्गव, प्रयाग ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

रचना-काल—सं० १९७० ।

ग्रंथ—विज्ञान पत्र के संपादक १० साल तक रहे ।

विवरण—रीडर फ़िज़िक्स इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हैं ।

नाम—(४१६२) शिवदास पांडे, मौजा भाँव, ज़िला उन्नाव ।

ग्रंथ—
प्रकाशित — (१) विश्राम-सागर (२) चाणक्य-नीति दर्पण पर पद्यबद्ध टीका, (३) रघुवंश की भाषा-टीका, (४) हिंदी की चौथी तथा पाँचवीं पुस्तकें, (५) महाभारत की भाषा टीका ।

अप्रकाशित — (१) पांडव-वन-गमन-लीला, (२) काली-गर्व-दमन, (३) सिया मिलन (काव्य) ।

विवरण—आप रघुवरदयालजी के पुत्र हैं । इस समय 'विकास' पत्र के संपादक हैं । कई वर्षों तक आपने श्रीवेंकटेश्वर तथा ज्ञान-सागर प्रेसों में काम किया । आशुकवि हैं, और आपकी

रचनाएँ अनुप्रास युक्त, सरस तथा प्रभावशालिनी हुआ करती हैं। कहा जाता है, आजकल आप 'ज्योतिष-सोपान'-नामक पुस्तक लिख रहे हैं। [श्रीयुत लक्ष्मणप्रसादजी (विशारद), बिलासपुर द्वारा ज्ञात]

नाम—(४११३) श्यामलाल।

जन्म काल—सं० १६४९ (वर्तमान)।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४११४) श्यामसुंदरलाल बी० ए० (सी०, आई० ई०)।

रचना काल—लगभग सं० १६७०। (मृत)

विवरण—आप इटावा निवासी महेश्वरी वैश्य थे। वनमेंट-कॉलेज, अजमेर में गणित के प्रोफ़ेसर हुए। वहाँ से किशनगढ़ आए। आपने राज्योन्नति के बहुत-से कार्य किए, तथा थियासोफ़िकल सोसाइटी की कई पुस्तकों की रचना भी की।

नाम—(४११५) सुखसंपत्तिराय भंडारी।

ग्रंथ—(१) गुरुदेव, (२) स्वर्गीय जीवन, (३) उन्नति।

विवरण—आपने ओसवाल जैन और सहकारी मार्तंड आदि कई पत्रों का संपादन किया है।

नाम—(४११६) सुपार्श्वदास गुप्त।

ग्रंथ—पार्लियामेंट।

विवरण—हिंदी के उत्साही लेखक आरा निवासी अग्रवाल जैन हैं।

समय—संवत् १९७१

नाम—(४११७) गोपाल दामोदर तामस्कर।

१९४६।

ग्रंथ—(१) शिवाजी की योग्यता, (२) शिक्षा-मीमांसा, (३) राज्य विज्ञान, (४) योरपीय राजकीय आदर्शों का विकास।

विवरण—आप नयागढ़ ज़िला दुर्ग निवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण आप हैं। हिंदी के प्रेमी और लब्ध प्रतिष्ठ लेखक हैं।

नाम—(२१६८) दुर्गाशंकर पांडेय, उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) नटवर पचीसी, (२) लेग और लेखक, (३) पुस्तकावलोकन, (४) अभिषेक, (५) धर्म-नीति शिक्षा, (६) प्रमनाथ शतक।

नाम—(२१६६) बिहारीलाल ब्रह्मभट्ट।

जन्म-काल—सं० १९३१।

ग्रंथ—(१) वैराग्य बावनी, (२) पद्मानन चरित्र, (३) मेघदूत का अनुवाद, (४) शृंगार चूड़ामणि, (५) विरह विलाप, (६) उत्तम प्रभाव, (७) साहित्य-सागर।

विवरण—यह बिजावर के राजकवि हैं।

उदाहरण—

कारण हँसी के हो न तीरे हो स्वभाव शुद्ध,
वशज शशी के हो वशी के हू किसी के हो;
कहत बिहारी जागे दिवस रती के हो जू,
ग्राहक रती के हो रती के और ती के हो।
आपनी कही के रँगे राग में वही के जानो,
भाव सबही के अपहित सबही के हो।
पद मोहिनी के मग मांड मान्हि नीके रात,
रहे मोहिनी के प्रात मिले मोहि नीके हो।

सरल अर्थ गंभीर सरस रसना रस व्यापिनि,
विविध भाँति गुण गुथ गुणीन मंथन मत भापिनि।
घन वे पुरुष अखेद भेद जिन गुन पहिचानो,
शुचि सतति सपदि सत्य मद सुख अनुमानो।
जिहि रीति व्याप्त गुन जगत मईं सरस अन्य भाषा गती;
जय हिंद निवासिनि सुखप्रदा जय श्रीभाषा भागवती।

नाम—(४२००) महावीरसिंह वर्मा।

विवरण—अटिया, ज़िला उन्नाव निवासी चंदेल क्षत्रिय।

नाम—(४२०१) राजहंसप्रसाद, उपनाम हंस।

जन्म-काल—सं० १६४६।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—यह धौलपुर निवासी आजकल इलाहाबाद में रहते हैं।

उदाहरण—

बोलेंगे न झूठ हम सत्य को तजेंगे नाहिं,
चित्त हू हारि हम मन ना डिगावैंगे,
रण को निमंत्रण ले बैठि रैहैं गेह नाहिं,
आगे ही धरैंगे पाय पीठ ना दिखावैंगे।
भीर परे स्वामी हित देंगे हम प्राण वारि,
जननी को दूध कभी भूलि ना लजावैंगे;
भूलैंगे न भूलि केहू चाल बाप दादन की,
क्षत्रिन के छौना हम आन को निभावैंगे।

नाम—(४२०२) शिवकुमार ब्राह्मण, ग्राम मच्छागर, पो० मसूरगंज।

जन्म-काल—सं० १६४६।

(४२०३) सूर्यनारायण पाण्डेय (रविदेव), पँतेपुर, —।

ग्रंथ—(१) शिवाजी की योग्यता, (२) शिक्षा-मीमांसा, (३) राज्य विज्ञान, (४) योरपीय राजकीय आदर्शों का विकास।

विवरण—आप नवागढ़ ज़िला दुर्ग निवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण आप हैं। हिंदी के प्रेमी और लब्ध प्रतिष्ठ लेखक हैं।

नाम—(४१४८) दुर्गाशंकर पांडेय, उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) नटवर पचीसी, (२) लेख और लेखक, (३) पुस्तकावलोकन, (४) अभिषेक, (५) धर्म नीति शिक्षा, (६) ब्रजनाथ-शतक।

नाम—(४१४९) बिहारीलाल ब्रह्मभट्ट।

जन्म-काल—सं० १९२६।

ग्रंथ—(१) वैराग्य बावनी, (२) पंचानन चरित्र, (३) मेघ दूत का अनुवाद, (४) शृंगार-चूड़ामणि, (५) विरह विलाप, (६) उप॰त अपील, (७) साहित्य-सागर।

विवरण—यह बिजावर के राजकवि हैं।

उदाहरण—

> धारण हँसा क हो न सीखे हो स्वभाव शुद्ध,
>
> पशज शशी के हो यशी के हू किसी के हो।
>
> कहत बिहारी जागे विषम रती के हो जू,
>
> ग्राहक रती के हो रता के और ती के हो।
>
> आपनी कही के रँग राग में वही के जानो,
>
> भाव सबही के अपहिनू सबही के हो।
>
> पढ़े मोहिनी के मंत्र मोह माहि नीके रात,
>
> रहे मोहिनी के मात मिल मोहि नीके हो।

सरल अर्थ गंभीर सरस रसना रस व्यापिनि,
विविध भाँति बुध गुण गुणीन प्रथन मत आपिनि।
धन वे पुरुष अखेद भेद जिन तुव पहिचानो;
शुचि सतति सपत्ति सत्य मह सुख अनुमानो।
निहि रीति व्याप्त तुव जगत महँ लसन धन्य भाषा गती;
जय हिंद निवासिनि सुखप्रदा जय श्रीभाषा भगवती।

नाम—(४२००) महावीरसिंह वर्मा।

विवरण—अटिया, ज़िला उन्नाव निवासी चदेल क्षत्रिय।

नाम—(४२०१) राजहंसप्रसाद, उपनाम हंस।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—यह धौलपुर निवासी आजकल आलमगढ़ में रहते हैं।

उदाहरण—

बोलेंगे न झूठ हम सत्य का तजेंगे नाहिं,
चित्त दृढ़ राखि हम मन ना डिगावैंगे,
रण को निमंत्रण लै बैठि रैहैं गेह नाहिं,
आगे ही धरैंगे पाय पीठ ना दिखावैंगे।
भीर परे स्वामी हित देंगे हम प्राण वारि,
जननी को दूध कभी भूलि ना लजावैंगे;
भूलेंगे न भूलि केहू बात बाप दादन की,
छत्रिन के छौना हम आन को निभावैंगे।

नाम—(४२०२) शिवकुमार ब्राह्मण, ग्राम मच्छागार, पो० मसूरगंज।

जन्म-काल—सं० १९४६।

नाम—(४२०३) सूर्यनारायण पाडेय (रविदेव), फतेपुर, ज़िला बाराबंकी।

ग्रंथ—(१) शिवाजी की योग्यता, (२) शिक्षा-मीमांसा, (३) राज्य विज्ञान, (४) योरपीय राजकीय आदर्शों का विकास।

विवरण—आप नयाभट, ज़िला दुर्ग निवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण आप हैं। हिंदी के प्रेमी और लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक हैं।

नाम—(४१३८) दुर्गाशंकर पांडेय, उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) नटवर पचीसी, (२) लेख और लेखक, (३) पुस्तकावलोकन, (४) अभिषेक, (५) धर्म नीति शिक्षा, (६) व्रजनाथ शतक।

नाम—(४१३९) बिहारीलाल ब्रह्मभट्ट।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) वैराग्य बावनी, (२) पद्मानन चरित्र, (३) मेघदूत का अनुवाद, (४) शृंगार-चूड़ामणि, (५) विरह विलाप, (६) उद्‌गत प्रवाह, (७) साहित्य-सागर।

विवरण—यह बिजावर के राजकवि हैं।

उदाहरण—

> कारण हँसा के हो न सीखे हो स्वभाव शुद्ध,
> बंशज शशी के हो वशी के हू किसी के हो;
> कहत बिहारी जाने दिवस रती के हो जू,
> ग्राहक रती के हो रती के और ती के हो।
> आपनी कही क रँगे राग में वही क जानो,
> भाव सबही के अपहिनू सबहा के हो
> पद मोहिनी के मग्न माहे मोहि नीके रात,
> रहे मोहिनी के प्रात मिले मोहि नीके हो।

नाम—(४२०९) माणिकजी मुनि।

ग्रंथ—(१) समाधि-तंत्र, (२) कल्पसूत्र।

विवरण—श्वेतांबर जैन साधु।

नाम—(४२१०) यज्ञदत्त शर्मा, विष्णुपुर, पोस्ट बेगूसराय, जिला मुंगेर (बिहार प्रांत)।

कविता-काल—लगभग सं० १९७२।

ग्रंथ—श्रीगौरांग चरित्र मानस (चैतन्य चरित्र)।

विवरण—आप मैथिल ब्राह्मण हैं।

नाम—(४२११) रणवीरसिंहजी (राजकुमार)।

जन्म-काल—आषाढ़ शुक्ल १४, सं० १९४६।

कविता-काल—सं० १९७२।

मृत्यु-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) संस्कृत सुधार नाटक, (२) सुभट तरंग, (३) सुधार-सागर, (४) सत्यमेव जयते नानृतम्, (५) विजयोल्लास, (६) महायुद्ध आदि।

विवरण—आप अमेठी नरेश राजा भगवानबख्श के द्वितीय पुत्र थे। व्यायाम, चित्र कला आदि में आपको रुचि थी। आपने अमेठी में आनंद-पाठशाला स्थापित कराई थी, जिसमें संस्कृत, हिंदी तथा अँगरेज़ी की निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी। आपकी अकाल-मृत्यु से हिंदी की हानि हुई है।

उदाहरण—

जै जै विजै बासर विमल राष्ट्रीय पावन पर्व जै;
भारत गुलोज्ज्वलकर निखिल त्योहार तिलक सगर्व जै।
शुभ विजय केतु समीरणालोड़ित सुगगनालभ जै;
संकलंश खेश प्रतापकर अवधेश-कीर्ति स्तंभ जै।

नाम—(४२१२) रत्नावली शर्मा, छपरा, सारन।

जन्म-काल—सं० १९४६ ।

समय—संवत् १९७२

नाम—(४२०४) दरियावसिंह सोंधिया ।

ग्रंथ—(१) कृषि विद्या, (२) हिंदी-व्याकरण, (३) कहावत-कल्पद्रुम, (४) श्रावक-धर्म ।

विवरण—गढ़ा कोटा, ज़िला सागर निवासी ।

नाम—(४२०५) रूपतिकिशोर गोस्वामी ।

ग्रंथ—अग्रवाल चरित्र ।

विवरण—गोस्वामी मजभरण के पुत्र तथा भैंठीयाकार ।

नाम—(४२०६) प्रेमदास ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

ग्रंथ—मथुरा विनय (१९७२) ।

विवरण—यह माचाभाट, ज़िला रायपुर निवासी श्रीमान् हरिदास के पुत्र और निंबार्क संप्रदाय के वैष्णव हैं ।

उदाहरण—

चकवा चक सोच सकोच लह्यो अरु चारु चकोर विनोद भरे।
चिकसीं कुमुदावलि मंजु महा, सकुची कमलावलि भूम धरे।
कल कौमुदी लै निशिनाथ उगे, रवि लोहित पश्चिम पाँव धरे;
पिय संग सँयोगिनि पायो सुख, मुरझाई वियोगिनि हाय हरे।

नाम—(४२०७) बालचंद्राचार्य ।

ग्रंथ—(१) जग-कर्तृत्व मीमांसा, (२) मानव कर्तव्य ।

विवरण—आप ग्वाम गाँव निवासी श्वेतांबर यति हैं । आपको खंडन-मंडन से बड़ा प्रेम है ।

नाम—(४२०८) महिपालबहादुरसिंह ।

ग्रंथ—पद्य पुस्तिका ।

विवरण—आप बलिया निवासी हैं ।

सुधारने के उपाय (गुजराती से अनुवाद), (१८) मेरे गुरुदेव (अँगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद), (१९) स्त्रियों का कार्य क्षेत्र (अनुवाद), (२०) राजा और रानी।

विवरण—यह वशिष्ठ गोत्रीय सनाढ्य ब्राह्मण प० भायजी शर्मा के पुत्र हैं। [श्रीयुत दशरथ बलवंत यादव, सागर द्वारा ज्ञात]

नाम—(४२१६) श्यामचरणजी।

जन्म-काल—सं० १९४७।

ग्रंथ—(१) जालवुकक्कड़ कीर्ति-कलाप (२) भाखा विरद प्रवाह, (३) गाय-गुहार, (४) प्रेमामृत प्रवाह, (५) धन निरूपण, (६) पद्य-पुष्पांजलि, (७) भजनामृत, (८) हैहय वंश बखान, (९) कुमुद सुंदरी नाटक।

विवरण—कछौ राज्य निवासी हिंदी के उत्साही लेखक।

उदाहरण—

सखि लीजिए श्याम रसालन में अब वे मधुपूरित बौर नहीं;
तिनके प्रिय चाहक ग्राहक हू ढिग हाय लखावते और नहीं।
मनभायक गायक कोकिल की अब तो सुखदायक ठौर नहीं;
तुम भूले कहाँ यह ग्रीषम है ऋतुराज की यह दौर नहीं।

नाम—(४२१७) श्रीकृष्णगोपाल माथुर, विद्याभूषण, विशारद, झालरापाटन।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४७।

ग्रंथ—(प्रकाशित)—(१) वक्तृत्व कला, (२) दो साहित्य-सेवी, (३) व्यावहारिक विज्ञान, (४) भिन्न भिन्न देशों के अनोखे रीति रिवाज़, (५) अर्जुन, (६) लव-कुश।

(अप्रकाशित)—(१) युधिष्ठिर, (२) भारत के नौ रत्न, (३) वचनामृत-सागर, (४) वक्तृत्व-कला (दूसरा भाग), (५) ध्रुव, (६) वैज्ञानिक लेखों का संग्रह, (७) कहानी-संग्रह, (८) सती सावित्री।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४७।

ग्रंथ—स्फुट लेख।

विवरण—यह महावीरप्रसादजी उपाध्याय की पुत्री तथा साहित्याचार्य स्वर्गीय पं० रामावतार शर्मा एम्० ए० की पत्नी हैं। समाज सुधार तथा स्त्री शिक्षा-संबंधी इनके लेख मासिक पत्र पत्रिकाओं में प्रायः निकला करते हैं।

नाम—(४२१३) राधाकृष्ण मिश्र।

जन्म-काल—प्राय सं० १९४९।

विवरण—यह प्रसिद्ध लेखक माधवप्रसाद के कनिष्ठ भ्राता कुम्भर ज़िला रोहतक के रहनेवाले हैं। आप संस्कृत के अच्छे विद्वान और हिंदी के सुलेखक हैं।

नाम—(४२१४) वनमाली शुक्ल।

ग्रंथ—(१) श्रीकृष्ण नाटक, (२) कपास, (३) रेखागणित।

विवरण—आप रायपुर मध्य प्रांत निवासी सरयूपारीय ब्राह्मण हैं।

नाम—(४२१५) शिवसहाय चतुर्वेदी, देवरी, (सागर मध्यप्रदेश)।

जन्म-काल—सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) भारतीय नीति-कथा, (२) आदर्श चरितावली, (३) छाया दर्शन (बँगला-ग्रंथ का अनुवाद), (४) योरप में बुद्धि-स्वातन्त्र्य (अनुवाद), (५) बेलून विहार (अनुवाद), (६) आर्य-जाति (बँगला पुस्तक का अनुवाद), (७) रामकृष्ण के सदुपदेश (८) कमलक्षत्र (बँगला से अनुवाद), (९) गृहिणी भूषण, (१०) आर्थिक सफलता, (११) गुरु-शिष्य-संवाद, (१२) जननी-जीवन, (१३) शारदा (अनुवाद), (१४) मनोरंजक कहानियाँ, (१५) फूलों की डाली, (१६) सोने का चाँद, (१७) बच्चों के

नाम—(४२१९) मरजूप्रसाद अवस्थी एम्० ए०, एल्० टी०, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४७।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। हिंदी-साहित्य में आप प्रेम रखते हैं। यह स्थानीय कवि-समाज के मंत्री हैं।

नाम—(४२२०) सुंदरलाल त्रिवेदी राजिम, रायपुर।

ग्रंथ—(१) विस्तारिया वियोग, (२) रघुराज-गुण-कीर्तन, (३) ध्रुव चरित्र, (४) कल्पना-पचीसी, (५) प्रह्लाद-नाटक।

नाम—(४२२१) सूरजभानजी।

ग्रंथ—(१) द्रव्य-संग्रह, (२) पुरुषार्थ सिद्धि उपाय, (३) परमात्म प्रकाश, (४) ब्याही बहू, (५) मनमोहिनी, (६) ज्ञान सूर्योदय।

विवरण—देवबंद, ज़िला सहारनपुर निवासी अग्रवाल जैन हैं। हिंदी की अच्छी सेवा कर रहे हैं।

समय—संवत् १९७३

नाम—(४२२२) गोवर्द्धनलाल एम्० ए०, बी० एल्०।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) नीति विज्ञान, (२) स्फुट निबंध।

विवरण—आप 'रौनियार' जाति के एक प्रतिष्ठित कुलोत्पन्न वैश्य हैं। इस समय पटना-हाइकोर्ट में वकालत कर रहे हैं। इन्होंने फ़ारसी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है।

नाम—(४२२३) जगन्नाथ द्विवेदी (जगदीश), पैंतेपुर, ज़िला बाराबंकी।

जन्म-काल—सं० १९४८।

नाम—(४२२४) जीवनराम पांडेय, बिधूना, इटावा।

जन्म-काल—सं० १९४८।

विवरण—यह कायस्थ-कुलोत्पन्न श्रीजगन्नाथजी के पुत्र हैं। हिंदी के अतिरिक्त इन्होंने गुजराती तथा बँगला-भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया है। इन्होंने कलकत्ता के विद्वानों द्वारा स्थापित निखिल भारत साहित्य संघ की परीक्षा के उपलक्ष में २०० पृष्ठ का एक गवेषणा-पूर्ण लेख लिखा था, जिस पर उक्त संघ से इन्हें साहित्यरत्न की उपाधि मिली। छत्र-कुश ग्रंथ इन्होंने राजपुरोहाय एच्० एच्० श्री महाराजा सर विश्वनाथसिंहजू के परामर्श से लिखा। यह हिंदी हितैषी बालचदजी सेठी के आश्रित हैं।

नाम—(४२१८) सदाशिव दीक्षित साहित्याचार्य, भगवत नगर (हरदोई)।

जन्म-काल—सं० १९४९।

कविता-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) माधव-काव्य (खंड काव्य, ५ सर्ग) अप्रकाशित, (२) राष्ट्र भाषा का चुनाव, (काव्य, ३० पद्यवी हैं), (३) मोहन (उपन्यास) अप्रकाशित, (४) पांचाली परिणय (खंड काव्य, ७ सर्ग), (५) वृंद-सतसई की टीका, (६) ताप विवर्धन (अप्रकाशित)।

विवरण—आप साहित्योपाध्याय पं० मथुराप्रसादजी के सुपुत्र हैं। आपके शिक्षा तथा कविता गुरु काशीस्थ राजकीय संस्कृत पाठशाला के प्रधानाध्यापक महामहोपाध्याय पं० भवानीदत्त दीक्षित थे।

उदाहरण—

दानव दुर्जन दलित होकर जो अति ही बिललाय रही है,
होकर शत्रु अधीन अधीर भई अब जो दुख पाय रही है।
'जागहु-जागहु' यों कहिके अब जो दुखड़ा निज गाय रही है,
जाग जगे कहते हमको यह दुखित भारत भूमि वही है।

नाम—(४२१९) सरजूप्रसाद अवस्थी एम्० ए०, एल्० टी०, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४० ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। हिंदी-साहित्य से आप प्रेम रखते हैं। यह स्थानीय कवि-समाज के मंत्री हैं।

नाम—(४२२०) सुंदरलाल त्रिवेदी राजिम, रायपुर।

ग्रंथ—(१) विक्टोरिया वियोग, (२) रघुराज-गुण-कीर्तन, (३) ध्रुव चरित्र, (४) कन्या-पचीसी, (५) प्रह्लाद नाटक।

नाम—(४२२१) सूरजभानजी।

ग्रंथ—(१) ग्रंथ-संग्रह, (२) पुरुषार्थ सिद्धय् पाय, (३) परमात्म प्रकाश, (४) प्यारी बहू, (५) मनमोहिनी, (६) ज्ञान सूर्योदय।

विवरण—देवबंद, ज़िला सहारनपुर निवासी अग्रवाल जैन हैं। हिंदी की अच्छी सेवा कर रहे हैं।

समय—संवत् १९७३

नाम—(४२२२) गोवर्द्धनलाल एम्० ए०, बी० एल्०।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) नीति विज्ञान, (२) स्फुट विषय।

विवरण—आप 'रौनियार' जाति के एक प्रतिष्ठित कुलोत्पन्न वैश्य हैं। इस समय पटना-हाईकोर्ट में वकालत कर रहे हैं। इन्होंने फ़ारसी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है।

नाम—(४२२३) जगन्नाथ द्विवेदी (जगदीश), पैंतेपुर, ज़िला बाराबंकी।

जन्म-काल—सं० १९४८।

नाम—(४२२४) जीवनराम पांडेय, विधूना, इटावा।

जन्म काल—सं० १९४८।

रचना-काल—लगभग सं० १९७३।

ग्रंथ—(१) क्षेमकरी देवी का माहात्म्य, (२) सनातन धर्म प्रचार, (३) कुंडलियानामा, (४) अवतार-चरित्र, (५) काली-नाग नाथन लीला, (६) गोवर्धन धारण-लीला, (७) गुरु शिष्य संवाद, (८) शारदावली इत्यादि।

विवरण—आप भारद्वाज गोत्रीय प० शिवचरणलालजी के पुत्र हैं। [श्रीयुत लाला रघुनंदनसिंह वर्मा, इटावा द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

भाल में त्रिपुंड, मुंडमाल है विशाल गले,
भूत-प्रेत झुंड साथ नेह करे पाप के।
शीश में सुरंग गंग, भंग पिए मस्त आप,
लिपटे भुजंग अंग हुंकार हरें ताप के।
हाथ में त्रिशूल, मूल सकल सँसार के हैं,
पावत न भेद पार हार नाप नाप के;
विपति हमारी त्रिपुरारीजी हरत नाहिं,
जीवनहू गावत गुणानुवाद आप के।

नाम—(४२२२) तारिणीप्रसाद मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९२८।

ग्रंथ—(१) अनुभव प्रकाश, (२) देव सभा, (३) सती सुलक्षणा, (४) निर्मला, (५) भामिनी, (६) सती सुलोचना, (७) महावीर-चरित्र, (८) महाराज पृथु, (९) पशु चिकित्सा, (१०) सती सुकला तथा शालोपयोगी पुस्तकें।

विवरण—यह सरयूपारीण ब्राह्मण प० दुर्गाप्रसाद के पुत्र सिहुढी, ज़िला भागलपुर में रहते हैं।

नाम—(४२२६) दुर्गाशंकरप्रसादसिंह, दलीपपुर, शाहाबाद।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप श्रीमहाराजकुमार नर्मदेश्वरप्रसादसिंहजी 'ईश' के पौत्र हैं।

नाम—(४२२७) नथु।

ग्रंथ—(१) शंकर-लहरी, (२) प्रेम-प्रवाह।

विवरण—आप साठोदरानागर नडियाद ग्राम (गुजरात) के निवासी हैं।

नाम—(४२२८) नर्मदेश्वरप्रसादसिंह, उपनाम 'ईश'।

ग्रंथ—(१) शिवाशिव शतक, (२) शृंगार दर्पण, (३) पचरत्न, (४) धर्म प्रदर्शिनी।

नाम—(४२२९) प्यारेलाल चिनोरिया, 'शारज्य'।

ग्रंथ—(१) दुर्गाष्टक, (२) शंकराष्टक, (३) श्रीयुगलकिशोर की बारामासी, (४) प्रबोधामृत, (५) कमलेश विलास।

नाम—(४२३०) मोतीलाल जैन।

ग्रंथ—स्वावलंबन।

नाम—(४२३१) राजेश्वरप्रसाद (अवनींद्र), ग्राम सेंगरौली।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—सावन (भावना), सुहाग आदि।

नाम—(४२३२) रामचंद्रजी पुजारी।

विवरण—आप व्रजभाषा के अच्छे कवि हैं, ऐसा कहा जाता है। [महाशय प० श्यामलालजी त्रिवेदी, जसरापुर, द्वारा ज्ञात]

नाम—(४२३३) रामसहाय मिश्री, हटा, दमोह (सी०पी०)।

जन्म-काल—सं० १९४७।

कविता-काल—सं० १९७३।

ग्रंथ—(१) मित्र मिलाप, (२) मोहना रानी, (३) स्फुट कविताएँ तथा लेख।

विवरण—यह श्रीयुत अयोध्या मिश्री के पुत्र तथा बाबू लक्ष्मीप्रसाद मिश्री के मँझले भाई हैं।

नाम—(४२३४) शिवराम महादेव पटवर्धन।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—हिंदू धर्म-मीमांसा।

विवरण—यह होमियोपैथिक डॉक्टर हैं।

समय—संवत् १९७४

नाम—(४२३५) कन्हैयालाल जैन, कस्तला-ग्राम, हापड़ (मेरठ)।

जन्म-काल—सं० १९५७।

रचना-काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) प्रेमोपहार, (२) कुसुमित कुसुम, (३) एक आदर्श जीवन (४) भारत जागृति, (५) श्रीगोपाल (जैन-इतिहास, अपूर्ण)।

विवरण—यह [illegible] ([illegible]) लूणावत गोत्रीय सेठ [illegible] के पुत्र हैं। इनके [illegible] पूर्वजों का प्राथमिक निवास-स्थान [illegible], जैसलमेर था [illegible] पीढ़ियों से यह जिला मेरठ में आकर बस गए थे। यह एक [illegible]

था तूने रस में कुटिल विषमता घोली,
जो मची विश्व में भीतर-बाहर होली ॥ २ ॥
सुख-शांति स्नेह का तूने नाम मिटाया,
नय, न्याय, नीति का तुझमें पता न पाया।
था धुँआधार मच रहा विश्व भकझोली,
जो मची विश्व में भीतर बाहर होली ॥ ३ ॥

नाम—(४२३६) दामोदर शुक्ल, दतिया।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) गुरु-अष्टपदी, (२) गुरु अष्टक, (३) स्फुट छंद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४२३७) बालकृष्ण शर्मा (नवीन), कानपुर-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२।

रचना-काल—सं १९७४।

विवरण—आप सुकवि तथा प्रताप संपादक हैं। प्रभा का भी संपादन आपने किया था।

नाम—(४२३८) बेनीप्रसाद डॉक्टर (वैश्यजैन), प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९५०।

रचना-काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) सूरदास, (२) जहाँगीरशाह (अँगरेज़ी में), (३) हिंदोस्तान की पुरानी सभ्यता।

विवरण—प्रोफ़ेसर पॉलिटिक्स इलाहाबाद विश्वविद्यालय। आप उच्च श्रेणी के विद्वान् हैं, तथा बहुत छान-बीन के पीछे उत्कृष्ट श्रेणी के प्रशंसनीय ग्रंथ लिखते हैं। स्वभाव के भी बड़े ही सज्जन पुरुष हैं।

नाम—(१९२६) [illegible] मिश्र [illegible]।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—(अप्रकाशित)—(१) [illegible] का [illegible] चरित्र, (२) पुष्प गुच्छ, (३) प्रबन्ध रत्न, (४) कुण्डलिनी (पद्यावलि)।

(प्रकाशित)—(१) त्रिवेणी, (२) बालिका, (३) भारत का भय, (४) गणित-चमत्कार।

विवरण—आप [illegible] के मुख्य कार्यकर्ता प्रान्तीय तथा भारतीय कांग्रेस के सदस्य [illegible] तीन बार जेल-यात्रा किए हुए हैं।

नाम—(१९३०) रामजीदास शर्मा 'जीवन', ग्राम मरवन, जिला मुजफ्फरपुर।

जन्म-काल—सं० १९६१।

नृप भय तस्कर धर्म हित हो व्यापक सुख स्रोत;
जीवन काया के निकट माया का क्या मोल!
करना सबको चाहिए उसका ही गुण-गान;
जिसका 'जीवन' ध्येय हो दुनिया का कल्यान।

समय—संवत् १६७९

नाम—(४२४१) अनूपलाल मंडल 'साहित्यरत्न', समेली, पुरनियाँ, बिहार।

जन्म-काल—सं० १६५७।

रचना-काल—लगभग सं० १६७९।

ग्रंथ—(१) रश्मिन-सुधा, (२) निर्वासिता (उपन्यास)।

विवरण—यह बाबू नन्दूमंडल के पुत्र और 'कैरव-कौमुदी' (मासिक पत्रिका) के संपादक हैं।

नाम—(४२४२) अनन्य उपाध्याय।

जन्म-काल—लगभग सं० १६६०।

रचना-काल—सं० १६७९।

विवरण—आप हिंदी के उच्च प्रतिष्ठ समालोचक, लेखक एवं कवि हैं। कहानियाँ भी लिखते हैं। गणित शास्त्र के अच्छे ज्ञाता हैं, एवं कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं। आजकल पटना स्टेट हाईस्कूल में अध्यापक हैं।

नाम—(४२४३) उड़िया बाबा।

रचना काल—सं० १६७९।

विवरण—धार्मिक तथा दार्शनिक लेखक।

नाम—(४२४४) उदित मिश्र, ग्राम कूँड़ो, ज़िला काशी।

जन्म-काल—लगभग सं० १६६०।

ग्रंथ—स्फुट कविता तथा लेख।

विवरण—यह पंडित देवकीनंदन मिश्र के पुत्र हैं। कई भाषाओं के ज्ञाता और हिंदी-गद्य तथा पद्य दोनो लिखा करते हैं। इस समय दिल्ली-माडर्न स्कूल में हिंदी के अध्यापक हैं।

उदाहरण—

धन्य धन्य हे किसान, कीरति तव नीकी।
माघ पूस को तुषार, ग्रीषम आतप अपार,
सहन करत बार बार जाने को जी की॥ १॥
गीताकर उच्च भाव, सारे जग को सिखाव,
फल की नहिं राख चाव, आश है हरी की॥ २॥
तन, मन, धन सभी खेत, वसुधा को अन्न देत,
श्रम त नित रखत हेतु, और बात फीकी॥ ३॥
दया दृष्टि करा नाथ, विनय करौं नाय माथ,
उदित' सुनो करुणा-नाथ, ऐसे दुखी की॥ ४॥
मन मह निमल विचार तें मरहु न मन भरमाय;
मन मारे जनि बैठहु, मन मारहु सुख पाय।

नाम—(४२२४) उमरावसिंह पांडे, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९५६।

कविता-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—स्फुट लेख तथा कविता।

विवरण—यह स्थानीय प्रतिष्ठित ज़मींदार पं० चिंतामणिजी के पुत्र ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनो में कविता करते हैं।

उदाहरण—

मोर पखा राजत, बिराजै उत चन्द्र-कला,
बेसरि सुहाई उत बाँसुरी बनाई है;
मानिक मनायो इतै कृष्ण जलुचद आज,
उतै पद्म चंद्रिका सुबेनी चारु चाई है।

पीत पट प्यारा फहरात फहरात उत,
चुनरी सुचारु चारु चित्रित जुन्हाई है,
गात की गुराई 'उमराव' कवि गाई उतै,
मुख मधुराई इत लजित जुनाई है।

नाम—(४२४६) कमलाबाई किबे।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।

रचना-काल—सं० १९७९।

विवरण—आप किबे साहब, इंदौर की धर्मपत्नी हैं। हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं में आपके उच्च कोटि के लेख प्रकाशित हुआ करते हैं।

नाम—(४२४७) कल्ला व्रजवल्लभजी।

विवरण—यह पुष्करणा ब्राह्मण दरबार हाईस्कूल में हिंदी अध्यापक हैं।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९।

नाम—(४२४८) कालिदास कपूर।

विवरण—आप विश्वंभरनाथ कपूर के पुत्र तथा कालीचरन-हाई-स्कूल, लखनऊ में हेडमास्टर हैं। आपको हिंदी से विशेष प्रेम है। आपके लेख सरस्वती तथा माधुरी आदि मासिक पत्रिकाओं में बहुधा प्रकाशित होते हैं।

नाम—(४२४९) किसारीदास (वाजपेयी) विशारद, शास्त्री।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) साहित्य मीमांसा, (२) काव्य प्रवेशिका, (३) रस और अलंकार, (४) साहित्य उपक्रमणिका।

विवरण—पंडित तो आप प्राचीन शैली के हैं, पर नवीन समालोचक, संस्कृत के विद्वान्, व्रजभाषा के परम प्रेमी, पर खड़ी बोली के विरोधी, उपयोगितावादी, सांख्य, वेदांत के सुखभोगी, काव्य में रस के 'रसराज' होने के प्रतिपादक हैं। इनके विचार-पूर्ण लेख

विवरण—यह पंडित देवकीनंदन मिश्र के पुत्र हैं। कई भाषाओं के ज्ञाता और हिंदी-गद्य तथा पद्य दोनो लिखा करते हैं। इस समय दिल्ली-माडर्न स्कूल में हिंदी के अध्यापक हैं।

उदाहरण—

धन्य धन्य है किसान, कीरति तव नीकी।
माघ-पूस का तुषार, ग्रीषम आतप अपार,
सहत रहत बार-बार जाने को जी की॥ १॥
शीताकर उष्ण भाव, मारे जग को सिखाव,
फल की नहिं राख चाव, आश है हरी की॥ २॥
तन, मन, धन सभी खेत, वसुधा को अन्न देत,
श्रम ते नित रमत हेतु, और बात फीकी॥ ३॥
दया दृष्टि करो नाथ, विनय करौं नाय माथ,
'अचित' सुनो करुणा-गाथ ऐसे दरदी की॥ ४॥
मन मद त्रिमल विचार तें सरहु न मन भरमाय।
मन मारे जनि बैठहू, मन मारहु सुख पाय।

नाम—(४२४२) उमरावसिंह पांडे, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९४९।

कविता-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—स्फुट लेख तथा कविता।

विवरण—यह स्थानीय प्रतिष्ठित ज़मींदार प० चिंतामणिजी के पुत्र ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनो में कविता करते हैं।

उदाहरण—

मोर पखा राजत, विराजे उत चंद्र-कला,
बेसरि सुहाई उत बाँसुरी बजाई है;
बानिक बनायो इतै कृष्ण जदुचंद आज,
उतै चंद्र चंद्रिका सुबेनी चारु चाई है।

उत्तर नूतन

प्यारी पायक है जी ही पहिचान प्रा
भावो नायकानो घन औघटे घरति है।
मान करि खाडी गुण कहि दिन को उठे,
पिपासी चातक और मोंगा करती है।
सखि के सबरे मूरि-मूरि कै सर्वान स्याम,
मान म। पयोद की औघटे घरति है।

नाम—(४२२१) दयाल, शास्त्री निवासी।
जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।
कविता-काल—सं० १९७५।
ग्रंथ—स्फुट काव्य।
विवरण—हमने इनकी कविता सुनी है, अच्छा कहते हैं।

नाम—(४२२२) गिरिजाशंकर पाठक।
जन्म-काल—सं० १९५३।
ग्रंथ—(१) बरवै (२) सनातन धर्म के मंत्र।
विवरण—उन्नाव निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० शिवदत्तप्रसाद के पुत्र। आप सरस्वती-पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं, तथा पंचराज, वैश्य-धर्म-पताका, वसुधा, सत्यवादि पत्रों के संपादक भी रह चुके हैं।

नाम—(४२२३) चन्द्रावती देवी (इन्दुमती), धनकुटा, आजमगढ़।
जन्म-काल—सं० १९६०।

नाम—(४२२४) जगदीशदत्तजी शास्त्री, जैनाचार्य।
जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।
ग्रंथ—(१) विज्ञान-शिक्षा, (२) सुर भारती-सरण, (३) हिन्दी-साहित्य-सार।
विवरण—आप पंजाब विश्वविद्यालय के शास्त्री एवं उत्साही लेखक तथा कवि हैं।

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। जन्म रामनगर, कानपुर है, पर सम्प्रति हरिद्वार में अध्यापक हैं। सन् १६८६ के ग्वालियर-सम्मेलन में साक्षात्कार हुआ था। वस्तुतः स्वतन्त्र प्रकृति के सुयोग्य सज्जन, सच्चे साहित्य-सेवी सखा हैं।

उदाहरण—

सुन रे कपूर ! मदचूर ! इक सीख मेरी,
एतो अभिमान करि नीच नसि जाइगो ;
रूप में न रस में, बिलोकि खिन्न होय मन,
कोढ़िया सपेद न अछूत बनि जाइगो।
सुम्र कीट मारिबे में यांते हैं प्रसिद्ध तेरी,
नेकु सी पसाज, लोंक लाए जरि जाइगो ;
और की चलावै कौन मैं हूँ जो न सग होऊँ,
पल में न जानी कौन देस उड़ि जाइगो।
जहाँ न हित उपदेस शुचि, सो कैसा साहित्य ,
हो प्रकाश ■ रहित तो कौन कहे आदित्य।

नाम—(४२५०) केदारनाथ त्रिवेदी 'नवीन', ग्राम कौरैया सरावाँ, सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १६५२।

कविता-काल—अनुमानतः सं १६७५।

ग्रंथ—(१) कुलीन (पद्य), (२) स्फुट कविताएँ।

विवरण—यह उपमन्यु-गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। इनके पुत्र 'प्रवीन' भी कविता करते हैं। यह आजकल बिसवाँ, सीतापुर में अध्यापक हैं।

उदाहरण—

ऐन अँधियारी रैन कहत बनै न चैन,
शिशिर-समीर शीत बाढ़ै करति हैं ;

नाम—(४२२८) न्यामतसिंहजी लाला।

विवरण—जैन-समाज में आपके धियाट्रिकल पद्य की प्रशंसा है। आपके कतिपय पद्य अच्छे भी हैं।

नाम—(४२२९) पन्नालाल सिंघी।

ग्रंथ—परिहार डिरेक्ट्री।

नाम—(४२३०) प्रयागीलाल वर्मा मालवीय, आगर मालवा निवासी।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) वज्र निशान, (२) आरोग्य-मंदिर इत्यादि।

विवरण—आपने मुनि, धर्माभ्युदय आदि कई पत्रों का संपादन किया है। कविता उत्साह-युक्त भावों की करते हैं।

उदाहरण—

सुन हो पन्था की टकार।

वही भुजा है, वही धनुष है और वही है बाण,
फिर क्यों ब्राह्मी दल बढ़ता है, कर इसका संहार।

क्या कहता है? भाई, बड़े गुरुजन प्रिय परिवार,
सब सामने स्नेही मेरे कैसे करूँ प्रहार।

धि धि! यह कैसा विचार है, इसे इसी क्षण भूल,
केवल कर्म सत्य है जग में, शेष सभी निस्सार।

जीव देह ज्यों देह वस्त्र है सहज बदलता नित्य,
मृत्यु एक परिवर्तन है, यह है शास्त्रों का सार।

तेरा भाई, तेरा बंधु यदि करता हो पाप,
और मला तू देख रहा हो उनके अत्याचार।

तब तो धर्म धँसे धरणी में हो विनष्ट कर्तव्य,
हुई मोह की जय कह तुमको धिक्कारे संसार।

नाम—(४२११) जगन्नारायणदेव मिश्र (पुष्कर कवि) शास्त्री।

जन्म-काल—आषाढ़ शुक्ल १२, सं० १६६६।

रचना-काल—सं० १६०१।

ग्रंथ—(१) ब्रह्मचर्य विज्ञान, (२) मधुप, (३) स्वदेशी गान, (४) पद्य-पयोधि आदि।

विवरण—आप अवतार, वसुधरा, मालवमयूर, त्याग भूमि आदि के संपादन विभाग में काम कर चुके हैं, तथा कुछ दिन राम का संपादन भी आपने किया है। आजकल काशी में रहते हैं।

नाम—(४२१६) दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १६५०।

रचना-काल—लगभग सं० १६७५।

ग्रंथ—विदेशी विनिमय।

विवरण—नागरिक शास्त्र पर आपने भागवानदास केला के साथ एक अच्छा ग्रंथ लिखा है। इस समय आप अर्थ ग्रंथावली निकाल रहे हैं।

नाम—(४२१७) नरोत्तमदास स्वामी विशारद, बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १६६१।

कविता-काल—सं० १६०१।

ग्रंथ—(१) पाल्वरिगाड के Scourge of chatsl (क्राइस्ट का चाबुक अप्रकाशित) का अनुवाद, (२) राधाकुमुद मुकर्जी-कृत Eunda mental unit of India (भारत की मूल एकता, अप्रकाशित) का अनुवाद।

विवरण—आप राजस्थानी भाषा के लेखक तथा कवि हैं, और इस समय हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस में विद्याध्ययन कर रहे हैं।

नाम—(४२१३) विपिनविहारीलाल (वैद्य विपिन)

जन्म-काल—सं० १६५८।

रचना-काल—सं० १६७६।

ग्रंथ—(१) विपिन-लता, (२) विपिन विहार, (३) वैद्य-दर्पण, (४) आयुर्वेद-गौरव तथा स्फुट ग्रंथ एवं लेख।

विवरण—पाँसर्दाह, बलिया निवासी मु० कृष्णकुमारलाल के ज्येष्ठ पुत्र, वैद्यक-परीक्षा पास, पुरातत्व के प्रेमी तथा उस पर महा काव्य लिखनेवाले हैं। विपिन-औषधालय में वैद्यक करते हैं।

नाम—(४२१४) बुधचंद्र पुरी सन्यासी, स्वामी, ग्राम तथा घड़ा, शुजाबाद (मुल्तान)।

जन्म-काल—सं० १६६१।

रचना-काल—लगभग सं० १६७६।

ग्रंथ—(१) श्रीकर्म सुधार, (२) स्त्री शिक्षा भजनावली, (३) स्त्री धर्म चेतावनी, (४) स्त्री धर्म पुष्पमाला।

विवरण—इनके पूर्वजों का निवास-स्थान बनारस था।

उदाहरण—

सोती रहोगी कब तक भारत के नामवाली।
आँखें उठाके देखो मिटते निशानवाली॥ १॥
गफ़लत ने तुमको घेरा किस शान में पड़ी हो।
तन की खबर नहीं है भारी गुमानवाली॥ २॥
थीं तुम कभी कहातीं भारत कि वीर माता।
भूली हो तेज अपना देवी के नामवाली॥ ३॥
झुकते थे देव-दानव करते थे दर्श मुनि जन।
पतिव्रत्य धर्म पर थे उनको जलानेवाली॥ ४॥
अर्जुन-से वीर योधा, सरधाल बलि से दाता।
'बुधचन्द्र' पूज्य माता, उनकी कहानेवाली॥ ५॥

मत सोच मत बन मतवाला मधा रस-रण सूप,
उसी शक्ति से, उसी तेज से कर अरियों पर वार।
पुन हो धन्वा की टंकार।

नाम—(४२६१) प्रसादीलाल (शर्मा)।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—स्फुट पद तथा लेख।

विवरण—पं० कुँदनीराम सारस्वत के पुत्र मनीगढ़, पोस्ट बेवा, ज़िला अलीगढ़ निवासी अध्यापक हैं।

उदाहरण—

रे मन, प्रीतम तैं बिसरायो।
पिय को सेवा करी न नेकहु, सिगरो जनम गँवायो,
कबहूँ टुक इक ठाँव न बैठ्यो, इत उत रह्यो भ्रमायो।
लिपट्यो रह्यो मोह-माया में, प्रीतम ढिग नहिं आयो,
विषयासक्त कुचाल न कबहूँ विषयन ते थिनि आयो।
ज्यों मल कीट सदैव प्रेम सों, मल ही माँहि समायो,
उलटो चल्यो छाँड़ि मग सूधो, बहुतक मैं समुझायो।
प्रिय प्रीतम का प्रेम पुरी ते छिन छिन दूर दुरायो,
जिन सँग प्रेम कियो मन मूरख, तिन दुख संग टुरायो।
पाप-पुंज दुख रूप जलधि में उलटा ठेलि गिरायो।

नाम—(४२६२) बालमुकुंद बाजपेयी, रानीकटरा, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—कलमगा साप्ताहिक के संपादक थे।

विवरण—आजकल जीवन-बीमा का काम करते हैं।

नाम—(४२६३) विपिनविहारीलाल (वैद्य विपिन)

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) विपिन-लता, (२) विपिन विहार, (३) देश-दपण, (४) आयुर्वेद-गौरव तथा स्फुट छंद एवं लेख।

विवरण—पाँसडीह, बलिया निवासी मु० कृष्णकुमारलाल के ज्येष्ठ पुत्र, वैद्यक-परीक्षा पास, पुरातत्व के प्रेमी तथा उस पर महा काव्य लिखनेवाले हैं। विपिन-औषधालय में वैद्यक करते हैं।

नाम—(४२६४) बुधचंद्र पुरी सन्यासी, स्वामी, ग्राम रवा-वहा, शुजाबाद (मुल्तान)।

जन्म-काल—सं० १९४३।

रचना-काल—लगभग सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) श्रीकम सुधार, (२) स्त्री शिक्षा भजनावली, (३) स्त्री धर्म चेतावनी, (४) स्त्री धर्म पुष्पमाला।

विवरण—इनके पूर्वजों का निवास-स्थान बनारस था।

उदाहरण—

सावो रहोगी कब तक भारत के नामवाली।
आँखें उठाके देखो मिटते निशानवाली॥ १॥
ग़फ़लत ने तुमको घेरा किस शान में पड़ी हो।
तन की खबर नहीं है भारी गुमानवाली॥ २॥
थीं तुम कभी कहातीं भारत कि वीर माता।
भूली हो तेज अपना देवी के नामवाली॥ ३॥
झुकते थे देव-दानव करते थे दर्श मुनि जन।
पतिसत्य धर्म पर ऐ तनको जलानेवाली॥ ४॥
अर्जुन-से वीर योद्धा, सरघाल बलि से दाता।
'बुधचंद्र' पूज्य माता, उनकी कहानेवाली॥ ५॥

अतः सोच मत कर मतवाला सच्चा रण-रथ तूक,
उसी शक्ति से, उसी तेज से कर अरियों पर वार।
पुनः हो घन्टा की टङ्कार।

नाम—(४२६१) प्रसादीलाल (शर्मा)।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा लेख।

विवरण—पं० कुँवरजीराम सारस्वत के पुत्र अर्नीगढ़, पोस्ट बेरी, ज़िला अलीगढ़ निवासी अध्यापक हैं।

उदाहरण—

रे मन, प्रीतम तैं बिसरायो।
पिय की सेवा करी न नेकहु, सिगरो जनम गँवायो,
कबहुँ टुक इक ठौर न बैठ्यो, इत उत रह्यो भ्रमायो।
छिपट्यो रह्यो मोह-माया में, प्रीतम ढिग नहिं आयो,
विषयासक्त कुचाल न कबहूँ विषयन ते घिनि आयो।
ज्यों मल कीट सदैव प्रेम सों, मल ही माँहि समायो,
उलटो चल्यो छाँड़ि मग सूधो, बहुतक मैं समुझायो।
प्रिय प्रीतम की प्रेम पुरी ते छिन छिन दूर दुरायो,
जिन सँग प्रेम कियो मन मूरख, तिन तुम संग दुरायो।
पाप-पुंज दुख रूप जलधि में उलटा ठेलि गिरायो।

नाम—(४२६२) बालमुकुंद वाजपेयी, रानीकटरा, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—जयमध्य साप्ताहिक के संपादक थे।

विवरण—आजकल जीवन-बीमा का काम करते हैं।

नाम—(४२१३) विपिनविहारीलाल (वैद्य-विपिन)

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) विपिन-लता, (२) विपिन विहार, (३) वैद्य-दर्पण, (४) आयुर्वेद गौरव तथा स्फुट छंद एवं लेख।

विवरण—पाँसडीह, बलिया-निवासी मु० कृष्णकुमारलाल के ज्येष्ठ पुत्र, वैद्यक-परीक्षा पास, पुरातत्त्व के प्रेमी तथा उस पर महा काव्य लिखनेवाले हैं। विपिन-औषधालय में वैद्यक करते हैं।

नाम—(४२१४) बुधचंद्र पुरी सन्यासी, स्वामी, ग्राम तथा-बहा, शुजाबाद (मुल्तान)।

जन्म-काल—सं० १९२१।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) श्रीकृष्ण सुधार, (२) स्त्री शिक्षा भजनावली, (३) स्त्री धर्म चेतावनी, (४) स्त्री धर्म पुष्पमाला।

विवरण—इनके पूर्वजों का निवास-स्थान बनारस था।

उदाहरण—

सोती रहोगी कब तक भारत क नामवाली।
आँखें उठाके देखो मिटते निशानवाली॥ १॥
ग़फ़लत ने तुमको घेरा किस ध्यान में पड़ी हो।
तन की ख़बर नहीं है भारी गुमानवाली॥ २॥
थीं तुम कभी कहातीं भारत कि वीर माता।
भूली हो तेज अपना देवी के नामवाली॥ ३॥
झुकते थे देव-दानव करते थे दर्श मुनि जन।
पतिव्रत्य धर्म पर पै उनको जलानेवाली॥ ४॥
अर्जुन-से वीर योद्धा, सरधाल भक्ति से दाता।
'बुधचंद्र' पूज्य माता, उनकी कहानेवाली॥ ५॥

यत्र सोच मत कर मतवाला मचा रग-रण सूर ,
उसी शक्ति से, उसी तेज से कर करिया पर वार ।
पुन ता धन्वा की टकार ।

नाम—(४२६१) प्रसादीलाल (शर्मा) ।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

रचना-काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—स्फुट पद तथा लेख ।

विवरण—प० केदारनाथ सारस्वत के पुत्र अलीगढ़, पोस्ट बेर्वा ज़िला अलीगढ़ निवासी अध्यापक हैं ।

उदाहरण—

रे मन, प्रीतम तैं बिसरायो ।

पिय की सेवा करी न नेकहु, सिगरो जनम गँवायो ,
कबहूँ टुक टुक ठौर न बैठ्यो, इत-उत रह्यो भ्रमायो ।
लिपटयो रह्यो मोह माया मैं, प्रीतम छिन नहिं भायो ;
विषयासक्त कुचाल न कबहूँ विषयन ते चिनि आयो ।
ज्यों मल कीट सदैव प्रेम सों, मल ही माँहि समायो ,
उलटो चल्या आँखि मग सूधो, बहुतक मैं समुझायो ।
प्रिय प्रीतम की प्रेम पुरी ते छिन छिन दूर टरायो ,
जिन सँग प्रेम कियो सब मूरख, तिन हूँ सग दुरायो ।
पाप-पुंज दुख रूप जलधि मैं उलटा ठेलि गिराया ।

नाम—(४२६२) बालमुकुंद वाजपेयी, रानीकटरा, लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४० ।

रचना-काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—लक्ष्मण साप्ताहिक के संपादक थे ।

विवरण—आजकल जीवन-बीमा का काम करते हैं ।

हिंदी, उर्दू, संस्कृत, फ़ारसी और मारवाड़ी आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं। कुछ समय तक आप बीकानेर राज्य में अध्यापक थे। [बाबू गोवर्धनदास, अध्यापक स्टेट-स्कूल, बीकानेर द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

नहीं ग़ज़नवी का यहाँ अब सितम है,
न गोरी के हमलों का प्रौफ़ोसितर है।
नहीं कुत्ब तुग़लक़ का दौरा ज़मीं पर
न तुर्कों का ज़ोरोजफ़ा कुछ यहाँ पर।
नहीं और औरंगज़ेब औरंगशाही;
न अकबर कि तेग़ोतबर की तबाही।
सदीयों से बिछुड़े हुए हैं जो भाई,
उन्हें अब गले हम लगायेंगे भाई।
उठो हिंदुओ ! काम करके दिखाओ,
ज़मीं में दबीयों के तारे सुनाओ।
'मतादान' की तुम सुनो यह भाई,
धरम काम है देखो भाई कमाई।

नाम—(४२००) मुकुंददवल्लभ।

जन्म काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४२०१) मुरलीधर पांडेय।

जन्म-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) पूजा फल, (२) हृदय-ज्ञान, (३) गोशाला, (४) लक्ष्मी, (५) परिश्रम।

विवरण—मालपुर, ज़िला बिलासपुर निवासी चिंतामणि पांडेय के पुत्र।

नाम—(४२६४) मनमोहनशरण (अहाना)

रचना-काल—लगभग सं० १९७९ ।

ग्रंथ—(१) भिखारी और भगवान, (२) द्रौपदी दिग्दर्शन, (३) भोज परिचय । सब अप्रकाशित हैं । ईश्वर प्रार्थना के स्फुट बहुसंख्यक पद्य ।

विवरण—मौरास ज़िला उन्नाव के नवीन कवि हैं ।

नाम—(४२६६) भगवतीप्रसाद, कलकत्ता ।

विवरण—आप गद्य ग्रंथकार तथा कवि हैं । [यह महाशय हमें प० भावरमल्लजी त्रिवेदी द्वारा ज्ञात हुए हैं]

नाम—(४२६७) भगवानबख़्श (श्रीकर) राजा ।

विवरण—इटौंजा, लखनऊ । पाँच साल तक राज्य किया । सं० १९८८ में देहांत हुआ । आप कविता तथा गान विद्या के विशेष प्रेमी थे ।

नाम—(४२६८) महेशनाथ शर्मा, लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४८ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

विवरण—आप लखनऊ से प्रकाशित होनेवाले दैनिक 'आनंद' के संपादक एवं विनोद प्रिय, उत्साही सज्जन हैं । राजनीतिक आंदोलन में कई बार जेल यात्रा भी कर चुके हैं ।

नाम—(४२६९) मातादीनसिंह गौतम विशारद, दुगरेई, फ़तेहपुर ।

जन्म-काल—सं० १९५९ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९ ।

ग्रंथ—(१) ग्रामवाल सुधार, (२) बाइबिल की पोल, (३) गौतम विचार तरंग ।

विवरण—यह राजपूत कुलोत्पन्न कुँवर कोदीसिंह के पुत्र तथा

उदाहरण—

करो जगत में नित शुभ काम, जिससे मिले तुम्हें धन धाम।
दुष्कर्मों को दीजे त्याग; मन की पकड़ लीजिए लाग।
करें तपस्या या जो योग; पेय जग में दुर्लभ भोग।
जिनके मन में नहीं विवेक, वेसे जग में पुरुष अनेक।

नाम—(४२१७) मातापसाद शर्मा 'दत्त कवि' वाराबंकी (अवध)।

जन्म-काल—सं० १९६२।

कविता-काल—आगमन सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) नारद-मोह (नाटक, बाजार्ड प्रेस, बहराइच), (२) लक्ष्मण विजय (नाटक, सं० १९७१, भारत भूषण प्रेस, लखनऊ), (३) भारत सत्कार (पद्य, सं० १९८०, अमुद्रित), (४) स्फुट कविता।

विवरण—आप कौंडिन्यगोत्रीय शाकद्वीपीय ब्राह्मण पं० राजाराम शर्मा (पाठक) के पुत्र हैं।

उदाहरण—

वर्षा की ब्रजराज-वाटिका

औरै रंग केतकी, गुलाब गुंफ औरै औरै,
गुलाचीन औरै चारु मायूद यहाँ री।
औरै औध, औरै सौध, औरै ब्रज-बाग पौध,
औरै रंग कोकिला कलाप कुंज माँ री।
औरै री हिंडोरन में औरै राधा कृष्ण, औरै
तरल तरगन में औरै ढाँक ढार री।
औरै 'दत्त' औरै बुद्धि, औरै ही के ठौरै मन,
औरै किए डारै ये कदंबन की डारें री।

नाम—(४२१८) रामगोविंद त्रिवेदी।

चिंतन, (४) संसार दर्शन, (५) शिक्षा-सप्तमती, (६) आरोग्य-शतक ।

उदाहरण—

अपनी अपक मति के समान,
करता हूँ तेरा यशोगान ;
है सत्य भले हों खंड - खंड,
जय वंदनीय बुंदेलखंड ।
गिरि चित्रकूट तेरा प्रधान—
जब किया राम ने शोभमान,
कह उठा धन्य था अखिल अंड,
जय वंदनीय बुंदेलखंड ।
श्रीवीरसिंह से दानवीर,
हरदौल तुल्य बलि वीर - धीर ;
है बड़ा मुझे तेरा घमंड,
जय वंदनीय बुंदेलखंड ।

नाम—(४२१६) पार्वतीदेवी ।

रचना-काल—सं० १९७७ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—आप हिंदी-संसार के प्रसिद्ध लेखक भाई परमानंद की बहिन हैं । इनका विवाह पंजाब के डॉक्टर मिलखीरामजी से हुआ था, किंतु उक्त डॉक्टर महाशयजी की अकाल मृत्यु हो गई । कांग्रेस-कार्य के हेतु स्त्रियों के संगठन के अभियोग में इन्हें कारावास भी सहना पड़ा । अब इनके जीवन का केवल उद्देश देश तथा साहित्य-सेवा है । महाशय गदाधरप्रसादजी अंबष्ट का कथन है कि उन्होंने कन्या कवि कृत काव्यकुसुमोद्यान' में इन विदुषी की कविता देखी है । वही कविता हम यहाँ उद्धृत करते हैं ।

उदाहरण—

करो जगत में नित शुभ काम; जिससे मिले तुम्हें धन राम।
दुष्कर्मों को दीजे त्याग; मन की पकड़ जागिए पाग।
करे तपस्या या जो याग; यम जग में दुःखभ लोग।
जिनके मन में नहीं विवेक; एक जग में पुरुष अनेक।

नाम—(४२४७) मातापसाद शर्मा 'दत्त कवि' पारावंकी (अवध)।

जन्म-काल—सं० १९२२।

कविता-काल—लगभग सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) नारद मोह (नाटक, पालार्क प्रेस, महराइच), (२) लक्ष्मण विनय (नाटक, सं० १९७१, भारत भूषण प्रेस, लखनऊ), (३) भारत सत्कार (पद्य, सं० १९८०, अमुद्रित), (४) स्फुट कविता।

विवरण—आप कौंडिन्यगोत्रीय शाकद्वीपीय ब्राह्मण पं० रामाराम शर्मा (पाठक) के पुत्र हैं।

उदाहरण—

वर्षा की ब्रजराज-वाटिका

औरे रंग केतकी, गुलाब गुंफ औरे-औरे,
गुलाचीन औरे चाव मारुट बढ़ावैं री।
औरे भौंर, औरे सौंध, औरे मन-चाग पौध,
औरे रंग कोकिला कलाप कूक भावैं री।
औरे री हिंडोरन में औरे राधा कृष्ण, औरे
तरल तरंगन में औरे छाँक छावैं री।
औरे 'दत्त' औरे बुद्धि, औरे हीं के तौरे मन,
औरे किए डारैं ये कदंबन की डारैं री।

नाम—(४२४८) रामगोविंद त्रिवेदी।

चिंतन, (४) संसार दर्शन, (५) शिक्षा-सतसती, (६) आरोग्य-शतक।

उदाहरण—

अपनी अल्प मति के समान,
करता हूँ तेरा यशोगान;
है सत्य भले हों खंड - खंड,
जय वंदनीय बुंदेलखंड।
गिरि चित्रकूट तेरा प्रधान—
जब किया राम ने शोभमान,
कह उठा धन्य था अखिल खंड,
जय वंदनीय बुंदेलखंड।
श्रीवीरसिंह से दानवीर,
हरदौल तुल्य बलि - धीर - वीर;
है सदा चुके तेरा घमंड,
जय वंदनीय बुंदेलखंड।

नाम—(४२१६) पार्वतीदेवी।

रचना-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप हिंदी-संसार के प्रसिद्ध लेखक भाई परमानंद की बहिन हैं। इनका विवाह पंजाब के डॉक्टर मिलखीरामजी से हुआ था, किंतु उक्त डॉक्टर महाशयजी की अकाल मृत्यु हो गई। कांग्रेस-कार्य के हेतु स्त्रियों के संगठन के अभियोग में इन्हें कारावास भी सहना पड़ा। अब इनके जीवन का केवल उद्देश देश तथा साहित्य-सेवा है। महाशय गदाधरप्रसादजी अंबष्ट का कथन है कि उन्होंने क्या कवि कृत 'काव्यकुसुमाधान' में इन विदुषी की कविता देखी है। वही कविता हम यहाँ उद्धृत करते हैं।

(५) इन्द्र पराजय (खंड काव्य), (६) पाप की कविता (आलोचनात्मक ग्रंथ), (७) उद्‌गार (स्फुट कविताओं का संग्रह)।

विवरण—यह सरयूपारीय ब्राह्मण प० रघुनंदन पांडेयजी के पुत्र हैं। यह महाशय लेखक एवं कवि होते हुए एक अच्छे व्याख्यानदाता भी हैं। इनकी रचनाएँ माधुरी, मनोरमा, कान्यकुब्ज आदि पत्रिकाओं में समय-समय पर निकला करती हैं। [प० उमाशंकरजी पांडेय, हिराजपट्टी (आज़मगढ़) द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

आशा

खिले रहो बन स्नेह सुमन इस हृदय विपिन के;
मिले रहो बन धीर सदा इन नीर नयन के।
श्याम सघन घन बने मंजु मन-मोर जिलाना,
प्यासे हिय को कभी प्रेम-पीयूष पिलाना।
यह मंजुल मानस में हरे! राजहंस बन के रहो,
मम आशा सरिता में सदा सुधा धार बनकर बहो।

नाम—(४२००) हरद्वारप्रसाद जालान, आरा (विहार)।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) धोखे सुत (प्रहसन, पृ० सं० ६२), (२) क्रूर वेश्य (पौराणिक नाटक रूपक, पृ० सं० ११२), (३) पृथ्वी पर स्वर्ग (सामाजिक नाटक), (४) राज्य चक्र (ऐतिहासिक नाटक), (५) भगवान् कृष्णचंद्र (पौराणिक नाटक)।

विवरण—यह मारवाड़ी अग्रवाल (जालान) कुलोत्पन्न सेठ सागर-मलजी के पुत्र हैं। इनका आदि निवास-स्थान बीकानेर-राज्यांतर्गत चुरू ग्राम है। इनको हिंदी-साहित्य से अत्यंत प्रेम है। आप से

जन्म काल—सं० १६६२ ।

रचना काल—सं० १६७७ ।

ग्रंथ—(१) दर्शन परिचय, (२) हिंदी-पुस्तक-कोष, (३) हिंदी विष्णुपुराण, (४) रानर्षि प्रह्लाद, (५) महासती मदालसा ।

विवरण—आप सरयूपारीय ब्राह्मण अर्जुनप्रसाद त्रिवेदी के पुत्र हैं । संस्कृत के विद्वान् तथा दर्शन शास्त्र के ज्ञाता हैं । संस्कृत में व्याख्यान देने का आपको अच्छा अभ्यास है । बर्मा में आप ही ने सर्व प्रथम राष्ट्र भाषा हिंदी का प्रचार किया, और रंगून में विश्व वृत्त पत्र तथा प्रेस की स्थापना की । हिंदी के आप अच्छे लेखक हैं ।

नाम—(४२११) रामजी शर्मा 'मधुवनी', जिला आज़मगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १६६६ ।

कविता काल—सं० १६७७ ।

ग्रंथ—प्रकाशित (१) वैद्य भूषण (वैद्यक का काव्य ग्रंथ), (२) महात्मा गांधी (पद्य बद्ध जीवनी), (३) गोरी बीबी (उपन्यास), (४) मेरी रामकहानी (उपन्यास), (५) महात्मा ध्रुव (खंड काव्य), (६) द्रौपदी-स्वयंवर (खंड काव्य), (७) आज़मगढ़ दर्पण (प्रांतीय इतिहास), (८) महारथी अर्जुन, (९) पतिप्राणा राधा, (१०) हिंदी महाभारत (११) श्रीकृष्ण-चरित्र, (१२) भीष्म पितामह, (१३) महर्षि दयानंद, (१४) भर्तृहरि शतक, (१५) नल-दमयंती (नाटक), (१६) द्रौपदी-चीर हरण (नाटक), (१७) चंद्रिका (उपन्यास), (१८) दृष्टांत-सागर ।

अप्रकाशित—(१) सीता (नाटक), (२) हरिश्चंद्र (नाटक), (३) परम भक्त प्रह्लाद (खंड काव्य), (४) राठौरी तलवार,

समय—संवत् १९७१

नाम—(४२०४) कार्तिकेयचरण मुखोपाध्याय (काली-बाड़ी) छपरा, प्रांत विहार।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) मुस्तफ़ा कमाल पाशा, (२) सती सुभद्रा, (३) मनीपुर का इतिहास।

विवरण—यह पं० कालीकिंकर मुखोपाध्याय के पुत्र हैं। बंगाली सज्जन होते हुए भी इनको हिंदी की निंदा एवं अप्रतिष्ठा तनिक भी सहन नहीं होती है। अपनी धर्मपत्नी श्रीमती नलिनीबालादेवी को भी हिंदी की अच्छी शिक्षा दी है, और उन्होंने योग्यता पूर्वक 'शकुंतला'-जैसी सुंदर पुस्तक की रचना की है। मौलिक ग्रंथों के अतिरिक्त, जो ऊपर लिखे आ चुके हैं, इनके अनुवादित ग्रंथों की संख्या लगभग ४० ४१ के है। किसी समय इन्होंने 'भारतमित्र' के सहकारी संपादक का भी काम किया है। इस समय यह 'हिंदी-दारोग़ा दफ़्तर' के संपादक और 'हिंदूपंच' के निरीक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

उदाहरण—

बिजली

निराधार इस नील गगन में
क्या बिजली! तू विहँस रही है?
अँधियारी इस अमा निशा में
इतराती क्यों थिरक रही है?
मृगतृष्णा - सी मरीचिका - सी
प्रवंचना क्या सिखा रही है?

'मारवाड़ी-सुधार' नामक पत्र आपने ही निकाला है। आजकल यह 'नवीन भारत' तथा 'विचित्र मंडल' ये दो पुस्तकें लिख रहे हैं। [श्रीयुत सुखदेवसिंहजी, आरा नागरी प्रचारिणी सभा, द्वारा ज्ञात]

समय—संवत् १९७८

नाम—(४३०१) फूलदेवसहाय वर्मा एम्० एस् सी०, काशी।

जन्म काल—सं० १९४८।

रचना-काल—लगभग सं० १९७८।

ग्रंथ—प्रारंभिक रसायन।

विवरण—आपका जन्म-स्थान सारन ज़िलांतगत कौसड़ ग्राम है। इस समय आप हिंदू विश्वविद्यालय, काशी के रसायन विभाग के अध्यापक हैं। आजकल हिंदी में रसायन विषय की पुस्तकें लिख रहे हैं। आपके रसायन संबंधी महत्त्व पूर्ण लेख पत्र पत्रिकाओं में यथा समय निकला करते हैं।

नाम—(४३०२) रामनारायण मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९५३।

रचना काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—पश्चिमी रसायन का संक्षिप्त इतिहास।

विवरण—रायबरेली प्रांत निवासी।

नाम—(४३०३) साँवलिया बिहारीलाल वर्मा एम्० ए०, बी० एल्० छपरा, सारन।

जन्म-काल—सं० १९५३।

रचना-काल—लगभग सं० १९७८।

ग्रंथ—(१) योरपीय महाभारत (पाँच भाग), (२) गद्य चंद्रोदय (३) गद्य-चंद्रिका।

उदाहरण—

घटि चितवन नैया भई लाज-पयोनिधि पार,
पूके घटे त्रिलोकिप नाविक नंदकुमार।
अचल चपल चल अचल किय, थल लाज कुच नैन;
हेरा फेरी दुहुन मन लइ दलाली मैन।
अचल भए चल चित पथिक अँटके दुहुन अमूझ;
उर चितौनि काँटनि बिधे, मारग परै न सूझ।
मदन मार गहरे गह्यो, हरत हरि वन भास,
मानसगामी गति गही, भारत भारत-ग्रास।
औचक ज्यों चूम्यौ वदन रह्यो मान मन माँहि;
दुरि उझक कँपि-कँपि कहे नाह नवेली नाँहि।
भजै न राका ससि बहै, आनन परस सुभाय;
पग-सरोज सकुचे, सकु मुख सरोज मुसकाय।

नाम—(४२०६) घासीराम व्यास (सनाढ्य) मऊ (झाँसी)।

जन्म काल—सं० १९६०।

कविता काल—सं० १९७८।

उदाहरण—

अक्षत विचार चारु चंदन चढ़ाय शुभ,
सुमन सुहाती माल सुमन सुहाती की;
'व्यास' वर अतर सुगंधन लगाय धूप
आरती उतारैं करपूर पूर बाती की।
सुजन सँघाती स्याम सुचि रुचि राती पुञ्ज,
सुख सरसाती विधि सुख बरसाती की;
मञ्जु मुद माती पाती त्रिपुरनिपाती महा-
देव पै चढ़ावै बेल पाती पचपाती की।

श्रांत पथिक की नयन भ्रांति को
पथ दिखला क्या भगा रही है?
या जलधर के वज्र हृदय का
परिचय जग को जना रही है?
गर्वोन्मत्तुन्मत्त जनों के
क्या दृगजल को करा रही है?
श्रीमानों की श्री की क्या तू
चंचलता को बता रही है?
या विरहिन का सुप्त व्यथा को
रह-रह करके जगा रही है?

संध्या

हँसाने आती तू कुसुमित कली को कुमुद की?
रुलाने या आती कमल कलिका के हृदय को?
चकी को प्रेमी से विलग कर देने विरह पा—
नवेली आली को पति भय दिखाने सु उर में?
डुबोने आती तू दिवस मणि को क्या उदधि में?
मनाने बाँकी या पति मन रिझानी युवति को?
जगाने है आती मदन मद प्यारी तरुणि में?
बहाने या आँसू विरह विधुरा के नयन से?

नाम—(४३०९) काशीनाथ द्विवेदी।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—सतसई।

विवरण—पं० रुद्रदत्त शर्मा के पुत्र।

गोपाल ! अपनी प्रिय धरा पर सदय शीघ्र पसीजिए,
केशव ! करुण क्रंदन अवश्य कर कुछ कृपा अब कीजिए।
माधव ! सदय-भारत समुन्नति का सहारा फिर दीजिए,
हे राधिकारंजन ! स्वजन का शरण में रख लीजिए।

नाम—(४३०८) धर्मेंद्रनाथ शास्त्री।
जन्म-काल—सं० १९६७।
रचना काल—सं० १९९१।
ग्रंथ—(१) भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन, (२) उपनिषदों का सिद्धांत, (३) मुक्त धारा।
विवरण—आप डॉक्टर केदारनाथ के पुत्र तथा मेरठ-कॉलेज में संस्कृत के प्रोफेसर हैं। आप मान्य वक्ता एवं लेखक भी हैं। दर्शन-शास्त्र पर आपने श्रम किया है।

नाम—(४३०९) रामसहाय पांडेय उपनाम 'चंद्र'।
जन्म-काल—सं० १९५४।
कविता काल—सं० १९७१।
जन्म-स्थान—चिनहट, ज़िला लखनऊ।
पिता का नाम—पं० गौरीशंकरजी पांडेय।
शिक्षा—साधारण हिंदी उर्दू अँगरेज़ी।
विवरण—खड़ी बोली और व्रज भाषा दोनों ही में अच्छी रचना करते हैं।

उदाहरण— व्रज भाषा
(कवित्त)

आनन अमंद की तुषद द्युति होन लागी,
उरज उतंगन पै कचुकी सजै लगी;
गुरुता नितंबन मैं नित्य सरसान लागी,
सरकति नीवी कटि तट को तजै लगी।

नाम—(३२००) ज्योतिषचंद्र घोष बी० ए०, ग्राम रूपघट जिला भागलपुर (बिहार प्रांत)।

जन्म काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९७१।

मृत्यु-काल—सं० १९८४।

ग्रंथ—सिकंदर और पुरु (अपूर्ण खंड काव्य)।

विवरण—यह बाबू पंकुलाल घोष के पुत्र थे। सदा परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। सन् १९०७ में बी० ए० हुए। कुछ काल तक यह मारवाड़ी पाठशाला (हाईस्कूल), भागलपुर के प्रधानाध्यापक रहे। इनकी कविताएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुआ करती थीं। आपने चंपानगर (भागलपुर) से सुरभि-नामक साहित्यिक मासिक पत्रिका निकाली थी।

उदाहरण—

आकांक्षा

मोहन ! पुनः आनंदमय श्रुति मधुर मुरली तान हो,
जीवन-समर में शांतिमय फिर पुण्य गीता-गान हो।
प्रियनाथ भारत को नवल स्वर्गीय जीवन दान हो,
करुणा-सुधा के पान से जन का परम कल्याण हो।
दारिद्र्य दानव मनुज शोणित से यहाँ है पल रहा,
सबको कुचलता चक्र दुरन्दुर्भाग्य का है चल रहा।
घर घर कलह के रूप में फल फूट का है फल रहा,
औ' द्वेष दावानल मनोवन में भयंकर जल रहा।
ये दूर हों, इनका प्रभो ! अब शीघ्र ही संहार हो,
सद्भाव से सुरभित सुमन् यह स्वच्छ का संसार हो।
मानव हृदय औदार्य औ' उत्साह का आगार हो,
निःस्वार्थ पावन प्रेम का सर्वत्र ही संचार हो।

किसके छवि-जाल में लोचना को
उलझाकर प्रेम-दिवानी हुई;
किस कुंज में तेरा विवाह हुआ,
कब तू ऋतुराज की रानी हुई ॥ ३ ॥
जब व्योम से वारि की मुक्तावली
अहा! फुलझड़ी बन छूटती थी;
जब अंक में बैठी हुई घन के
चपला मधुआसव चूटती थी।
जब अंक लचाती लवंग-लता,
कली मल्लिका की जब फूटती थी;
तब बैठ कदंब के कुंज में तू,
सजनी, सुख कौन-सा लूटती थी ॥ ४ ॥
उस मीठे अतीत की विस्मृति है—
तुझसे क्या कभी इठलाती नहीं;
विचरी जिस क्रीड़ास्थली में कभी,
उसी ओर क्यों दृष्टि घुमाती नहीं।
वचनामृत से कर सिंचित क्यों
लतिकाओं के प्राण बचाती नहीं;
उजड़ी हुई 'चन्द्र' की वाटिका में
हे कुहूकिनी, क्यों अब आती नहीं ॥ ५ ॥

नाम—(४६१०) श्यामाकृष्ण वशी, मुँगेर।
जन्म-काल—सं० १९२४।
रचना-काल—सं० १९७९।
ग्रंथ—(१) हिंदी-व्याकरण-तत्त्व, (२) मनस्वी ध्रुव, (३) तिलक-प्रथा, (४) बिहार की सम्मिलित परिवार प्रणाली।

खंजन खँजोली अरसीली अँखियान पेखि
सज्जन की, कंजन का अवला छनै लगी।
मंद मुसक्यान सों सनेह सुधा घोरै 'चंद्र',
बोलति नवीना मंजु बीना सी बजै लगी।

खड़ी बोली
(सवैया छंद)

स्वरों की सुधा सिंचित माधुरी से
इस भाषा में कौन-सा घोलती है;
छिपी अंतर में किस वेदना की
उलझी हुई ग्रंथियाँ खोलती है।
अथवा हुई प्रेम में बावली तू,
प्रति डाल में सोंचती डोलती है;
अयि प्रेयसि श्यामा, विभावरी में
कह क्यों तू कुहू-कुहू बोलती है॥ १॥
मधुकाले, मनोहर तू कितनी,
ये मनोहरता बता पाई कहाँ;
यह मादकतामयी रागिनी है,
किसने तुझको सिखलाई कहाँ।
सुहागिनी है या वियोगिनी तू,
कहाँ थी, किस देश से आई कहाँ;
भरी कंठ में तेरे गई इतनी
मधु सी मिसिरी-सी मिठाई कहाँ॥ २॥
किस कानन में उपजी कर तू,
कहाँ खेली, कहाँ है सयानी हुई;
नवयौवन की अगवानी कहाँ
तुझको महामोद प्रदानी हुई।

समय—संवत् १९८०

नाम—(४२११) उदयशंकर भट्ट।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) तक्षशिला-काव्य, (२) विक्रमादित्य नाटक, (३) उपमा का इतिहास आदि कई पुस्तकों के लेखक तथा गुमानी मिश्र कृत कृष्णचंद्रिका के संपादक।

विवरण—गुजरात के निवासी, आजकल लाहौर में रहते तथा पंजाब विश्वविद्यालय के परीक्षकों में हैं। गद्य पद्य के होनहार लेखक हैं। तक्षशिला-काव्य पर आपको पंजाब टेक्स्ट-बुक-कमिटी से ५००) इनाम मिला है।

उदाहरण—

सूर को आँधरो कौन कहै।

पलकहि पर मन मत ह्वै नाचत आनँद स्रोत बहै;
सरल तरंग हृदय सरिता में कल-कल करि उमहै।
जग जंजाल झटकि झटपट बन तटिनी तट विहरै;
भगति भाव भरि झुकि झुकि झूमै नैनन नीर बहै।
छिन वियोग, छिन योग, आग छिन आयत सब समुहै;
भेद्य छलकि कहुँ मुरलीधर राधा उदय चहै।
जड़ चेतन, चेतन जड़ ह्वावै भावुकता उलहै;
सुकवि सूर की सुगत पदावलि को है मौन गहै।

भिक्षा

फैला झोली निठुर हृदय की देख कौन ले आया;
मद न होना रूप-सुधा पी, यह ऊपर तक भर आया।
आँखों द्वारा पीकर मचले अपने मन में रख लेना;
जीवन है, मधु मद है, सुख है, सुखको अब बस भर लेना।

उदाहरण—

स्वप्न विषाद

निविड़ कालिमा से आच्छादित हँसता था आकाश ;
और पयोधर सिंहनाद से कहता था "आघात" ।
पवन तुरंगम उस सेना को दिखा रहा संग्राम ;
प्रकृति जगत के बीच मचा था ऐसा ही कुहराम ।
मेघ बिंदु के विशिख समक्ष
बना हुआ था मैं ही लक्ष ।
मिला भयंकर घोर महावन कंटक से आकीर्ण ;
पथ विहीन शत योजन तक था मानो वह विस्तीर्ण ।
सिंहादिक व्यालादिक हिंसक घूम रहे थे जंतु ;
देख देखकर टूट रहा था मेरा साहस-तंतु ।
कैसे निकलूँ इससे हाय !
कौन बतावे यहाँ उपाय ।
सब छूटी आशा जीवन की वेष्टित थे सब अंग ;
कर पद ने आधार खोज में कर दी निद्रा भंग ।
देखा वहाँ न भय था, थी बस केवल कुछ कुछ रात ;
पड़ा हुआ था मैं शय्या पर, होने को था प्रात ।
परिवर्तित होकर आह्लाद
कहाँ गए वे स्वप्न विषाद ?
इसी तरह जग में जीवन है करता मिथ्याशोक ;
जब तक उसमें दीख न पड़ता सच्चा ज्ञानालोक ।
सहते हुए ताप इस तन में जब करता है यत्न ;
तभी आप वह पा सकता है 'ईश्वर ऐसा' रत्न ।
स्वप्न-कथा का यह उपदेश
ग्रहण करोगे क्या कुछ देश ?

समय—संवत् १९८०

नाम—(४३११) उदयशंकर भट्ट।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) तक्षशिला-काव्य, (२) विक्रमादित्य नाटक, (३) उपमा का इतिहास आदि कई पुस्तकों के लेखक तथा गुमानी मिश्र कृत कृष्णचंद्रिका के संपादक।

विवरण—गुजरात के निवासी, आजकल लाहौर में रहते तथा पंजाब विश्वविद्यालय के परीक्षकों में हैं। गद्य पद्य के होनहार लेखक हैं। तक्षशिला-काव्य पर आपको पंजाब-टेक्स्ट बुक-कमिटी से ४००) इनाम मिला है।

उदाहरण—

सूर को अंधरो कौन कहै।

पलकहि पर मन मत्त ह्वै नाचत आनँद-स्रोत बहै;
सरस तरंग हृदय सरिता में कल-कल करि उमहै।
जग जंजाल झटकि झटपट जन तटिनी तट बिहरै;
भगति भाव भरि झुकि झुकि झूमै नैनन नीर बहै।
छिन वियोग, छिन योग, भाग छिन भावत सब समुहै;
मेटत ललकि कहूँ मुरलीधर राधा उदय चहै।
जड़ चेतन, चेतन जड़ ह्वावै भावुकता उमहै;
सुकवि सूर की सुमन पद्मावलि को है मीन गहै।

भिक्षा

फैला झोली निठुर हृदय की देख कौन देने आया,
मत्त न होना रूप सुधा पी, यह ऊपर तक भर आया।
आँखों द्वारा पीकर मचले अपने मन में रख लेना;
जीवन है, मधु मद है, सुख है, पुसकी जय सब भर लेना।

हृदय-कुंज में मादकता जब नाच रही हो छुन-छुनकर ;
सौंदर्य झकझोर रहा हो इठलाता अपनापन कर।
आशा शुभ संवाद सुनाता जब आवे नभ से भू पर,
तब उँडेलना रसिक रसाली आँखों में आँखें भर भर।

नाम—(४३१२) गदाधरप्रसाद अंबष्ट विद्यालंकार, विशारद, बनौ, गागरी, मुँगेर।

जन्म-काल—सं० १९६३।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—अर्थशास्त्र, राजनीति का पारिभाषिक कोष (अपूर्ण)

विवरण—यह कायस्थ कुलोत्पन्न बाबू पतधारीलाल के पुत्र हैं। 'चाँद', 'देश' तथा 'महावीर' पत्रों के सहकारी संपादक रह चुके हैं।

नाम—(४३१३) गंगानंदसिंह (कुमार) एम्० ए०, एम्० एल्० ए०, एम्० आर० ए० एस्०, श्रीनगर, ज़िला पूर्णियाँ (बिहार प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—इनकी लिखी हिंदी तथा अँगरेज़ी की कई पुस्तकें कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हुई हैं।

विवरण—यह साहित्य-सरोज कविकुलचंद्र राजा कमलानंद के सुपुत्र हैं। यह देश तथा विदेश की कई साहित्यिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं के सदस्य हैं। आप एक सुकवि हैं।

उदाहरण—

सागर! तेरे निकट बैठकर मन चिंता से ग्रस्त हुआ।
ज्ञान-ध्यान था जो था जी में, सब घबराकर पस्त हुआ।
गुण विरोध को तेरे तन में देखा ज्यों ही जुटा हुआ;
पाया तब फिर मैंने उनको नीर क्षीर-सा मिला हुआ।

तेरे अति गभीर नाद के भीतर हास्य छिपा रहता।
जब तू मानव-जीवन को है अति क्षण भंगुर दिखलाता।
फिर जब कर आकृति तू भीषण अपना गौरव दिखलाता,
छागा फिर विनयी सा नाचा सपने में भी क्या आता।
तेरे वक्षःस्थल पर नदियाँ जब आ करके गिरती हैं;
कृष्ण प्रेम में पगी गोपिया की भी सो वे लगती हैं।
उन्हें मिलाकर निज शरीर में जग को तू है सिखलाता;
अंत काल यह जगत् समूचा ब्रह्म-देह में मिल जाता।

नाम—(४३१४) गंगाप्रसाद मेहता एम्० ए०।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२९।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—चंद्रगुप्त विक्रमादित्य।

विवरण—उपर्युक्त ग्रंथ बहुत ही गवेषणा-पूर्ण उच्च कोटि का है। ऐसे ग्रंथ रत्नों की हिंदी को आवश्यकता है।

नाम—(४३१५) दौलतरामलाल साहित्यरत्न, न्यायतीर्थ, जव्हेरीबाग, इंदौर।

जन्म काल—सं० १९५६।

कविता-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) भारतोद्धार (नाटक), (२) क्षत्रिय-रत्न (महाकाव्य), (३) जैन-दर्शन, (४) सम्यक्त्व शतक, (५) स्फुट कहानियाँ।

विवरण—यह श्रीयुत नन्हूलालजी के पुत्र हैं।

उदाहरण—

जब से संध्या हुई, तभी से होने लगा भ्रम-श्रृंगार;
छाया मतवालापन मुझमें भूल गई सारा संसार।

हृदय कुंज में मादकता जब नाच रही हो
सौंदर्य झकझोर रहा हो इठलाता
आशा शुभ संवाद सुनाती जब आवे न
तब उँडेलना रसिक रसाली आँखों में

नाम—(४३१२) गदाधरप्रसाद
विशारद, धनी, नागरी, मुँगेर।

जन्म-काल—सं० १९५६।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—अर्थशास्त्र, राजनीति का पारिभा
विवरण—यह कायस्थ कुलोत्पन्न बाबू
'चाँद', 'देश' तथा 'महावीर' पत्रों के सहकारी

नाम—(४३१३) गंगानंदसिंह (कुमार
एल० ए०, एम० आर० ए० एस्०, श्रीन
(बिहार प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—इनकी लिखी हिंदी तथा अँगरेज़ी की
विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हुई हैं।

विवरण—यह साहित्य-सरोज कविकुलचंद्र
सुपुत्र हैं। यह देश तथा विदेश की कई साहि
राजनीतिक संस्थाओं के सदस्य हैं। आप एक

उदाहरण—

सागर! तेरे निकट बैठकर मन चिंता
ज्ञान-ध्यान था जो था जी में, सब
गुण विरोध को तेरे तन में देखा ज्यों हा
पाया तब फिर मैंने उनको नीर क्षीर-सा

नाम—(२११८) नंदकिशोर तिवारी 'निर्वासित', तिवारीपुर (बिहार)।

जन्म-काल—सं० १९६७।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) स्मृति-कुंज, (२) अभिनय।

विवरण—यह 'चाँद', 'महारथी' तथा 'सुधा' के संपादक रह चुके हैं।

नाम—(२११९) पूर्णसिंह (सरदार)।

रचना-काल—सं० १९८०।

विवरण—आपने कई उत्कृष्ट निबंधात्मक लेख लिखे थे। जापान आदि हो आए थे। सुनते हैं, १९८८ के लगभग आपका शरीरांत हो गया।

नाम—(२१२०) प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त', ग्राम निमेज, ज़िला शाहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—यह साहित्याचार्य पं० चंद्रशेखर शास्त्री के पुत्र हैं। आप हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, अँगरेज़ी तथा बँगला भी जानते हैं। इनकी रचनाएँ 'आज', 'सैनिक', 'मतवाला', 'चाँद' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आजकल आप 'विद्यार्थी' का संपादन कर रहे हैं। आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

मुक्त

त्याग जिसने सारा ऐश्वर्य
दुःख का ही है अपना लिया।

लगी रही टकटकी द्वार पर आँखों को न मिला अवकाश;
फिर भी आए नहीं प्राणधन, नष्ट हो गई सारी आश।

नाम—(४३१६) दुलारेलाल भार्गव, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १६५८।

रचना-काल—लगभग सं० १६७६।

विवरण—संपादक माधुरी तथा सुधा। संस्थापक गंगा पुस्तक-माला-कार्यालय, जहाँ से अब तक २२० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, और अन्य प्रकाशित होती जाती हैं। आप बिहारी के ढंग पर अब तक लगभग २०० दोहे लिख चुके हैं। हिंदी में अच्छी अच्छी पुस्तकें गंगा पुस्तकमाला में निकालकर आपने हिंदी की विशेष सेवा की है। साहित्य रचना भी परम श्रेष्ठ करते हैं, जैसा दुलारे दोहावली से प्रकट है। भारतेंदु के पीछे इनके बराबर हिंदी सेवा बहुत कम लोगों से बन पड़ी है।

नाम—(४३१७) द्वारकाप्रसाद मिश्र, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १६५८।

रचना-काल—सं० १६८०।

आप एक बड़े ही होनहार और उत्साही लेखक तथा देश हितैषी हैं। बी० ए० और एल्‌० एल्‌० बी० पास करके आप देश हितै-षिता एवं राजनीतिक कामों में ऐसे संलग्न हो गए कि वकालत करने का अवसर ही न पाया। देश हित के कारण जेल भी जा चुके हैं। 'लोकमत' के जन्मदाता एवं संपादक रहे हैं। पहले वह साप्ताहिक रूप में निकला, और फिर दैनिक हो गया, पर आजकल बंद है। मिश्रजी जबलपुर के प्रसिद्ध रईस और देशप्रेमी सेठ गोविंददासजी के परम मित्र हैं। भारतीय व्यवस्थापक सभा (Legislative Assembly) के सदस्य रहे हैं।

नाम—(४११८) नंदकिशोर तिवारी 'निरासित', तिवारीपुर (बिहार)।

जन्म काल—सं० १९५७।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) स्मृति कुंज, (२) अभिनव।

विवरण—यह 'चाँद', 'महारथी' तथा 'सुधा' के संपादक रह चुके हैं।

नाम—(४११९) पूर्णसिंह (सरदार)।

रचना-काल—सं० १९८०।

विवरण—आपने बहुत उत्कृष्ट निबंधात्मक लेख लिखे थे। जापान आदि हो आए थे। सुनते हैं, १९८१ के लगभग आपका शरीरांत हो गया।

नाम—(४१२०) प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त', ग्राम निनेज, ज़िला शाहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—यह साहित्याचार्य पं० चंद्रशेखर शास्त्री के पुत्र हैं। आप हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, अँगरेज़ी तथा बँगला भी जानते हैं। इनकी रचनाएँ 'आज', 'सैनिक', 'मतवाला', 'चाँद' आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आजकल आप 'विद्यार्थी' का संपादन कर रहे हैं। आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

मुक्त

त्याग जिसने सारा ऐश्वर्य
दुःख को ही है अपना लिया।

लगी रही टकटकी द्वार पर आँखों को न मिला अवकाश।
फिर भी आए नहीं प्राणधन, नष्ट हो गई सारी आश।

नाम—(४३१६) दुलारेलाल भार्गव, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।

रचना-काल—लगभग सं० १९७६।

विवरण—संपादक माधुरी तथा सुधा। संस्थापक गंगा पुस्तक-माला-कार्यालय, जहाँ से अब तक २५० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, और अन्य प्रकाशित होती जाती हैं। आप बिहारी के ढंग पर अब तक लगभग ५०० दोहे लिख चुके हैं। हिंदी में अच्छी अच्छी पुस्तकें गंगा पुस्तकमाला में निकालकर आपने हिंदी की विशेष सेवा की है। साहित्य रचना भी परम श्रेष्ठ करते हैं, जैसा दुलारे दोहावली से प्रकट है। भारतेंदु के पीछे इनके बराबर हिंदी सेवा बहुत कम लोगों से बन पड़ी है।

नाम—(४३१७) द्वारकाप्रसाद मिश्र, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।

रचना-काल—सं० १९८०।

आप एक बड़े ही होनहार और उत्साही लेखक तथा देश हितैषी हैं। बी० ए० और एल् एल० बी० पास करके आप देश हितैषिता एवं राजनीतिक कामों में ऐसे संलग्न हो गए कि वकालत करने का अवसर ही न पाया। देश हित के कारण जेल भी जा चुके हैं। 'लोकमत' के जन्मदाता एवं संपादक रहे हैं। पहले वह साप्ताहिक रूप में निकला, और फिर दैनिक हो गया, पर आजकल बंद है। मिश्रजी जबलपुर के प्रसिद्ध रईस और देश-प्रेमी सेठ गोविंददासजी के परम मित्र हैं। भारतीय व्यवस्थापक सभा (Legislative Assembly) के सदस्य रहे हैं।

नाम—(४२१८) नंदकिशोर तिवारी 'निर्वासित', तिवारीपुर (बिहार)।

जन्म-काल—सं० १९५७।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) स्मृति-कुंज, (२) अभिनव।

विवरण—यह 'चाँद', 'महारथी' तथा 'सुधा' के संपादक रह चुके हैं।

नाम—(४२१९) पूर्णसिंह (सरदार)।

रचना-काल—सं० १९८०।

विवरण—आपने कई उत्कृष्ट निबंधात्मक लेख लिखे थे। जापान आदि हो आए थे। सुनते हैं, १९८१ के लगभग आपका शरीरांत हो गया।

नाम—(४२२०) प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त', ग्राम निमेज, ज़िला शाहाबाद।

जन्म काल—सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—यह साहित्याचार्य पं० चंद्रशेखर शास्त्री के पुत्र हैं। आप हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, अँगरेजी तथा बँगला भी जानते हैं। इनकी रचनाएँ 'आज', 'सैनिक', 'मतवाला' 'चाँद' आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आजकल आप 'विद्यार्थी' का संपादन कर रहे हैं। आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

मुक्त

त्याग जिसने सारा ऐश्वर्य
दुःख को ही है अपना लिया।

उदाहरण—

दयानिधि कर भारत कल्याण ।

क्रोध मद मान हटाकर, लोभ मोह खल द्वेष भगाकर,

हृद-निशातम घोर मिटाकर चमका दो रवि ज्ञान ॥ दया० ॥

कर्म-श्रमण बनें हम, देश क्लेश सर्वत्र हरें हम,

दारिद सब दूर करें हम, होवे पुनरुत्थान ॥ दया० ॥

तंत्रवृत्ति का राज यहाँ हो, त्रिभुवन सुख-साज यहाँ हो,

विश्व गुरु सरताज यहाँ हो, बढ़े देश का मान ॥ दया० ॥

वीणा की झंकार मधुर वह, कृष्णचन्द्र का प्रेमराग वह,

फैल जाय भगवन, घर घर वह सरस एकता तान ॥ दया० ॥

नाम—(५१२७) भगीरथप्रसाद दीक्षित (साहित्यरत्न), लखनऊ ।

जन्म-काल—सं० १९५१ (बटेश्वर के निकट पई, ज़िला आगरा) ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

रचना—स्फुट गद्य लेख तथा पत्र-संपादन । एक काव्य भी बनाया है ।

विवरण—आप बहुत ढूँढ़-खोज करके लेख लिखते हैं । काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से हिंदी लिखित पुस्तकों की खोज में काम करते रहे । आजकल अध्यापक तथा पत्रकार हैं । सम्मेलन-पत्रिका तथा अवध-समाचार के संपादक रह चुके हैं ।

नाम—(५१२८) माखनलाल चतुर्वेदी (मध्यप्रांत निवासी) ।

कविता-काल—सं० १९८० ।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा पत्र-संपादन ।

विवरण—आप कर्मवीर के संपादक हैं । आपके साहित्यिक महत्त्व के विषय में कतिपय महाशयों की सम्मति ऊँची है । आप एक सुकवि और सुलेखक हैं ।

गढ़ में भारी मेला और कवि-सम्मेलन होता है। इस अवसर पर स्वयं श्रीमान् सभापति का आसन ग्रहण करते हैं, तथा श्रीमती महेंद्र महारानी टू देवी भी परदे की आड़ से उपस्थित रहती हैं। सं० १६६० में काशी में पधारकर श्रीमान् ने २०००) वार्षिक का एक पारितोषिक व्रज भाषा की सर्वोत्तम कविता के लिये स्थापित किया है। हिंदी कविता तथा भाषा पर श्रीमान् का अगाध प्रेम है। स्वयं भी अच्छा काव्य लिखते हैं, तथा कविता में विशेष बोध रखते हैं। श्रीमान् के एक सुपुत्र तथा तीन भाई हैं। हम (श्यामबिहारी मिश्र) सं० १६८७ तथा १६८८ में श्रीमान् के दीवान रियासत रहे, और संवत् १६८६ से प्रधान मंत्री (chief advisor) हैं।

नाम—(४३३६) सुशीलादेवी, मुंगेर।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—यह श्रीयुत काशीप्रसाद जायसवाल बैरिस्टर, पटना की ज्येष्ठा पुत्री हैं। इनका श्वसुरालय मुंगेर में है। इनकी कविता प्रायः भक्ति भाव की हुआ करती है। नीचे उद्धृत इनकी कविता देहरादून-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर पढ़ी गई थी, और इस उपलक्ष में इन्हें एक स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया था।

उदाहरण—

विश्व प्रगति के गायक बघो, नित्य नया है तेरा गान,
सरल तरंगों की तानों पर थिरक रही है जिसकी तान।
मेघ-मृदंग, नदी-नद-नूपुर, वात नाद वीणा कर धार,
सुंदर साज सजाकर नटवर, बंद किया चेतन का द्वार।
सात सुरों के सुख सागर पर तैर रहा सारा संसार,
शांत मुग्ध उस नील लता में उठता है मानस-उद्गार।
आदि काल से तू गाता है, मुझको भी अब गाने दे,
ऐ रागी! ऐ चतुर गवैए! लय में लय मिल जाने दे।

नाम—(४२३७) शिवदुलारे त्रिपाठी (उपनाम नूतन) मौरावाँ, जिला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९५६।

रचना-काल—सं० १६८०।

ग्रंथ—(१) नूतन विलास, (२) क्षात्र शिक्षा, (३) दशाष्टक, (४) रईस रहस्य (बन रहा है), (५) रुक्मिणी हरण (बन रहा है)।

विवरण—परमोत्कृष्ट वीर काव्य लिखते हैं। हमारे मिलनेवालों में हैं।

उदाहरण—

> वारी प्यारी लेखनी, दुलारी कविराजन की
> तो में जोर जौहर जमाल है, महत्ता है;
> छूरी औ' कटारी कारी मद हैं बिचारी सारी
> तेरे आगे कुंठित कृपान, कुंद कत्ता है।
> नूतन जू सतत समस्त महिमंडल में
> व्यापि रही नाम अपार तेरी सत्ता है,
> राजा-महराजा उमरावन की चालै कौन,
> तख्त बिहारी देखि चकित चकत्ता है।

नाम—(४२३८) सूर्य वर्मा (बी० ए०)।

जन्म काल—सं० १९६१।

रचना-काल—सं० १६८०।

ग्रंथ—सुबोध रामायण, धनुर्धरत्यक निबंध तथा समालोचनाएँ।

विवरण—सरस्वती के पुराने लेखक हैं। इनके पिता बा० रुद्रनारायण सलटौआ, ज़िला बस्ती निवासी, सरकारी स्कूलों के अध्यापक तथा हिंदी लेखक एवं बँगला के अनुवादक हैं। इनकी कई पुस्तकें स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं।

नाम—(४३३६) हरिभाऊ उपाध्याय। उज्जैन जिले के भौंरासा-नामक ग्राम में उत्पन्न हुए। पिता का नाम प० सिद्धनाथजी है।

जन्म-काल—सं० १९५९।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—कई पत्रों के संपादक रहे हैं।

विवरण—आप बहुत दिन तक 'सरस्वती' में काम करते रहे। पीछे 'प्रभा', 'हिंदी नवजीवन', 'मालवमयूर', सस्ता साहित्य मंडल में काम किया, तथा त्यागभूमि का संपादन करते रहे। उदार देश प्रेम-वश कई बार जेल-यात्रा भी कर चुके हैं। कविता भी नवीन भाव पूर्ण अच्छी करते हैं, तथा बड़े उत्साही सज्जन हैं।

उदाहरण—

कहाँ से लाऊँ चोखे फूल ?
भौंरों ने जूठे कर डाले रहे न सब अनुकूल।
तेरे भक्त फूल चुन लाते पाते मंगल मूल।
पर मैं जब-जब जाता हूँ, काँटे से आता भूल,
काँटों का यह बाग लगाया, काँटा के ये फूल।
अर्पण हैं तेरे चरणों में तीखे तीखे फूल।
कहाँ से लाऊँ चोखे फूल ?

ज्ञान खानि का रत्न नहीं हूँ और न काव्य-कला गुंबद।
मैं तो कोरा क्षार सिंधु के जल का हलका-सा उद्बुद।
ग्रंथ नहीं, जो व्यथा-कथा को जग के उर में लिख पाऊँ
मुक्ताफल हूँ नहीं, स्वर्ग मुंदरिया में आदर पाऊँ।
मैं तो खारे जल का बुद्बुद रीता आता जाता हूँ।
खाली जग में आकर क्षण भर सूने में लय पाता हूँ।

नाम—(४३४०) हेमचंद्र जोशी (बी० ए०)।

विवरण—आप अल्मोड़ा ज़िला निवासी प्रतिभाशाली नवयुवक लेखक हैं। अपनी देश-भाषा से आपको बाल्यावस्था से ही प्रेम रहा है। स्फुट लेखों के रूप में इनकी हिंदी-साहित्य-सेवा, मुख्यतः सं० १९८० में प्रारंभ होकर, आज तक अविरल होती चली जा रही है। अपनी उच्च शिक्षा समाप्त करने पर बहुत दिनों तक आपने 'सत्ययुग', 'दैनिक भारतमित्र', 'कलकत्ता-समाचार' आदि पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया। 'कूर्मांचल-केसरी' के आप जन्मदाता हैं। कुछ काल तक यह महाराजा बस्तर के निजू अमात्य रहे थे, किंतु कट्टर देश-भक्त होने के कारण इन्होंने नौकरी छोड़ दी, और यह देश-सेवा में संलग्न हो गए। औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करने के हेतु इस समय आप योरप में हैं, और वहाँ से लेख आदि लिखकर बराबर हिंदी-साहित्य की सेवा कर रहे हैं।

समय—संवत् १९८१

नाम—(४३४१) कालीप्रसाद त्रिपाठी (श्रीकर) चिलौली, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९५६।

रचना-काल—सं० १९८१।

ग्रंथ—(१) सुबाधव (नाटक), (२) अन्योक्ति शतक, (३) दिल्ली-पतन, (४) जौहर, (५) कौमुदी भाष्य, (६) सुधन्वा-वध, (७) दोहावली भाष्य, (८) गंगा-लहरी पद्यानुवाद।

विवरण—आप पं० कालीकुमार के पुत्र तथा पं० रामकिंकरजी के पौत्र हैं। आपका घराना सदा से संस्कृत के उच्च विद्वानों से अलंकृत रहा है, और इन्होंने स्वयं संस्कृत की उच्च परीक्षाएँ उत्तीर्ण की हैं। ऊपर लिखे हुए ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत में लगभग ५०० श्लोकों का 'वैद्य भूषणम्' नामक ग्रंथ बनाया है। इस समय 'अर्जुन-वध'-नामक एक काव्य ग्रंथ लिख रहे हैं।

उदाहरण—

पिन्हाया कैसा माया-जाल।
फँसकर जिसमें छुट्टी पाना अतिशय कठिन त्रिकाल।
सृष्टिपात से ही इसके कुछ शक्ति था मैं पाल;
किंतु देखकर विश्व-व्यापिनी विभुता हूँ बेहाल।
छोटे-बड़े, पढ़े-अनपढ़, सत-असत, रंक-भूपाल;
एक तंतु भी तोड़ न पाए, थकित गए सब हाल।
करते घृणा जाननेवाले इसकी कुटिला चाल;
पर अज्ञानी उनसे रखते द्वेष महा विकराल।
रज्जु विशाल व्याल-सा इसका हृदय रहा है साल;
'धीवर' वही मुक्त हो सकता, जिस पर हुए दयाल।

नाम—(४३४२) नंदकिशोरलाल 'किशोर' ग्राम भुवनेश्वर, ज़िला दरभंगा।

जन्म-काल—सं० १९२८।

रचना-काल—सं० १९८१।

ग्रंथ—(१) कुसुम-कलिका, (२) महात्मा विदुर (नाटक), (३) बाल-बोध रामायण, (४) आरोग्य और उसके साधन, (५) सूक्ति-धारा।

विवरण—आप कर्ण कायस्थ हैं। आपके पिता का नाम मुंशी मनमोहनलाल है। हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, संस्कृत के अतिरिक्त आपने बँगला भाषा का भी अच्छा अध्ययन किया है। सं० १९८१ में आपने 'मैथिली'-नामक अपनी स्वतंत्र पत्रिका निकाली। अब आप समस्तीपुर में मुख़्तारगिरी करते हैं। आपकी रचनाएँ चक्रवर्ती, विश्वमोहन, वोम पुष्प तरुण भारत, मिथिला मिहिर आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

अली कली में फँसा प्रेम से मत्त बना है;
रस के वश में आज पड़ा सुधि भूल रहा है।
रवि अस्ताचल चला भला अब भी तो चेतो,
अरे प्रिया को चूम-चूम अपना पथ ले लो।
पीछे अपने हाथ को, मल करके रह जायगा;
कमल कली मुँद जायगी, निशि-भर नीर बहायगा।

नाम—(४२४३) मधुसूदन ओझा 'स्वतंत्र', महिला, इटाढ़ी (आरा)।

जन्म-काल—सं० १९५९।

रचना-काल—सं० १९८१।

ग्रंथ—(१) कंस-वध, (२) धर्मवीर, (३) मोरध्वज, (४) समाज दर्पण (अप्रकाशित)।

विवरण—आप पं० जगन्नाथ ओझा के पुत्र हैं। आपकी कविताएँ (राष्ट्रीय) प्राय: पत्र-पत्रिकाओं में निकला करती हैं।

उदाहरण—

आगे कैसे बढ़ूँ, सूझता नहीं भयानक पथ है आज;
पीछे हटना नहीं जानता, रख लो भगवन् मेरी लाज।
आशा तप विश्वास धैर्य है भक्ति पथ के मुख्याधार;
घबड़ाता हूँ नहिं किंचित् डर है तुम पर मेरा रक्षा भार।
मन, वच, कर्म भाव से सब दिन रहूँ धर्म-पालन में लीन;
तप से कभी न विचलित होऊँ, कभी न हो मम साहस हीन।
मर जाऊँ यदि सत्य धर्म हित, यही रहे दिल में अरमान;
अखिल विश्व हित जन्म अनेकों धारण हों मेरे भगवान।
हृदय भक्ति नहिं, भाव शुद्ध है, सब प्रकार से हूँ अति दीन;
इतना बल दे नाथ, हृदय में यही कामना लगी नवीन।

नाम—(४२४४) सूर्यकांत शर्मा, मेघवन, दरभगा।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—लगभग सं० १९८१।

ग्रंथ—(१) सेवाश्रम (उपन्यास), (२) ग्रामसुधार, (३) आदर्श विद्यार्थी, (४) कृतघ्न बंधु, (५) हिंदू धर्म का स्वरूप, (६) नरेंद्र मठ, (७) नर पिशाच माधव, (८) सफलता का साधन, (९) संसार प्रवेश तथा व्यावहारिक ज्ञान, (१०) स्वप्न साम्राज्य आदि।

विवरण—आप कायस्थ हैं। ग्रंथ आपने अच्छे विषयों पर लिखे हैं।

समय—संवत् १९८२

नाम—(४२४५) अनूप शर्मा एम्० ए०, एल्-टी०।

जन्म-काल—सं० १९५० वि०। पिता का नाम पं० बदरीप्रसाद, त्रिपाठी।

स्थान—नवीनगर (सीतापुर)।

वर्तमान पता—हेडमास्टर, खैराबाद।

कविता काल—सं० १९८२ से।

विवरण—कविता वीर रस प्रधान। काव्य-गुरु पं० गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'। सरस्वती, माधुरी आदि पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित होती रहती हैं। पुस्तकें (१) प्रकाशित—सुनाल काव्य और अप्रकाशित—सिद्धार्थ-चरित्र। वीर-काव्य अच्छा रचा है।

उदाहरण—

नाम रतनाकर यथारथ परयो है यातें
चौदहौ रतन धारे सोहवे रहत है,
तरल तरंगनि उमंगनि के संगनि सों
विश्वमोहिनी को मन मोहते रहत है।

निरखि नदी-नद को निपुन निधान एकै
पोहित के तृदनि बिपोहते रहत हैं,
ऐसो कु अजात ! एतो वारिधि भरयो तौ क्या
रावरी कृपा की कोर जोहते रहत है।
मगन गगन है तुम्हारी भजनावली में
कोकिल कपोत कीर के समान कूजा को,
मिरदंग बजे हैं घने घट घनराज के ये
सुनियत सानी न तिलोक में कहूँ जाको।
ठाढ़ी निशि-बासर ले आज दीप धूप लैके
चाँदनी की आरती लै भोग कंद फूआ को,
ध्याइए न नेकौ बार खोलिए दया के द्वार,
प्रकृति पुजारिनी खड़ी है नाथ पूजा को।

धावनैं क्यों न पठावती द्वार थकी मग जाय घरी घरी आँखें।
क्यों न पियै अभिनंदन काज पिरोवतीं मोतिन की लरी आँखें।
क्यों न सँवारती री मकरंद, अरी अरविंद की पाँखुरी आँखें,
ढारतीं क्यों न कपोलन पै वे बड़े-बड़े बूँद भरी भरी आँखें।

नाम—(४२४६) अवधकिशोरसहाय वर्मा 'चारु', ग्राम कचनपुर, जिला गया।

जन्म-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—दर्शन और शिक्षा विषयक स्फुट लेख।

विवरण—आपने अपनी उच्च शिक्षा काशी विश्वविद्यालय में प्राप्त की, और वहीं से इन्होंने बी० ए० तथा एम्० ए० की उपाधियाँ लीं। तर्क-शास्त्र पर भी आपने परिश्रम किया है। इस समय आप राँची ट्रेनिंग कॉलेज में हिंदी-साहित्य के अध्यापक हैं, और 'चित्तौरोद्धार' नामक छंदोबद्ध काव्य लिखने में व्यस्त हैं। सामयिक मासिक पत्रिकाओं में समय-समय पर आपके लेख निकला करते हैं।

नाम—(४३१७) उमाशंकर वाजपेयी (एम्० ए०, उमेश)।
जन्म-काल—माघ कृष्ण २, संवत् १६६५। लखनऊ में।
पिता का नाम प० अंबाराम वाजपेयी।
विवरण—एक बार हिंदोस्तानी एकेडेमी से आपको १००) का पुरस्कार अच्छी रचना पर मिला। हम लोगों को आप अपनी रचना सुनाया करते हैं। आप एक सुकवि और होनहार लेखक हैं। मुचकुंद चरित्र खंड काव्य प्राय १०० पृष्ठों का रचा जो अप्रकाशित है।

उदाहरण—

चाहत न रिद्धि सिद्धि संपत्ति तुम्हीं सौं नाथ,
चाहत न रूप वपु कीरति सुहावनी।
चाहत न राज के समाज सुख साज बहु,
चाहत न दिव्य वस्त्र भूषन प्रभा घनी।
चाहत न चिंतामनि मंडित मुकुतधाम,
चाहत न नाग वाजि वाहन महा बनी;
चाहत 'उमेश' एक लाड़िली के पाँयन की
बृंदावन कुंज की पुनीत रज की कनी।

हिमालय के प्रति

उठु-उठु स्यागु आजु थिरता हिमचल तू,
मेरी हाँक सुनि क्यों न ऊपर उछरतो;
मौन बनि बैठ्यो, तोहिं लाज हू न आवै मूढ़,
कैसे निज गौरव को हाय ! तू बिसरतो।
सुकवि 'उमेश' बोलि लेतो क्यों न बंधुन को,
क्यों न यदि बैरिन पैं बज्रपात करतो;
देखि देखि दीनन की दारुन दसा को आजु
कुटिल कुचालिन पैं टूटि क्यों न परतो।

उत्तर नूतन

कौन निज नाम रूप गुण से अजान तुम,
इस अवनी के अनमोल आभरण से,
देवदूत से हो कहो कौन द्युतिमान तुम,
मोती से सरस शुचि मेघ वारि-कण से।
वारिधि में वीचि के प्रथम श्वास से हो तुम,
कौन लघु जीवन के एक स्वर्ण क्षण से;
उतरे न जाने ऊ न जाने किस लोक से हो,
शिशु तुम कौन नवशशि की किरण से।
प्रेम मसि अंकित तुम्हारी मंजु मूर्ति वह
मिटती कभी न मृदु मानस-दुकूल से,
जन मन भाई शुभ सहज सुनाई सदा,
अति भयदाइ दुख जाते सब भूल-से।
चन्द्रकान्तमणि से भी शीतल स्वभाव के हो,
कांति में मदन से कि शांति सुख मूल से;
मधु ऋतुवाली हरियाली में सुहृद तुम
कौन निज डाली में रहे हो फूलि फूल से।

नाम—(४२७८) कौशलेंद्र राठौर, डालूपुर, फ़र्रुखाबाद।

जन्म-काल—सं० १९६०।

मृत्यु-काल—सं० १९८७ में अग्नि प्रकोप से मृत्यु।

विवरण—आप खुमसिंहजी राठौर के पुत्र थे। आपने काव्य-शास्त्र का अध्ययन किया। हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, संस्कृत, अँगरेज़ी आदि भाषाओं का आपको अभ्यास था। कविता अच्छी रचते थे।

उदाहरण—

सदय बड़े हो है सदयता तुम्हारी गेय,
छोड़ते न आन अपनी हो किसी हाल में;

रखते अचल अनुराग हो सभी के प्रति
　　बाँध रक्खा वैरियों को भी है प्रेम जाल में।
कौशलेंद्र कुशलता तुम्हारी ही शरण लेती,
　　खो रही तुम्हीं को है दरिद्रता दुकाल में;
शांति पाती है तुम्हारी छाया में निदाघ धूप,
　　शीत तपता है मुट्ठियों में शीत काल में।

उनपै अपनो मन वारिए ना, जो सनेह की जानत रीति नहीं,
जहँ नेह नए नित लागे नए सो है तहँ की कछु प्रीति नहीं;
छल स्वारथ को है लगाव जुरो, यह प्रेम औ नेम की नीति नहीं,
उनसों हित कीन्हें कहा फल है, जिनके हित की परतीति नहीं।

नाम—(४३७६) चंद्रमाराय शर्मा विशारद।

जन्म काल—सं० १९४७।

रचना काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) धारा प्रकाशिका, (२) नलोदय, (३) आरत भारत, (४) त्रिपथगा, (५) गद्य-गमक, (६) पंचगव्य, (७) पिंगल प्रबोध, (८) सतसई टीका, (९) रामचंद्रिका टीका, (१०) विचार मीमांसा, (११) हिंदी निरुक्त व्याकरण, (१२) विवेक-बोध, (१३) व्याकरण बोध।

विवरण—आप दामोदरपुर, ज़िला बलिया निवासी पंडित रामप्रतापराय के पुत्र तथा हिंदी के उत्साही लेखक हैं।

नाम—(४३८०) जगन्नाथ मिश्र गौड़ 'कमल' धाकरगंज (पटना)।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४७।

कविता काल—लगभग सं० १९८२।

विवरण—आप खड़ी बोली के सुकवि हैं।

उदाहरण—

जगत में सबका नियमित नाश।
उषा का वक्रिम भृकुटि विलास,
निशा का किंचित् मंजुल हास,
छटा का यह सुंदर शृंगार,
प्रकृति का है स्वच्छंद विहार।
चंद्र-मंडल का रजत प्रकाश,
गगन-मंडल का पुष्पित वास।
घटाओं का यह अद्भुत मेल,
प्रकृति का है क्षणभंगुर खेल।
कुसुम-कलियों की मृदु मुसकान,
हरित विटपा की छवि अम्लान,
ललित लतिका कुसुमित द्रुम वृंद,
चटकना कलिका का स्वच्छंद।
सभी में है सौंदर्य - विकास,
सभी का होता तो भी ह्रास।
क्षणिक है जीवन स्वप्न विकाश,
जगत में सबका नियमित नाश।

नाम—(४३५१) भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', ग्राम आनंदपुर, ज़िला दरभंगा।

जन्म-काल—लगभग सं० १६६३।

रचना-काल—सं० १६८२।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—आप महाराजा दरभंगा के वंशज हैं। इनके प्रपितामह और वर्तमान महाराजा साहब दरभंगा के पिता सहोदर भ्राता थे। आप मैथिल ब्राह्मण प० मदनेश्वरसिंह के पुत्र हैं। इन्होंने सं०

१९८२ से पत्र पत्रिकाओं में लेख लिखना प्रारंभ किया। इनके लेख सरल गद्य अथवा पद्य के अतिरिक्त समालोचनात्मक भी हुआ करते हैं। आपके और दो भाई हैं, और ये तीनो मिलकर 'सिंह-बंधु' के नाम से लेखन-कार्य किया करते हैं। अपने पूज्य पिता की स्मृति में आपने मुज़फ़्फ़रपुर से 'लेखमाला'-नामक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका अपने ही संपादकत्व में निकाली है। आप खड़ी बोली में अच्छी रचना करते हैं।

उदाहरण—

> छलछल छलक रहा है तेरे यौवन-मदिरा का प्याला,
> किस विषाद में किंतु कमल मुख बना हुआ है यों काला।
> सरल हृदय में सुख देने को आई! गरल ने किया निवास,
> मंजु भाषिणी! मृदुल हँसी के बदले यह कैसा निश्वास।
> विरह विधुर यह अधर सुधा की झलक दिखाई देते हैं,
> नयन कोण में छिपे अश्रु-कण हृदय चुरा ही लेते हैं।

नाम—(४३१२) भैरवगिरि गोस्वामी ग्राम कुमना, ज़िला सारन (बिहार प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९५७ (७ मार्च, सन् १९००)।

रचना काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—भारति विजय (खंड काव्य)।

विवरण—आप संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् पं० दुर्वासा ऋषि विद्यावाचस्पति के पुत्र हैं। आपने १९७३ में 'काव्यतीर्थ' और १९७९ में 'सांख्यतीर्थ' परीक्षाएँ पास कीं। तथा कुछ काल पर्यंत 'मित्रम्'-नामक संस्कृत-पाक्षिक पत्र के संपादकीय विभाग में काम किया। आपकी कुछ रचनाएँ 'माधुरी' और 'आयुर्वेद प्रदीप' में प्रकट हुई हैं। इस समय आप मुज़फ़्फ़रपुर में एक स्कूल के संस्कृत-अध्यापक हैं।

उदाहरण—

तम व्योम व्यापी सब तक गिरा का ठहरता,
दिशाएँ दीप्तात्मा जब तक न तिग्मांशु करता।
प्रयत्नोत्साहों की पवन यदि होव भटकती,
घटा चिंताभा की हृदय नभ में तो न टिकती।
लखी थी वैदेही कुशल कपि ने यद्यपि नहीं,
उन्हें भासा तो भी दृग निकट हों ज्यों वह कहीं।
छिपी भावी बातें हृदय दिखलाता विशद है,
क्रिया में उत्साही निपुण जब होता निरत है।
प्रशाखा का यों ही प्लवगवर ने ध्यान धरके,
तजा प्राचीरा को उछल तनु सकोच करके।
घनी की डालों पै वह महावीर ठहरे,
जहाँ शोभा देते बहुविधि लगे पादप हरे।

नाम—(४६६३) मनोरंजनप्रसाद एम्० ए०, ग्राम सूर्यपुरा, जिला शाहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९६० ।

रचना काल—सं० १९८२ ।

ग्रंथ—'राष्ट्रीय मुरली' (राष्ट्रीय कविताओं का एक संग्रह)।

विवरण—आप बाबू राजेश्वरप्रसाद सब-जज के सुपुत्र हैं। अब आपने डुमराँव को ही अपना निवास-स्थान बना लिया है। आपने अपनी प्रखर प्रतिभा से अपने छात्र-जीवन ही में विशेष कीर्ति प्राप्त कर ली थी। बी० ए० की परीक्षा में हिंदी और अँगरेज़ी-साहित्य लेकर आप सर्वप्रथम होकर उत्तीर्ण हुए। आपकी हिंदी-परीक्षा लेने में हम (रायबहादुर श्यामविहारी मिश्र) ने आपके उत्तर पत्र से विशेष संतुष्ट एवं प्रसन्न होकर आपको एक प्रशंसा पत्र दिया। 'फिरंगिया' नामक प्रसिद्ध गीत के आप ही रचयिता हैं।

आपकी कविताएँ 'शिक्षा', 'साहित्य पत्रिका' (आरा), 'पाटलिपुत्र'- 'प्रताप', 'मर्यादा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुकी हैं।

उदाहरण—

इस सुभग उद्यान में किस शान से
आज तू फूली हुई है मालती।
चंचरीकों पर तथा मरहूद पर,
माधुरी अपनी सभी पर डालती।
मुग्ध भौंरा है तुझे अवलोक कर,
पास तेरे भनभनाता बार-बार,
तेरे ही गहने पहनकर षोडशी
कर रही हैं सोलहो अपना शृंगार।
मालती यह मोहनी तव गंध है,
रंग भी तेरा है चटकीला बड़ा;
ज्ञात होता है मनो इस बाग में
हो पड़ा एक शुभ्र मोती का घड़ा।
याद रख पर मालती यह दिन सदा
एक-सा रहता नहीं संसार में,
आज सुख का जिस जगह डेरा पड़ा,
दुःख होगा कल उसी आगार में।
आज तू फूली हुई है शान से,
है सुरभि चारों तरफ फैला रही।
कल वही मैं देख लूँगा बाग में
चूमती है तू पड़ी रहकर मही।
जो भ्रमर था देख तुझको गूँजता,
भूल भी तुझको न पूछेगा वही।

जो पवन पगला तुझे है झल रहा,
देखना कल धूल झोंकेगा वही।
रंग चटकीला तेरा मिट जायगा,
और माली भी न पूछेंगे तुझे।
लात मारेंगे तुझे सब हाथ सब,
यह धरा ही बस शरण देगी तुझे।
मा धरा की गोद में रहकर पड़ी,
मालती हरदम कहेगी तू यही—
देख लो लोगो ! ज़रा फैला नज़र,
एक-सा दिन है सदा रहता नहीं।

नाम—(४११४) रामकुमार वर्मा (कायस्थ), प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—साहित्य-समालोचना तथा कबीर का रहस्यवाद।

विवरण—जूनियर लेक्चरार हिंदी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

नाम—(४११५) रामवचन द्विवेदी 'अरविंद', ग्राम दुमौली, जिला शाहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९६२।

मृत्यु-काल—सं० १९८६।

ग्रंथ—(१) वर्षा-वृत्त, (२) हिंदी संदेश, (३) विनय, (४) वीरों की वाणी, (५) श्रीकृष्ण-संदेश आदि।

विवरण—आप प० रामभजन द्विवेदी के पुत्र तथा सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनकी रचनाएँ मुख्यतः वीर-रस पर हैं। आप एक सुकवि थे।

उदाहरण—

वीरों का कड़खा

होते हैं विकराल आज हम थे जो योगी;
भूमि विपक्षी विशिख वृंद से मंडित होगी।
उल्लू श्वान शृगाल लाश पर लूट लड़ेंगे;
काक चील औ गीध जाल को खींच धरेंगे।
जाते हैं रणभूमि में, शत्रु सैन्य थहरायँगे;
'एक लिंग जय' बोलकर, शोणित नदी बहायँगे।
विपुल वीरता शौर्य धीरता मन धर लेंगे,
त्याग निठुरता शौर्य ओजमय उर कर लेंगे।
देंगे घाव कराल धनुष टंकार करेंगे;
लखकर रुधिर प्रवाह न पीछे पैर धरेंगे।
जाकर हम रणक्षेत्र में, चंडी नृत्य कराएँगे;
'एक लिंग जय' बोलकर शोणित नदी बहाएँगे।

नाम—(४२२६) वैद्यनाथ मिश्र 'विहल', हुसेनगंज, लखनऊ।

जन्म काल—सं० १९५२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० गंगाप्रसादजी मिश्र के पुत्र तथा बख़्तावरखेरा (ज़िला रायबरेली) के निवासी हैं। अब आपका स्थायी रूप से रहना लखनऊ में होता है। आप हिंदी तथा उर्दू दोनो में अच्छी कविता करते हैं।

उदाहरण—

छैलवा छबीले की छूटन छबि छीनी छाप
छहरि रही है छतियन में छबीली के;

चंद्र-चाँदनी में चारु चमकि रहे हैं चख
चतुर चितेरे चित चाहक सुदीठी के।
रास हूँ रचाइ रंग भूमि में रसिकराज,
रंग रूप रँगि रहे 'सिद्ध' रँगीली के।
काजल की कोठरी में केसहू कहूँ ते जाय,
भावत कठिन बिनु कालिख करीखी के। (माधुरी)

नाम—(९३१०) त्रिभुवननाथसिंह, 'सरोज' बिसवाँ, ज़िला सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १९६०।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—राधा विनय-पचीसी (अप्रकाशित)।

विवरण—आप ठाकुर गंगाबख्शसिंह, ताल्लुक़ेदार रामपुर कलाँ बिसवाँ के तृतीय पुत्र श्रीवास्तव कायस्थ हैं। इन्होंने ताल्लुक़ेदार-स्कूल, लखनऊ तथा ला मार्टीनियर-कॉलेज में शिक्षा पाई है। ब्रजभाषा के यह केवल अनन्य भक्त ही नहीं, वरन् खड़ी बोली में काव्य-रचना के प्रकट रूप से विरोधी हैं। रचना ऊँची श्रेणी की करते हैं।

उदाहरण—

अमल अकास भयो सजन सलान लागे,
फूले इंदीवर भौंर और गुंजरन की।
धारि सिर छत्र चंद विहँसत मंद मंद,
आभा त्यों अमंद छबि बाढ़ी उडुगन की।
बहत 'सरोज' सौंधी परिमल सनी पौन,
स्वच्छ सरितान सों है जोरी सारसन की।
प्रकृति बधाई मानो जगत को देन आई,
सुखद सोहाई ऋतु सरद है मन की।

उदाहरण—

मैं हूँ तेरा अनुचर प्रभो, मोह अज्ञान-ग्रस्त,
संसारों की प्रगति लख हूँ नित्य उद्गाद त्रस्त।
उद्योगी हूँ, तदपि रहता सर्वदा रिक्त हस्त,
क्षुधा-मुग्धा जपन करता त्याग स्वामी प्रशस्त।
नाना रोग ग्रसित रहता, लालसा वृद्धि पाती,
चिंता में है निशि दिन प्रभो, विश्व माया लुभाती;
आशा से है यदपि मन को धैर्य होता सदा ही,
पर होती है विफल जब, तो दुःख होता बड़ा ही।
यों ही मेरा प्रतिदिवस है व्यर्थ ही बीत जाता,
है कोई भी फलित मुझसे कार्य होने न पाता,
अज्ञानी हूँ, दस दिसि प्रभो, दीखता है अँधेरा,
घनश्यामा, बस अधिक क्या, ज्ञात ही हाल मेरा।
मेरी नौका भव जलधि के मध्य में डूबती है,
कैसे जाऊँ सुतट पर केवट तो ना पता है;
रक्खो जीता अतल जल में, या मुझे दो हुबा ही,
मैं तो तेरी शरण अब हूँ हो कृपा या कृपाही।

नाम—(४२८१) लक्ष्मीनारायण गुप्त 'अमौलिक' जालौनवाले।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—सं० १९८६।

विवरण—पिता रामचंद्र अग्रवाल। सपन्न घर के पुरुष। आप बड़े ही उत्साही तथा होनहार लेखक हैं। अमौलिकजी खड़ी बोली के सुकवि तथा श्रेष्ठ समालोचक हैं। आपने कई ग्रंथ आधे आधे लिखे हैं, जो शीघ्र ही पूरे होंगे, ऐसी आशा है।

उदाहरण—

> चिरवोच्छ्वास भरे आँखों से
> रुलाते हैं कहीं समीप,
> खोते! तुमने हा पाते हैं
> ये झिलमिल तारा के दीप।

नाम—(४३८४) शारदाप्रसाद 'भटारो' हरकुलियन प्रेस, मुजफ्फरपुर।

जन्म-काल—सं० १९६१।

विवरण—सुकवि।

उदाहरण—

जिज्ञासा

> यमुना तट पर खड़ा शान्त हो
> निरख रहा था मन भविता;
> फूलों की मंजुल कलियों को
> देख विहँसती थी सरिता।
> नील गगन से झाँक-झाँककर
> तारागण मुसकाते थे;
> थिरक-थिरककर चन्द्रचय
> आज आनन्द मनाते थे।
> पुष्पों की माला लेकर
> मंथर गति से वह आती थी,
> उस छवि की मंजुल चितवन
> रसिकों का चित्त चुराती थी।
> आकर रुकी, हँसी, फिर बोली
> "तुम क्यों यहाँ खड़े हो?

बदन बन मा [illegible] दूर
क्या तुम पथ भूल पड़े हो ?
अथवा उस घनश्याम मूर्ति से
तुम भी गए ठगे हो ?
या मुझ-सा [illegible] को विनष्ट
करने पर उद्यत हो ?"

समय—संवत् १९८७

नाम—(४३८९) अवधबिहारी श्रीवास्तव 'बिहारी', बिहार, पकड़ी नरोत्तम, सतजोड़ा बाज़ार, सारन ।

जन्म-काल—सं० १९६२ ।

रचना-काल—सं० १९८७ ।

विवरण—आप सुकवि हैं ।

उदाहरण—

चिता

अरी चिते ! चित-बीच सर्प-सा
यह तेरा हँसना कैसा ?
ज्वाला की कल किलकारी-सा
भयकारी हँसना कैसा ?
धधक धधककर जल उठती है,
कभी मंद पड़ जाती है ;
जग की यह निराशा काया
दृश्य प्रकट दिखलाती है ।
वन देवी-सी सरित-कूल पर
अनुपम तेज-राशि लसती,
किंवा साधिका-सी निर्जन में
शिव शव पर जो हँसती ।

उत्तर नूतन

सुमन में नवरस

पवन के पावनतम 'शृंगार',
उषा के मृदु मनोहर 'हास',
सुमन से सीखे सब संसार
'शांत' चित ज्यों मृदु विकास।

सुमन, मन भरा तेरी ओर
'भयानक' आतुरता आवेश
खींचता 'अद्भुत' गति चितचोर
'वीर' ता के सुंदर संदेश।

'रौद्र' का 'विरस' करेगा भाल
तुम्हें-सा क'करुणा' विभव विभोर,
फूल ! पर मत निज गौरव भूल,
धूल मिल फिर फूलोगे फूल।

नाम— (४२८६) नवलकिशोर झा 'नवल', सोन्हौली, तारापुर (मुंगेर)।

जन्म काल—सं० १९६२।

विवरण—सुकवि।

उदाहरण—

कविते !

वाणी-वीणा-झनकार कहूँ, कविवर हिय का उद्गार कहूँ,
मंगलमय मंजु मलार कहूँ, या सुख-सरिता की धार कहूँ।
घर विमल वसंत-बहार कहूँ, या सरस्वति-शोभा सार कहूँ
क्या सु-रति हृदय का मार कहूँ,या कामिनि-कांत-दुलार कहूँ।
जीवन नौका - पतवार कहूँ, झंकरित सुप्रेम सितार कहूँ;
क्या नव सुंदरि-शृंगार कहूँ, या भ्रमर भ्रमरि गुंजार कहूँ।

कविते ! मन माहक वार करूँ, या नवजीवन-संचार करूँ,
प्रया प्रेमी का आधार करूँ, या मदन सुमन का हार करूँ !

नाम—(४३८७) विमलादेवी सोमानी, हैदराबाद ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६३ ।

रचना-काल—सं० १९८७ ।

विवरण—आपके लेख सामाजिक क्रांति उत्पन्न करनेवाले हुआ करते हैं । आप (Circle Insp) बा० कन्हैयालाल की धर्मपत्नी हैं ।

नाम—(४३८८) सूर्यकरण 'पारीक' पुरोहित एम्० ए० ।

जन्म-काल—सं० १९६० ।

रचना-काल—सं० १९८७ ।

ग्रंथ—(१) काना कुसुमांजलि (गद्य-काव्य), (२) रतिरानी काव्य (प्रकाशित), (३) वेलि क्रिसन रुकमणीरी (राठौर महाराज पृथ्वीराज कृत, संपादित राजस्थानी काव्य, प्रकाशित हिंदुस्थानी एकेडेमी द्वारा), (४) ढोला मारू रा दूहा (संपादित) प्रकाशित नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी सन् १९३३, (५) हिंद-गद्य सुमन-माला संग्रह, (६) राजविलास कवि मान कृत (संपादित), (७) राउ जैतसी रउ छंद डिंगल भाषा (८) राजस्थानी वारों की कहानियाँ, (९) गारा बादल की बात, (१०) मौलिक पद्य का संग्रह, (११) ज्योत्स्ना गद्य काव्य ।

विवरण—बिड़ला कॉलेज पिलानी, जयपुर के वाइस प्रिंसिपल हैं । जन्म स्थान बीकानेर राजपूताना है । संपादक तथा गद्य-काव्य प्रणेता हैं । अच्छे विषयों पर श्लाघ्य श्रम किया है । आपकी पुस्तकें उपादेय हैं । संख्या ५, ६ ८ के अतिरिक्त अन्य समग्र पुस्तकों की रचना तथा संपादन पुरोहितजी ने अपने मित्रों के सहयोग से किया है । १ ठाकु० रामसिंह एम्० ए०, २ श्रीप० नरोत्तमदास

स्वामी एम्० ए०, रा० ब० चाँदसिंह तथा इन्होंने प्रेमाधन नाम से सं० १९८० में मा० सभा स्थापित कर के सब पुस्तकें तैयार कीं, जिसकी प्रथमा पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा तथा बाबू श्याम-सुंदर दास आदि सज्जन न कर रहे हैं।

समय—संवत् १९८८

नाम—(४३८९) जगदीशप्रसाद 'गिरीश'।

जन्म-काल—सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८८।

ग्रंथ—(१) मुक्ति का द्वार, (२) स्फुट छंद।

विवरण—मैनपुरी निवासी पं० सत्यनारायण अग्निहोत्री थाने-दार के पुत्र। आजकल महावाँ में रहते हैं। उद्धत देश प्रेम के कारण दो बार कारागार हो आए हैं।

उदाहरण—

हृदय, तू चल अनंत की ओर,
इस विस्तृत तम पूर्ण विश्व में हो स्मृति का दीप।
सखे, खोजता तुम्हें पुकारूँ, आते रहो समीप।
छिपे किस निर्जन में चितचोर!
क्या होगा जल हीन मीन का, स्वाति बिना चातक का हाल?
सरसिज की रवि-रहित दशा पर दृष्टि दया कर देते काल।
कहाँ है इस आशा का छोर?
हृदय, तू चल अनंत की ओर।
(एक मित्र की मृत्यु पर लिखित)

नाम—(४३९०) जगदंबाप्रसाद शर्मा 'कलाधर'।

जन्म-काल—सं० १९६६ (पेसारा, जिला जौनपुर)।

रचना-काल—सं० १९८८।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—(१) अभिमन्यु-वध, (२) श्यामनीति, (३) ध्रुव-चरित्र, (४) सीय स्वयंवर, (५) स्फुट छंद ।

विवरण—साँडी, ज़िला हरदोई के पं० राधाकृष्ण मिश्र के पुत्र। इंट्रेंस पास। कुछ संस्कृत, उर्दू भी जानते हैं। आजकल भगवत नगर-हाइस्कूल के अवैतनिक हिंदी अध्यापक हैं। होनहार कवि हैं।

उदाहरण—

कमल-दाम सुहीरक हार सी, छवि मई रवि-कांति लजावनी ,
सकल कल्मष हारिणि पावनी, सतत विष्णुपदी उर वासिनी।
सुभग वीन धरे कर मंजु में, वसन शोभित पीत प्रभामयी;
मुनुक कंकण किंकिन को करें, सदय हो करुणामयि भारती।
(सीय स्वयंवर से)

चौपाई

कबहुँ न नर को करिय हँसाई ; श्याम भाग्य जाना नहिं जाई।
गुण सिखियो बहुधा सुखदाई , श्याम गुणहि को हानि बड़ाई।
ज्ञानी एक मिलत बहुतेरे ; श्याम सदा भारत न मरे।
(श्यामनीति से)

बस यही हमारी चिंता है, जो चिता तुल्य उठ उठती है;
जिसकी भारी ज्वाला के आगे बुद्धि नहीं कुछ करती है।
फिर चक्र-व्यूह का भेद हम कैसे तोड़, कुछ ज्ञान नहीं ;
अब ऐसे समै करें क्या हम ? झट कह देना आसान नहीं।
बस यही माजरा है सारा, जो पुत्र तुम्हें बतलाया है;
यह ही था शोक-भेद सब कुछ, जो हमने तुम्हें जताया है।
(अभिमन्यु वध से)

नाम—(४३६४) रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'।

जन्म-काल—सं० १९७१ ।

रचना काल—सं० १९८३।

विवरण—यह महाशय मातादीन्जी शुक्ल के सुपुत्र हैं। इनकी कहानियों में रूसी लेखकों का सा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पाया जाता है। कविताओं में भी उतनी ही परिपक्वता और आकर्षण है, जितना कहानियों में। समालोचना करने का ढंग भी इनका नया है। कई उपन्यास लिख चुके हैं, जो अप्रकाशित हैं। पत्र पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ आदर का स्थान पाती हैं। इस समय लखनऊ विश्वविद्यालय में, बी० ए० फ़ाइनल में, पढ़ रहे हैं।

१९७६—८० के अन्य कवि गण

समय—संवत् १९७६

नाम—(४३११) परशुराम चतुर्वेदी।

जन्म-काल—सं० १९५१।

ग्रंथ—बलिया ज़िले का इतिहास तथा साहित्य समालोचना आदि।

विवरण—जौही, ज़िला बलिया निवासी प० रामछ्बीले के पुत्र हैं। पाश्चात्य दर्शन में आप एम्० ए० हैं।

नाम—(४३१६) पूर्णानंद शास्त्री।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५४।

ग्रंथ—उत्सव-तत्त्व, शिवा विधि और हिंदी-कविता नामक आपके छोटे ग्रंथ हैं।

विवरण—यह जैनाबाद, ज़िला गुड़गाँव के रहनेवाले ब्राह्मण हैं। आपने हिंदी और संस्कृत की कविता की है।

नाम—(४३१७) महेशप्रसाद (महादेवप्रसाद) मिश्र 'रसिकेश', गोरखपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५६।

कविता-काल—लगभग सं० १९७६।

नाम—(४४०१) गौरीशंकर द्विवेदी।

जन्म-काल—सं० १९५०।

रचना-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—बँगला दिनचर्या का अनुवाद।

विवरण—गोरखपुर जिले में जन्म। सं० १९८४ में हिंदी-साहित्य सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा में उत्तीर्ण। तृतीय खंड शास्त्री-परीक्षा पास हैं। इतिहास और दर्शन के अध्यापक थे। सं० १९८७ से 'कल्याण' के सहकारी संपादक हैं।

उदाहरण—

अनंत गीत

कल-कल कल-कल बहती जाती सतत सरिता अविरल।
　　विश्व विहान सुनाता शून्य पल,
　　　　पथ अनंत छाया है अविचल।
　　निरालय अगणित सिकता तल,
　　　　होता झिलमिल झिलमिल झिलमिल।

नाम—(४४०२) पिंगलसिंह।

ग्रंथ—भाव भूषण।

विवरण—आप प्रथम सिहोर में रहते थे, किंतु अब भावनगर में रहते हैं। उक्त ग्रंथ आपने भावनगराधीश महाराजा भावसिंहजी के नाम से बनाया है।

उदाहरण—

　　यौवन उमंगवारी, वारिज-से नैनवारी,
　　　　अमृत से बैनवारी, हाव भाव भारी है,
　　मदन हुलासवारी मद मंद हासवारी,
　　　　बदन प्रकासवारी चंद उजियारी है।

मोतिन की माँगवारी, अधर प्रवालवारी,
हसन की चाँदवारी, नेक छवि न्यारी है ;
'पिंगल' कहत ऐसी सुन्दरी नारी संग
नेह ना कियो, तो नहिं वृथा देह धारी है ।

नाम—(४४०३) वख्तोराम ।

ग्रंथ—पक्षी विलास (नायिका भेद) ।

विवरण—यह अणहिलपुर-पाटन के ओस्याण ग्राम के निवासी तथा राधावल्लभ चारण के पुत्र हैं ।

नाम—(४४०४) वाडीलाल मोतीलाल शाह ।

विवरण—अहमदाबाद निवासी श्रीमाल जैन । आप गुजराती जैन हितेच्छु के संपादक हैं । हिंदी मातृभाषा न होने पर भी हिंदी के अच्छे लेखक हैं ।

नाम—(४४०५) मुकुटधर पांडेय ।

जन्म-काल—सं० १९५२ ।

रचना-काल—सं० १९७७ ।

ग्रंथ—(१) समाज-कंटक, (२) कार्त्तिक-माहात्म्य, (३) हृदयजीत युवक ।

विवरण—यह बालपुर ज़िला बिलासपुर निवासी चिंतामणि पांडेय के पुत्र हैं । आप प्रकृति पूजक हैं । करुणा तथा सहृदयता का आपकी रचना में अच्छा मिश्रण है । आजकल इनका मस्तिष्क कुछ बिगड़ गया है ।

उदाहरण—

खींच रहा था हल आतप में बूढ़ा बैल एक सत्रास ;
उसे देखकर विकल बहुत हो पूछा मैंने जाकर पास—
"बूढ़े बैल, खेत में नाहक क्या दिन भर तुम मरते हो ;
क्यों नहिं चरागाह में चलकर मौज मजे से करते हो ?"

नाम—(४४०१) गौरीशंकर द्विवेदी।

जन्म काल—सं० १९५०।

रचना काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—बँगला दिनचर्या का अनुवाद।

विवरण—गोरखपुर ज़िले में जन्म। सं० १९८४ में हिंदी-साहित्य सम्मेलन की उत्तमा-परीक्षा म उत्तीर्ण। तृतीय खंड शास्त्री-परीक्षा पास ह। इतिहास और दर्शन के अध्यापक थे। सं० १९८८ से 'कल्याण' के सहकारी संपादक हैं।

उदाहरण—

अनंत गीत

कल-कल कल-कल बहती जाती सतत सरिता अविरल।
निरप विहीन सुनील शून्य थल,
पथ अनंत छाया है अविचल।
निरालंब अगणित सिकता दल,
होता झिलमिल झिलमिल झिलमिल।

नाम—(४४०२) पिंगलसिंह।

ग्रंथ—भाव भूषण।

विवरण—आप प्रथम सिहोर में रहते थे, किंतु अब भावनगर में रहते हैं। उक्त ग्रंथ आपने भावनगराधीश महाराजा भावसिंहजी के नाम से बनाया है।

उदाहरण—

यौवन उमगवारी, वारिज-से नैनवारी,
अमृत-से बैनवारी, हाव भाव भारी है,
मंद्रल हुलासवारी मद मंद हासवारी,
बदन प्रकासवारी चंद उजियारी है।

मालिन की मालधारी, अधर प्रवालधारी,
हसन को चालधारी, नेक छवि न्यारी है;
'पिंगल' कहत ऐसी सुप्यारी नारी सग
नेह ना कियो, तो एहि वृथा देह धारी है।

नाम—(४४०३) वजीराम।

ग्रंथ—वक्षी विलास (नायिका भेद)।

विवरण—यह अविगढ़-बाबा के जोध्यारण ग्राम के निवासी तथा राधावल्लभ चारण के पुत्र हैं।

नाम—(४४०४) वाडीलाल मोतीलाल शाह।

विवरण—अहमदाबाद निवासी श्रीमाल जैन। आप गुजराती जैन हितेच्छु के संपादक हैं। हिंदी मातृभाषा न होने पर भी हिंदी के अच्छे लेखक हैं।

नाम—(४४०५) मुकुटधर पांडेय।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) समाज कंटक, (२) कार्त्तिक-माहात्म्य, (३) इटालीय युवक।

विवरण—यह बालपुर ज़िला बिलासपुर निवासी चिंतामणि पांडेय के पुत्र हैं। आप प्रकृति पूजक हैं। करुणा तथा सहृदयता का आपकी रचना में अच्छा मिश्रण है। आजकल इनका मस्तिष्क कुछ बिगड़ गया है।

उदाहरण—

खींच रहा था हल आतप में बूढ़ा बैल एक सत्रास;
उसे देखकर विकल बहुत हो पूछा मैंने जाकर पास—
"बूढ़े बैल, खेत में नाहक क्या दिन भर तुम मरते हो;
क्यों नहिं चरागाह में चलकर मौज मजे से करते हो?"

सुनकर मरी बात बैल ने कहा दुख से भरकर आह—
"इस अनाथ, असहाय कृपक का होगा फिर कैसे निर्वाह ?"

नाम—(४४०६) युगलसिंह एम० ए०, एल्-एल्० बी०, बीकानेर।

विवरण—आप राजपूत ठाकुर और हिंदी, संस्कृत तथा अँगरेज़ी के विद्वान् हैं। आप इस समय नोबल हाइस्कूल के हेडमास्टर हैं। आप गद्य लिखा करते हैं।

नाम—(४४०७) रामकुमारजी मिश्र, अलवर।

विवरण—आप अलवर इतिहास कार्यालय के प्रधान पंडित हैं। आप संस्कृत तथा हिंदी के प्रौढ़ लेखक होने के अतिरिक्त आशुकवि भी हैं। [यह कवि महाशय हमें पं० मावरमल्लजी त्रिवेदी, जसरापुर द्वारा प्राप्त हुए हैं]

नाम—(४४०८) विश्वेश्वरदयाल मिश्र विशारद, आगरा।

विवरण—आप प० लल्लूमलजी मिश्र के पुत्र हैं। आगरे की नागरी प्रचारिणी समिति के आप प्रमुख सदस्य हैं। 'चतुर्वेदी'-पत्रिका का आपने कई वर्षों तक संपादन किया।

नाम—(४४०९) शालग्राम द्विवेदी विशारद, जबलपुर।

जन्म काल—लगभग सं० १९५२।

ग्रंथ—(१) समर-सखा (अँगरेज़ी पुस्तक से अनुवादित), (२) कौटिल्य का अर्थशास्त्र।

पाठशालोपयोगी पुस्तकें—

(१) नवीन पत्र प्रकाश (२) मिडिल स्कूल पत्र-लेखन, (३) विराम चिह्न, (४) व्याख्या विधान, (५) प्राथमिक रचना शिक्षक, (६) मिडिल स्कूल रचना शिक्षक इत्यादि।

विवरण—यह कान्यकुब्ज-वंशोत्पन्न हैं। कुछ काल तक 'श्रीशारदा' के उप-संपादक तथा शारदा पुस्तकमाला के संपादक रह चुके हैं।

इस समय यह स्थानीय मॉडल हाईस्कूल में हिंदी के अध्यापक हैं।

नाम—(४४१०) शालग्राम शर्मा 'कन्त', ग्राम महालतपुर, तहसील साहाबाद, ज़िला मथुरा।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) वियोग-व्यथा (अप्रकाशित), (२) स्फुट कविता।

विवरण—यह प० रूपरामसिंहजी के पुत्र हैं। अलीगढ़ से एस० एल० सी० परीक्षा पास करके आप मूलचंद बागला-हाईस्कूल, हाथरस में हिंदी अध्यापक का काम करते हैं।

उदाहरण—

क्वार कलेश दियो पुनि कातिक, मारग सीम को चद तपावै।
पूस पसेवत, माह जरावत, फागु गुरै सगुआ पथरावै।
माधव जेठ असाढ़ फिरावत, सावन पी ध्वनि ही बिथुरावै,
पी बिनु कैसे जिऊँ सजनी, फिरि भादौं कि रैनि अँधेरी डरावै।

समय—सम्वत् १९७८ के अन्य कविगण

नाम—(४४११) ईश्वरीप्रसाद डॉक्टर (सनाढ्य ब्राह्मण), प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना काल—सं० १९७८।

विवरण—रीडर इतिहास इलाहाबाद विश्वविद्यालय। आपकी विद्वत्ता बहुत प्रशंसनीय है।

नाम—(४४१२) ओंकारनाथ पाठेय विशारद, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९५५।

कविता-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप स्थानीय प्रतिष्ठित ज़मींदार प० प्रेमराजजी के पुत्र हैं।

उदाहरण—

कबहुँ निरखि भरि नैन चाल लचकति सरिता की ,
ललित बजावति वेनु मुग्धी मनमोहन झाँकी।
मारिद देखौं स्याम, स्याम हरि-मूरति देखौं।
चमकति चपला चपल चोर चित राधा लेखौं।
जहाँ जाउँ उनको जहाँ कोउ ठाँव न शेष है,
कुंज करील कदंब हरि रोमन रोम प्रवेश है।

नाम—(४४१६) कृष्णदत्त शास्त्री, काव्यतीर्थ।

जन्म-काल—सं० १९२७ (श्रावण कृष्ण १२)।

कविता-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—(१) कीचक-वध, (२) पद्य पंचाशिका, (३) दोहा-वली। कुछ संस्कृत के भी ग्रंथ रचे हैं।

विवरण—आप तिजारा निवासी जयरामदत्तजी के पुत्र हैं। आपके स्फुट लेख पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुआ करते हैं।

नाम—(४४१४) रूपचंद सोधिया।

ग्रंथ—सफल गृहस्थ।

विवरण—पं० सरयावसिंह सोधिया के पुत्र तथा हिंदी के होनहार लेखक।

नाम—(४४१५) गिरिजादयाल 'गिरीश' वैद्यशास्त्री।

जन्म-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) विधवा विलाप, (२) स्फुट छंद।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ अवध चीफ़ कोर्ट में नौकर हैं। आपका जन्म बिसवाँ के निकट सरैयाँ में हुआ।

उदाहरण—

अवधि में रूप के विराजे हैं बहिन हैं कि
विभ्रम के पुंज पै सुनील मणि प्यारे हैं।

उत्तर नूतन

गंग की तरंग में 'गिरीश' मंजु मीन हैं कि
वाहिनी - अनंग के तुरंग रंग कारे हैं।
मंजुल मयंक के ललाट पै दिठौना है कि,
खंजरीट - छौना हम पींजरे में डारे हैं,
छाजे छवि नैन कामिनी के मृगनैनी के कि,
भ्राजे अरविंद पै मलिंद मतवारे हैं।
कंचन के कूट पै धरे हैं कालकूट घट,
शीश पै मयंक के कि राहु-केतु तारे हैं,
सुकवि 'गिरीश' ये पियूष के पियाले हैं कि
गगनापगा में भानुजा के और न्यारे हैं।
ललित ललाम छवि धाम के दुवारे या कि,
दामिनी के अंक में विराजे घन कारे हैं,
चम्पक-लता-सी तरुनी के नैन नीके हैं कि
बउरे रसाल द्रुम कोकिल विहारे हैं।
केसरि के सस्य मध्य बैठे द्वै निशाक मृग,
बैठे विधु मंडल कि मुदित चकोर ये;
खेलत शिकार द्वै शिकारी केतकी के कुंज,
तपसी 'गिरीश' जू कि सुरगिरि छोर ये।
कुंज पै कुसुम के विराजे द्वै शशक-शिशु,
या कि छवि-गृह में घुसे हैं युग चोर ये,
वाम लोचना के ललना के नैन बाँके हैं,
कि मदन महीप के शिलीमुख कठोर ये।

नाम—(४४१६) गिरीशचन्द्र चतुर्वेदी, मैनपुरी।
जन्म-काल—सं० १९२१।
कविता-काल—सं० १९७८।
विवरण—यह पंडित बनवारीलालजी के पुत्र हैं।

उदाहरण—

शीश-फूल पीछे गज मोतिन की माल है कि,
भूमिका भुजाल पै सेसनाग भासी है;
कुंभ है सुधा को किधौं टपकि अमिय रस,
बुंद-बुंद सौंपन पै आवै कदुमा सी है।
कमला के कूर पै गिरी है औंड बाँधि बिन्दु,
कैधौं तारे व्योम मध्य गंग या प्रकासी है,
भासी मैन-मूर्ति सुखमा की महिमा-सी उर,
उचकि उसासी मद मदन प्रकासी है।

नाम—(४४१७) गुलाबचंद्र वैद्य।

जन्म-काल—सं० १९५३।

ग्रंथ—(१) आरोग्य प्रदीप, (२) स्वरोदय, (३) विज्ञान, (४) अनेकांतमय तत्त्व विज्ञान, (५) सभा-सरोज।

विवरण—अमरावती निवासी मूलचंद जैन के पुत्र।

नाम—(४४१८) ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल', प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—स्त्री-कवि-कौमुदी।

विवरण—मनोरमा और भारतेंदु पत्रों के संपादक रहे हैं। इस समय भारत के संपादक हैं।

नाम—(४४१९) नवनीत चौबे, मथुरा।

ग्रंथ—(१) स्यामांग पद भूषण (नख शिख), (२) स्नेह शतक, (३) कुब्जा पचीसी, (४) मनोरथ-मुक्तावली, (५) नवीनोत्सव संग्रह (प्रकाशित), (६) मूल-शतक, (७) कृष्णाष्टक (समस्या पूर्ति), (८) पिंगल प्रकरण (अपूर्ण), (९) गद्यावली (अपूर्ण)।

विवरण—संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं। काव्य रचना ब्रजभाषा में है। कहा जाता है, इनके पास प्राचीन कवियों की अपूर्व कवितायों का बहुत बड़ा संग्रह है।

नाम—(४४२०) पार्वती बाई।

ग्रंथ—ईश्वरदास।

विवरण—आप बाबू गोकुलदास की पुत्री हैं।

नाम—(४४२१) पृथ्वीनाथ तथा महेंद्रनाथ चतुर्वेदी, सिकंदरपुर, ज़िला फ़र्रुख़ाबाद।

विवरण—ये दोनो महाशय पं० केशवदेवजी के पुत्र हैं। दोनो भाइयों की अवस्था लगभग २० और १६ वर्ष की है। ये लोग कविता, लेख आदि भी लिखा करते हैं। नीचे उदाहरण दिए गए हैं।

उदाहरण—

जिन केशव के रहि शासन में अनुशासन थोर न दृष्टि गई,
सब भापत भूठ रहे जग में नित खेलत हाय विपत्ति नई।
परतीति नहीं जिनको प्रभु का, नहिं देश विपत्ति बढ़ाइ लई।
नहिं जाति समझ भरी जिनके तिन लोगन जाति बिगारि दई।
हे पतित पावन दीनबंधो, विनय मम सुन लीजिए,
घरके कृपा प्रभु हम सबा को बुद्धि प्रभुवर, दीजिए।
दुख सिंधु में पड़कर प्रभो, असहाय गोते खा रहे,
बैठे अविद्या-नाव पर उलटे यहू अब जा रहे।

नाम—(४४२२) वेणीप्रसाद।

विवरण—आप मोतीलाल पल्लीवाल जैन के भ्राता तथा हिंदी के होनहार लेखक हैं।

नाम—(४४२३) भोलानाथ मिश्र विशारद, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९६१ ।

कविता-काल—सं० १९७८ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—यह प० दम्मीलाल के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

जब लै कर पुष्प-कमान गयो शिव जीतन कोटि करयो छल है,
तब पौरुष-पुंज गमायो कहाँ अरि पार परयो भुवि बेकल है ।
अब सायक तेज गहे अबलागन मार रु मार न सो बल है;
धिक विक्रम नीच मनोज तेरो, धिक तोहि, महा धिक तो बल है ।

नाम—(४४२४) मोहनलाल बड़जात्या ।

जन्म-काल—सं० १९६२ ।

ग्रंथ—सुखी गृहस्थ ।

विवरण—यह कुचामण मारवाड़ प्रांत के निवासी हैं । तुम्हें गोविंदराम खंडेलवाल जैन के पुत्र हैं ।

नाम—(४४२५) मौजी ।

कविता-काल—सं० १९७८ के पूर्व ।

ग्रंथ—पारस-पचीसी ।

विवरण—मालिया काठियावाड़ निवासी जाडेजा ठाकुर थे ।

नाम—(४४२६) रामप्रकाश शर्मा डॉक्टर, ग्राम बथुआ, ज़िला दरभंगा ।

जन्म-काल—सं० १९५३ ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—यह भारद्वाजगोत्रीय भूमिहार ब्राह्मण दरभंगा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के निर्वाचित सदस्य हैं । इनकी रचनाएँ देश, महावीर आदि पत्रों में प्रकट होती हैं । आप खड़ी बोली के सुकवि हैं ।

उदाहरण—

कृष्णचेतावनी

अरे नराधम, स्वार्थ भृत्य, क्या गर्व भरा है,
लाज नहीं, ले राजदंड तू अकड़ खड़ा है।
अमल क्षात्र-कुल विधु-कलंक तूने प्रकटाया,
पूज्य पिता का स्वत्व छीनकर मार भगाया।
गुरु शिशु वध सब ही किया स्वार्थ साधने के लिये;
अबला को वदी किया, नीति-न्याय सब खो दिए।
कूटनीति से दुष्ट प्रजा को फाँस लिया है,
उसके बल फिर राजमुकुट ले नाश किया है।
शिष्ट प्रजा ने न्यायनिष्ठ तुमको था जाना,
इसी हेतु निर्भीक चित्त निज प्रभु था माना।
पराधीन पर [illegible] गया, रक्षक भक्षक तक था बना,
भक्षक निकला अंत में, कैसी दैव विडंबना।

नाम—(४४२७) लाल हरदेवसिंह 'प्यारेलाल', ग्राम सबद्द विधूना, इटावा।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३२।

कविता-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—स्फुट पद (लगभग २००)।

विवरण—इनके पदों की एक प्रति लाल रघुनंदनसिंह वर्मा, सबद्द (इटावा) को प्राप्त हुई है, उसी में से निम्न लिखित उदाहरण दिया गया है।

उदाहरण—

प्रभु को भजन करो दिन रात।
श्रीस्वामी सचराचर व्यापक स्याम गौर दोउ भ्रात;
ताके वश तिहुँलोक सदा हैं, तेहि सुमिरो दे सात'

छिन में रचैं छिनहिं में मेटैं, माया अलख लखात ;
ताको शेष, महेश रटत नित, सुर सब सदा डरात ।
तन, मन से नित धरौ चित्त में धर्म करौ बहु भाँत ।
जड़ चेतन में, सब वस्तुन में, राम हि राम दिखात ।
मोहि गुरु केशवदास कृपा करि ज्ञान दियो दरपात ;
कहत 'लाल हरदेवसिंह' जग याश्रयै चरित रहात ।

नाम—(४४२८) विद्याधरजी मिश्र, मैनपुरी ।

जन्म काल—सं० १९६३ ।

विवरण—यह पं० सीतारामजी के पुत्र माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण हैं । इस समय यह श्यामसुंदर हाइस्कूल, चंदौसी में अध्यापक हैं ।

उदाहरण—

प्राचीन भारत भव्य था भू को दिखाने के लिये,
अब आ रही सुख शांतिदा होली प्रफुल्लित निज हिये ।
है कर रही आदेश उत्तम चाव से प्रिय देश को ;
भाषा पढ़ो कोई कहीं, त्यागो न तुम निज भेष को ।

नाम—(४४२९) सुखदेवप्रसाद तेवारी (उपनाम विनय-मोहन) नरसिंहपुर निवासी ।

जन्म काल—लगभग सं० १९६९ ।

रचना-काल—सं० १९७८ ।

विवरण—स्फुट लेखक तथा समालोचक हैं । वीरात्मा के नाम से कविता भी करते हैं ।

समय—संवत् १९७९ के अन्य कविगण

नाम—(४४३०) अमरनाथ झा एम्० ए० ।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

ग्रंथ—(१) हिंदी-साहित्य-संग्रह, (२) हिंदी साहित्य-रत्न ।

विवरण—आप महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगानाथ झा के पुत्र [illegible]या प्रयाग विश्वविद्यालय के डाक्टर हैं।

नाम—(४४२१) जटाधरप्रसाद शर्मा 'विकल', ग्राम [illegible]ाजितपुर, जिला मुजफ्फरपुर।

जन्म काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) योगमाया, (२) धमवती, (३) महुवा, (४) दमयंती और सीता, (५) प्रेम प्रमोद, (६) कृषक-क्रंदन, (७) पावस-बहार, (८) शिशुक क्रंदन, (९) शिव शिवा।

विवरण—यह प० योगेश्वर मिश्र के पुत्र हैं। सं० १९७९ से इनकी रचनाएँ सामयिक पत्र पत्रिकाओं में प्रकट होती रही हैं।

उदाहरण—

प्रथम मिलन चुंबन की सुस्मृति हृदय से हट जाने दे;
प्रथम प्यार का स्रोत उमड़कर मिट्टी में मिल जाने दे।
प्रथम रश्मि की प्रखर प्रभा पथ पर आज बिखरने दे;
सुखमय शृंगार सजाकर उनको आज बिसरने दे।
पट परिवर्तन का सुखमय यह सुंदर साज सजाने दे,
प्रियतम के सौंदर्य-स्रोत में भरे मुझे बह जाने दे।
भूलो उसका गान पवन छोड़ो यह बीन बजाना,
भूलो उसका प्रेम भवन, छोड़ो था जाना आना।
छोड़ो री कलियो तुम भी था बार बार मुसकाना,
भूलो री कलियो तुम भी वह प्रेम-पराग-खजाना।
भूल रहा हूँ, छेड़ो मत, सोने दो, नहीं जगाना;
चाह रहा हूँ यों ही उनके चरणों पर बलि जाना।

नाम—(४४२२) दूधनाथ उपाध्याय।

ग्रंथ—गोरक्षा पर आपकी पुस्तकें हैं।

नाम—(४४२३) धीरेंद्र वर्मा (कायस्थ), प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९४९ ।

कविता-काल—सं० १९७१ ।

विवरण—इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रधानाध्यापक हैं। हिंदी का अच्छा ज्ञान रखते हैं।

नाम—(४४३५) रामचंद्र सधी एम० ए०, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४४ ।

ग्रंथ—अंतःकरण का सुधार।

विवरण—यह अग्रवाल वैश्य हैं, और स्थायी रूप से नारनौल (पंजाब) के रहनेवाले हैं। इस समय यह स्थानीय हितकारिणी हाईस्कूल में अध्यापक हैं।

नाम—(४४३६) रामविलाससिंह 'भूषण'।

जन्म-काल—सं० १९४५ ।

ग्रंथ—(१) कमला, (२) उषा, (३) भगवद्गीता-पद्यानुवाद, (४) सेनापति कथा, (५) दमयंती-नाटक, (६) अनाथ महिलाओं की पुकार, (७) प्रणयिनी विछोह।

विवरण—ज़िला शाहाबाद निवासी सूरवार क्षत्रिय।

नाम—(४४३६) शिवप्रसादसिंह

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

रचना-काल—सं० १९७१ ।

ग्रंथ—भारत में अर्थ शास्त्र।

विवरण—यह अधिकारसिंह के पुत्र हैं, और बलिया के कवि एवं लेखक हैं।

नाम—(४४३७) सरदार शर्मा 'सोम कवि'।

जन्म-काल—सं० १९४४।

ग्रंथ—(१) दयानंदाष्टक, (२) निराकार उपासना, (३) समस्या पूर्ति पुंज, (४) सोम संपदा, (५) प्रेम-पराग,

(६) कवि-कुल-कला, (७) मातु पितु आदर्श भक्त श्रवणकुमार, (८) अछूतों का आर्तनाद।

विवरण—यह पितुवा ज़िला पुर निवासी ब्रह्मभट्ट डूँगरदत्त के पुत्र।

उदाहरण—

> भए चंद-सम चंद आदि हिंदी के कविजी;
> भक्त शिरोमणि सूर मनो भू ऊपर रवि जी।
> शक्ति-कृपा-युत काव्य दिव्य हो जिनकी दमकी;
> कवि कीरति अति अमल रूप हो हीरा चमकी।

नाम—(४४३८) सुंदरसिंह चौहान, पिपरसंड, ज़िला लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १६४६।

रचना-काल—लगभग सं० १६७६।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

नाम—(४४३६) संतदास कवीश्वर।

जन्म-काल—सं० १६२४।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

विवरण—माध्व संप्रदाय।

समय—संवत् १६८० के अन्य कविगण

नाम—(४४४०) अयोध्यानाथ शर्मा एम्० ए०।

जन्म-काल—सं० १६६६।

रचना-काल—सं १६८०।

ग्रंथ—(१) उज्ज्वल तीर, (२) गद्यमुक्तावली, (३) गद्यमुक्ताहार, (४) अयोध्याकांड, (५) जानकी मंगल, (६) पार्वतीमंगल।

पाठ्य पुस्तकें—रचना विधि, बाल व्याकरण, कबीर ग्रंथावली।

मधुर मोद मकरंद प्यारा
घहो छलक उठती रस धारा,
भर जाता अंतस्थल सारा,
जीवन-सुमन विकल यह सहसा
खिल उठता है सस्मित राग
फड़कन राग रंजित जब तेरा
होता प्रिय मुझ पर अनुराग।

नाम—(४४४८) दामोदरसहाय, बाँकीपुर।

विवरण—आपकी मृत्यु सं० १९८८ के निकट हो गई।

नाम—(४४४९) निहालकरण सेठी।

विवरण—आप खंडेलवाल जैन तथा काशी विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर हैं।

नाम—(४४५०) पद्मकांत मालवीय, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६२।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) त्रिवेणी, (२) प्याला आदि।

विवरण—आप कृष्णकांत मालवीय के पुत्र एवं हिंदी के एक होनहार कवि और लेखक हैं।

नाम—(४४५१) पीर मुहम्मद 'मूनिस' बेतिया, चंपारन।

जन्म-काल—सं० १९४१।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—मूनिस ग्रंथावली।

विवरण—यह जाति के मुसलमान हैं, किंतु हिंदी से विशेष प्रेम रखते हैं। इनके लेख प्रायः 'प्रताप', 'आर्यमित्र', 'बालक' आदि पत्रों

नाम—(४४४३) बाबूसिंह क्षत्रिय पिपरसंड, हरौनी, जिला लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९४९।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) विवाद-वार्ता, (२) व्रज विहार विनोद (अपूर्ण), (३) स्फुट पद।

नाम—(४४४३) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', ग्वालियर राज्य में शाजापुर के निवासी हैं।

जन्म काल—सं० १९६०।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—कुछ काल तक 'प्रताप' पत्र के संपादक रहे, तथा बहुत-सी स्फुट रचनाएँ की हैं।

विवरण—आप स्वच्छंद प्रकृति के उत्साही कार्यकर्ता हैं। उत्कट देश भक्ति के कारण कई बार जेल भी हो आए हैं।

नाम—(४४४४) भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' बी० ए० मिश्रौली, बिलौटी (शाहाबाद)।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

उदाहरण—

बनी रहे हिय मधुर वेदना, बहते रहें अश्रु-निर्झर।
व्याकुल प्राण सदा तेरे दर्शन हित बने रहें नटवर।
सदा खोजता जाऊँ मैं, पर तू जगत में मिलता जा।
आतुर आँखों की ओझल हो झिलमिल-सा तू मिलता जा।
यों थककर इस खोज ढूँढ़ से करने लगूँ कूच जब प्राण।
विना प्रयास भाव वैभव से गूँज उठे हर्षमय-गान।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू युगलकिशोरजी अमीरी की पुत्री हैं।

नाम—(४४१०) सोमदेव (शर्मा) सोमकवि।

जन्म-काल—सं० १९६५।

रचना-काल—सं० १९८२।

रचना—स्फुट कविताएँ और साहित्य तथा आयुर्वेद पर लेख।

विवरण—नयीगढ़, पो० वर्जा, ज़िला अलीगढ़ के आर्य भजनोपदेशक प० रघुनदन शर्मा (सारस्वत) के पुत्र हैं। बनारस की साहित्य-शास्त्री परीक्षा पास, पजाब की शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण, सस्कृत और हिंदी व्रज भाषा तथा खड़ी बोली के कवि, राष्ट्रीय विचार के उदीयमान युवक, गद्य पद्य-लेखक, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आयुर्वेद मेडि कल-कॉलेज में ६ वर्ष अभ्यास किया।

उदाहरण—

हा मोती!

भारत जननि देवि! अब तेरा खोया वही दुलारा,
उज्ज्वल मुख था तेरा जिससे, जो प्राणों का प्यारा।
तू अभिमान किया करती थी, जिसका आश्रय लेके।
तेरा वह सरवस्व आज ही चला गया है तज के।
छाती शीतल करनेवाला आँखों की नवज्योती
निधन तुझ दुखिया का वह धन आज खो गया मोती।

नाम—(४४११) हरस्वरूप चतुर्वेदी, मैनपुरी।

जन्म-काल—लगभग स० १९६७।

विवरण—यह पडित मुन्नालालजी मिश्र के पुत्र हैं। अभी आप विद्यार्थी दशा में हैं।

समय—सवत् १९८३ के अन्य कविगण

नाम—(४४१२) आनदीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वंद्व'।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।
जन्म स्थान—झलरापाटन रियासत।
निवास-स्थान—ग्राम भगवानपुर, ज़िला मुरादाबाद।
ग्रंथ—समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में स्फुट लेख।
विवरण—आप प० मुकुंदरामजी के पुत्र हैं। सार्वजनिक संस्थाओं में अपनी युवावस्था से ही आप काम करने लगे हैं। समय-समय पर यह नागरी प्रचारिणी सभा के उपमंत्री तथा हिंदी-साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के व्यवस्थापक रहे हैं। 'अध्यापक' और 'शंकर' पत्रों के ये भूतपूर्व संपादक हैं। इस समय 'खिलौना' पत्र से इनका विशेष संबंध है।

नाम—(४४१३) कामेश्वरीप्रसाद, साहबगंज (छपरा)।
जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।
रचना-काल—सं० १९८३।
उदाहरण—

> भय स्वार्थतम का परदा, सत्वर हटा दे मोहन!
> अब आत्म-त्याग-रवि की, आभा दिखा दे मोहन।
> पूरब में फैल जावे, शुभ देश भक्ति लाली
> मन पक्षियों से आशा, धूमें बिछा दे मोहन।
> महिला कमल-कली क्यों, अब लौं न खिल रही है?
> विद्या-मलय बहाकर, इनको खिला दे मोहन!
> अज्ञान के निशाचर, हमको सता रहे हैं।
> चैतन्य शर से इनकी, गर्दन उड़ा दे मोहन!
> चेतें, मिलें, खड़ी हों, स्वत्वों को आज ले लें;
> बिगड़ी मेरी बना दे, शुभ दिन फिरा दे मोहन!

नाम—(४४१४) गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब'।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्ना बाबू युगलकिशोरजी मन्नौरी की पुत्री हैं।

नाम—(४४६०) सोमदेव (शर्मा) सोमकवि।

जन्म-काल—सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८२।

रचना—स्फुट कविताएँ और साहित्य तथा आयुर्वेद पर लेख।

विवरण—अलीगढ़, पो० चला, ज़िला अलीगढ़ के आर्य भजनोपदेशक प० रघुनंदन शर्मा (सारस्वत) के पुत्र हैं। बनारस की साहित्य-शास्त्री-परीक्षा पास, पंजाब की शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण, संस्कृत और हिंदी भाषा तथा खड़ी बोली के कवि, राष्ट्रीय विचार के उदीयमान युवक, गद्य पद्य लेखक, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आयुर्वेद मेडिकल-कॉलेज में ९ वर्ष अभ्यास किया।

उदाहरण—

हा मोती।

भारत जननि देवि! अब तेरा खोया वही दुलारा,
उज्ज्वल मुख था तेरा जिससे, जो प्राणों का प्यारा।
तू अभिमान किया करता था जिसका आश्रय लेके।
तेरा वह सरवस्व आज ही चला गया है तज के।
छाती शीतल करनेवाला आँखों की नवज्योती,
निर्धन तुझ दुखिया का वह धन आज खो गया मोती।

नाम—(४४६१) हरस्वरूप चतुर्वेदी, मैनपुरी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७०।

विवरण—यह पंडित मुन्नालालजी मिश्र के पुत्र हैं। अभी आप विद्यार्थी दशा में हैं।

समय—संवत् १९८३ के अन्य कविगण

नाम—(४४६२) आनंदीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वंद्व'।

उत्तर नूतन

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।

जन्म-स्थान—झालरापाटन रियासत।

निवास-स्थान—ग्राम भगवानपुर, ज़िला मुरादाबाद।

ग्रंथ—समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में स्फुट लेख।

विवरण—आप पं० मुकुंदरामजी के पुत्र हैं। सार्वजनिक संस्थाओं में अपनी युवावस्था से ही आप काम करने लगे हैं। समय समय पर यह नागरी प्रचारिणी सभा के उपमंत्री तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के व्यवस्थापक रहे हैं। 'अध्यापक' और 'शंकर' पत्रों के ये भूतपूर्व संपादक हैं। इस समय 'खिलौना' पत्र से इनका विशेष संबंध है।

नाम—(४४१३) कामेश्वरीप्रसाद, साहबगंज (छपरा)।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।

रचना-काल—सं० १९८३।

उदाहरण—

> अब स्वार्थतम का परदा, सत्वर हटा दे मोहन।
> अब आत्म त्याग-रवि की, आभा दिखा दे मोहन।
> उर में फैल जावे, शुभ देश भक्ति लाली,
> मन पल्लवों पै आशा, बूँदें बिछा दे मोहन।
> महिला कमल-कली क्यों, अब लौं न खिल रही है?
> विद्या-मलय बहाकर, इनको खिला दे मोहन।
> अज्ञान के निशाचर, हमको सता रहे हैं।
> चैतन्य शर से इनकी, गर्दन उड़ा दे मोहन।
> चेतें, मिलें, खड़ी हों, स्वत्वों को आज ले लें;
> बिगड़ी मेरी बना दे, शुभ दिन फिरा दे मोहन।

नाम—(४४१४) गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब'।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्ना बाबू युगलकिशोरजी भ्रतौरी की पुत्री हैं।

नाम—(४४१०) सोमदेव (शर्मा) सोमकवि।

जन्म-काल—सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८२।

रचना—स्फुट कविताएँ और साहित्य तथा आयुर्वेद पर लेख।

विवरण—नयोगढ़, पो० चला, ज़िला अलीगढ़ के आर्य भजनोपदेशक पं० रघुनंदन शर्मा (सारस्वत) के पुत्र हैं। बनारस की साहित्य-शास्त्री-परीक्षा पास, पंजाब की शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण, संस्कृत और हिंदी व्रज-भाषा तथा खड़ी बोली के कवि, राष्ट्रीय विचार के उदीयमान युवक, गद्य पद्य लेखक, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में आयुर्वेद मेडिकल-कॉलेज में ६ वर्ष अभ्यास किया।

उदाहरण—

हा मोती !

भारत जननि देवि ! अब तेरा खोया बड़ी दुलारा,
उज्ज्वल मुख था तेरा जिसमे, जो प्राणों का प्यारा।
तू अभिमान किया करती थी, जिसका आश्रय लेके।
तेरा वह सरवस्व आज ही चला गया है तज के।
छाती शीतल करनेवाला आँखों की नवज्योती
निर्धन तुझ दुखिया का वह धन आज खो गया मोती।

नाम—(४४११) हरस्वरूप चतुर्वेदी, मैनपुरी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६७।

विवरण—यह पंडित मुन्नालालजी मिश्र के पुत्र हैं। अभी आप विद्यार्थी दशा में हैं।

समय—संवत् १९८३ के अन्य कविगण

नाम—(४४१२) आनंदीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वंद्व'।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।
जन्म स्थान—झालरापाटन रियासत।
निवास-स्थान—ग्राम भगवानपुर, ज़िला मुरादाबाद।
ग्रंथ—समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में स्फुट लेख।
विवरण—आप पं० मुकुंदरामजी के पुत्र हैं। सार्वजनिक संस्थाओं में अपनी युवावस्था से ही आप काम करने लगे हैं। समय-समय पर यह नागरी प्रचारिणी सभा के उपमंत्री तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के व्यवस्थापक रहे हैं। 'अध्यापक' और 'शंकर' पत्रों के ये भूतपूर्व संपादक हैं। इस समय 'खिलौना' पत्र से इनका विशेष संबंध है।

नाम—(४४९३) कामेश्वरीप्रसाद, साहबगंज (छपरा)।
जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।
रचना-काल—सं० १९८३।
उदाहरण—

अब स्वार्थतम का परदा, सत्वर हटा दे मोहन।
अब आत्म त्याग-रवि की, आभा दिखा दे मोहन।
पूरब में फैल जावे, शुभ देश भक्ति लाली
मन पल्लवों पै आया, बूँदें बिछा दे मोहन।
महिला कमल-कली क्यों, अब लौं न खिल रही है?
विद्या-मलय बहाकर, इनको खिला दे मोहन।
अज्ञान के निशाचर, हमको सता रहे हैं।
चैतन्य शर से इनकी, गर्दन उड़ा दे मोहन।
चेतें, मिलें, खड़ी हों, स्वत्वों को आज ले लें,
बिगड़ी मेरी बना दे, शुभ दिन फिरा दे मोहन।

नाम—(४४९४) गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब'।

विवरण—आप जाति के कायस्थ बाबू दामोदरसहायसिंह 'कवि किंकर' के पुत्र हैं।

नाम—(४४६७) द्विज श्याम द्विवेदी, जिला बाँदा।

जन्म-काल—सं० १९६६।

नाम—(४४६८) मार्कंडेय पांडेय 'मधु', रसेंदा, भगवानपुर (शाहाबाद)।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८३।

विवरण—आप एक नवयुवक, उत्साही लेखक और 'देश-सेवक' पत्र के संपादक हैं।

उदाहरण—

बज रही मनहर पनिहारिन जल भरने नहिं आइ;
झाँकी अँगिया के तारा से हैं हृदय झाँकने आइ।
प्रेम-नगर का साँकर गलि से नेह नियारत आइ;
छवि-मयंक के कितने चातक बाँध कतारी आइ।
निर्मल शीतल सागर जल में प्रेम मीन को पाइ;
उझक-झिझक कर जानि अकेली छवि-नवीनहि थकाइ।
सुरभित भाव-कुसुम की माला जीवन धन पहनाइ;
योवन-लाज लगाम लगाकर समय सकोच भुलाई।

नाम—(४४६९) रघुवरदासजी महंत, ग्राम हारट, तहसील हटा (मध्यप्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९५८।

रचना-काल—सं० १९८३।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप जुझौतिया ब्राह्मण पं० किशोरप्रसाद के पुत्र हैं। 'धर्म भूषण' पत्र में आपकी कविताएँ प्रायः निकला करती हैं।

उदाहरण—

कोटिन अनंग छवि देत के निसार होय,
कोटिन तरनि दुति मुकुट पै छाई है।
नीलोत्पल सम लोचननि की विसाल छवि,
पाँति पै रदों की प्रभा हीरों की लजाई है।
विहँसनि विचित्र मिलि कृपा की किरन होय,
तिरछी चितौनि चित माँझ न समाई है,
अनुपम आभा रघुराज लाल आनन की,
शांति मंदाकिनी ज्यौं संत सुखदाई है।

नाम—(४५००) रामेश्वरप्रसाद 'राम', बाढ़ (पटना)।

जन्म-काल—सं० १६५८।

उदाहरण—

चाह नहीं है, रायबहादुर बनकर मैं कहलाऊँ;
चाह नहीं है, बड़ों-बड़ों से सजकर हाथ मिलाऊँ।
चाह नहीं है, लंदन जाकर मैं बैरिस्टर बन आऊँ;
चाह नहीं है, बड़े लाट का मैं मेंबर बन जाऊँ।
चाह यही है, जीवन-पथ में राग द्वेष से दूर रहूँ।
चाह यही है, हिंद-देश की सेवा में भरपूर रहूँ।
चाह नहीं है, नेता बनकर सभा भवन में जाऊँ;
चाह नहीं है, जनता की मैं पूजा शीश चढ़ाऊँ।
चाह नहीं है, कपट हृदय से त्यागवीर कहलाऊँ;
चाह नहीं है, योगी बनकर तन में भस्म रमाऊँ।
चाह यही जीवन की मेरे, दीनों का उद्धार करूँ,
चाह यही है, भारत मा का हित मिल बेड़ा पार करूँ।

नाम—(४५०१) सत्यनारायणसिंह, सुटाही पारू, मुजफ्फरपुर।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) पद्य शब्द-रूप, (२) हिंदी-गीता आदि।

विवरण—आप राजपूत-कुलावतंस श्रीयुत महाराजसिंह के पुत्र हैं।

नाम—(४४०२) सुरेश्वर पाठक, विद्यालंकार, विशारद, रवैंटा, खड्गपुर, मुँगेर।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—लगभग सं० १९८३।

ग्रंथ—(१) रचना-मयंक, (२) पग विजय, (३) सबरी (उपन्यास)।

विवरण—आप पं० मनबोलाल पाठक के पुत्र और 'धूस' पत्र के सहकारी संपादक हैं।

समय—संवत् १९८४ के अन्य कविगण

नाम—(४४०३) अनाथविहारी अवस्थी, 'विमल' (कवि) कान्यकुब्ज ब्राह्मण।

जन्म-काल—सं० १९५६।

कविता-काल—सं० १९८४।

ग्रंथ—(१) नारी-समाज-गम, (२) वेश्या-दोष दर्शन, (३) जुआ दोष-दर्शन, (४) विधवा विलाप आदि।

विवरण—समादतगंज लखनऊ में हिंदू-समाज सुधार कार्यालय खुला हुआ है। उसमें आपने कई वर्ष परिश्रम करके लोक-हित के कार्य किए। बहुत से भजन भी आपने बनाए हैं।

नाम—(४४०४) ईश्वरीप्रसाद वर्मा 'शब्द' शोभासदन, मसगरगली, (पटना सिटी)।

जन्म-काल—सं० १९५१।

न पै पद्मिनी कौमुदी मोद-माती;
सती को नहीं जपटी आदि आती।
कहीं चाँदनी चक्र में चक्र-माला,
हुई चन्द्रिका पा रही है कसाला।

नाम—(४२०८) गंगासिंह एच्० एच्० महाराजा परखारी।

ग्रंथ—सदग-मगल (१९६४), (प्र० त्रै० रि०)।

विवरण—और भी कई ग्रंथ बनाए हैं। आपको हिंदी-कविता से विशेष प्रेम था।

नाम—(४२०९) मदनमोहन मिहिर।

जन्म-काल—सं० १९९२।

ग्रंथ—(१) निसर्ग-गीत, (२) जीवन-गीत, (३) प्रेम-गीत, (४) प्रकृति-कौतुक-वदना, (५) खोज।

विवरण—आप नदूलाल मिहिर के पुत्र हैं।

उदाहरण—

हे मेरे आराध्य देव, कैसी है तेरी माया।
अब जब तुमसे मिलने आई, कभी न तुमको पाया।
नेत्र थके प्रभु-बाट जोहते, अब तो अश्रु निकलता।
दयासिंधु हो, दया न आती सुनकर मेरी दीन पुकार।
अच्छा प्रियतम, तुम्हीं बता दो, कैसे करूँ तुम्हें मैं प्यार?

नाम—(४२१०) मंगलप्रसाद विश्वकर्मा।

जन्म-काल—सं० १९९२।

ग्रंथ—(१) शेरसिंह, (२) उत्सर्ग, (३) रोशनआरा, (४) स्फुट कविता। (खड़ी बोली की रचना करते हैं)।

नाम—(४२११) भगवतीप्रसादसिंह, पोखरपुर परगना (सारन), विहार प्रांत।

जन्म-काल—सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८४ ।

ग्रंथ—(१) बिहार के नवयुवक-हृदय (दो भाग), (२) बिहार के प्राचीन हिंदी-लेखक और कवि ।

विवरण—आप बिहार प्रांत के एक काव्यानुरागी एवं साहित्योत्साही नवयुवक लेखक हैं। आप ठाकुर रामबहादुरसिंहजी के पुत्र हैं। हम लोगों को इस भाग की रचना में आपसे विशेष सहायता मिली है। एतदर्थ आपको धन्यवाद है।

नाम—(४२१२) रामअवतार शर्मा सरोधी, भवानपुर (पलामू)।

जन्म-काल—सं० १९५१ ।

ग्रंथ—(१) भारतवर्ष का इतिहास, (२) अनुवाद प्रभाकर, (३) शौंडिक-जाति का इतिहास ।

उदाहरण—

विद्या का वर्णन

है अहर्निश इस जगत में ज्योति जिसकी जागती।
देखते जिसकी प्रभा हिय की तमी है भागती।
पात जिसकी मूक हो वाचाल पशुता मानती।
दृप्त जिसको साधुता अहता न हटता ठानती।
तेज जिसका है निराला देखकर जिसकी लपट;
है झुलसती मूढ़ता मिटते मनुज के छल-कपट।
जो अलौकिक वस्तु है, वे क्या धरा पै आमती;
देव किंधर नाग-नर-जड़-प्राण-मन को मोहती।
व्योम-भू-पाताल में जिसकी छटाएँ सोहतीं,
विश्व की सारी कलाएँ बाट जिसकी जोहतीं।

नाम—(४२१३) रामप्रताप शुक्ल विशारद ।

—— काल—सं० १९६४ ।

नाम—(४२३२) बलदेवप्रसाद।
जन्म-काल—सं० १९६१।
रचना-काल—सं० १९८९।
ग्रंथ—स्फुट लेख और छंद।
विवरण—सकरकंद गली, काशी निवासी। इनके पिता-पितामह संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित तथा वैद्य थे।

उदाहरण—

री चल उस जगती के अंचल, जहाँ सत्य संसार न हो।
जहाँ हृदय के रंग मंच पर, चिंता नृत्य अपार न हो।
चल चल उस जगती के अंचल, जहाँ प्रेम-व्यापार न हो;
जहाँ बनावट भोगी चितवन का, दिल पर अधिकार न हो।
दिन-मणि-स्यंदन के पहियों से, पीस जाते वारे रोज;
किरण चूर्ण क्या तुम उनकी हो, पिसते जो कि बिचारे रोज।
धूलि-कणों को साथ लिए हो, देती हो इस भाँति प्रबोध;
पद दलितों से प्रेम हृदय भर, मिलता झट संसार अबोध।

नाम—(४२३३) महादेवी वर्मा, प्रयाग निवासिनी।
जन्म-काल—सं० १९६४।
रचना-काल—सं० १९८९।
ग्रंथ—(१) नीहार, (२) रश्मि। (दोनो इनके पद्यों के संग्रह हैं)।
विवरण—यह रहस्यवादात्मिका रचना करती हैं। अच्छी कवयित्री हैं।

नाम—(४२३४) माताप्रसाद त्रिपाठी 'महेश' लश्कर, ग्वालियर निवासी।
जन्म काल—सं० १९६९।
रचना-काल—सं० १९८९।
ग्रंथ—स्फुट रचना।

विवरण—आप लखनऊ में अध्यापक थे। अब तबदीली हो गई है।

उदाहरण—

जल थल अनल अनिल कण कण में नवजीवन सत्वर भर दे।
हृदयों की स्वर लहरी से विश्व-मग्न झंकृत कर दे।
तेरी मधुमय मादक तान सुनकर जागे हिंदुस्तान।
मधुर रागिनी गा वीणा पर कर दे पुनः प्रेम-संचार।
तान-तार पर मोहित होकर चकित-चकित आवें सब संसार।
तेरे मधुर मनोहर गान सुनकर जागे हिंदुस्तान।

नाम—(४२२५) लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' बी० ए०, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८९।

विवरण—गद्य लेखक। इनकी पत्नी श्रीमती 'चकोरीजी' अच्छी कविता करती हैं।

नाम—(४२२६) रामेश्वरीदेवी मिश्र 'चकोरी', लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७०।

रचना-काल—लगभग सं० १९८९।

विवरण—आप लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' की धर्मपत्नी हैं। उच्च कोटि की पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ कई वर्षों से निकल रही हैं। अच्छी कविता करती हैं।

नाम—(४२२७) ललितादेवी पाठक बी० ए०, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६८।

रचना-काल—सं० १९८९।

विवरण—आप स्वर्गीय श्रीधर पाठक की सुपुत्री हैं। हिंदी की अच्छी लेखिका हैं।

नाम—(४२२८) लक्ष्मीनारायणसिंहजी 'सुधांशु'।

जन्म काल—सं० १९६१।

ग्रंथ—(१) कुमार (संपादक कुमार-समिति, भागलपुर), (२) भ्रातृ प्रेम (प्रकाशक, वासुदेव मंडल, पूर्णिया), (३) गुलाब की कलियाँ (प्रकाशक, आनंद-पुस्तकमाला, पूर्णिया), (४) रस-रंग (प्रकाशक, सरस्वती प्रेस, काशी)।

विवरण—आपका जन्म रूपसपुर (पो० धमदाहा, ज़िला पूर्णिया, बिहार) ग्राम में हुआ था। आप बुंदेले क्षत्रिय हैं। आरंभ से ही आपको हिंदी से अनन्य प्रेम है। स्कूल जीवन में ही कुछ विद्यार्थियों ने 'कुमार' नामक मासिक पत्र छपाकर प्रकाशित किया, और आप उसके संपादक बने। उसके बाद 'भ्रातृ प्रेम'-नामक एक उपन्यास लिखा गया, और छपा। नव रसों पर एक-एक गल्प लिखकर आपने 'रस रंग' प्रकाशित कराया, अनंतर आल्हखंड का आयोजन उठाया गया। आप संप्रति उसी की गवेषणा कर रहे हैं।

नाम—(४४६६) श्यामापति पांडेय एम्० ए०, बिहार-प्रांत-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८१।

विवरण—गद्य लेखकार।

नाम—(४४७०) श्रीरत्न शुक्ल।

जन्म-काल—सं० १९६०।

विवरण—ज़िला उन्नाव निवासी हिंदी के उत्साही लेखक।

नाम—(४४७१) सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' मुज़फ़्फ़रपुर, पटना।

जन्म काल—सं० १९६८।

ग्रंथ—व्रतिका (कविता-संग्रह)।

विवरण—आप प० रामावतार मिश्र के पुत्र और एक उत्साही नवयुवक कवि हैं।

नाम—(४२४२) सुधारानी विशारद, ग्वालियर।

जन्म-काल—लगभग सं० १६६७।

रचना-काल—सं० १९८२।

विवरण—आप हिंदी की अच्छी लेखिका हैं।

नाम—(४२४३) हनुमद्दयाल अवस्थी 'हनुमत कवि'।

जन्म-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—बजरंग बावनी।

विवरण—पिता का नाम श्यामलाल अवस्थी। पितृ वियोग से इस कवि का पालन इनके मामा ने किया।

उदाहरण—

> लातु - कपि - कटक बटोरिबे के हेतु धाय
> धारिहु बिसाल क गिरिन पर जातो कौन;
> दुहद पलीस बालि कीस को कराके बध
> सो कित सुकंठ का सुराज पै बिठातो कौन।
> कूदि जातो उदधि अगाध कौन सिंह सम,
> जलकि लँगूर ही तें लंक का जरातो कौन;
> होतो हनुमंत बली बीर जो न पथ मैं, तो
> साँची सुधि रामजी को सीय की सुनातो कौन॥ १॥
> बाल रवि के-सो अरु बदन कपीस को है,
> स्वर्न - से सरीर पै लँगूर लमकत है;
> पीत कंज से हैं मंजु नैन पीत रंग वारे,
> भ्रू बिलोकि काल को करेजो धमकत है।
> छोम लता राजत कपीस कमनीय, जाकी
> चमकत जैसे बिज्जु चमकत है;

> चक्र नखवारे की मु हाँक हुमकत, भारी
> सीस पै गनीमन के गाज गमकत है ॥ २ ॥

नाम—(४२४४) हरस्वरूपजी मिश्र 'हरेश', लश्कर ग्वालियर निवासी। पिता का नाम मुन्नालालजी मिश्र एम्० ए०।

जन्म-काल—सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

विवरण—आप आगरा-कॉलेज से इस साल एम्० ए० तथा का का इम्तिहान देंगे। कविता की ओर विशेष रुचि रखते हैं।

उदाहरण—

> भावना की भूख में उड़ाता गुण का सा गुड़,
> तैरूँ घना इस कल्पना के मानसर में;
> तरल तरंगों में बनाके नाव कागज की
> तिनके की तरह चलाऊँ दिन-भर में।
> खाता रहता हूँ मनमाने मनमोदक मैं,
> हँसता हूँ देख-देख मजुल मुकर में;
> जानता नहीं हूँ कौन-सा है घर मेरा, किंतु
> घूमता [illegible] अपना समझ घर घर में।

नाम—(४२४५) हरिकृष्ण 'प्रेमी', गुना ग्वालियर राज्य निवासी।

जन्म-काल—सं० १९६८।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—कविता अच्छी करते हैं। उद्भट भाव-युक्त देश-प्रेमी होने के कारण आप इस समय जेल में हैं।

उदाहरण—

आँखों में क्या-क्या है देखो आँखों से आँखोंवाले,
इन आँखों ने बना दिए हैं लाखों अंधे मतवाले।
इन पापिन आँखों ने तुमको यदि न कभी देखा होता,
तो मेरी फूटी क़िस्मत में कुछ सुख का लेखा होता।
विष भी है, पीयूष यही है, प्रेम अरे यह क्या माया!
अखिल विश्व की व्यथा मुझे क्या केवल यह प्रेमी भाया।

नाम—(४५७६) हरिमोहन झा बी० ए० (ऑनर्स), बाजीतपुर, मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं० १९६५।

रचना-काल—लगभग सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट लेख तथा कविताएँ।

विवरण—आप 'बालक' पत्र के सहकारी संपादक पं० जनार्दन झा 'जनसीदन' कवि के पुत्र हैं।

समय—संवत् १९८८ के अन्य कविगण

नाम—(४५७७) इंदुमती शर्मा, पटना।

जन्म-काल—सं० १९६६।

ग्रंथ—स्फुट लेख।

विवरण—यह स्वर्गीय श्रीयुत पं० रामावतारजी एम्० ए०, पटना की सुपुत्री हैं।

नाम—(४५७८) कालीचरण विशारद।

जन्म-काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—स्फुट ग्रंथ।

विवरण—डालटनगंज निवासी वैश्य, सज्जन युवक, लेखक और कवि हैं।

नाम—(४२४१) जगदीशनारायण तिवारी।

जन्म-काल—सं० १६६१।

ग्रंथ—(१) माँ विलाप, (२) पाश्चात्य सभ्यता का दिवाला, (३) भक्ति-रहस्य, (४) कृष्ण उपदेश।

विवरण—आप हिम्मतपुर, ज़िला बलिया निवासी पंडित अंबिका प्रसाद सरयूपारीय ब्राह्मण के पुत्र और साप्ताहिक युगांतर के संपादक हैं।

नाम—(४२४०) प्रकाशवती, बुलंदशहर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७०।

रचना-काल—सं० १९८६।

विवरण—आप नित्यानंद शर्मा एम्० ए० की धर्मपत्नी हैं। एम्० ए० तक अँगरेज़ी शिक्षा प्राप्त की है। आपके हिंदी के लेख पत्रिकाओं में निकलते रहते हैं।

नाम—(४२४१) भगवतीप्रसाद त्रिवेदी 'करुणेश'।

जन्म-काल—सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८६।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

विवरण—गढ़ी डाकख़ाना मोहनलालगंज, ज़िला लखनऊ में जन्म। आजकल दुगावाँ में रहते हैं। इनके पूर्वजों ने ज़िला बाराबंकी का त्रिवेदीगंज बसाया तथा वहीं वास ग्रहण किया।

उदाहरण—

पुनीत परिचय

दीन का दुकूल हूँ, कलिंदजा का कूल हूँ मैं,
रूप में मनुष्य, यही विधना की भूल हूँ।

देश प्रेमियों के मनोध्यान का रसाल हूँ मैं,
उन्हीं के मनोरथ - मयंद की मैं मूल हूँ।
सुकवि जनों के कंठ हार का तो फूल हूँ मैं,
कृष्ण-राधिका के पग-तल की मैं धूल हूँ।
हिंदी, हिंद देश की समुन्नति का मूल हूँ मैं,
शारदा भवानी का मैं भक्त अनुकूल हूँ।

नाम—(४४४२) भूधरनाथ मिश्र।
जन्म काल—सं० १९६७।
रचना-काल—सं० १९८६।
ग्रंथ—स्फुट छंद।
विवरण—रामपुर कलाँ, ज़िला सीतापुर के पं० प्रभुदयाल मिश्र के पुत्र तथा पं० अनूप शर्मा के शिष्य हैं। आप प्रायः वीर-रस की रचना करते हैं।

नाम—(४४४३) रामलखन पांडेय।
जन्म-काल—सं० १९६१।
ग्रंथ—(१) वसंत-सुधा, (२) विजय-वाटिका, (३) लखन-विनोद।
विवरण—मुहम्मदपुर, ज़िला गोंडा निवासी।

नाम—(४४४४) रामेश्वरलाल राँटिया सरदारशहर, रियासत बीकानेर।
जन्म-काल—सं० १९६६।
ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

नाम—(४४४५) विद्यावतीदेवी हरपुर जान, राजेपट्टी (सारन)।
जन्म-काल—सं० १९६६।
विवरण—आप क्षत्रिय-कुलोत्पन्ना श्रीयुत कृष्णबहादुरसिंह की

जन्म-काल—सं० १९७० ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

ग्रंथ—स्फुट रचना ।

उदाहरण—

> जिनके हृदय-रक्त से रंजित सन्ध्या की किरणें छविमान ।
> चमक-चमककर चमकाती हैं जीवन के वे सकरुण गान।
> जिनमें हैं उदास जगती के छिपे हुए फीके शृंगार ।
> जिनके एक एक स्वर से सिसका करती भाई सुकुमार ।

नाम—(४५७०) दिनेशनन्दिनी चोरड़्या, नागपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७३ ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

विवरण—आपको हिंदी गद्य-काव्य लिखने का अच्छा अभ्यास है । सामयिक पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं । आप प्रोफ़ेसर श्यामसुंदरलाल चोरड़्या की पुत्री हैं।

नाम—(४५७१) नाथूलाल त्रिवेदी ।

जन्म काल—सं० १९६९ ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

ग्रंथ—प्रेम पचीसी (अमुद्रित) ।

विवरण—जीरापुर इंदौर निवासी ।

नाम—(४५७२) पुरुषोत्तमलाल भार्गव एम्० ए०, शास्त्री, लखनऊ निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६९ ।

रचना काल—सं० १९८८ ।

विवरण—बाबू मुकुटबिहारी भार्गव के पुत्र । गद्य पद्यकार ।

नाम—(४२०३) गणेश शर्मा, कानपुर निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६३।

रचना-काल—सं० १९८८।

विवरण—आपने 'अमर' नामक पुस्तक लिखी। 'सुकवि-संगीत' में श्री अभिराम शर्मा की रचनाओं के साथ आपकी कविताएँ संकलित हैं।

नाम—(४२०४) भगवान मिश्र 'निर्मोही', चंपानगर, भागलपुर।

जन्म-काल—सं० १९६२।

विवरण—कविता अच्छी लिखी है।

उदाहरण—

छुड़ि सितार के तारों पर उँगली को जब पड़ती है मार,
श्रुतिगोचर होती है तो भी सुधा सनी सुंदर झंकार।
यह सुनकर उर बीच प्रवाहित हो उठती है नवरस धार;
हो जाता है ज्ञात कि यह है कांतिपूर्ण सारा संसार।
सरस भाव संयुक्त मनुज को नहीं दुःख है नित है प्यार;
यदि न विचलित होवे पाकर दुःखों के आघात अपार।
मधुर नाद उठते हैं झटपट हृदय-यंत्र के सारे तार;
नाद शब्द से हो जाता है आप्यायित सारा संसार।

नाम—(४२०५) राजराजेश्वरीदेवी मिश्र 'नलिनी', उन्नाव।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७८।

रचना-काल—सं० १९८८।

विवरण—आप छायावाद के ढंग की अच्छी कविता करती हैं।

नाम—(४२०६) रामसिंह विशारद बी० ए०, बीकानेर।

विवरण—आप तोमर राजपूत गद्य-पद्य लेखक हैं। इस समय

आप हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

नाम—(४२०७) वागीश्वरीसिंह वगरहटा, शुभाड्योढ़ी (दरभंगा)।

जन्म काल—सं० १९६३।

उदाहरण—

सरस सूचना

अरुणोदय के प्रथम अरुणिमा की नभ में सुंदर मुसकान;
दिवस आगमन के पहले ही वन विहंग की कोमल तान।
विटप फलित होने के पहले नव किसलय छवि की मुटकान।
कर देता मन मुग्ध काव्य के प्रथम कल्पना आकर ध्यान।
होता प्रेम क्रिया के पहले नव यौवन मद का संचार;
और मिलन के प्रथम गूँजते हृत्त्री के कोमल तार।

नाम—(४२०८) विद्याधर शास्त्री, बीकानेर।

ग्रंथ—यथार्थ दर्शन।

विवरण—आप चूरू-निवासी गौड़ ब्राह्मण हैं। हिंदी गद्य के आप अच्छे लेखक हैं। आप इस समय नोवल हाईस्कूल, बीकानेर में संस्कृत के अध्यापक हैं।

नाम—(४२०९) सीताराम वर्मा 'साधक', गुना, ग्वालियर-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९७१।

रचना-काल—सं० १९८८।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

उदाहरण—

वो तारे झिलमिल-झिलमिल कर देखा करते थे सपने।
जिन्हें देखकर भरी भी सखि, पलकें लगती थीं कँपने।
वह भी कहाँ रहे अपने!

यह मधु ऋतु की मादक सन्ध्या, यह चाँदी-सी उजली रात ,
वह किरणों का हास मनोहर, यह सोने का मधुर प्रभात ।
जानें कहाँ गए अज्ञात ।

नाम—(४२८०) हरिकृष्ण प्रेमी, अजमेर ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

ग्रंथ—आंखमिचौनी ।

विवरण—खड़ी बोली के कवि ।

समय—संवत् १९८९

नाम—(४२८१) गिरीश ओझा 'सुंदर' ।

जन्म-काल—सं० १९६६ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा लेख ।

विवरण—मिश्रौलिया बाँसडीह के निकट ज़िला बलिया के देवीशरण ओझा के पुत्र । गद्य पद्य-लेखक हैं ।

नाम—(४२८२) भगवतीचरण वर्मा, प्रयाग ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—मधुकण (पद्य) ।

विवरण—खड़ी बोली में रचना है ।

नाम—(४२८३) श्यामबिहारीलाल 'विरागी' ।

जन्म-काल—सं० १९७१ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—अभी अपूर्ण है ।

विवरण—बाँसडीह, बलिया के मुं० कृष्णकुमारलाल के कनिष्ठ पुत्र । प्रयाग के किसी कॉलेज में अध्ययन कर रहे हैं । हिंदी के होनहार गद्य पद्य-लेखक हैं ।

समय—संवत् १९९०

नाम—(४४८१) किशोरीरमण 'मतवाला' ।

जन्म-काल—सं० १९७२ ।

रचना-काल—सं० १९९० ।

ग्रंथ—स्फुट पद्य तथा गद्य-लेख ।

विवरण—राधारमण टंडन विसवाँ, ज़िला सीतापुर के पुत्र हैं। 'भारत', 'सुकवि' आदि में रचना छपा करती है।

नाम—(४४८२) जगमोहननाथ अवस्थी 'मोहन' ।

जन्म-काल—सं० १९६२ ।

रचना-काल—सं० १९९० ।

विवरण—ग्राम चलनी के निकट ग़ाज़ीपुर में उत्पन्न हुए। आपके पिता का नाम पं० शिवगोपाल है। हिंदी उर्दू मिडिल पास करके अँगरेज़ी में इंट्रेंस परीक्षा पास की। इस समय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, बरेली में काम करते हैं। इनके लेख पत्र-पत्रिकाओं में निकलते रहते हैं। हिंदी के अच्छे लेखक तथा कवि हैं।

उदाहरण—

वीणा म्लान, उँगलियाँ कंपित,
कैसे भला बजाऊँ ?
गहन गर्त में गिरा हुआ हूँ,
तुम तक कैसे आऊँ ?
पथ तमलीन मलीन ज्योति तव
लखकर आगे जाऊँ ;
मंद कुसुम निर्गंध न क्योंकर
पावन पगन चढ़ाऊँ ।
अमित उदार न लीजा देना
'मोहन' का यह लघु उपहार ;

'मिश्रबंधु' हो मिश्रित कर दो,
कान्यकुब्ज नवयुवकाधार !

सुमन आकांक्षा

(१)

नहीं चाहता मैं वन को
अपनी सुवास से भर दूँ ;
किंतु मिटाकर अपने को,
शृंगार किसी का कर दूँ ।

(२)

नहीं चाहता कामिनियों के
कंबु - कंठ पर झूलूँ ,
नहीं चाहता मैं डाली पर
फूल - फूलकर फूलूँ ।

(३)

नहीं चाहता प्रभु - पूजा में
लोग मुझे अपनावें ।
भवन प्रवासिनी भाव - भरा
मुझको उपहार बनावें ।

(४)

मैं 'सुहाग की रात' माल में
नहीं चाहता आऊँ ;
यश बैरी या काम बाण की
नोक न मैं बन जाऊँ ।

(५)

निभृत-कुंज में खिलने दो,
बस हिला करें पखुड़ियाँ ;

आडंबर बिन मिट्टी में
मिल जाऊँ चाहे परियाँ।
(६)
मुरझाकर भी देश-धूलि में
पँखुड़ी-पँखुड़ी सनी रहे।
बलि वेदी पर चढ़ूँ, और
मरी बलि-चढ़ी बनी रहे।
रसिक-शिरोमणि मिश्रबन्धु
दो मान-कन्न को सौरभ दान।
भेंट तुच्छ ही सही, किंतु—
श्रम कर लें यह स्वीकृत श्रीमान्।

नाम—(४१८६) धीरेंद्रबहादुरसिंह 'लाल' सरकुंव हिंदी-कवि, सेमरी, जिला रायबरेली।

जन्म काल—सं० १९६१।

रचना-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—संस्कृत में (१) वीरेंद्र वचनावली (प्रकाशित), (२) महर्षि विलास, (३) स्तुति मालिका।

विवरण—आप श्रीमान् रघुराजसिंह तअल्लुक़ेदार सेमरी, ज़िला रायबरेली के द्वितीय पुत्र हैं। आपने संस्कृत, अँगरेज़ी तथा हिंदी पढ़ी है। अँगरेज़ी में एफ़० ए० की परीक्षा देकर पढ़ना बंद कर दिया। कविता से विशेष प्रेम है, संस्कृत और हिंदी की कविता अच्छी करते हैं। बड़े ही होनहार युवक हैं।

उदाहरण—

देवि त्वदीयपदपङ्कजकान्तिपुञ्ज-
सन्दीप्तिमानयमुदेति सहस्ररश्मिः।

विश्वाश्रये निखिलवैभवरूपिणित्व-
मम्ब प्रसीद परमेश्वरि पाहि लोकान् ॥ १ ॥
आदेश तव पद-पद्म का ही कांति पुञ्ज दिनेश है,
उस कांति का शुभकाश भानोदय प्रकाश विशेष है।
हे विश्वके ! हे आश्रये ! ऐश्वर्य का तुम रूप हो,
मा ! लोक की रक्षा करो, तुमहीं प्रसन्न स्वरूप हो।
नैषोरवि सूर्यो शुभविरच नैव
नैवाग्निराशिर्न च कान्तिपुञ्ज।
उदेति संसारहिताय नित्यं
त्वदीय पादाम्बुजरेणुपिण्डः ॥ २ ॥
रत हे प्रवृत जो कर्म में, यह भानु तो वह है नहीं,
यह शुभविधि अथवा अग्नि की भी राशि दिखलाता नहीं।
यह कांति-पुञ्ज नहीं, नव्य संसार-कारण जानते,
तव कञ्ज-पग-युग-रज का बस पिंड इसको मानते।
ब्रह्माण्डजन्मस्थितिनाशहेतु
शक्तिः सदा या भवते महेश।
सा त्वं विशुद्धा भवतस्सदा
सर्वेश्वरी पातु सुतान्सदा नः ॥ ३ ॥
ब्रह्माण्ड के उत्पत्ति, पालन और नित संहार म—
ईश्वर चलाता काम नित जिस शक्ति के आधार में।
तुम हो वही निज भक्त की मानस विहारिणि अम्बिके !
हे ! शक्ति हो शुभदायिनी रक्षा करो जगदम्बिके।

नाम—(४९८७) ए० एल्० दे 'अनिल'।
जन्म-काल—सं० १९६२।
रचना-काल—सं० १९९०।
विवरण—आप प्रयाग निवासी स्व० मनोहरलाल के द्वितीय पुत्र

है। सन् १९२० ई० में लखनऊ से डॉक्टरी पास की। आजकल रायबरेली में प्राइवेट प्रैक्टिस करते हैं। बँगला, हिंदी तथा संगीत के विशेष प्रेमी हैं। चित्रांकन से भी प्रेम है। बड़े ही उत्साही तथा कविताऽनुरागी युवक हैं।

उदाहरण—

भारतवर्ष

(१)

नील जलधि से उठकर आई
जिस दिन जननी भारतवर्ष,
जगा विश्व में सुख का कलरव
शांति, प्रीति औ' महान हर्ष।
प्रभा तुम्हारी प्रभात लाई,
शेष हुई दुख की रजनी,
हुए कहना—"जय जग धात्री!
जगत्तारिणी! जय जननी!"
धन्य हुई है धरणी तेरे
चरण-कमल का पा स्पर्श!
गाई—"जय जय जग-मोहिनी!
जग की जननी भारतवर्ष!"

(२)

सद्यस्नान से बसा सिर है,
चिकुर सिंधु के शीकर लिप्त;
शीर्ष गरिमा विमल हास्य से
अमल कमल आनन है दीप्त!
गगन घेरकर करते नर्तन
तारावली तपन औ' चंद्र;

मग्न - मुग्ध चरणों पर फेनिल
जलधि गरजता जलमय मग्न!
धन्य हुई है धरणी तेरे
चरण कमल का पा स्पर्श!
गाई—"जय जय जगन्मोहिनी!
जग की जननी भारतवर्ष!"

(३)

शुभ्र तुषार - किरीट शीश पर,
जलधि - ऊर्मि घेरे जघा;
वक्ष विलम्बित मुक्तामाला
पय सिंधु, जमुना, गंगा!
क्या शीत भीषण मरु - भू में
कभी प्रकट होती, जननी!
श्याम सस्य के मधुर हास्य में
विहसित कभी निखिल वसनी!
धन्य हुई है धरणी तेरे
चरण-कमल का पा स्पर्श!
गाई—'जय जय जग-मोहिनी!
जग की जननी भारतवर्ष!"

(४)

पवन गगन में प्रबल रुदन में
गरज - गरजकर अपरिश्रांत,
अवनत होकर पिक कलरव से
चूमें तेरा चरण - प्रांत!
नभ पर धारित कुलिश - पात से
करके प्रलय - सलिल की वृष्टि,

पद में तेरे कुञ्ज - कुञ्ज में
करता कुसुम गंध की वृष्टि !
धन्य हुई है धरणी तेरे
चरण - कमल का पा स्पर्श !
गाई—"जय जय जगन्मोहिनी !
जग की जननी भारतवर्ष !"

(२)

शांति वक्ष में जननी तेरे,
मधुर कंठ में है अभयोक्ति !
करती वितरण अन्न करों से,
चरणों से देती है मुक्ति !
जननी, तुझको संतति पर है
कितना वेदन, कितना हर्ष !
जगत - पालिनी ! जगतारिणी !
जग की जननी भारतवर्ष !
धन्य हुई है धरणी तेरे
चरण-कमल का पा स्पर्श !
गाई—"जय जय जगन्मोहिनी !
जग की जननी भारतवर्ष !"

नाम—(४२८८) दयाशंकर वाजपेयी 'गिरीश'।

जन्म-काल—सं० १९५६ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

विवरण—आप पं० केदारनाथ के पुत्र, जन्म स्थान केखोली, ज़िला रायबरेली । आप हिंदी, बँगला जानते हैं, अँगरेज़ी की शिक्षा

इट्रेंस तक पाई है। बहुत दिन तक राजा साहब खजुरगाँव के यहाँ सरबराहकार रहे, अब घर पर जमींदारी का प्रबंध करते हैं।

उदाहरण—

ऊषा मातु गोद के निदेरे परभात बाल,
उठिए 'गिरीश' नन मोद उपजाइए;
पक्षी गण गाय औ' बजाय वेनु पौन तुम्हें
लाल है जगावत हे लाल, जग जाइए।
कमल खिलौना औ' दिठाना चंचरीक चारु,
आँगुली नवल टोप रश्मियाँ सजाइए;
प्रकृति सुरम्यता मुकुर प्रतिबिम्ब पेखि
किलकि-किलकिकर तालियाँ बजाइए।

नाम—(४२८६) पं० चन्द्रशेखर मिश्र 'अशेष'।

विवरण—आपका जन्म कार्तिक कृष्ण १३, संवत् १९५५ में, ग्राम रामपुर, तहसील पुरवा, ज़िला उन्नाव में हुआ। आपके पिता का नाम पं० गदाधरप्रसादजी मिश्र है। आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। प्रथम आपको उर्दू-भाषा की शिक्षा दी गई, और भगवंत नगर-स्कूल, ज़िला उन्नाव से उर्दू मिडिल की परीक्षा सन् १९१२ ई० में पास की, परंतु अँगरेज़ी शिक्षा हिंदी और संस्कृत लेकर स्पेशल क्लास से प्रारंभ की, और सन् १९१८ ई० में स्कूल-लीविंग-परीक्षा गवर्नमेंट हाइस्कूल, रायबरेली से पास की, और सेकिंड इयर एफ़० ए० की परीक्षा सन् १९२० ई० में कैनिंग-कॉलेज, लखनऊ से दी। संवत् १९७३ में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर पुरस्कार प्राप्त किया। सन् १९२३ से डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड ऑफ़िस, रायबरेली में नौकर हैं, और इस समय एकाउंटेंट के पद पर नियुक्त हैं।

परमात्मा का भजन करना ही आपका लक्ष्य है

आप एक पु देखते अपने सम्बंधियों के साथ हुई घटनाओं की पूर्ति करने ही विषय में की है। कविता का आरंभ सन् १९१८ ई० से है।

उदाहरण—

घरते वह कामना है दिल में, जिसमें विष-बीज बना करे;
परवे धन न कम लाख में, जिसमें वह कोई पुण्य करे।
जिन मति को आजन्म ध्यान रहा, वह नहीं निर्णय क्या करे;
बरही 'प्रताप' की ख्याति यही, जिन थोड़े पुर्ण भी दिया करे।
मन-मित्र तरंग बताती मुख, विश्वास जगत सुना करे;
जिन देही कुछ नहिं पास मिले, वह सब 'प्रताप' किया करे।
ऐसी एक है कठिन में न बची, कवि में इसमें भी लिखा करे;
नाम में तुम्हारे जो आप रमा, इस दाव को पार बना करे।

नाम—(९११०) पं० रामअवतारजी शुक्ल 'आतुर'।

विवरण—इनका जन्म विक्रमीय संवत् १९१० में, जिला रायबरेली के अन्तर्गत मुस्तफाबाद में हुआ। इनके पिता पं० बंशीधरजी शुक्ल एक प्रसिद्ध वकील तथा बड़े जमींदार थे; वह अपने समय के भाषाओं के सबसे कवि हैं। ज्येष्ठ भ्राता पं० गयाप्रसादजी शुक्ल जिला रायबरेली के प्रसिद्ध 'सुकवि' हैं। तथा दूसरे भ्राता पं० द्वारिकाप्रसादजी शुक्ल 'रसिक' कवि में मशहूर हैं, और प्रसिद्ध कवि हैं। बाल्यकाल से ही 'आतुर'जी की रुचि से विशेष अनुराग था। इन्होंने पद-रचना पाँच साल की ही आयु से आरंभ की थी। साहित्य-सेवा के भाव से प्रेरित होकर आपने एक साहित्यिक मंडल की स्थापना रायबरेली में की है, जो 'आतुर-मंडल' के नाम से प्रसिद्ध है। आपकी कवित्व-शक्ति के परिचयार्थ कुछ पद नीचे दिए गए हैं।

उदाहरण—

जाहि सुमिरत सिद्धि सकल सुकाज होत,
पाप [illegible] पराय धरि पदहूँ रदन को;

विघन विनाशन में 'चातुर' चतुर जोई,
वीर विकराल काल-व्याल मरदन को।
देश औ' विदेश हू में क्लेश न कलेश॰ जन
सोवत जो तिहूँ ताप औगुन-सदन को,
बार-बार चरन-कमल ध्याय बंदत हौं,
बारन-बदन सुख सदन-कदन को।
कंज जागे खिलन मलिंद मँडरान लागे,
विहँगावली हू इत उत बगरै लगी,
भरि मकरन्द सुधा सौरभ बिथारि रच्यो,
मधुप सतान टोली झूमि झहरै लगी।
कालिमा दुराय स्वर्ण अंबर गगन धारि,
'चातुर' समीर सीरी-सीरी सहरै लगी,
प्रकृति-नटी मनो उतारि वस्त्र स्याम धारे,
बसन सुरंग अंग छवि छहरै लगी।

नाम—(४२११) भगवानबक्स ठाकुर 'भगवान' चिलौली, रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९२१

विवरण—स्फुट कविता।

उदाहरण—

मेरो धाम ग्राम लघु नाम है चिलौली, ताहि
ग्राम जो तिलोई की है प्रांत है बरेली राय,
तामें श्रति लघु जमींदार भगवान हू है,
पितु बागेश्वर सील सिंधु सहजै स्वभाय।
माधौसिंह नाम ख्याति जानिए पितामह का,
जाति बन्द वंश, गोत्र भरद्वाज मुनिराय,

कवि-नामावली

कवि-नामावली

कवि-नामावली

श्रेष्ठ साहित्य

दुलारे-दोहावली

(द्वितीयावृत्ति)

(लेखक—सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल भार्गव)

हिंदी-संसार में महाकवि बिहारीलाल की कितनी ख्याति है, यह किसी हिंदी-भाषा के जानकार से छिपा नहीं। कितने ही विद्वान् समालोचकों का मत है कि वह हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कलाकार हैं। उनके बाद आज तक किसी ने भी वैसा चमत्कार नहीं पैदा किया था, परंतु यह कलंक अब दूर होने को है। अभी कुछ ही विद्वान् ऐसी सम्मति रखते हैं कि सुधा-संपादक कविवर श्रीदुलारेलालजी भार्गव के दोहे महाकवि बिहारीलाल के दोहों की टक्कर के होते हैं, और बाज़-बाज़ प्रसंगों में बढ़ भी गए हैं, परंतु यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि अचिर भविष्य में, जब कविवर श्रीदुलारेलालजी भार्गव के भी कई सौ ऐसे ही दोहे प्रकाशित हो जाएँगे, लोगों को उनकी श्रेष्ठता का लोहा मानना होगा। कहा जाता है, ब्रजभाषा में अब पहले की-सी कविता नहीं लिखी जाती, परंतु 'दुलारे-दोहावली' ने इस कथन को बिलकुल भ्रम साबित कर दिया है। हिंदी के वर्तमान कवियों और समालोचकों में जो अग्रगण्य माने जाते हैं, उन्होंने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है कि कविवर श्रीदुलारेलाल वर्तमान समय में ब्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, और उनकी दोहावली ब्रजभाषा-साहित्य की वर्तमान सर्वोत्तम कृति। यदि आपको ब्रजभाषा की कोमलकांत पदावली, शृंगार

और करुण-रस के कोमलतम मनोभावों की मधुर, सजीव चलती मूर्तियाँ, वीर-रस की ओजस्विनी सूक्तियाँ, देश-प्रेम का उज्ज्वल सुधा प्याला, शांत-रस की सुधा धारा, रसानुकूल उपयुक्त भाव का मुहावरेदार प्रयोग और थोड़े में कहने का अद्भुत कौशल आदि एक ही जगह देखना हो, तो इस दुलारे-दोहावली को अभी मँगा लीजिए। सादी प्रति ॥), रेशमी प्रति १), जिल्ददार प्रति ॥)

बिहारी रत्नाकर

महाकवि बिहारी की जगत्प्रसिद्ध सतसई पर अद्वितीय हिंदी भाष्य। भाष्यकार, ब्रजभाषा-साहित्य के पारदर्शी मर्मज्ञ विद्वान्, स्वर्गीय बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' बी० ए०। संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव। सुधा आकार। छपाई-सफ़ाई आदर्श। जिल्द और सजावट भी अपूर्व। हिंदी में इसके जोड़ का कोई सटीक महाकाव्य नहीं। इस बृहद् ग्रंथ ने हिंदी-संसार के ब्रजभाषा-साहित्य में युगांतर उपस्थित कर दिया। यू० पी० की विशेष योग्यता और आगरे, बनारस आदि विश्वविद्यालय में कोर्स है। बिहारी, रत्नाकर आदि के अनेक चित्र। मूल्य ६)

मतिराम ग्रंथावली

(द्वितीयावृत्ति)

महाकवि मतिराम हिंदी के नवरत्नों में से हैं। उनके ग्रंथों का अच्छा संस्करण कहीं नहीं मिलता। हमने पं० कृष्णबिहारीजी मिश्र से संपादन कराकर यह ग्रंथावली निकाली है। हिंदी संसार में यह अद्वितीय ग्रंथ है। मतिराम सतसई भी, जो बहुत धन व्यय करने पर हमें मिला है, इसमें सम्मिलित कर दी गई है। टिप्पणियाँ, शब्दार्थ नोट, आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका भी है, और बी० ए०, एम्० ए० और साहित्य सम्मेलन की परीक्षा में पाठ्य पुस्तक। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

विश्व साहित्य

लेखक, सरस्वती संपादक श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए०। यदि आप एक ही पुस्तक पढ़कर संसार की सभी उन्नत भाषाओं के साहित्य का रसास्वादन करना चाहते हैं, तो इस पुस्तक का पाठ अवश्य कीजिए। इसमें साहित्य का प्रकृत रूप, उसका वास्तविक तत्त्व, उसका मूल सिद्धांत, उसकी सच्ची परिभाषा और उसके प्रत्येक अंग की सुबोध व्याख्या बड़े विस्तार के साथ की गई है। मूल्य १॥), सजिल्द २)

हिंदी-नवरत्न

(परिवर्द्धित, संशोधित तथा सुसज्जित चतुर्थ संस्करण)

लेखक, हिंदी-संसार के प्रख्यातनामा समालोचक 'मिश्रबंधु'। इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े बड़े विद्वानों ने की है। हिंदी भाषा के सर्वोत्तम कवियों के आलोचना पूर्ण जीवन चरित्र इसमें हैं। साहित्य प्रेमी और साधारण जन सबको समान भाव से यह पुस्तक आनंद देता है। इस बार यह पुस्तक पहले से लगभग दुगुनी बड़ी और दसगुनी उपयोगी हो गई है। इसे सामयिक और सर्वांग पूर्ण बनाने में कोई भी चेष्टा बाक़ी नहीं रक्खी गई। अब तक की साहित्यिक खोजों के अनुसार संशोधन और संवर्द्धन होने से पुस्तक अप टु-डेट हो गई है। ११ रंगीन और सादे चित्रों से समलंकृत, सुंदर सुनहरी रेशमी जिल्द से इस पुस्तक की शोभा ही निराली हो गई है। यह संस्करण सब तरह आदर्श, अद्वितीय और सर्वांग-सुंदर है। मूल्य ४॥), सजिल्द ५)

साहित्य-संदर्भ

लेखक, साहित्य महारथी प० महावीरप्रसादजी द्विवेदी। द्विवेदीजी का परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाना है। इस पुस्तक में

के समय समय पर लिखे गए समालोचनात्मक तथा महत्व-पूर्ण लेखों का संग्रह है। मनोरंजन की सामग्री भी काफ़ी है। पुस्तक उच्च कक्षाओं में पाठ्य पुस्तक होने योग्य है। मूल्य १॥), सजिल्द २)

साहित्य-सुमन

(चतुर्थावृत्ति)

लेखक, स्व० पं० बालकृष्ण भट्ट। भट्टजी की भाषा हिंदी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती है। यही कारण है कि यह यू० पी० की विशेष योग्यता और अन्य प्रांतों में भिन्न भिन्न परीक्षाओं में पाठ्य पुस्तक बना ली गई है। इनके लेखों में उपन्यास और कहानियों का पूरा मज़ा आता है। जी भी नहीं ऊबता। निरंतर नई नई ज्ञातव्य बातों का पता लगता जाता है। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

काव्य कल्पद्रुम

(तृतीय परिवर्द्धित संस्करण)

लेखक, कविवर श्रीकन्हैयालालजी पोद्दार। यह संस्करण सर्वथा नवीन रूप में है। सर्वप्रथम नौ रस का विवेचन है। हिंदी में नौ रस पर ऐसा ग्रंथ आज तक प्रकाशित नहीं हुआ। नौ रस पर जो गवेषणा-पूर्ण विवेचन है, वह हिंदी के लिये अभूतपूर्व है। संस्कृत में जो विषय भिन्न भिन्न पुस्तकों में हैं, उन सबका एक ही स्थान पर समावेश कर दिया गया है। विषय को बड़ी सरलता से समझाया है। उदाहरणों में नवीन रचना के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध प्राचीन और अलभ्य ग्रंथों के बड़े ही हृदयग्राही पद्य चुनकर दिए हैं।

ग्रंथ हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों के लिये ही उपयोगी नहीं है, वरन् संस्कृत साहित्य के विद्वानों के लिये भी अवश्य द्रष्टव्य है।

लेखक के साहित्यिक आलोचनात्मक लेख जिन्होंने पढ़े हैं, वे इं
इस बात का अंदाज़ा लगा सकते हैं कि लेखक का इस विषय प
कितना गहरा ज्ञान है। विश्वविद्यालय की सर्वोच्च परीक्षाओं मे
पाठ्य ग्रंथ है। मूल्य सादी २॥), सजिल्द ३)

तुलसी-कृत रामायण

रामायण हिंदुओं का कितना पवित्र ग्रंथ है! इसका आदर भारतवर्ष के कोने-कोने में, महलों से झोपड़ियों-पर्यंत, है। इसके सैकड़ों संस्करण निकल चुके हैं। पर वास्तव में अब तक विरले ही संस्करण बिलकुल शुद्ध और क्षेपक रहित प्रकाशित हुए हैं। रामायण ऐसे पवित्र, अनमोल ग्रंथ की इस महान् कमी को देखकर दुःख होता था, और इसी को पूरा करने के विचार से हमने इसे खंडों में छापना शुरू किया है। भरसक बहिरंग और अंतरंग, दोनों को सुंदर बनाने की कोशिश की है। चित्रों की सुंदरता और भावों पर पाठकों का प्रेम उमड़ता है, इसी कारण हमने इसमें अनेक रंगीन और सादे चित्र भी दिए हैं, साथ-साथ अवांतर कथाओं का भी समावेश कर दिया गया है। संक्षेप में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि रामायण को सब प्रकार से सुंदर एवं सर्व सुलभ बनाने का प्रयत्न किया गया है।

यह रामायण १० खंडों में प्रकाशित हो रही है। प्रत्येक खंड में ८० पृष्ठ, बीसों सादे और ४० रंगीन चित्र रहेंगे। साइज़ सुधा का-सा अवश्य होगा। मूल्य प्रत्येक खंड का १।) होगा, अर्थात् कुल रामायण २५) की होगी। कारण, उसमें ११०० से ऊपर पृष्ठ और सैकड़ों रंगीन तथा सादे चित्र रहेंगे।

हिंदी प्रेमी मात्र से अनुरोध है कि कृपा कर वे स्वयं ग्राहक बनें, और अपने इष्ट मित्रों को भी बनाएँ। इस सहायता से हमारे

जीवन की एक योजना पूरी हो जायगी, और आपके हाथों में एक अनुपम ग्रंथ-रत्न आ जायगा। मूल्य इस प्रकार रक्खा गया है—

१ प्रत्येक खंड का मूल्य १।) है। डाक-व्यय अलग।

२ प्रथम चार खंडों का मूल्य ५) ही लिया जायगा। किंतु ये ५) एक साथ, आरंभ में ही, भेजने होंगे। डाक व्यय माफ़ रहेगा।

३ पूरे २० खंडों का रियायती मूल्य २०) होगा। डाक व्यय कुछ भी न लिया जायगा। २०) पेशगी भेज देने होंगे।

आप भी ग्राहकों में नाम लिखाएँ, और साथ ही अपने मित्रों से अनुरोध करें। एक प्रति मँगाकर देखें। छपते ही ८०० प्रतियाँ बिक गईं।